# इतिहास
# History

## कक्षा / Class XII

2025-26

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

# संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना एवं नवाचार द्वारा उच्च - नवीन मानक स्थापित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नियमित कार्यप्रणाली का अविभाज्य अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं पी. एम. श्री विद्यालयों के निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि आधारित पठन-पाठन, अनुभवजन्य शिक्षण एवं कौशल विकास को समाहित कर, अपने विद्यालयों को हमने ज्ञान एवं खोज की अद्‌भुत प्रयोगशाला बना दिया है। माध्यमिक स्तर तक पहुँच कर हमारे विद्यार्थी सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ, रचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित कर लेते हैं। यही कारण है कि वह बोर्ड कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों के लिए सहजता से तैयार रहते हैं। उनकी इस यात्रा में हमारा सतत योगदान एवं सहयोग आवश्यक है - केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संकलित यह विद्यार्थी सहायक-सामग्री इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामाग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विद्यार्थी सहायक-सामग्री अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और शिक्षा से जुड़े विभिन्न मंचों पर इसकी सराहना होती रही है। मुझे विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर निरंतर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाएगी।

शुभाकांक्षा सहित ।

**निधि पांडे**
**आयुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन**

**PATRON**

SMT. NIDHI PANDEY
COMMISSIONER, KVS

**CO-PATRON**

DR. P. DEVAKUMAR
ADDITIONAL COMMISSIONER (ACAD.), KVS (HQ)

**CO-ORDINATOR**

MS. CHANDANA MANDAL
JOINT COMMISSIONER (TRAINING), KVS (HQ)

**COVER DESION**

KVS PUBLICATION SECTION

**EDITOR**

MS. MENAXI JAIN
DIRECTOR, ZIET MYSURU

**ASSOCIATE COURSE DIRECTOR**

SH. MAYANK SHARMA

PRINCIPAL, PM SHRI KV NO 1, HBK, DEHRADUN

**RESOURCE PERSONS**

SH. VATAN SINGH KUNWAR

VICE PRINCIPAL, KV OIL DULIAJAN TINSUKIA

SH. SURESH CHAND

PGT(HISTORY), PM SHRI KV IIP MOHKAMPUR DEHRADUN

**ZIET COORDINATOR**

SH. DINESH KUMAR

TRAINING ASSOCIATE (PHYSICS)

ZIET MYSURU

# CONTENT CREATORS

| Lesson No. | Name of the Lesson | Content prepared by | KV NAME |
|---|---|---|---|
| 1 | Bricks, Beads and Bones | Dr. RATNA LAKSHMI BISEN | PM SHRI KV NO. 1 HBK DEHRADUN |
| 2 | Kings, Farmers and Towns | Mr. DHARMENDRA PAMECHA | PM SHRI KV NO. 1 PRATAP NAGAR UDAIPUR |
| 3 | Kingship, Caste and class | Ms.VANDANA SRIVASTAVA & OTHERS | PM SHRI KV NFC VIGYAN VIHAR DELHI SHIFT 1 |
| 4 | Thinkers, Beliefs and Buildings | Ms. POOJA RANA | PM SHRI KV LANSDOWNE |
| 5 | Through the Eyes of Travellers | Mr. VINEET KUMAR | KV OIL DULIAJAN |
| 6 | Bhakti-Sufi Traditions | Mr. SHYAM SUNDER MEENA | PM SHRI KV RAJGARH |
| 7 | An Imperial Capital – Vijayanagar | Ms. ROOPAL | PM SHRI KV RAIWALA DEHRADUN |
| 8 | Peasants, Zamindars and the States | Mr. SAVINDRA KUMAR PANDEY | PM SHRI KV NO.2 GAYA |
| 9 | Colonialism and The Countryside | Mr. SAMENDAR SINGH RATHORE | PM SHRI KV JALIPA CANTT |
| 10 | Rebels and Raj | Mr. LALIT KUMAR | KV FRI DEHRADUN |
| 11 | Mahatma Gandhi and the Nationalist Movement | Mr. SHASHANK TOMAR | PM SHRI KV MUZAFFARNAGAR SHIFT -II |
| 12 | Framing of the Constitution | Mr. KOMMA RAMARAO | PM SHRI KV NO1 GOLCONDA |

## संपादकीय मण्डल

(1) श्री धर्मेन्द्र कुमार पमेचा, स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास), पी एम श्री के वि क्रमांक-1 प्रताप नगर, उदयपुर (जयपुर संभाग)

(2) श्री श्याम सुंदर,स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास), पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय, राजगढ़ (भोपाल संभाग)

(3) श्रीमती रूपल, स्नातकोत्तर शिक्षिका (इतिहास) , पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय, रायवाला (देहरादून संभाग)

# विषय सूची


| SI NO | विषय का नाम |
|---|---|
| 1 | Theme 1 : **ईंटे, मनके तथा अस्थियाँ** |
| 2 | Theme 2 : **राजा, किसान और नगर** |
| 3 | Theme 3 : **बंधुत्व, जाति तथा वर्ग** |
| 4 | Theme 4 : **विचार, विश्वास और इमारतें** |
| | **HISTORY THEME II** |
| 5 | Theme 5: **यात्रियों के नज़रिए** |
| 6 | Theme 6 : **भक्ति-सूफी परम्पराएं** |
| 7 | Theme 7 : **एक साम्राज्य की राजधानी** |
| 8 | Theme 8 : **किसान, जमींदार और राज्य** |
| | **HISTORY THEME III** |
| 9 | Theme 9 : **उपनिवेशवाद और देहात** |
| 10 | Theme 10 : **विद्रोही और राज** |
| 11 | Theme 11 : **महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन** |
| 12 | Theme 12 : **संविधान का निर्माण** |

**CLASS XII**
**COURSE STRUCTURE**

**Theory Paper**

| S.No. | Part | Marks |
|---|---|---|
| 1 | Themes in Indian History Part--I | 25 |
| 2 | Themes in Indian History Part—II | 25 |
| 3 | Themes in Indian History Part—III | 25 |
| 4 | Map | 05 |
| | Total | 80 |

**Note-**The Maps available in the website of Survey of India may be used.(https://surveyofindia.gov.in/)

| | **Themes in Indian History** **Part-I** | **25 Marks** |
|---|---|---|
| **Sr No.** | **Theme Title** | **Marks** |
| 1 | Bricks, Beads and Bones<br>The Harappa Civilisation | 25 |
| 2 | Kings, Farmers and Towns<br>Early States and Economies (*c.*600 BCE 600 CE) | |
| 3 | Kingship, Caste and class<br>Early Societies (c. 600 BCE600 CE) | |
| 4 | Thinkers, Beliefs and Buildings<br>Cultural Developments (c. 600 BCE 600 CE) | |
| | **Themes in Indian History** **Part-II** | **25 marks** |
| 5 | Through the eyes of Travellers<br>Perceptions of Society (c. tenth to seventeenth centuries) | |
| 6 | Bhakti-Sufi Traditions<br>Changes in Religious Beliefs and Devotional Texts (c. eighth to eighteenth centuries) | 25 |
| 7 | An Imperial Capital – Vijayanagar (c. fourteenth to sixteenth centuries) | |
| 8 | Peasants, zamindars and the States Agrarian Society and the Mughal Empire (c. sixteenth-seventeenth centuries) | |

| | **Themes in Indian History** **Part-III** | **25 marks** |
|---|---|---|
| 09 | Colonialism and The Countryside<br>Exploring Official Archives | 25 |
| 10 | Rebels and Raj<br>1857 Revolt and its Representations | |
| 11 | Mahatma Gandhi and the National Movement<br>Civil Disobedience and Beyond | |
| 12 | Framing of the Constitution<br>The Beginning of a New Era | |
| | Including Map work of the related Themes | 05 |
| | Theory Total | 80 |
| | Project Work | 20 |
| | **TOTAL** | **100** |

**Note-**The Maps available in the official website of Govt., of India may be used

# विषय -1 ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ

## हड़प्पा सभ्यता

### परिचय:

यह अध्याय **भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक का अन्वेषण करता है, जिसे अक्सर हड़प्पा सभ्यता** या **सिंधु घाटी सभ्यता (IVC)** के रूप में जाना जाता है। यह लगभग **2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक फली-फूली और इसे** दक्षिण एशिया की **पहली शहरी संस्कृति** माना जाता है।

### 1. खोज और भौगोलिक विस्तार

- इसकी खोज सर्वप्रथम 1920 के दशक में **हड़प्पा (वर्तमान पाकिस्तान में) में दया राम साहनी** द्वारा की गई थी।
- वर्तमान **पाकिस्तान** , **उत्तर-पश्चिमी भारत** और **अफ़गानिस्तान के कुछ हिस्सों को कवर करते हुए एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है**।
- प्रमुख स्थल:
    - **मोहनजोदड़ो** (सिंध)
    - **हड़प्पा** (पंजाब, पाकिस्तान)
    - **धोलावीरा** और **लोथल** (गुजरात)
    - **कालीबंगन** (राजस्थान)
    - **राखीगढ़ी** (हरियाणा)
- यह मुख्यतः **सिंधु नदी प्रणाली** और अब सूख चुकी **घग्गर-हकरा** नदी बेसिन में स्थित है।
- से अधिक **स्थलों** की खोज की गई, जिन्हें **प्रारंभिक (2600 ईसा पूर्व से पहले), परिपक्व (2600-1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा चरणों में विभाजित किया गया**।

### 2. शहरी नियोजन और वास्तुकला

- **ग्रिड पैटर्न** पर आधारित थे - सड़कें समकोण पर प्रतिच्छेद करती थीं।
- दो प्रमुख क्षेत्र:
    - **गढ़ (सिटडल ):** ऊंचा चबूतरा, किलाबंद, महत्वपूर्ण इमारतें - अन्न भंडार, सार्वजनिक स्नानघर, और प्रशासनिक केंद्र।
    - **निचला शहर: धूप में सुखाई गई और पकी हुई ईंटों** से बने मानकीकृत घरों वाला आवासीय क्षेत्र।
- उल्लेखनीय संरचनाएं:
    - **महान स्नानागार** (मोहनजोदड़ो): संभवतः इसका उपयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।
    - **अन्न भंडार:** अधिशेष खाद्य भंडारण का साक्ष्य।
    - **निजी एवं सार्वजनिक कुएँ** : जल प्रबंधन को दर्शाते हैं।
- **ढकी हुई जल निकासी प्रणाली** उन्नत नागरिक इंजीनियरिंग और स्वच्छता पर जोर को दर्शाती है।

### 3. शिल्प उत्पादन और विशेषज्ञता

- हड़प्पावासी कुशल शिल्पकार थे।
- **मिट्टी के बर्तन, मुहरें, आभूषण, चूड़ियाँ, मोती, टेराकोटा मूर्तियाँ, खिलौने, बाट और माप का** उत्पादन किया गया।
- कार्नेलियन, लाजवर्द मणि (लैपिस लाजुली,) स्टीटाइट और शैल जैसे **अर्ध-कीमती पत्थरों** का उपयोग उत्कृष्ट शिल्प कौशल और विलासिता की वस्तुओं का संकेत देता है।
- **चन्हूदड़ो, लोथल, धोलावीरा** में विशिष्ट शिल्प केंद्र पाए गए।
- **मानकीकृत उपकरण और बाट का** उपयोग किया गया - जो आर्थिक नियंत्रण और व्यापार विनियमन को दर्शाता है।

### 4. व्यापार और विनिमय

- **आंतरिक और बाह्य व्यापार** दोनों ही फले-फूले:
    - दूर देशों से कच्चा माल: राजस्थान से तांबा, अफगानिस्तान से टिन, बदख्शां से लाजवर्द।
    - मोतियों और मुहरों जैसे तैयार उत्पादों का निर्यात किया गया।
- **मेसोपोटामिया (जिसे सुमेरियों द्वारा मेलुहा कहा जाता है)** के साथ व्यापार के साक्ष्य में वहां पाए गए मेसोपोटामिया के ग्रंथ और सिंधु मुहरें शामिल हैं।
- **लोथल** में एक **गोदी थी** - जो समुद्री व्यापार का संकेत देती है।
- **बैलगाड़ियों, नावों और नदी मार्गों** के उपयोग से अंतर्देशीय परिवहन में सुविधा हुई।

### 5. कृषि और पशुपालन

- अर्थव्यवस्था **कृषि पर बहुत अधिक निर्भर थी** - मुख्य फसलें **गेहूं, जौ, मटर, तिल, खजूर, सरसों और कपास थीं** (हड़प्पावासी सबसे पहले कपास की खेती करने वाले किसान थे)।
- कुछ क्षेत्रों में, विशेषकर अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, **सिंचाई का उपयोग किया गया।**
- पालतू पशु: **गाय, भेड़, बकरी, भैंस और संभवतः हाथी** ।
- जुताई का कोई ठोस सबूत नहीं मिला है; लेकिन **नाली के निशान और टेराकोटा हल से** हल आधारित कृषि का संकेत मिलता है।

### 6. स्क्रिप्ट और मुहरें

- हड़प्पा लिपि: **अभी भी पढ़ी नहीं जा सकी है** ; अधिकतर **मुहरों, मिट्टी के बर्तनों, तांबे की प्लेटों पर लिखी गयी है** ।
- औसत मुहर में **4-6 चित्रात्मक चिह्न होते हैं** ; संभवतः इनका उपयोग पहचान, व्यापार या धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
- मुहरों पर प्रायः पशु (जैसे, गेंडा, कूबड़ वाला बैल), मानव आकृतियाँ और पौराणिक रूपांकन अंकित होते हैं।
- **कोई द्विभाषी पाठ (जैसे रोसेटा स्टोन) नहीं** मिला, जिससे उनकी भाषा और राजनीति की समझ सीमित हो गई।

### 7. धर्म और सामाजिक जीवन

- कोई मंदिर नहीं मिला; धर्म में संभवतः **प्रकृति, उर्वरता (मातृ देवी), पशुओं, पवित्र वृक्षों** और संभवतः आदि-शिव (पशुपति) की पूजा शामिल थी।
- **राजाओं का कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं है** , यद्यपि केंद्रीय योजना प्रशासनिक शासन का सुझाव देती है।
- **शवाधान केंद्रों से** पुनर्जन्म में विश्वास का पता चलता है:
    - कुछ के पास **कब्र का सामान था** - मिट्टी के बर्तन, गहने, औज़ार।
    - विभिन्न दफन शैलियाँ **सामाजिक भेदभाव का संकेत देती हैं** ।
- सामुदायिक जीवन संभवतः **शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक था** , हालांकि **युद्ध का कोई स्पष्ट प्रमाण** मौजूद नहीं है।

### 8. सभ्यता का पतन

- लगभग **1900 ई.पू.** में शहरों का पतन शुरू हो गया।
- गिरावट के सिद्धांत:
    1. **जलवायु परिवर्तन** - सूखा, नदियों का सूखना।
    2. **बाढ़** - विशेषकर निचले सिंधु क्षेत्रों में।
    3. **वनों की कटाई और मृदा क्षरण** .
    4. **व्यापार पतन** - विशेष रूप से मेसोपोटामिया के साथ।
    5. **धीरे-धीरे ग्रामीण अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव** .
    6. संभावित **प्रवास या आक्रमण** (आर्य सिद्धांत पर बहस चल रही है और अब इसे काफी हद तक अस्वीकृत कर दिया गया है)।

- **उत्तर हड़प्पा चरण** : सांस्कृतिक परिवर्तन और ग्रामीण बस्तियों के विकास को दर्शाता है।

## 🔍 9. ऐतिहासिक अध्ययन हेतु महत्व

- यह अध्याय दर्शाता है कि इतिहासकार **पुरातात्विक स्रोतों का उपयोग करके प्राचीन अतीत का पुनर्निर्माण कैसे करते हैं** :
    - **संरचनाएं** , **कलाकृतियां** , **दफन** , **शिल्प केंद्र** , और **निपटान पैटर्न** ।
- हड़प्पा सभ्यता **भारत की सांस्कृतिक विरासत की आधारशिला है, जो योजना, व्यापार, कृषि, स्वच्छता और शिल्प** में प्रारंभिक विकास का प्रतिनिधित्व करती है ।

## 🖨️ निष्कर्ष:

हड़प्पा सभ्यता सिर्फ़ प्राचीन शहरों का समूह नहीं थी, बल्कि एक **सुव्यवस्थित, परिपक्व शहरी संस्कृति थी** जो आधुनिक भारत को इसकी जड़ों की झलक दिखाती है। इसकी शहरी बनावट, आर्थिक जटिलता और कलात्मक समृद्धि **अपने समय से बहुत आगे के समाज को दर्शाती है** । हालाँकि इसकी भाषा एक रहस्य बनी हुई है, लेकिन इसके **अवशेष** इसकी उन्नति और विरासत के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

### महत्वपूर्ण शब्द

| शब्द | अर्थ / स्पष्टीकरण |
|---|---|
| **हड़प्पा सभ्यता** | एक प्रारंभिक शहरी सभ्यता जो उत्तर-पश्चिमी उपमहाद्वीप में लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली। |
| **गढ़** | शहर का ऊंचा हिस्सा, जो अक्सर किलेबंद होता था और महत्वपूर्ण सार्वजनिक इमारतों के लिए आरक्षित होता था। |
| **निचला शहर** | हड़प्पा शहर का आवासीय क्षेत्र जहाँ अधिकांश लोग रहते थे। |
| **शिल्प उत्पादन** | कुशल कारीगरों द्वारा मोतियों, मुहरों, मिट्टी के बर्तनों और आभूषणों जैसी वस्तुओं का निर्माण। |
| **मुहरें** | पत्थर के टुकड़ों पर पशु आकृतियाँ और लिपि उत्कीर्ण है, जो संभवतः व्यापार और पहचान के लिए उपयोग किये जाते थे। |
| **शहरी नियोजन** | ग्रिड पैटर्न, जल निकासी प्रणालियों और सार्वजनिक संरचनाओं के साथ शहरों का व्यवस्थित लेआउट। |
| **मोहनजोदड़ो** | यह हड़प्पा सभ्यता के सबसे बड़े स्थलों में से एक है, जो महान स्नानागार और उन्नत नगर नियोजन के लिए जाना जाता है। |
| **धोलावीरा** | गुजरात में हड़प्पा स्थल, अपनी अनूठी जल प्रबंधन प्रणाली और शिलालेखों के लिए जाना जाता है। |
| **लोथल** | हड़प्पा स्थल जिसमें एक गोदी भी है, विदेशी व्यापार संबंधों का संकेत देता है। |
| **स्तरविज्ञानं(स्ट्रेटीग्राफी)** | गहराई और निक्षेपण के क्रम के आधार पर पुरातात्विक परतों के काल निर्धारण की एक विधि। |
| **कार्बन डेटिंग** | जैविक अवशेषों की आयु निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त वैज्ञानिक तकनीक। |
| **आद्य-शिव / पशुपति** | मुहर पर पशुओं से घिरी एक सींगधारी आकृति को दर्शाया गया है; कुछ लोगों द्वारा इसे शिव का प्रारंभिक रूप माना गया है। |
| **मातृ देवी** | ऐसा माना जाता है कि महिला मूर्ति प्रजनन क्षमता या दैवीय स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। |
| **बाट और माप** | हड़प्पा शहरों में व्यापार और वाणिज्य में प्रयुक्त मानकीकृत उपकरण। |
| **जल निकासी प्रणाली** | सड़कों के किनारे ढकी हुई नालियों का नेटवर्क उन्नत नागरिक प्रबंधन को दर्शाता है। |
| **स्पष्टीकरण** | प्राचीन लिपियों की व्याख्या और समझने की प्रक्रिया (हड़प्पा लिपि के लिए अभी तक नहीं किया गया है)। |

**बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू)**

**Q1. हड़प्पा स्थलों को उनकी विशेषताओं से सुमेलित करें:**

A. मोहनजोदड़ो - 1. विशाल स्नानघर

B. लोथल - 2. गोदी

C. चन्हुदड़ो - 3. मनके बनाना

D. कालीबंगा - 4. जुता हुआ खेत

(A) A-1, B-2, C-3, D-4

(B) A-2, B-3, C-1, D-4

(C) A-3, B-4, C-1, D-2

(D) A-1, B-4, C-2, D-3

**Q2. निम्नलिखित वस्तुओं का सामग्रियों से मिलान करें:**

A. वजन – 1. चर्ट

B. मुहरें – 2. स्टीटाइट

C. मोती – 3. कार्नेलियन

D. रत्न – 4. लाजवर्द मणि

(A) A-1, B-2, C-3, D-4

(B) A-2, B-1, C-4, D-3

(C) A-4, B-3, C-2, D-1

(D) A-1, B-3, C-2, D-4

**Q3. पुरातत्वविदों का उनके योगदान से मिलान करें:**

A. कनिंघम - 1. भारतीय पुरातत्व के जनक

B. जॉन मार्शल - 2. हड़प्पा उत्खनन का निर्देशन किया

C B B लाल - 3. कालीबंगा की खुदाई की

D. दया राम साहनी - 4. हड़प्पा की खुदाई की

(A) A-1, B-2, C-3, D-4

(B) A-2, B-1, C-4, D-3

(C) A-3, B-4, C-2, D-1

(D) A-4, B-3, C-1, D-2

**Q4. आधुनिक समय के स्थानों के साथ हड़प्पा स्थलों का मिलान करें:**

A. बनावली - 1. हरियाणा

B. राखीगढ़ी - 2. हरियाणा

C. कालीबंगन - 3. राजस्थान

D. लोथल - 4. गुजरात

(A) A-1, B-2, C-3, D-4

(B) A-1, B-2, C-4, D-3

(C) A-4, B-3, C-1, D-2

(D) A-2, B-4, C-3, D-1

**Q5. निम्नलिखित हड़प्पा शब्दों का उनके महत्व के साथ मिलान करें:**

A. डेडमैन लेन – 1. मोहनजोदड़ो में संकरी गली

B. महान स्नानागार – 2. आनुष्ठानिक स्नान

C. गोदी – 3. लोथल

D. जुता हुआ खेत – 4. कालीबंगन

(A) A-1, B-2, C-3, D-4

(B) A-4, B-1, C-2, D-3

(C) A-2, B-1, C-4, D-3

(D) A-1, B-3, C-2, D-4

**Q6. सिर पर पट्टी बांधे एक दाढ़ी वाले आदमी की मूर्ति मिली है। इसे लोकप्रिय रूप से किस नाम से जाना जाता है?**

(A) डांसिंग गर्ल (B) पुजारी-राजा (C) पत्थर का लेखक (D) मनका बनाने वाला

**प्रश्न 7. हड़प्पा की मुहरों पर सबसे अधिक दर्शाया गया जानवर है:**

(A) घोड़ा (B) कूबड़ वाला बैल (C) हाथी (D) शेर

**प्रश्न 8. गोदी संरचना के लिए जाने जाने वाले हड़प्पा स्थल की पहचान करें:**

(A) कालीबंगा (B) राखीगढ़ी (C) लोथल (D) हड़प्पा

**प्रश्न 9. "बाट" बनाने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया गया था?**

(A) स्टीटाइट (B) टेराकोटा (C) चर्ट पत्थर (D) हाथीदांत

**प्रश्न 10. मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार की उपस्थिति क्या दर्शाती है?**

(A) मनोरंजन सुविधा (B) सार्वजनिक स्वच्छता

(C) अनुष्ठानिक स्नान (D) मछली पालन

**(11-15) नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन — एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) दिए गए हैं।**

**इन कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।**

(क) अभिकथन (A) एवं कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।

(ख) अभिकथन (A) एवं कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।

(घ) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

**Q11. अभिकथन (A):** हड़प्पा शहरों में एक सुनियोजित जल निकासी प्रणाली थी।

**कारण (R):** नालियाँ अक्सर ढकी होती थीं और मुख्य नालियों से जुड़ी होती थीं।

**Q12. अभिकथन (A):** हड़प्पा लिपि को अभी तक नहीं पढ़ा गया है |

**कारण (R):** विद्वानों को द्विभाषी शिलालेख मिले हैं।

**Q13. अभिकथन (A):** हड़प्पावासी मानक बाट और माप का उपयोग करते थे।

**कारण (R):** यह व्यापार और निर्माण के लिए आवश्यक था।

**Q14. अभिकथन (R):** कलाकृतियों को पुनः प्राप्त करना पुरातात्विक अनुसंधान में केवल प्रारंभिक कदम है

**कारण (R):** पुरातत्वविद विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हैं जैसे कि आधार पर वर्गीकरण सामग्री और कार्य, संदर्भगत साक्ष्यों का विश्लेषण, और अप्रत्यक्ष साक्ष्य पर निर्भरता कलाकृतियों के महत्व और उद्देश्य को समझना।

**Q15. अभिकथन (A):** चन्हूदड़ो विशेष रूप से एक शिल्प उत्पादन केंद्र था।

**कारण (R):** इसमें कोई किलेबंदी नहीं थी।

**प्रश्न 16. हड़प्पा शहरों में ईंटों का मानकीकरण क्यों किया गया था?**

(A) कलात्मक आकर्षण के लिए (B) धार्मिक विश्वास के कारण

(C) निर्माण में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए (D) लागत बचाने के लिए

**प्रश्न 17. हड़प्पा शहरों में अन्न भंडारों की खोज से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?**

(A) गेहूँ नहीं उगाया जाता था (B) कोई भंडारण व्यवस्था नहीं थी

(C) अतिरिक्त खाद्य उत्पादन होता था (D) खाद्यान्न आयात किया जाता था

**प्रश्न 18. हड़प्पा शहरों में लाजवर्द मणि (लापीस लाजुली) की उपस्थिति से पता चलता है:**

(A) अफगानिस्तान के साथ व्यापार (B) केवल आंतरिक व्यापार

(C) लोहे के औजारों का उपयोग (D) कोई व्यापारिक गतिविधि नहीं

**प्रश्न 19. हड़प्पावासी शहरी स्वच्छता कैसे सुनिश्चित करते थे?**

(A) व्यक्तिगत सेप्टिक टैंक द्वारा (B) घरों से जुड़ी ढकी हुई जल निकासी व्यवस्था द्वारा

(C) मिट्टी के पाइपों का उपयोग करके (D) तांबे की नलिकाओं का उपयोग करके

**प्रश्न 20. हड़प्पा स्थलों पर पाई गई मुहरें बताती हैं:**

(A) धार्मिक प्रथाओं में उपयोग (B) केवल सजावटी उद्देश्य

(C) पहचान और व्यापार (D) अंत्येष्टि वस्तुएँ

**Q21. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा सभ्यता में कृषि गतिविधि को दर्शाता है?**

(A) चित्रित जार (B) टेराकोटा हल मॉडल

(C) जानवरों के साथ मुहरें (D) कांस्य आकृतियाँ

**स्पष्टीकरण सहित उत्तर**

1. (A) A-1, B-2, C-3, D-4 – सुविधाओं के साथ स्थलों का सही मिलान।
2. (A) A-1, B-2, C-3, D-4 – प्रयुक्त सामग्रियों का सटीक मिलान।
3. (A) A-1, B-2, C-3, D-4 – प्रसिद्ध पुरातत्वविदों का योगदान।
4. (A) A-2, B-2, C-3, D-4 – आधुनिक समय का सही स्थान मानचित्रण।
5. (A) A-1, B-2, C-3, D-4 – हड़प्पा शब्दों की उचित व्याख्या।
6. (B) पुजारी-राजा - मूर्तिकला का लोकप्रिय नाम।
7. (B) कूबड़ वाला बैल – मुहर पर सबसे आम जानवर।
8. (C) लोथल - अपनी गोदी संरचना के लिए जाना जाता है।
9. (C) चर्ट पत्थर
10. (C) अनुष्ठानिक स्नान - महास्नान का महत्व।
11. (A) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
12. (C) A सही और R गलत हैं – हड़प्पा लिपि पढ़ी नहीं जा सकी है।
13. (A) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
14. A- (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है
15. (B) A और R दोनों सत्य हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
16. (C) निर्माण में एकरूपता सुनिश्चित करना।
17. (C) अधिशेष खाद्य उत्पादन - अन्न भंडार भंडारण का संकेत देते हैं।

18 (A) अफगानिस्तान के साथ व्यापार

19. (B) घरों से जुड़ी ढकी हुई नालियाँ - स्वच्छता विधि।

20. (C) पहचान एवं व्यापार - मुहरों का प्राथमिक उपयोग।

21. (B) टेराकोटा हल मॉडल - कृषि का साक्ष्य।

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

*(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30-50 शब्दों में दें)*

**1. हड़प्पा शहरों के नगर नियोजन  का विश्लेषण करके उन विशेषताओं की पहचान करें जो स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती थीं**

**उत्तर:**

- हर घर सड़क की नालियों से जुड़ा हुआ था।
- मुख्य चैनल गारे में स्थापित ईंटों से बने थे और ढीले प्लास्टर से ढके हुए थे।
- ईंटें जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सकता था।
- कुछ मामलों में, आवरण के लिए चूना पत्थर का उपयोग किया गया था।
- घर की नालियों को पहले एक नाबदान या गड्ढ़े में खाली किया जाता था जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाते थे
- जबकि अपशिष्ट जल सड़क की नालियों में बह गया।
- सफाई के लिए नाबदानों के साथ अंतराल पर बहुत लंबी जल निकासी चैनल प्रदान किए गए थे।
- कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

**2. हड़प्पा सभ्यता को समझने में मुहरों का क्या महत्व है?**

**उत्तर:**

- मुहरें सेलखड़ी पत्थर से बनी होती थीं और उन पर पशु आकृतियां और लिपि उत्कीर्ण होती थीं।
- संभवतः व्यापार, संपत्ति की पहचान के लिए उपयोग किया जाता था।
- मेसोपोटामिया जैसे विदेशी स्थानों में भी पायी गई।

**3. कौन से पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि हड़प्पावासियों के अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापारिक संबंध थे?**

**उत्तर:**

- *मेलुहा* का उल्लेख करने वाले मेसोपोटामिया के ग्रंथ।
- मेसोपोटामिया के शहरों में हड़प्पा की मुहरें पाई गईं।
- लापीस लाजुली, तांबा और शंख जैसी सामग्रियां दूर-दराज के क्षेत्रों से प्राप्त की गयी  हैं।
- समुद्री व्यापार के लिए लोथल में गोदी की उपस्थिति।

**4. महान स्नानागार की खोज हमें हड़प्पा समाज के बारे में क्या बताती है?**

**उत्तर:**

- सार्वजनिक वास्तुकला और जटिल नागरिक योजना को इंगित करता है।
- अनुष्ठानिक या धार्मिक स्नान प्रथाओं का सुझाव देता है।
- जलरोधी निर्माण और उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली।
- संभवतः अभिजात वर्ग या धार्मिक समूहों द्वारा उपयोग किया जाता रहा होगा।

**5. पुरातत्वविद हड़प्पावासियों की आहार-विहार की प्रथाओं का पुनर्निर्माण कैसे करते हैं?**

**उत्तर:**

- स्थलों पर पाए गए जानवरों की हड्डियों और अनाज के अवशेषों के माध्यम से।
- पुरातात्विक-वनस्पति विज्ञान और जीव-जंतु विश्लेषण का उपयोग।
- इसमें गेहूं, जौ, दाल, बाजरा, तथा मवेशियों और मछलियों की हड्डियां शामिल हैं।
- जानवरों के  अवशेषों का अध्ययन भी सहायक होता है।

**6. हड़प्पा लिपि को समझने में इतिहासकारों के सामने आने वाली चुनौतियों का परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर:**

- यह लिपि छोटी है, तथा इसमें अधिकांश अभिलेख 5 प्रतीकों के अंतर्गत हैं।
- रोसेटा स्टोन जैसे द्विभाषी पाठ्यों का अभाव।
- लिपि किसी भी ज्ञात भाषा से निर्णायक रूप से मिलती जुलती नहीं है।
- आधुनिक तकनीकी उपकरणों के बावजूद भी इसे अभी तक नहीं समझा जा सका है।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

*(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300-350 शब्दों में दें)*

**1. कृषि, शिल्प उत्पादन और व्यापार के संदर्भ में हड़प्पा अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करें।**

- **उत्तर:** कृषि आधार - हड़प्पावासी हल और सिंचाई का उपयोग करके कृषि करते थे, गेहूं, जौ, मसूर, कपास और फल उगाते थे।
- पालतूकरण - मवेशी, भेड़, बकरी और भैंस जैसे जानवरों को पालतू बनाया गया, जिससे कृषि और भोजन दोनों में सहायता मिली।
- भंडारण और अन्न भंडार - हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के विशाल अन्न भंडार अधिशेष अनाज भंडारण और खाद्य आपूर्ति पर राज्य नियंत्रण को दर्शाते हैं।
- शिल्प उत्पादन - विशेष कारीगर तांबे, कांस्य, फ़ाइनेस, टेराकोटा और शंख के साथ मोती, उपकरण, मिट्टी के बर्तन और मुहरें बनाने के लिए काम करते थे।
- कच्चा माल - तांबा (राजस्थान), अर्द्ध-कीमती पत्थर (गुजरात), और लापीस लाजुली (अफगानिस्तान) जैसे संसाधनों को शिल्पकला के लिए खरीदा गया था।
- मानकीकरण - व्यापार में मानकीकृत बाटों और मापों का उपयोग आर्थिक संगठन और विनियमन को दर्शाता है।
- आंतरिक और बाह्य व्यापार - व्यापार नेटवर्क भूमि और समुद्र के माध्यम से मेसोपोटामिया (मेलुहा), ओमान और बलूचिस्तान तक फैला हुआ था।
- गोदी और मुहरें - लोथल में गोदी और स्टीटाइट मुहरें समुद्री और लंबी दूरी के व्यापार प्रथाओं का प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करती हैं।

**2. पुरातत्वविद हड़प्पा समाज में सामाजिक अंतर का निर्धारण कैसे करते हैं? उदाहरण दीजिए।**

**उत्तर:**

  - घर का आकार - कई कमरों और आंगनों वाले बड़े घर धनी कुलीन परिवारों की उपस्थिति का संकेत देते हैं।
- कुओं तक पहुंच - कुछ घरों में निजी कुएं सामाजिक विशेषाधिकार का संकेत देते हैं, जबकि अन्य लोग सार्वजनिक जल पर निर्भर हैं।
- कुछ कब्रों में बहुमूल्य दफ़न सामान (मिट्टी के बर्तन, आभूषण) पाए गए, जो मृत्यु के बाद वर्ग-आधारित अंतर को दर्शाते हैं।
- कारीगरी की वस्तुएं - सोने के आभूषण, नक्काशीदार मोती और फेआन्स जैसी विलासिता की वस्तुएं संभवतः केवल उच्च-स्थिति वाले व्यक्तियों के पास ही होती थीं।
- अन्न भंडार और स्नानघर - बड़े सार्वजनिक भवनों पर प्रशासकों या अभिजात वर्ग का नियंत्रण रहा होगा, जो केंद्रीकृत शक्ति को दर्शाता है।

- शिल्प विशेषज्ञता - विशिष्ट स्थानों पर कार्यशालाओं की उपस्थिति, अभिजात वर्ग के संरक्षण में नियंत्रित, संभवतः गिल्ड-जैसे, कारीगर समूहों का संकेत देती है।
- दुर्ग और निचला शहर - शहर के विभाजन सामाजिक स्थिति के आधार पर प्रशासनिक और आवासीय पृथक्करण को प्रतिबिंबित कर सकते हैं।
- शवाधान / दफ़नाने में भिन्नता – शवाधान स्थलों में दफ़नाने की भिन्न शैलियाँ देखने को मिलती हैं, जो संभवतः समूहों के भीतर सांस्कृतिक या सामाजिक विकास को दर्शाती हैं।

**प्रश्न 3: राखीगढ़ी में हाल ही में हुए पुरातत्व अनुसंधान के कारण हड़प्पा की उत्पत्ति और निरंतरता की समझ में परिवर्तन आया है। इसके प्रकाश में, बताएं कि कैसे नए वैज्ञानिक तरीके हड़प्पा सभ्यता की ऐतिहासिक व्याख्याओं को नया रूप दे रहे हैं। साथ ही, दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक और आनुवंशिक निरंतरता पर निष्कर्षों के निहितार्थों पर चर्चा करें।**

**उत्तर:**

**I. पुरास्थल / साइट और अनुसंधान का परिचय**

- राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले में स्थित सबसे बड़ा ज्ञात हड़प्पा स्थल है, जो 550 हेक्टेयर में फैला हुआ है।
- हाल ही में पुरातत्व संबंधी अनुसंधान निम्नलिखित द्वारा किया गया:
  डेक्कन कॉलेज, पुणे
  कोशिकीय एवं आणविक जीवविज्ञान केंद्र (सीसीएमबी), हैदराबाद
  हार्वर्ड मेडिकल स्कूल
- हड़प्पा लोगों की आनुवंशिक वंशावली का अध्ययन करने के लिए कंकाल अवशेषों से डीएनए निकाला गया।

**II. प्रमुख वैज्ञानिक निष्कर्ष**

**1. हड़प्पावासियों की स्वदेशी उत्पत्ति**

- आनुवंशिक विश्लेषण से पता चलता है कि हड़प्पावासी भारतीय उपमहाद्वीप के मूल निवासी थे।
- उनकी आनुवंशिक जड़ें 10,000 ईसा पूर्व तक जाती हैं, जो हड़प्पा सभ्यता के परिपक्व चरण (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व) से भी बहुत पहले की हैं।

**2. आनुवंशिक वंश की निरंतरता**

- हड़प्पा डीएनए आधुनिक दक्षिण एशियाई जनसंख्या से सीधा संबंध दर्शाता है।
- इसका तात्पर्य इस क्षेत्र में पिछले 5000 वर्षों से चली आ रही आनुवंशिक निरंतरता से है।

**3. सीमित आनुवंशिक मिश्रण**

- यद्यपि व्यापार और प्रवास के कारण कुछ जीन प्रवाह हुआ, लेकिन इससे मूल आनुवंशिक वंशावली बाधित नहीं हुई।
- साक्ष्य बड़े पैमाने पर आर्यों के प्रवास के कारण सांस्कृतिक या आनुवंशिक असंततता उत्पन्न होने के पूर्व के सिद्धांतों का खंडन करते हैं।

**III. हड़प्पा पहचान का पुनर्निर्माण**

**1. 3D चेहरे का पुनर्निर्माण**

- शोधकर्ताओं ने हड़प्पा के पुरुष और महिला निवासियों के चेहरे की 3D विशेषताओं का डिजिटल रूप से पुनर्निर्माण किया।
- ये विशेषताएं हरियाणा की वर्तमान जनसंख्या के साथ उल्लेखनीय समानता दर्शाती हैं, जो जैविक और सांस्कृतिक निरंतरता के विचार को पुष्ट करती हैं।

**2. आर्यन प्रवास सिद्धांत पर पुनर्विचार**

- यह नया आनुवंशिक साक्ष्य सभ्यतागत परिवर्तन के कारण के रूप में आर्यन आक्रमण/प्रवास के लंबे समय से चले आ रहे सिद्धांत को चुनौती देता है।
- इसके बजाय, यह नए समूहों के भारतीय समाज में क्रमिक आंतरिक परिवर्तन और एकीकरण का समर्थन करता है।

**IV. व्यापक निहितार्थ**

**1. इतिहास में वैज्ञानिक तरीकों की भूमिका**

- यह शोध दर्शाता है कि डीएनए विश्लेषण जैसे आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण किस प्रकार प्राचीन इतिहास के बारे में हमारी समझ को नया आकार दे सकते हैं।
- यह पुरातत्व, आनुवांशिकी और इतिहास के बीच सेतु का काम करता है तथा एनसीएफएसई दिशानिर्देशों के अनुरूप एक बहुविषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

**2. निरंतरता और समावेशिता पर जोर**

- ये निष्कर्ष भारतीय सभ्यता के अधिक समावेशी आख्यान को बढ़ावा देते हैं, जो संघर्ष के बजाय आत्मसातीकरण पर केंद्रित है।
- यह जांच, साक्ष्य-आधारित तर्क और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के एनईपी 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है।

**निष्कर्ष:**

राखीगढ़ी में पुरातत्व संबंधी अध्ययन इस बात के साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि हड़प्पा के लोग स्वदेशी थे और उनकी आनुवंशिक और सांस्कृतिक विरासत आज के दक्षिण एशियाई लोगों में भी जारी है। यह बड़े पैमाने पर आक्रमणों के पुराने सिद्धांतों को चुनौती देता है और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को बदलने में वैज्ञानिक अनुसंधान की शक्ति को रेखांकित करता है। यह अध्ययन न केवल हड़प्पा सभ्यता के बारे में हमारी समझ को समृद्ध करता है बल्कि भारत के गहरे और निरंतर सभ्यतागत इतिहास के विचार को भी पुष्ट करता है।

**स्रोत-आधारित प्रश्न 1**

**निम्नलिखित अंश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:**

**"अब तक खोजी गई सबसे प्राचीन प्रणाली"**

"निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सबसे पूर्ण प्राचीन प्रणाली है। हर आवास गली की नालियों से जुड़ा हुआ था। मुख्य नालियाँ ईंटों से बनी थीं और उन्हें ढीली ईंटों से ढका गया था जिन्हें साफ करने के लिए हटाया जा सकता था। कुछ स्थानों पर ढक्कन के लिए चूना पत्थर का प्रयोग किया गया था। घर की नालियाँ पहले एक गड्ढे या मलबा कुण्ड में खाली होती थीं, जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बहता था। बहुत लंबी नालियों में सफाई के लिए अंतराल पर कुण्डियाँ बनाई गई थीं। यह पुरातत्त्व का एक चमत्कार ही है कि 'बड़े, मुख्यतः शहरों के छोटे-छोटे हिस्सों से निकली सामान्यतः गलियों की अगली-पिछली सड़कों पर बिखरी रेत की ढेरियाँ पाई गई हैं' — जो दर्शाती हैं कि नालियों की सफाई के बाद मलबा हमेशा हटाया नहीं जाता था। जल निकासी प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में भी पाई गईं।

उदाहरण के लिए, लोथल में आवासों के निर्माण के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ था, वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थीं।

"— **अर्नेस्ट मैके, अर्ली इंडस सिविलाइजेशन, 1948**

**प्रश्न:**

**(i) किस सभ्यता की नालियों का वर्णन किया गया है?**

(i) हड़प्पा (सिंधु) सभ्यता।

**(ii) ढकी हुई नालियों के कोई दो लाभ बताइए।**

(ii) 1. ढीले/चूने के पत्थर के ढक्कनों के कारण सफाई और रखरखाव आसान हो गया।

2. ढकी हुई नालियों से दुर्गंध नहीं आती और स्वच्छता में सुधार होता है।

**(iii) सफाई व्यवस्था में कौन सी कमियाँ उजागर हुई?**

**(iii)** मलबा अक्सर नालियों के पास छोड़ दिया जाता था, जो सफाई की अनियमितता और कचरे के उचित तरीके से निपटान को दर्शाता है।

**स्रोत-आधारित प्रश्न 2**

**निम्नलिखित अंश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:**

**दुर्ग**

**गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:**

दुर्ग पर हमें ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य मिलते हैं जिनका उपयोग शायद विशेष सार्वजनिक उपयोगों के लिए किया जाता था। इनमें एक गोदाम — एक ऐसी विशाल ईंटों की संरचना है जिसके केवल निचले हिस्से शेष हैं, जबकि ऊपरी हिस्से जो शायद लकड़ी से बने थे, समय के साथ नष्ट हो गए हैं — और विशाल स्नानागार (ग्रेट बाथ) सम्मिलित हैं। विशाल स्नानागार आंगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। जलाशय में जाने के लिए इसके उत्तर और दक्षिण हिस्से में दो सीढ़ियाँ बनी थीं। जलाशय को पानीरोधी बनाने के लिए इसमें ईंटों को बिछाकर और जिप्सम के मोर्टार का प्रयोग कर इसे जलरोधी बनाया गया था। इसके तीनों ओर कमरे बने हुए थे, जिनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था।

जलाशय से पानी एक बड़ी नाली में बहकर चला जाता था। इसके उत्तर में एक गली के उस पार एक अपेक्षाकृत छोटी संरचना थी जिसमें आठ स्नानघर बनाए गए थे। एक गलियारे के दोनों ओर चार-चार स्नानघर बने थे। प्रत्येक स्नानघर से नालियाँ गलियारे के साथ-साथ बनी एक नाली में जाकर मिलती थीं। इस संरचना की विशिष्टता और ऊँचे क्षेत्र में स्थित अन्य विशेष संरचनाओं के साथ इसके पाए जाने से यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि इसका उपयोग किसी प्रकार के विशेष धार्मिक स्नान के लिए किया जाता था।

**(i) हड़प्पा शहरों में दुर्ग का क्या महत्व था?**

**उत्तर- दुर्ग का महत्व**

- गढ़ हड़प्पा शहर का ऊंचा हिस्सा था , जिसका उपयोग प्रशासनिक और सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाता था।
- इसमें महान स्नानागार और गोदाम जैसी महत्वपूर्ण संरचनाएं थीं , जो यह दर्शाती हैं कि यह शक्ति और समारोह का केंद्र था।

**(ii) शौचालयों और उन्नत जल निकासी व्यवस्था की मौजूदगी हमें हड़प्पा समाज के बारे में क्या बताती है?**

**उत्तर:** हड़प्पा समाज के बारे में जानकारी

- अनेक स्नानघरों और सुव्यवस्थित जल निकासी प्रणालियों की उपस्थिति से पता चलता है कि हड़प्पावासी स्वच्छता और सफाई को महत्व देते थे।
- शहरी नियोजन और तकनीकी उन्नति के उच्च स्तर को भी दर्शाता है।

**(iii) विद्वान ऐसा क्यों मानते हैं कि महान स्नानागार का उपयोग अनुष्ठान प्रयोजनों के लिए किया जाता था?**

**उत्तर**: महान स्नान का अनुष्ठानिक उपयोग

- अनूठी संरचना , केन्द्रीय स्थान और विस्तृत डिजाइन के कारण विद्वानों का मानना है कि इसका उपयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था .
- सार्वजनिक जीवन में धार्मिक या औपचारिक प्रथाओं की उपस्थिति से है।

**स्रोत-आधारित प्रश्न 3**

**निम्नलिखित अंश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:**

**(i) अवतल चक्कियों का उपयोग किस लिए किया जाता था?**
(i) अवतल चक्कियों का उपयोग अनाज पीसने और खाद्य प्रसंस्करण के लिए किया जाता था।

**(ii) इन अवतल चक्कियों की कोई दो भौतिक विशेषताएँ और उनके उद्देश्य का वर्णन करें।**
(ii) दो भौतिक विशेषताएँ:

1. कठोर आग्नेय चट्टान या बलुआ पत्थर से निर्मित - भारी उपयोग के लिए टिकाऊ।

उत्तल आधार - पीसने के दौरान उन्हें स्थिर रखने के लिए धरती में स्थापित किया जाता है।

**(iii) अवतल चक्कियों का उपयोग हड़प्पा समाज के बारे में क्या संकेत देता है?**
(iii) यह परिष्कृत खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों और विशेष उपकरणों के साथ एक स्थिर कृषि अर्थव्यवस्था को इंगित करता है, जो उन्नत घरेलू शिल्प उत्पादन का सुझाव देता है।

## पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु तथा मिट्टी से बनाया जाता था। यहाँ एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ो में हुए उत्खननों पर सबसे आरंभिक रिपोर्टों में से एक से कुछ उद्धरण दिए जा रहे हैं:
अवतल चक्कियाँ ... बड़ी संख्या में मिली हैं ... और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थीं। साधारणत: ये चक्कियाँ स्थूलत: कठोर, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते हैं। चूँकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें ज़मीन में अथवा मिट्टी में जमा कर रखा जाता होगा जिससे इन्हें हिलने से रोका जा सके। दो मुख्य प्रकार की चक्कियाँ मिली हैं। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाया जाता था, जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था, तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवत: केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी-बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर' का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक यही पत्थर रसोई में प्रयोग के लिए संग्रहालय से उधार माँगा है।
अर्नेस्ट मैके, *फर्दर एक्सकैवेशन्स एट मोहनजोदड़ो*, 1937 से उद्धृत

## अध्याय 2- राजा, किसान और नगर
## आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं
## ( लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

**अध्ययन उद्देश्य-**

मुख्य शिक्षण उद्देश्यों का उद्देश्य छात्रों को भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक और आर्थिक इतिहास से परिचित कराना है, विशेष रूप से 600 ईसा पूर्व और 600 ई. के बीच। विशेष रूप से, छात्र प्रारंभिक राज्यों और साम्राज्यों के उद्भव, कृषि और शहरों के विकास और ग्रामीण समाज में परिवर्तनों के बारे में जानेंगे। वे ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में अभिलेखों, ग्रंथों और सिक्कों के उपयोग का भी पता लगाएंगे। इस अध्याय को समझने के बाद छात्र निम्नलिखित दक्षताओं में सक्षम होंगे-

*उपमहाद्वीप के राजनीतिक और आर्थिक इतिहास में प्रमुख प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन और व्याख्या करना।

* अभिलेखीय साक्ष्यों को समझना।

* अभिलेखीय साक्ष्यों का विश्लेषण करना और उन तरीकों का विश्लेषण करना जिनसे इनसे राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं की समझ को आकार मिला है।

**अध्याय का सार**

**छठी शताब्दी ईसा पूर्व का महत्व**-1. प्रारंभिक राज्यों और शहरों का विकास

2. लोहे का बढ़ता उपयोग

3. सिक्कों का विकास

4. बौद्ध धर्म और जैन धर्म सहित विभिन्न विचारधाराओं का विकास

**प्रमुख महाजनपद**

वज्जि, मगध, कोशल, कुरु, पंचाल ये प्रमुख महाजनपद थे |इनमें से अधिकांश पर एक ही शासक का शासन था, लेकिन उनमें से कुछ पर लोगों के समूह का शासन था। इस प्रकार के महाजनपदों को गण या संघ कहा जाता था। प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी, जिसे अक्सर किलेबंद किया जाता था।

**मगध का उदय**- कई कारकों ने मगध को सबसे शक्तिशाली महाजनपद बनाया जैसे

*उपजाऊ मैदान * उत्पादक कृषि * लोहे की उपलब्धता *हाथियों की उपलब्धता

*गंगा और उसकी सहायक नदियों के माध्यम से सस्ता और सुविधाजनक संचार

* बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापद्मनंद जैसे महत्वाकांक्षी राजा

**मौर्य साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण के स्रोत**-

* पुरातात्विक सामग्री *यूनानी राजदूत मैगस्थनीज के विवरण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, बौद्ध, जैन और पौराणिक साहित्य *अशोक के शिलालेख

**अशोक का धम्म-**

* बड़ों के प्रति आदर * सन्यासियों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता * दासों और सेवकों के साथ उदार व्यवहार

* दूसरे के धर्मों और परंपराओं आदर

* धम्म के संदेश को फैलाने के लिए विशेष अधिकारी, जिन्हें धम्म महामत्त के रूप में जाना जाता था, नियुक्त किए गए थे।

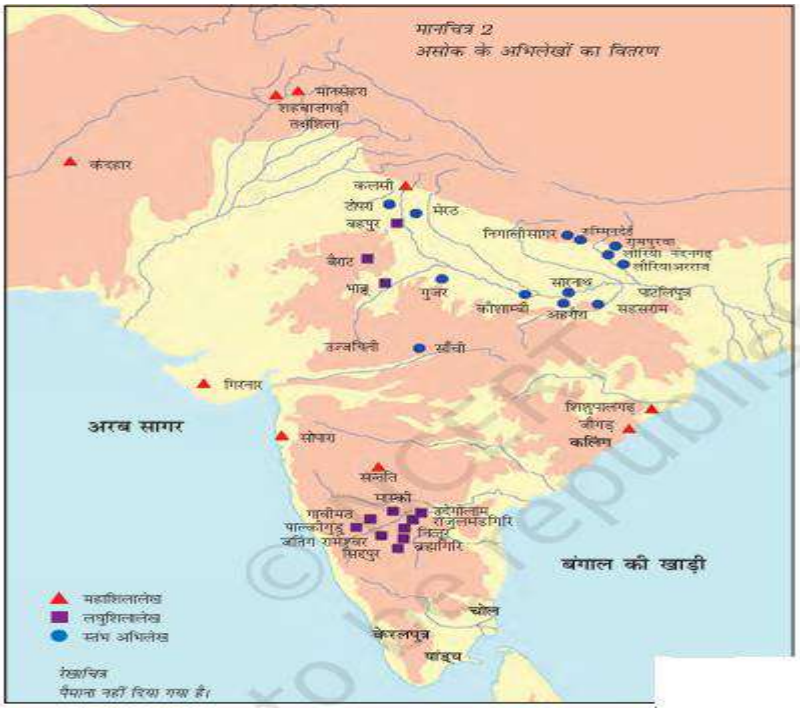


असोक के अभिलेख

**मौर्य साम्राज्य का महत्त्व-**

* उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में भारतीय इतिहासकारों को प्राचीन भारत में एक ऐसे साम्राज्य की संभावना बहुत चुनौतीपूर्ण और उत्साहवर्धक लगी|
* मौर्यों से जुड़ी कुछ पुरातात्विक खोजें, जिनमें प्रस्तर मूर्तियाँ भी शामिल हैं, साम्राज्यों की शानदार कला के विशिष्ट उदाहरण माने जाते हैं।
* अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार असोक द्वारा लिखवाए गए अभिलेखों पर लिखे सन्देश अन्य शासकों के अभिलेखों की अपेक्षा भिन्न है | इसमें उन्हें यह लगा कि अन्य राजाओं की अपेक्षा असोक एक बहुत शक्तिशाली और परिश्रमी शासक थे| साथ ही वे उन राजाओं की अपेक्षा विनीत भी थे जो अपने नाम के साथ बड़ी-बड़ी उपाधियाँ जोड़ते थे|

**मौर्य साम्राज्य का प्रशासन**- पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्रों यानी **पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, तक्षशिला, तोसली और सुवर्णगिरि** के माध्यम से प्रशासन। मेगस्थनीज ने सैन्य समन्वय के लिए छह उपसमितियों की एक समिति का उल्लेख किया है। इसमें नौसेना, परिवहन और प्रावधान, पैदल सैनिकों, घोड़ों, रथों और हाथियों के लिए उपसमितियाँ शामिल हैं।

**राजधर्म के नवीन सिद्धांत**- तमिलकम में **चोल, चेर और पांड्यों** की प्रमुखताएँ उभरीं। सातवाहनों ने लगभग 200 ईसा पूर्व से लगभग 200 ईसवी तक पश्चिमी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया। मध्य एशियाई मूल के शकों ने उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी भागों में शासन किया।

**दैविक राजा**- *राजा विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके उच्च स्थिति का दावा करते थे।
* उनमें से एक देवताओं के साथ पहचान करना था। **कुषाणों** ने इस रणनीति का उपयोग किया और **देवपुत्र** या भगवान के पुत्र की उपाधि धारण की।
* गुप्त शासकों के इतिहास को साहित्य, सिक्कों और प्रशस्तियों सहित अभिलेखों से पुनर्निर्मित किया गया है। **समुद्रगुप्त** से संबंधित **प्रयाग प्रशस्ति** की रचना उनके दरबारी कवि **हरिषेण** ने की थी।

**बदलता हुआ देहात**- ***जातक** और **पंचतंत्र** आम लोगों के जीवन के बारे में जानकारी देते हैं।

**उत्पादन बढ़ाने की रणनीतियाँ-*** छठी शताब्दी ईसा पूर्व से गंगा और कावेरी के उपजाऊ मैदानों में **हल से खेती** करने की प्रवृत्ति में बदलाव आया।
***लोहे की नोक** वाले हल का इस्तेमाल किया जाता था जो अधिक कुशल था।
***रोपाई** के कारण **धान** का उत्पादन बढ़ा।
* सिंचाई के लिए **तालाबों और कुओं** का इस्तेमाल किया जाता था।

**ग्रामीण समाज में अंतर**-* कृषि में लगे लोगों के बीच भेदभाव बढ़ रहा था।
* पाली ग्रंथों में अक्सर छोटे किसानों और बड़े भूस्वामियों को नामित करने के लिए गहपति शब्द का इस्तेमाल किया जाता था।
*शुरुआती तमिल साहित्य में भी गांवों में रहने वाले लोगों की विभिन्न श्रेणियों का उल्लेख है- बड़े भूस्वामी या वेल्लालर, हलवाहे या उझावर और दास या अणिमई।

**भूमि दान**- *भूमि दान की प्रथा आम युग की शुरुआती शताब्दियों से शुरू हुई।
***ब्राह्मणों** और **धार्मिक संस्थानों** को भूमि अनुदान दिया जाता था और उनमें से कई अभिलेखों में दर्ज हैं।

* ज्यादातर तांबे की प्लेटों पर दर्ज हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय की बेटी और वाकाटक परिवार में विवाहित **प्रभावती गुप्त** ने भी भूमि अनुदान दिया।
* कुछ इतिहासकारों का मानना है कि भूमि अनुदान शासक वंशों द्वारा कृषि को नए क्षेत्रों में विस्तारित करने के लिए अपनाई गई रणनीति का हिस्सा था।
*अन्य सुझाव देते हैं कि भूमि अनुदान कमजोर राजनीतिक शक्ति का संकेत थे: जैसे-जैसे राजा अपने सामंतों पर नियंत्रण खो रहे थे, उन्होंने भूमि अनुदान देकर सहयोगियों को जीतने की कोशिश की।
**नगर और व्यापार**- पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, मथुरा, पुहार, तक्षशिला, कन्नौज, भरूचच्छ आदि जैसे शहरी केंद्र महत्वपूर्ण शहरों के रूप में उभरे। शिल्प उत्पादकों और व्यापारियों के संघ या श्रेणियाँ व्यापार में महत्वपूर्ण हो गईं। मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार समुद्र और भूमि मार्गों के माध्यम से बढ़ा।
**संघ या श्रेणी-** *ये उत्पादकों और व्यापारियों के संगठन थे जिन्हें संघ या श्रेणी कहा जाता है|
*ये श्रेणियां संभवत: पहले कच्चे माल को खरीदती थी और फिर उनसे सामान तैयार कर बाज़ार में बेच देती थी|
**सिक्कों का विकास**- *पहले सिक्के चांदी और तांबे से बने **आहत सिक्के** थे।
* **इंडो-ग्रीक शासकों** ने छवियों और नामों के साथ सिक्के जारी किए।
***कुषाणों** ने पहले सोने के सिक्के जारी किए।
*दक्षिण भारत में कई स्थलों से **रोमन सिक्के** पाए गए।
* पंजाब और हरियाणा के **यौधेय** जैसे कबायली गणराज्यों ने भी ताम्बे के सिक्के जारी किए।
***गुप्त शासकों** ने सोने के सबसे शानदार सिक्के जारी किए।
***मुद्राशास्त्र** सिक्कों का अध्ययन है| इसके साथ ही उन पर पाए जाने वाले चित्र, लिपि आदि तथा उनकी धातुओं का विश्लेषण और जिन सन्दर्भों में इन सिक्कों को पाया गया है, उनका अध्ययन भी मुद्राशास्त्र के अंतर्गत आता है|
**अभिलेखों की व्याख्या**- *अशोक के अभिलेखों को **जेम्स प्रिंसेप** ने 1838 में पढ़ा था।
*अधिकांश अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** और **प्राकृत भाषा** में थे।
* जबकि कुछ उत्तर -पश्चिम में अभिलेख खरोष्ठी, अफगानिस्तान में यूनानी और अरामेइक लिपि में भी लिखे गए थे। अधिकांश शिलालेखों में अशोक को देवानांपिय या पियदस्सी कहा गया
**अभिलेख साक्ष्य की सीमाएँ**- *अभिलेख क्षतिग्रस्त हो सकते हैं या अक्षर गायब हो सकते हैं।
*कुछ शिलालेखों को हल्के से उकेरा गया था।
* कभी-कभी अभिलेखों में इस्तेमाल किए गए शब्दों का सही अर्थ जानना मुश्किल होता है।
*वे उन व्यक्तियों के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं जिन्होंने उन्हें बनवाया था। अभिलेख आम लोगों के बारे में ज़्यादा नहीं बताते।

## बहुविकल्पी प्रश्न

1. निम्नलिखित राजवंशो में से किस राजवंश से प्रभावती गुप्त सम्बंधित थी?

A कण्व B शक C वाकाटक D मौर्य

2. नीचे दिए गए चित्र को देखिए और इस ऐतिहासिक शिल्पकृति की पहचान कीजिए:

A अशोक का सिंह शीर्ष
B गुप्तों का सिंह शीर्ष
C शुंगों का सिंह शीर्ष
D चोलों का सिंह शीर्ष

नोट- निम्नलिखित **प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों** के लिए प्र.सं. 2 के स्थान पर है|

अशोक के शासनकाल में धम्म महामात्यों की निम्नलिखित में से कौन सी भूमिका थी|

A धम्म के सिद्धांतों को बढ़ावा देना
B लोगों को न्याय दिलवाना
C सैन्य अभियान पर निगरानी रखना

D व्यापार और वाणिज्य का प्रबंधन करना

3. निम्नलिखित में से कौन-से कथन प्राचीन भारत के सिक्कों का सटीक वर्णन करते है?

I प्राचीन पार्थियन सोने के सिक्के उत्तर भारत में व्यापक व्यापर को दर्शाते हैं|

II दक्षिण भारत में प्राचीन रोमन सिक्के सीमाओं से परे व्यापार को दर्शाते है|

III प्राचीन यौधेयों द्वारा जारी किए गए ताम्बे के सिक्कों ने उनकी आर्थिक गतिविधि पर प्रकाश डाला|

IV प्राचीन गुप्त शासकों द्वारा जारी किए गए चाँदी के सिक्कों ने व्यापार को सुविधाजनक बनाया|

विकल्प:

A I, II और IV, सही है.

B II, III और IV सही है.

C I, III और IV सही है.

D I, II और III सही है.

4. निम्नलिखित जानकारी की सहायता से प्राचीन भारत के शासक की पहचान कीजिए:

* वह गुप्त शासकों में सबसे शक्तिशाली था|
* वह कला और संस्कृत साहित्य का संरक्षक था|
* उसके लोग उसे देवताओं के बराबर मानते थे|

विकल्प:

A चन्द्रगुप्त B समुद्रगुप्त C श्रीगुप्त D कुमारगुप्त

5. मगध के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से विकल्प सही है?

I एक बहुत शक्तिशाली महाजनपद था| II राजगाह मगध की राजधानी थी|

III मगध अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में था| IV मगध प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध था|.

Options:

A I, II और IV सही है B I, II और III सही है

C I, III और IV सही है D II, III और IV सही है

6. निम्नलिखित को कालानुक्रम से क्रमबद्ध कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

I अशोक का शासन II महापद्मनन्द का शासन

III हर्षवर्धन का शान IV समुद्रगुप्त का शासन

विकल्प:

A I, III, IV, II B III, II, I, IV

C II, I, IV, III D IV, III, I, II

7. नीचे दो कथन दिए गए है, अभिकथन (A ) और कारण (R)| इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A)- प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास को समझने के लिए जेम्स प्रिन्सेप का कार्य महत्वपूर्ण था|

कारण (R)- अभिलेखों को समझने से राजनीतिक घटनाओं और शासकों के बारे में जानकारी मिलती है|

विकल्प:

A अभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या करता है|

B अभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या नहीं करता है|

C अभिकथन (A ) सही है, परन्तु कारण (R) गलत है|

D अभिकथन (A ) गलत है, परन्तु कारण (R) सही है|

8. निम्नलिखित में से कौन सा छठी शताब्दी ई.पू. के दौरान प्रत्येक शहर को उसके संचार के प्राथमिक मार्ग से सही ढंग से जोड़ता है?

A पाटलिपुत्र-समुद्री मार्ग; उज्जयिनी- स्थल मार्ग;
पुहार- नदी मार्ग; मथुरा – तटीय मार्ग

Bपाटलिपुत्र - नदी मार्ग; उज्जयिनी - स्थल मार्ग;
पुहार - तटीय मार्ग; मथुरा - स्थल मार्ग;
Cपाटलिपुत्र - स्थल मार्ग; उज्जयिनी - तटीय मार्ग;
पुहार - नदी मार्ग; मथुरा - समुद्री मार्ग
D पाटलिपुत्र - तटीय मार्ग; उज्जयिनी - स्थल मार्ग;
पुहार - तटीय मार्ग; मथुरा - समुद्री मार्ग

9. दी गई जानकारी की सहायता से प्राचीन भारत के शासक की पहचान कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

*उसे देवानांपिय की उपाधि मिली|
* उसने स्तूपों के लिए बुद्ध के अवशेषों के अंश वितरित किए|
* वह पहला शासक था जिसने चट्टानों और स्तंभों पर संदेश खुदवाए|

विकल्प:

A समुद्रगुप्त B हर्षवर्धन C रुद्रदामन D असोक

10. प्रभावती गुप्त के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

I वह चन्द्रगुप्त मौर्य की पुत्री थी| II उसका विवाह वाकाटक शासक के साथ हुआ था|
III उसका संसाधनों पर स्वतंत्र अधिकार था| IV उसने लोगों को भूमि-अनुदान दिया|

. विकल्प :

A I, II और III
B II, III और IV
C I, III और IV
D I, II और IV

11. मौर्य साम्राज्य से सम्बंधित निम्नलिखित कथनों को पढ़िए :

I मगध के विकास के साथ-साथ मौर्य साम्राज्य का उदय हुआ|
II चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य साम्राज्य के संस्थापक थे|
III कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी थे|
IV असोक चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र थे|

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही है|

A I और III
B I और II
C III और IV
D II और III

12. निम्नलिखित जानकारी की सहायता से प्राचीन वंश की पहचान कीजिए:

* इन्होनें भव्य सोने के सिक्के जारी किए|
* प्रशस्ति के माध्यम से वहां के इतिहास का पुनर्निर्माण किया जा सकता है|
* हरिषेण इनके एक शासक के यहाँ दरबारी कवि थे|

A चोल वंश
B सातवाहन वंश
C कुषाण वंश
D गुप्त वंश

13. निम्न्लिखित घटनाओं को कालक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

I. गुप्त शासन की शुरुआत

II. मौर्य साम्राज्य का अंत
III. तमिलनाडु में पल्लवों का उदय
IV. कन्नौज के राजा के रूप में हर्षवर्धन का उदय
विकल्प
A I, III, II और IV
B II, I, III और IV
C III, IV, I और II
D IV, I, II और III

14 नीचे दो कथन दिए गए है, अभिकथन (A ) और कारण (R)| इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A)- आरंभिक भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है|
कारण (R)- इस काल में आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग, सिक्कों के विकास एवं बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के विकास के साथ जोड़ा जाता है|
विकल्प:
A अभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या करता है|
B अभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या नहीं करता है|
C अभिकथन (A ) सही है, परन्तु कारण (R) गलत है|
D अभिकथन (A ) गलत है, परन्तु कारण (R) सही है

15. निम्नलिखित में से किस शासक ने 'सुदर्शन झील' को पुनर्निर्मित किया?
A सिरी सतकर्नी
B शाकासेन
C सिरी विजय सतकर्नी
D रुद्रदामन

16. निम्नलिखित में से किस शासक ने अपनी प्रजा और अधिकारियों के लिए संदेशों को पहली बार अभिलेखित किया?
A चन्द्रगुप्त
B समुद्रगुप्त
C असोक
D बिन्दुसार

17. निम्नलिखित में से कौन सा भारत के राजवंशों का सही कालानुक्रमिक है?
A कुषाण, मौर्य, और गुप्त
B मौर्य, गुप्त और शक
C मौर्य, शक और गुप्त
D गुप्त, शक और मौर्य

18. इनमें से कौन सा राजवंश सबसे प्राचीन है?
A मौर्य
B गुप्त
C कुषाण
D कण्व

19. निम्नलिखित में से मौर्य साम्राज्य का संस्थापक कौन है?
A असोक
B कौटिल्य
C चन्द्रगुप्त मौर्य
D विक्रमादित्य

20. निम्नलिखित में से किसका अर्थ जेम्स प्रिंसेप द्वारा निकला गया?
A बंगाली और देवनागरी
B संस्कृत और प्राकृत

C ब्राह्मी और खरोष्ठी

D यूनानी और इंडो-यूनानी

21. स्तम्भ I का मिलान स्तम्भ II से कीजिए और निम्नलिखित में से सही विल्कल्प का चयन कीजिए:

| स्तम्भ I | स्तम्भ II |
|---|---|
| समय | घटना |
| a. 185 ई.पू. | i. सिकंदर का आक्रमण |
| b. 320 ई. | ii. चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण |
| c. 321 ई.पू. | iii. मौर्या साम्राज्य का अंत |
| d. 327-325 ई.पू. | iv. गुप्त शासन का आरंभ |

Option-

| | **a.** | **b.** | **c.** | **d.** |
|---|---|---|---|---|
| A. | iii | iv | ii | i |
| B. | iii | i | iv | ii |
| C. | i | ii | iii | iv |
| D. | iv | iii | ii | i |

**बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर** –

1 C वाकाटक

2 A अशोक का सिंह शीर्ष

दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के प्रश्न का उत्तर

A धम्म के सिद्धांतों को बढ़ावा देना

3 D I, II और III सही है.

4 B समुद्रगुप्त

5 A I, II और IV सही है

6 C II, I, IV, III

7 A अभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या करता है|

8 B पाटलिपुत्र - नदी मार्ग; उज्जयिनी - स्थल मार्ग;पुहार - तटीय मार्ग; मथुरा - स्थल मार्ग;

9 D असोक

10 B II, III और IV

11 B I और II

12 D गुप्त वंश

13 B II, I, III और IV

14 Aअभिकथन (A ) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R), अभिकथन (A ) की सही व्याख्या करता है|

15 D रुद्रदामन

16 C असोक

17 C मौर्य, शक और गुप्त

18 A मौर्य

19 C चन्द्रगुप्त मौर्य

20 C ब्राह्मी और खरोष्ठी

21 A. iii iv ii i

## लघुत्तरिय प्रश्न (शब्द सीमा 60-80 शब्द)

**1. मौर्य साम्राज्य के बारे में जानने के विभिन्न स्त्रोतों की व्याख्या कीजिए.**

**अथवा**

**"मौर्य साम्राज्य के इतिहास की पुनर्रचना के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया है|" इस कथन की उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए|**

उत्तर- 1. मौर्य साम्राज्य के इतिहास की पुनर्रचना के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया है

**1. पुरातात्विक प्रमाण**-इसमें मूर्तिकला, सिक्के, स्मारक जैसे स्तूप और गुफाएँ आदि शामिल है|

**2. साहित्यिक स्त्रोत**- मेगास्थनीज जो कि चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक यूनानी राजदूत था, ने मौर्य साम्राज्य और उसके प्रशासन के विषय में महत्वपूर्ण विवरण दिया है| अर्थशास्त्र भी मौर्यों के विषय में जानने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है| ये माना जाता है कि इस ग्रन्थ की रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के मत्री चाणक्य या कौटिल्य ने की थी| इसके अतिरिक्त बौद्ध, जैन और पौराणिक ग्रन्थ भी मौर्यों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं|

**3. असोक के अभिलेख**- असोक ने अपने संदेशों को शिलाओं और स्तंभों पर खुदवाया था| ऐसा करने वाला वह पहला शासक था| असोक के ये अभिलेख मौर्य इतिहास को जानने के सबसे मूल्यवान स्त्रोत माने जाते है| ये अभिलेख भारत के विभिन्न स्थानों से पाए गए है|

**2. गुप्त साम्राज्य के बारे में जानने के स्त्रोतों का वर्णन कीजिए.**

उत्तर- गुप्त साम्राज्य भारत के महत्वपूर्ण साम्राज्यों में से एक है| गुप्त साम्राज्य के बारे में जानने हेतु इतिहासकार विभिन्न स्त्रोतों का प्रयोग करते है| उनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्त्रोत इस प्रकार है-

**1. सिक्के**- गुप्त शासकों ने अपने शासन के दौरान कई सिक्कों का प्रचालन किया| सोने के सबसे दर्शनीय सिक्के गुप्त शासकों द्वारा चलाए गए| इन सिक्कों से हमें गुप्त साम्राज्य के विषय में काफी जानकारी मिलती है|

**2. अभिलेख और प्रशस्ति-** गुप्त काल के कई अभिलेख प्राप्त हुए है| समुद्रगुप्त के राजकवि हरिशेण ने प्रयाग प्रशस्ति की रचना की| इस प्रशस्ति में हरिशेण ने समुद्रगुप्त की सैन्य उपलब्धियों और उसके गुणों की प्रशंसा की है| ये प्रशस्ति इलाहाबाद स्तम्भ लेख पर उत्कीर्ण की गई है|

**3. पुस्तकें-** गुप्त साम्राज्य के दौरान विद्वानों ने कला, साहित्य, धर्म इत्यादि पर पुस्तकों की रचना की जिनसे गुप्त साम्राज्य के विषय में काफी जानकारी मिलती है|

**4. पुरातात्विक सामग्री**- गुप्त काल की पुरातात्विक सामग्री जैसे मूर्तियाँ, भवन, मंदिर आदि से भी इस विषय में बहुत जानकारी मिलती है|

**3. "मौर्य साम्राज्य के उदय को भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल माना जाता है|" इस कथन को स्पष्ट कीजिए|**

उत्तर- मौर्य साम्राज्य का उदय वास्तव में भारतीय इतिहास की एक बड़ी घटना है| जेम्स प्रिन्सेप द्वारा असोक के अभिलेख को पढ़ा जाना मौर्य इतिहास की पुनर्रचना में काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ| इससे प्राचीन भारतीय इतिहास के कई पहलुओं को परिभाषित करने में सहायता मिली| मौर्य साम्राज्य के महत्त्व को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है-

**1.साम्राज्य की विशालता**- यह भारत का पहला साम्राज्य था जो सम्पूर्ण उत्तर भारत, आज के पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में फैला हुआ था|

**2. कला और वास्तुकला-** मौर्य साम्राज्य के समय की पुरातात्विक सामग्रियां खासकर प्रस्तर मूर्तिकला अत्यंत उच्च कोटि की मानी जाती है| इसी तरह इस समय निर्मित स्तूप, गुफाएँ और पत्थरों के स्तम्भ भी उत्तम माने जाते है|

**3. असोक : एक महान राजा-** अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार असोक द्वारा लिखवाए गए अभिलेखों पर लिखे सन्देश अन्य शासकों के अभिलेखों की अपेक्षा भिन्न है | इसमें उन्हें यह लगा कि अन्य राजाओं की अपेक्षा असोक एक बहुत शक्तिशाली और परिश्रमी शासक थे| साथ ही वे उन राजाओं की अपेक्षा विनीत भी थे जो अपने नाम के साथ बड़ी-बड़ी उपाधियाँ जोड़ते थे| इसीलिए बीसवीं सदी के राष्ट्रवादी नेताओं ने भी असोक को प्रेरणा का स्त्रोत माना|

4. **राजनीतिक स्थायित्व-** मौर्य साम्राज्य की स्थापना से भारत में लम्बे समय के लिए राजनीतिक स्थिरता स्थापित हो गई|

**4. "प्रारंभिक भारतीय साम्राज्यों के विस्तार में सिक्कों की महत्वपूर्ण भूमिका थी|" उदाहरणों सहित कथन की व्याख्या कीजिए|**

उत्तर- सिक्कों का विकास और महत्व

**आहत सिक्के** – भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहले चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के ढाले गए, जो कई स्थानों से प्राप्त हुए हैं और विनिमय के प्रमुख माध्यम बने।

**नाम और प्रतिमा वाले सिक्के** – शासकों की प्रतिमा व नाम के साथ सिक्के सबसे पहले द्वितीय शताब्दी ई.पू. में हिन्द-यूनानी शासकों ने उत्तर-पश्चिम भारत में जारी किए।

**सोने के सिक्के** – प्रथम शताब्दी ई. में कुषाणों ने सोने के सिक्के जारी किए; गुप्त काल में सबसे भव्य स्वर्ण मुद्राएँ प्रचलित हुईं, जिनसे दूर-दराज़ के व्यापार में सुविधा और शाही लाभ बढ़ा।

**गणराज्यों के सिक्के** – पंजाब व हरियाणा के यौधेय गणराज्यों ने ताँबे के सिक्के जारी किए, जो उनकी व्यापारिक भागीदारी और रुचि को दर्शाते हैं।

**रोमन सिक्के** – दक्षिण भारत से प्राप्त बड़ी संख्या में रोमन सिक्के बताते हैं कि उस समय व्यापार राजनीतिक सीमाओं से परे था और यह क्षेत्र रोमन साम्राज्य से आर्थिक रूप से जुड़ा हुआ था।

**5. "छठी शताब्दी ई.पू. से उप महाद्वीप में कई शहरी केंद्र उभरे।" उदाहरणों सहित इस कथन की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- हाँ, ये एकदम सत्य है कि छठी शताब्दी ई.पू. से उप महाद्वीप में कई शहरी केंद्र उभरे। छठी शताब्दी ई.पू. को भारतीय इतिहास में कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों वाला माना जाता है। इनमें से एक परिवर्तन शहरों के विकास से सम्बन्धित है। इनमें से कुछ को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

**1. पाटलिपुत्र** – यह नगर छठी सदी ई.पू. में एक एक महत्वपूर्ण नगर के रूप में उभरा। यह मगध महाजनपद की राजधानी बना। यहाँ से कई शासकों जिनमें मौर्य, गुप्त आदि प्रमुख है, ने शासन किया। यह नदी मार्ग पर स्थित था जिससे संचार और परिवहन की सुविधा उपलब्ध थी।

**2. उज्जयनी-** यह भी एक राजधानी नगर था। यह अवन्ती महाजनपद की राजधानी था। यह एक महत्वपूर्ण सड़क मार्ग पर स्थित था।

**3. पुहार-** यह एक तटीय नगर था जहाँ से समुद्री मार्ग प्रारंभ होते थे। भारत इन मार्गों से विश्व के अन्य साम्राज्यों से जुड़ा हुआ था।

**4. मथुरा-** यह नगर कई वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र था। कुषाणों के शासनकाल में इस नगर के महत्त्व में अत्यधिक वृद्धि हुई

**6. अभिलेख साक्ष्यों की किन्हीं तीन सीमाओं का विश्लेषण कीजिए.**

उत्तर- यद्यपि इतिहास के अध्ययन के लिए अभिलेखों को महत्वपूर्ण माना जाता है परन्तु इनकी कुछ सीमाएं भी है। इन्हें निम्न बिदुओं में समझा जा सकता है-

**1. क्षतिग्रस्त या हल्के ढंग से उत्कीर्ण-** कुछ अभिलेख क्षतिग्रस्त हो सकते है या उनके कुछ अक्षर लुप्त हो सकते है या फिर वे बहुत ही हल्के ढंग से उत्कीर्ण किए हुए हो सकते है। इन सभी मामलों में इनके द्वारा इतिहास का पुनर्निर्माण मुश्किल है।

**2. केवल महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख** – सामान्यत: अभिलेख राजाओं, उनकी उपलब्धियों और उनसे सम्बंधित घटनाओं के विषय में जानकारी प्रदान करते है। किन्तु वे साधारण जनता के जीवन विषय में जानकारी नहीं देते है। उदाहरन के तौर पर खेती की दैनिक प्रक्रियाएं और रोजमर्रा की ज़िन्दगी के सुख-दुःख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं मिलता है क्योंकि अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का वर्णन करते है।

3. **शब्दों के वास्तविक अर्थ जानने की समस्या-** अभिलेखों में प्रयुक्त शब्दों का वास्तविक अर्थ जान पाना सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से सम्बंधित होते है।

**4. परिप्रेक्ष्य की समस्या-** अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे। इसलिए इन अभिलेखों में व्यक्त विचारों की समीक्षा अन्य विचारों के परिप्रेक्ष्य में करनी होगी ताकि अपने अतीत का बेहतर ज्ञान हो सके।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (शब्द सीमा 300-350 शब्द)**

**1. "आरम्भिक भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ईसा पूर्व आरंभिक राज्यों, साम्राज्यों और विभिन्न विचारधाराओं के उद्भव का काल था।" इस कथन को न्यायसंगत ठहराइये।**

उत्तर- छठी शताब्दी ई.पू. भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण समय मन जाता है। इस समय कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिन्हें निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

**1. आरंभिक राज्यों और महाजनपदों का उदय-** यह वह समय था जब भारत में आरंभिक राज्य विकसित हुए। बौद्ध और जैन ग्रन्थ सोलह महत्वपूर्ण राज्यों के बारे में बताते है जिन्हें महाजनपद कहते है। वज्जि, मगध, कोशल, कुरु, अवन्ती और गांधार इनमें

से कुछ महत्वपूर्ण महाजनपद है| अधिकांश महाजनपद एक ही शासक द्वारा शासित थे जबकि कुछ पर राजाओं का समूह शासन करता था| इस तरह के महाजनपद गण या संघ कहलाते थे|

**2. लोहे का बढ़ता प्रयोग**- इस समय लोहे का प्रयोग बहुतायत से किया जाने लगा| लोहे से बने औजार और हथियार अधिक प्रभावी थे|

**3.सिक्कों का विकास-** छठी सदी **ई.** पू. में सिक्कों का प्रचलन व्यापक रूप से होने लगा| प्रारंभिक सिक्के आहत सिक्के थे जो चाँदी और ताम्बे के बने होते थे| इसके पश्चात् हिन्द-यूनानी, कुषाण, गुप्त और कबायली गणराज्य वाले यौधेयों ने भी विभिन्न सिक्के प्रचलित किए जिनसे व्यापार को बढ़ाने में मदद मिली| दक्षिण भारत के कई स्थानों से सोने के रोमन सिक्कों के ढेर मिले है|

**4. नगरों का उद्भव-** इस काल में पाटलिपुत्र, मथुरा, तक्षशिला, उज्जयिनी, पुहार, कन्नौज, विदिशा जैसे महत्वपूर्ण नगर विकसित हुए| ये नगर राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यावसायिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र थे|

**5. विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का विकास-** इस काल में कई दार्शनिक विचारधाराओं का भी विकास हुआ जिनमें बौद्ध और जैन प्रमुख है| लगभग चौसंठ प्रकार की दार्शनिक विचारधाराएँ इस समय विकसित हुई|

**6. कृषि उत्पादन में वृद्धि**- इस समय कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई| लोहे के फाल वाले हल और धान की रोपाई तथा सिंचाई के लिए तालाबों और नहरों के प्रयोग से उत्पादन का स्तर बढ़ गया|

**2. "छठी और चौथी सदी ई.पू. के बीच मगध एक शक्तिशाली महाजनपद बन गया|" इस कथन को न्यायसंगत ठहराइए|**

उत्तर- छठी और चौथी सदी ई.पू. के बीच मगध एक शक्तिशाली महाजनपद बन गया|. जिन कारकों ने उसे शक्तिशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्हें निम्न बिदुओं में समझा जा सकता है-

**1. उपजाऊ मैदान-** मगध एक ऐसे क्षेत्र में स्थित था जहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ थी| और जल की भी उपलब्धता थी|| इससे यहाँ कृषि में उत्पादन बहुत अधिक होता था|

**2. लोहे की उपलब्धता**- मगध के आसपास लोहे की खदाने थी जहाँ से भरी मात्रा में लोहा प्राप्त होता था| लोहे के बने औजार और हथियार अधिक कारगर थे|.

**3. हाथियों की उपलब्धता**- हाथी जो कि उस समय सेना का एक शक्तिशाली अंग थे, मगध के आसपास के जंगलों में बहुतायत से पाए जाते थे|

**4. संचार की सुगम सुविधा-** कई नदियाँ मगध से होकर बहती थी| गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मगध के शासकों और वहां के लोगों के लिए संचार की सुगमता प्रदान करती थी|

**5. महत्वकांक्षी शासक-** प्रारंभिक बौद्ध और जैन लेखकों मगध के शातिशाली होने का श्रेय बिम्बिसार, अजातसत्तु और महापद्मानंद जैसे शासकों और उनके मंत्रियों को दिया है जिन्होंने उनकी नीतियों को लागू करने में मदद की|

**6. राजधानी नगरों की स्थिति-** राजगाह मगध की प्रारंभिक राजधानी थी| यह चारों ओर पहाड़ियों से घिरा था और इस प्रकार एक सुरक्षित स्थिति में था| चौथी सदी ई.पू. में पाटलिपुत्र राजधानी बना| ये गंगा और अन्य नदियों के संगम पर स्थित था| इस प्रकार यहाँ से संचार और परिवहन की सुगमता थी|

**3. प्राचीन समाज में भूमिदान की प्रकृति और विशेषताओं का परिक्षण कीजिए|**

उत्तर-भूमिदान की परंपरा ईसवी की प्रारंभिक सदियों से शुरू हुई| अधिकांश भूमिदानों का उल्लेख अभिलेखों में किया गया| इन अभिलेखों से हमें उस समय की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, और राजनीतिक परिस्थतियों की जानकारी मिलती है| भूमिदान की प्रकृति और विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है-

**1.** कुछ भूमिदान अभिलेख पत्थरों पर लिखे गए थे किन्तु अधिकांश ताम्र पत्रों पर खुदे होते थे| जिन्हें संभवतः उन लोगों को प्रमाण रूप में दिया जाता था जो भूमिदान लेते थे||

**2.** अधिकांश भूमिदान अभिलेख संस्कृत में थे| विशेषकर सातवीं शताब्दी के बाद के अभिलेखों के कुछ अंश संस्कृत में है और कुछ तमिल और तेलुगु जैसी स्थानीय भाषाओँ में है|

**3.** भूमिदान के जो प्रमाण मिले है वे साधारण तौर पर धार्मिक संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिए गए थे|

**4.** प्रभावती गुप्त जो कि चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थी और जिसका विवाह वाकाटक परिवार में हुआ था, ने भी भूमिदान दिया था| इससे कुछ मामलों में महिलाओं के संपत्ति पर अधिकार का पता लगता है| यद्यपि ये संस्कृत ग्रंथों के विपरीत बात थी|

**5.** इतिहासकारों में भूमिदान का प्रभाव एक गरम वाद-विवाद का विषय बना हुआ है|

**6.** कुछ इतिहासकार मानते है कि भूमिदान शासक वंश द्वारा कृषि को नए क्षेत्रों प्रोत्साहित करने की एक रणनीति थी|

**7.** जबकि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि भूमिदान से दुर्बल होते राजनीतिक प्रभुत्व का संकेत मिलता है| अर्थात राजा का शासन सामंतों पर दुर्बल होने लगा तो उन्होंने भूमिदान के माध्यम से अपने समर्थक जुटाने आरंभ कर दिए|

**8.** उनका यह भी मानना है कि राजा स्वयं को उत्कृष्ट स्तर के मानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे क्योंकि उनका नियंत्रण ढीला होता जा रहा था| इसलिए वे अपनी शक्ति का आडम्बर प्रस्तुत कारण चाहते थे|

---

**(स्त्रोत आधारित प्रश्न)**

**31. दिए गए स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**: 1+1+2=4

**पाटलिपुत्र का इतिहास**

प्रत्येक नगर का अपना इतिहास था| उदहारण के तौर पर, पाटलिपुत्र का विकास पाटलिग्राम नाम के एक गाँव से हुआ| फिर पांचवीं सदी ई.पू. में मगध के शासकों ने अपनी राजधानी राजगाह से हटाकर इसे बस्ती में लाने का निर्णय किया और इसका नाम बदल दिया| चौथी शताब्दी ई.पू. तक आते-आते यह मौर्य साम्राज्य की राजधानी और एशिया के सबसे बड़े नगरों में से एक बन गया| बाद में इसका महत्त्व कम हो गया और जब चीनी यात्री श्वेन त्सांग सातवीं सदी ई. में यहाँ आया तो इसे यह नगर खंडहर में बदला मिला और उस समय यहाँ की जनसंख्या भी कम थी|

1.1 राजगाह से पाटलिपुत्र में स्थानांतरण के मगध साम्राज्य पर पड़े मुख्य प्रभाव की परख किजिए|

उत्तर - राजधानी के राजगाह से पाटलिपुत्र में स्थानांतरण से मगध को रणनीतिक लाभ हुआ| क्योंकि पाटलिपुत्र मगध के मध्य में स्थित था| इसका एक और लाभ ये था कि यह गंगा और सोन नदियों के संगम पर स्थित था|

1.2 श्वेन त्सांग पाटलिपुत्र के बारे में क्या सन्देश देना चाहता था?

उत्तर- श्वेन त्सांग पाटलिपुत्र के विषय में बताना चाहता था की सातवीं सदी में जब वह पाटलिपुत्र आया तब तक भारत की राजनीतिक स्थितियां बदल चुकी थी और इसके साथ-साथ पाटलिपुत्र का महत्त्व भी समाप्त हो गया था| उसने पाटलिपुत्र को कएक खंडहर के रूप में पाया|

1.3 मगध साम्राज्य के इतिहास में पाटलिपुत्र की क्या भूमिका थी?

उत्तर- मगध साम्राज्य के इतिहास में पाटलिपुत्र की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी| यह नगर लम्बे समय तक मगध की राजधानी रहा| मगध पर शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों जैसे हर्यंक, नंद, मौर्य और गुप्त शासकों ने इसे अपनी राजधानी बनाकर रखा|

**2. दिए गए स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** 1+1+2=4

**राजा की वेदना**

जब देवानांपिय पियदस्सी ने अपने शासन के आठ वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग (आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की| डेढ़ लाख पुरुषों को निष्काषित किया गया; एक लाख मरे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई| कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानांपिय धम्म के स्नेह और उपदेश में डूब गए है| यही देवानांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है| देवानांपिय के लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहां लोग मारे जाते है, निष्काषित किए जाते है|

2.1 राजा देवानांपिय पियदस्सी की कलिंग विजय ने उनके शासन के दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर--कलिंग युद्ध के बाद देवानांपिय पियदस्सी अर्थात असोक का हृदय युद्ध में हुए विनाश के कारण वेदना से भर गया| इसके पश्चात् उन्होंने युद्ध की नीति का त्याग करके शांति और धम्म की नीति अपनाई|

2.2 कलिंग विजय ने प्रजा के प्रति राजा के व्यवहार को किस प्रकार बदल दिया?

उत्तर-. कलिंग विजय के पश्चात् राजा क व्यवहार प्रजा के प्रति बदल गया| उसने प्रजा के कल्याण के कार्य शुरू कर दिए|

2.3 राजा के परिवर्तन ने धम्म के प्रसार को किस प्रकार आकार दिया?

उत्तर- कलिंग युद्ध के बाद असोक युद्ध प्रेमी की बजाय धम्म प्रेमी बन गया| और उसने धम्म के स्वरूप को आकार प्रदान किया| उसने धम्म में शांति , अहिंसा और सामाजिक कल्याण को प्रमुखता प्रदान की और इनकी प्राप्ति के लिए प्रयास किए|

## मानचित्र कार्य

## मानचित्र 1

## महाजनपद और नगर

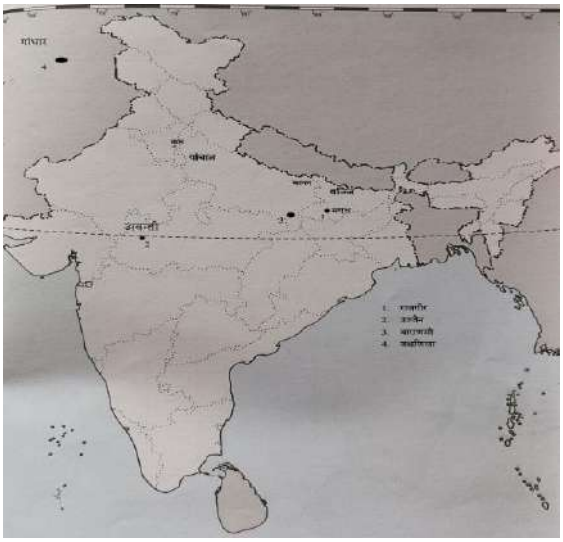

## मानचित्र 2

## असोक के अभिलेख

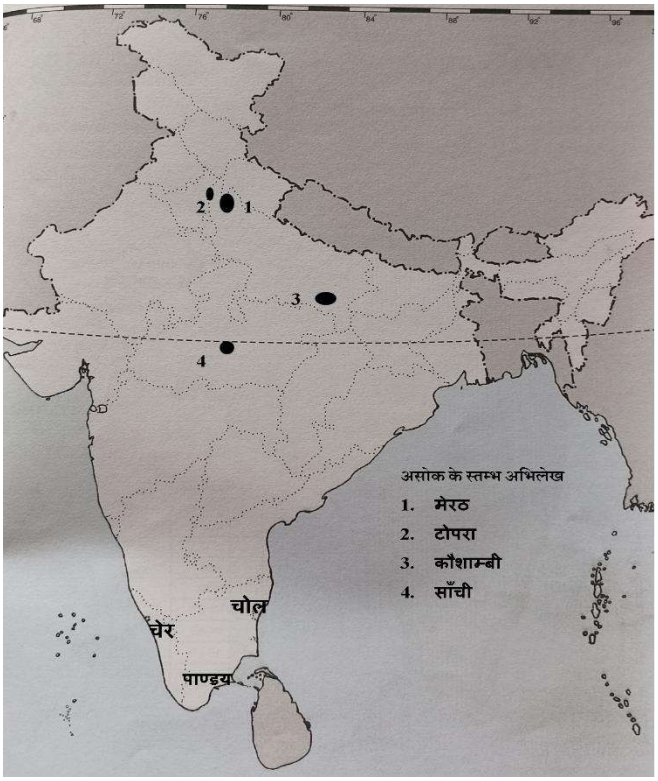

# विषय 3, बंधुत्व, जाति और वर्ग
# आरंभिक समाज (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

## अध्ययन उद्देश्य

• इस पाठ में हम यह समझेंगे कि महाभारत हमें प्रारंभिक भारतीय समाज के बारे में जानने में कैसे मदद करता है।
• मुख्य शब्द जैसे - बंधुत्व, जाति, वर्ण, पितृवंश, बहुपतित्व, स्त्रीधन आदि को समझना ।
• प्राचीन ग्रंथों में वर्णित विवाह के विभिन्न रूपों को जानेंगे।
• समझेंगे कि परिवार और विवाह नियमों ने समाज को कैसे आकार दिया।
• जाति पर ब्राह्मणवादी और बौद्ध परंपराओं के विचारों की तुलना।
• प्रारंभिक समाजों में महिलाओं की भूमिका और स्थिति का वर्णन।
• सामाजिक मानदंडों को समझने के लिए महाभारत की कहानियों का विश्लेषण।
प्राचीन भारत का अध्ययन करने के लिए सरल स्रोतों, मानचित्रों और उदाहरणों का उपयोग।

## अध्याय का सारांश

**ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महाभारत**
• सबसे बड़े महाकाव्यों में से एक: 100000 श्लोक।
• कथा (कहानियाँ) और उपदेशात्मक (नियम/मानदंड) भागों को मिलाता है।
• प्रारंभिक समाजों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को दर्शाता है।
• वी.एस. सुकथांकर (1919-1966) द्वारा आलोचनात्मक रूप से संपादित।

**पैतृक वंश:**
• पुरुष वंश के माध्यम से विरासत।
• बेटों को पिता की संपत्ति, उपाधियाँ और सिंहासन विरासत में मिलते थे।

**विवाह प्रथाएँ:**
• अंतर्विवाह, बहिर्विवाह, बहुपत्नी प्रथा एवं बहुपति प्रथा
• गोत्र नियम: एक ही गोत्र में विवाह वर्जित।

**बहुविवाह और बहुपतित्व:**
• बहुविवाह: राजाओं (कई पत्नियाँ) में आम।
• बहुपतित्व: द्रौपदी के पांडवों से विवाह में देखा गया।

**महिलाओं की स्थिति:**
• संपत्ति पर सीमित अधिकार।
• स्त्रीधन (विवाह के समय दी जाने वाली निजी संपत्ति) का स्वामित्व हो सकता है।
• पैतृक विरासत पर कोई दावा नहीं।

**जाति (वर्ण) व्यवस्था**
• चार वर्ण: 1. ब्राह्मण: पुजारी, विद्वान। 2. क्षत्रिय: राजा, योद्धा। 3. वैश्य: व्यापारी, कृषक। 4. शूद्र: सेवक।
• स्थिति वंशानुगत; जन्म से निर्धारित व्यवसाय।
• चांडाल: 'प्रदूषणकारी' कार्यों को संभालने वाले बहिष्कृत लोग।

**व्यवसाय और गिल्ड**
• गिल्ड (श्रेणियाँ) व्यापार और शिल्प व्यवसायों को विनियमित करते थे।
• वैश्य व्यापार, पशुपालन, कृषि को संभालते थे
• शूद्र दासता में लगे हुए थे।

**गैर-क्षत्रिय राजा:**
• मौर्य, शुंग, कण्व और शक हमेशा क्षत्रिय वर्ण के नहीं थे।
• राजनीतिक शक्ति जन्म पर आधारित नहीं थी।

**सातवाहन समाज:**
• माँ का गोत्र का इस्तेमाल किया।

• बहुविवाह और कभी-कभी अंतर्विवाह का अभ्यास किया।

**निषाद और म्लेच्छ:** वनवासी, पशुपालक और विदेशी अक्सर वर्ण व्यवस्था से बाहर रखे जाते थे।

**जाति की बौद्ध आलोचना**

• सामाजिक पदानुक्रम पर सवाल उठाया।

• स्थिति आचरण और धन पर आधारित थी, जन्म पर नहीं।

• राजत्व के सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की वकालत की।

**पाठ्य परंपराएँ**

• ब्राह्मणवादी ग्रंथ: धर्मशास्त्र, धर्मसूत्र, मनुस्मृति।

• बौद्ध ग्रंथ: सुत्त पिटक, जातक।

• तमिल संगम साहित्य वैकल्पिक सामाजिक प्रथाओं को दर्शाता है।

**पुरातात्विक साक्ष्य**

• हस्तिनापुर (बी.बी. लाल) में उत्खनन ऐतिहासिक वास्तविकता का समर्थन करता है। शहरी बस्तियाँ सामाजिक और राजनीतिक विकास को दर्शाती हैं।

• महाभारत की गतिशील प्रकृति, मौखिक और लिखित परंपराओं के माध्यम से विकसित हुई।

• कई भाषाओं और क्षेत्रों में पुनर्कथन एवं परंपराओं के बीच चल रहे संवाद को दर्शाता है।

## माइंड मैप

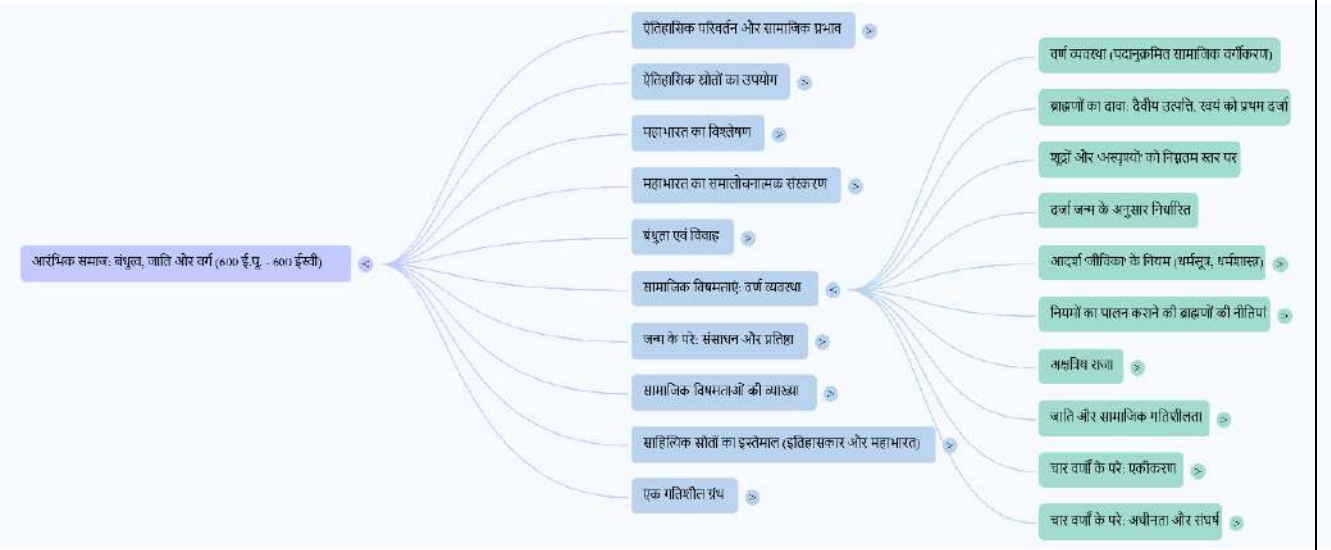


## बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित जानकारी की सहायता से महाभारत के पात्र की पहचान करें:

• वह राक्षस कुल से थी।

• उसका विवाह भीम से हुआ था।

• वह घटोत्कच की माँ थी।

A. भीलनी B. सुभद्रा C. द्रौपदी D. हिडिम्बा

2. निम्नलिखित जानकारी के आधार पर महाभारत के पात्र की पहचान करें:

• एक निषाद था

• द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता था

• गुरु दक्षिणा के रूप में द्रोणाचार्य को अपना दाहिना अंगूठा दिया

A. घटोत्कच B. एकलव्य C. नकुल D. सहदेव

3. पाणिनि की पुस्तक 'अष्टाध्यायी' निम्नलिखित में से किस विषय पर आधारित है?

A. पुराण B. व्याकरण C. गणित D. चिकित्सा (आयुर्वेद)

4. सुश्रुत की पुस्तक 'सुश्रुत संहिता' निम्नलिखित में से किस विषय पर आधारित है?

A. व्याकरण B. चिकित्सा (आयुर्वेद) C. खगोल विज्ञान D. गणित

5. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

A. अंतर्विवाह - गोत्र के बाहर विवाह

B. बहिर्विवाह - पुरुष की कई पत्नियाँ होना

C. बहुविवाह - गोत्र के अंदर विवाह

D. बहुपतित्व - महिला के कई पति होना

6. कॉलम I को कॉलम II से सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:

कॉलम I कॉलम II

(महाभारत के पात्र) (भूमिका)

1. दुर्योधन (i) हिडिम्बा का पुत्र

2. गांधारी (ii) धृतराष्ट्र का सबसे बड़ा पुत्र

3. कुंती (iii) पांडवों की माँ

4. घटोत्कच (iv) दुर्योधन की माँ

विकल्प:

A. 1-(iv), 2-(iii), 3-(ii), 4-(i)

B. 1-(ii), 2-(i), 3-(iii), 4-(iv)

C. 1-(ii), 2-(i), 3-(iv), 4-(iii)

D. 1-(ii), 2-(iv), 3-(iii), 4-(i)

7. महाभारत काल के दौरान धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में निर्धारित सामाजिक व्यवहार के नियमों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

A. इन मानदंडों का पालन केवल ब्राह्मणों द्वारा किया जाना था।

B. इन मानदंडों का पालन सार्वभौमिक रूप से करना पड़ता था।

C. इन मानदंडों का सार्वभौमिक रूप से पालन नहीं किया गया था।

D. केवल शासक ही इन मानदंडों का पालन करते थे।

8. निम्नलिखित में से कौन महाभारत के कथात्मक खंडों की विशेषता है?

A. उनमें आर्थिक विवरण हैं

B. उनमें संकलित कहानियाँ हैं

C. वे सांस्कृतिक अनुष्ठानों का वर्णन करते हैं

D. वे दार्शनिक चर्चाएँ हैं

9. निम्नलिखित जानकारी की सहायता से प्राचीन भारतीय ग्रंथ की पहचान करें

• लगभग 200 ईसा पूर्व और 200 ईसवी के बीच संकलित संस्कृत ग्रंथ।

• कानूनों की एक व्यापक संहिता प्रदान की।

• सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर दिशा-निर्देश दिए।

A. मनुस्मृति B. रामायण C. उपनिषद D. वेद

नीचे दो कथन कथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। कथनों को पढ़ें और उचित उत्तर चुनें।

10. कथन (A): महाभारत सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को दर्शाता है।

कारण (R): इसकी रचना ब्राह्मणों द्वारा एक ही चरण में की गई थी।

विकल्प:

A. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही तर्क है।

B. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही तर्क नहीं है।

C. (A) सत्य है, (R) असत्य है।

D. (A) असत्य है, (R) सत्य है।

11. कथन (A): पितृवंशीय प्रथा ने शाही उत्तराधिकार को मजबूत किया।

कारण (R): राजत्व पिता से पुत्र को हस्तांतरित होता था।

विकल्प:

A. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही तर्क है।

B. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही तर्क नहीं है।

C. (A) सत्य है, (R) असत्य है।

D. (A) असत्य है, (R) सत्य है।

12. अभिकथन (A): एकलव्य को औपचारिक प्रशिक्षण से वंचित रखा गया था।

कारण (R): द्रोण ने शिक्षण में सख्त जाति नियमों का पालन किया।

विकल्प:

A. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही तर्क है।

B. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही तर्क नहीं है।

C. (A) सत्य है, (R) असत्य है।

D. (A) असत्य है, (R) सत्य है।

13. अभिकथन (A): सातवाहन शासकों ने मातृनाम( मेट्रोनेमिक्स) का इस्तेमाल किया।

कारण (R): महिलाएँ अक्सर अपने गोत्र नाम रखती थीं।

विकल्प:

A. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही तर्क है।

B. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही तर्क नहीं है।

C. (A) सत्य है, (R) असत्य है।

D. (A) असत्य है, (R) सत्य है।

14. अभिकथन (A): प्राचीन भारत में गिल्ड महत्वपूर्ण आर्थिक इकाइयाँ थीं।

कारण (R): गिल्ड स्थानीय प्रशासनिक निर्णयों को नियंत्रित करते थे।

विकल्प:

A. (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही तर्क है।

B. (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही तर्क नहीं है।

C. (A) सत्य है, (R) असत्य है।

D. (A) असत्य है, (R) सत्य है।

15. निम्नलिखित की सहायता से भारत के प्राचीन शासक की पहचान करें और सही विकल्प चुनें:

• सातवाहन वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था।

• एक अद्वितीय ब्राह्मण होने का दावा किया।

• ऋषि वशिष्ठ का पुत्र था।

विकल्प:

A. भास्करवर्मन

B. रुद्रदामन

C. गौतमी-पुत सिरी-सातकानि

D. विक्रमादित्य द्वितीय

16. कॉलम I को कॉलम II से मिलाएं और महाभारत के संदर्भ में सही विकल्प चुनें।

| कॉलम I (चरित्र) | कॉलम II (भूमिका) |
|---|---|
| A. युधिष्ठिर | I. पांडवों की माता |

B. धृतराष्ट्र ii. कौरवों की माता
सी. कुंती iii. पांडवों में सबसे ज्येष्ठ
डी. गांधारी iv. दुर्योधन के पिता
विकल्प:
A. a-ii, b-iv, c-iii, d-i
B. a-iv, b-iii, c-ii, d-i
C. a-iii, b-iv, c-i, d-ii
D. a-I, b-iii, c-iv, d-ii
17. कौन सा विवाह का रूप नहीं है?
A. ब्रह्मा B. आर्ष C. भिक्षा D. गन्धर्व
18. महाभारत से किसका संबंध नहीं है?
A. अर्जुन B. द्रौपदी C. द्रोण D. अशोक
19. किसे म्लेच्छ नहीं माना जाता था?
A. शक B. निषाद C. मौर्य D. यवन
20. कौन सा वर्ण व्यवस्था का भाग नहीं है?
A. वैश्य B चांडाल C. क्षत्रिय D. शूद्र
21. कौन शासक नहीं था?
A. गोतमी-पुत्र सिरी सातकानी B. रुद्रदामन C. दुर्योधन D. असोक
उत्तर
• 1. (d) हिडिम्बा • 2. (b) एकलव्य • 3. (B) व्याकरण • 4. (B) चिकित्सा (आयुर्वेद)
• 5. (D) बहुपतित्व - कई पति वाली महिला
• 6. (D) 1-(ii), 2-(iv), 3-(iii), 4-(i)
• 7. (B) इन मानदंडों का पालन सार्वभौमिक रूप से करना पड़ता था।
• 8. (B) इनमें संकलित कहानियाँ हैं • 9. (A) मनुस्मृति
• 10. (C) A सत्य है; R असत्य है।
• 11. (A) A और R दोनों सत्य हैं; R, A की व्याख्या करता है।
• 12. (A) A और R दोनों सत्य हैं; R, A की व्याख्या करता है।
• 13. (A) A और R दोनों सत्य हैं; R, A की व्याख्या करता है।
• 14. (B) A और R दोनों सत्य हैं; R, A की व्याख्या नहीं करता है।
• 15. (C) गौतमी-पुत सिरी-सातकनी • 16. (C) a-iii, b-iv, c-i, d-ii • 17. (C) भिक्षा
• 18. (D) अशोक • 19. (C) मौर्य • 20. (B) चांडाल
• 21. (C) दुर्योधन

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60-80 शब्द)

**22. महाभारत को प्रारंभिक भारतीय समाज को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत क्यों माना जाता है?**

1. **सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब:**
   महाभारत में बंधुत्व (रिश्ते-नातेदारी), जाति व्यवस्था, वर्ण विभाजन और लिंग आधारित भूमिकाओं का स्पष्ट वर्णन मिलता है।
2. **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि:**
   इसमें कथात्मक और उपदेशात्मक भागों के माध्यम से परिवार, उत्तराधिकार, संघर्ष और राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाया गया है।
3. **बहुस्तरीय रचना:**
   यह ग्रंथ कई सदियों में विकसित हुआ, जिससे यह ब्राह्मणवादी समाज के बदलते मूल्यों और परंपराओं को दर्शाता है।

**23. संक्षेप में समझाइए कि महाभारत ने पितृसत्ता की धारणा को कैसे मजबूत किया।**

1. **पुत्रों द्वारा उत्तराधिकार:**
   महाभारत की कथा पांडवों और कौरवों के उत्तराधिकार विवाद पर आधारित है, जो यह दर्शाती है कि संपत्ति और राजसिंहासन पुत्रों को ही मिलते थे।
2. **पुत्र उत्पत्ति पर ज़ोर:**
   धृतराष्ट्र और पांडु जैसे पात्रों के उदाहरण समाज में पुरुष संतान की आवश्यकता और अपेक्षा को दर्शाते हैं।
3. **राजकीय कथाएँ सामाजिक मान्यता को समर्थन देती हैं:**
   महाभारत में राजवंशों के माध्यम से यह स्थापित किया गया है कि पितृसत्ता ही समाज की स्वाभाविक और आवश्यक व्यवस्था है।

**24. चांडालों के लिए 'मनुस्मृति' में बताए गए कर्तव्यों की जाँच करें।**

**उत्तर:** चांडालों के लिए 'मनुस्मृति' में बताए गए कर्तव्यों की व्याख्या नीचे की गई है:

क. चांडालों या अछूतों को पदानुक्रम में सबसे नीचे रखा जाता था।

ख. उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था, फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करना पड़ता था और मृतकों के कपड़े , लोहे के गहने पहनने पड़ते थे।

ग. उन्हें रात में गाँवों और शहरों में घूमने की अनुमति नहीं थी।

घ. वे जल्लाद के रूप में काम करते थे और उन लोगों के शवों का निपटान करना पड़ता था जिनके कोई रिश्तेदार नहीं थे।

इ. उन्हें सड़क पर ताली बजानी पड़ती थी ताकि लोग उन्हें न देखें।

च. उनका स्पर्श और कुछ मामलों में उन्हें देखना भी उन लोगों द्वारा अपवित्र माना जाता था जो सामाजिक व्यवस्था के शीर्ष पर होने का दावा करते थे।

छ. जो लोग खुद को शुद्ध मानते थे, वे तथाकथित अछूतों से भोजन लेने से बचते थे।

**25. महाभारत की भाषा और विषय-वस्तु को संक्षेप में समझाइए।**

उत्तर: महाभारत की भाषा और विषय-वस्तु नीचे दी गई है:

A. महाभारत संस्कृत भाषा में लिखी गई है।

B. अन्य भाषाओं में भी इसके अलग-अलग संस्करण हैं। ये लोगों और समुदायों के बीच संवाद की निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से लिखे गए हैं।

C. महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत अन्य वेदों की तुलना में बहुत सरल है।

D. महाभारत की विषय-वस्तु कथात्मक और उपदेशात्मक दो खंडों में विभाजित है।

E. कथात्मक खंड में कहानियाँ हैं।

F. उपदेशात्मक खंड में सामाजिक मानदंडों के बारे में निर्देश हैं।

G. हालाँकि, यह विभाजन बहुत कठोर नहीं है। उपदेशात्मक खंड में कहानियाँ शामिल हैं और कथात्मक खंड में एक सामाजिक संदेश है।

H. कई इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि महाभारत एक नाटकीय कहानी थी और उपदेशात्मक खंड बाद में जोड़ा गया था, परन्तु कुछ इतिहासकार इसे वास्तविक मानते हैं

I. इतिहासकारों को संदेह है कि युद्ध वास्तव में हुआ था या नहीं, जैसा कि इसमें वर्णित है। यह प्रसंग अभी भी खोज का विषय है.

J. कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कथा में वास्तविक संघर्ष की स्मृति संरक्षित है जबकि अन्य बताते हैं कि युद्ध का कोई प्रामाणिक प्रमाण नहीं है।

**26. ब्राह्मणवादी प्रथा के अनुसार किन्हीं दो गोत्रों का उल्लेख करें। गोत्र की विरासत के बारे में सातवाहन शिलालेख से हमें क्या साक्ष्य मिलते हैं?**

**उत्तर:** 1000 ईसा पूर्व से लोगों को गोत्रों के आधार पर वर्गीकृत करने की ब्राह्मणवादी प्रथा थी। गोत्रों की मुख्य विशेषता नीचे बताई गई है:

a. प्रत्येक गोत्र का नाम एक वैदिक ऋषि के नाम पर रखा गया था।

b. एक ही गोत्र के सभी लोग उसके वंशज माने जाते थे।

c. विवाह के समय महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने पिता का गोत्र छोड़कर अपने पति का गोत्र अपना लें।

d. एक ही गोत्र के सदस्य विवाह नहीं कर सकते थे। सातवाहन शिलालेख से हमें गोत्र की विरासत के बारे में जो साक्ष्य मिलते हैं, वे हैं-

i. शिलालेख में ऐसी जानकारी दी गई है जिससे इतिहासकारों को विवाह सहित पारिवारिक संबंधों के बारे में जानकारी मिलती है।

ii. सातवाहन शासकों से विवाह करने वाली कई महिलाओं ने अपने पिता के गोत्र को जारी रखा और अपने पति के गोत्र में परिवर्तन नहीं किया।

**27. वर्णन करें कि मनुस्मृति के अनुसार, माता-पिता की मृत्यु के बाद पैतृक संपत्ति को महिलाओं के अधिकारों के विशेष संदर्भ में कैसे विभाजित किया जाना चाहिए।**

**उत्तर:** A. मनुस्मृति के अनुसार, माता-पिता की मृत्यु के बाद, पैतृक संपत्ति को बेटों के बीच समान रूप से विभाजित किया जाना चाहिए, जिसमें सबसे बड़े बेटे के लिए विशेष हिस्सा होना चाहिए।

B. महिलाओं को संपत्ति के हिस्से का दावा करने का कोई अधिकार नहीं था।

C. महिलाओं को अपने विवाह के अवसर पर प्राप्त उपहारों को स्त्रीधन के रूप में रखने की अनुमति थी।

D. इसे बच्चों द्वारा विरासत में प्राप्त किया जा सकता था, लेकिन पति का इस पर कोई दावा नहीं था।

E. मनु स्मृति, स्त्रियों को पति की अनुमति के बिना पारिवारिक संपत्ति या यहाँ तक कि अपनी खुद की कीमती वस्तुओं को रखने के खिलाफ है.

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (300-350 शब्द)**

**28. समझाएँ कि कुलीन परिवारों में पितृवंशीयता विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्यों रही होगी।**

**उत्तर: पितृवंशीय व्यवस्था कुलीन परिवारों में निम्नलिखित कारणों से विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही होगी:-**

A. पितृवंशीय व्यवस्था का अर्थ है पिता से पुत्र, पौत्र आदि की वंशावली का पता लगाना।

B. इस अवधारणा को महाभारत में व्यापक रूप से समझाया गया था, लेकिन यह युग से पहले भी मौजूद थी।

C. महाभारत ने इस विचार को पुष्ट किया कि यह मूल्यवान थी।

D. इस प्रणाली के तहत, राजा की मृत्यु के बाद पुत्र अपने पिता के संसाधनों का दावा कर सकते थे, जिसमें सिंहासन भी शामिल था।

E. छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर अब तक के अधिकांश शासक राजवंशों ने इस प्रणाली का पालन किया, हालाँकि, इसमें कुछ भिन्नताएँ थीं।

F. कभी-कभी भाई एक-दूसरे के उत्तराधिकारी बनते थे। कभी-कभी कोई पुत्र नहीं होता था।

G. कभी-कभी वह सगा-संबंधी सिंहासन का दावा करता था और अपवादस्वरूप मामलों में महिलाएँ सिंहासन का दावा करती थीं।

H. पितृवंशीय व्यवस्था की अवधारणा केवल शासक परिवारों तक ही सीमित नहीं थी।

I. यह धनी पुरुषों और ब्राह्मणों सहित उच्च स्थिति वाले लोगों के दृष्टिकोण तक भी विस्तारित थी।

**29. चर्चा करें कि क्या प्रारंभिक राज्यों में राजा हमेशा क्षत्रिय होते थे।**

**उत्तर:** A. शास्त्र के अनुसार, केवल क्षत्रिय ही राजा हो सकता थे।

B. लेकिन कई महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अलग-अलग वर्णों से भी हुई थी।

C. मौर्य राजाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि के उदभव पर भी गर्म जोशी से बहस होती रही है।

D. ब्राह्मणवादी ग्रंथों के अनुसार, वे निम्न वंश के थे, लेकिन बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, वे क्षत्रिय थे।

E. मौर्य राजाओं, शुंग और कण्व के उत्तराधिकारी ब्राह्मण थे।

F. राजनीतिक सत्ता, समर्थन और संसाधनों पर निर्भर थी, न कि जन्म पर।

G. मध्य एशिया के शासक जिन्हें शक कहा जाता था, ब्राह्मणों के अनुसार, वे बर्बर या बाहरी माने जाते थे।

H. सातवाहन वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक गौतमी पुत्र सतकर्णी ने एक अद्वितीय ब्राह्मण और क्षत्रियों के अधिकारों का विध्वंसक होने का दावा किया।

I. उन्होंने सुनिश्चित किया कि जातियों के सदस्यों के बीच कोई अंतर्जातीय विवाह न हो। हालाँकि उन्होंने स्वयं रुद्र दमन के राज परिवार के साथ विवाह संबंध स्थापित किया।

J. विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच एकीकरण एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया थी।

K. सातवाहन राजाओं ने ब्राह्मण होने का दावा किया, लेकिन ब्राह्मणों के अनुसार राजा को केवल क्षत्रिय ही होना चाहिए।

**30.महाभारत का विश्लेषण करने के लिए इतिहासकारों द्वारा विचार किए गए तत्वों का वर्णन करें। महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण की तैयारी के लिए वी.एस. सुथांकर और उनकी टीम के प्रयासों का वर्णन करें।**

**उत्तर:** 1919 में, प्रमुख भारतीय संस्कृतज्ञ वी.एस. सुथांकर ने महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने के लिए दर्जनों विद्वानों की एक टीम बनाई। इस महत्वाकांक्षी परियोजना को पूरा करने में 47 साल लगे और इसमें कई तरह के कार्य शामिल थे।

A. सबसे पहले, टीम ने देश के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न लिपियों में लिखे गए ग्रंथों की संस्कृत पांडुलिपियाँ एकत्र कीं।

B. इसके बाद, टीम ने समानताओं और विविधताओं का विश्लेषण करने के लिए इन विभिन्न पांडुलिपियों की तुलना करने की एक विधि तैयार की।

C. अंत में, अधिकांश संस्करणों में समान छंदों को कई खंडों में संकलित किया गया, जिसमें 13,000 से अधिक पृष्ठ शामिल थे।

D. इस प्रक्रिया में दो बातें स्पष्ट हुई कि संस्कृत के कई पाठों के अनेक अंशों में समानता थी और साथ ही उसमें कई क्षेत्रीय भिन्नताएँ भी थीं।

E. वी.एस. सुथांकर और उनकी टीम ने इन भिन्नताओं का दस्तावेजीकरण किया और उन्हें मुख्य पाठ में फ़ुटनोट और परिशिष्ट के रूप में जोड़ा।

F. अत: महाभारत का विश्लेषण करने के लिए ये भिन्नताएँ महत्वपूर्ण थीं, क्योंकि वे समय के साथ सामाजिक इतिहास को आकार देने वाली जटिल प्रक्रियाओं का प्रतिबिंब थीं।

G.वे प्रमुख और स्थानीय परंपराओं और विचारों और उनके संघर्ष और आम सहमति के बिंदुओं के बीच संवाद को प्रतिबिंब करती है।

## स्रोत-आधारित प्रश्न

निम्नलिखित स्रोतों को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

**31.**

### द्रौपदी का विवाह

पांचाल नरेश द्रुपद ने एक स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें यह शर्त रखी गई कि धनुष की चाप चढ़ा कर निशाने पर तीर मारा जाए; विजेता उनकी पुत्री द्रौपदी से विवाह करने के लिए चुना जाएगा। अर्जुन ने यह प्रतियोगिता जीती और द्रौपदी ने उसे वरमाला पहनाई। पांडव उसे लेकर अपनी माता कुंती के पास गए जिन्होंने बिना देखे ही उन्हें लाई गई वस्तु को आपस में बाँट लेने को कहा। जब कुंती ने द्रौपदी को देखा तो उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ, किंतु उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती थी। बहुत सोच-विचार के बाद युधिष्ठिर ने यह निर्णय लिया कि द्रौपदी उन पाँचों की पत्नी होगी।

जब द्रुपद को यह बताया गया तो उन्होंने इसका विरोध किया। किंतु ऋषि व्यास ने उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि पांडव वास्तव में इंद्र के अवतार थे और उनकी पत्नी ने ही द्रौपदी के रूप में जन्म लिया था। अत: नियति ने ही उन सबका साथ निश्चित कर दिया था।

व्यास ने यह भी बताया कि एक बार युवा स्त्री ने पति प्राप्ति के लिए शिव की आराधना की और उत्साह के अतिरेक में एक के बजाय पाँच बार पति प्राप्ति का वर माँग लिया। इसी स्त्री ने द्रौपदी के रूप में जन्म लिया तथा शिव ने उसकी प्रार्थना को परिपूर्ण किया है। इन कहानियों से संतुष्ट होकर द्रुपद ने इस विवाह को अपनी सहमति प्रदान की।

प्रश्न:31.1 द्रौपदी ने पाँच भाइयों से विवाह क्यों किया?

31.2. महाकाव्य में इस विवाह को कैसे उचित ठहराया गया?

31.3. यह हमें सामाजिक मानदंडों और महाकाव्य परंपरा में उनके लचीलेपन के बारे में क्या बताता है?

उत्तर:31.1. द्रौपदी ने पाँच भाइयों से विवाह किया, क्योंकि कुंती को नहीं पता था कि वे क्या लेकर आए हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें बराबर-बराबर बाँटने के लिए कहा। भाइयों ने उसकी बात मान ली।

31.2. महाकाव्य में विवाह को एक दिव्य आख्यान द्वारा उचित ठहराया गया था – द्रौपदी ने पहले शिव से कई गुणों वाले पति के लिए प्रार्थना की थी, और उसे पाँच पति दिए गए थे, जिनमें से प्रत्येक में एक गुण था।

31.3. यह घटना दर्शाती है कि सामाजिक मानदंड कठोर होने के बावजूद, महाकाव्य ने अपवादों के लिए जगह दी, जो परंपराओं की लचीलापन और व्याख्यात्मक प्रकृति को दर्शाता है।

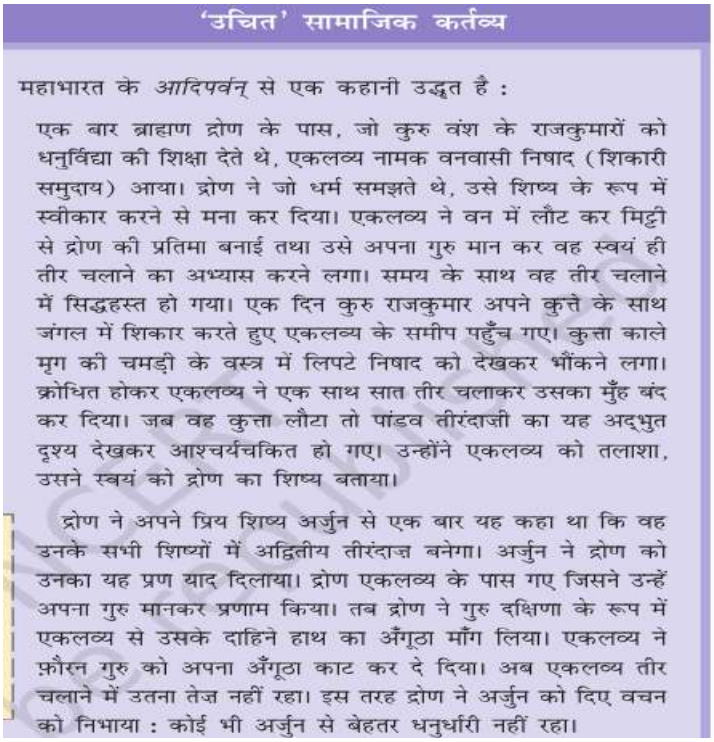

'उचित' सामाजिक कर्तव्य

महाभारत के *आदिपर्वन्* से एक कहानी उद्धृत है :

एक बार ब्राह्मण द्रोण के पास, जो कुरु वंश के राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे, एकलव्य नामक वनवासी निषाद (शिकारी समुदाय) आया। द्रोण ने जो धर्म समझते थे, उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया। एकलव्य ने वन में लौट कर मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई तथा उसे अपना गुरु मान कर वह स्वयं ही तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। समय के साथ वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया। एक दिन कुरु राजकुमार अपने कुत्ते के साथ जंगल में शिकार करते हुए एकलव्य के समीप पहुँच गए। कुत्ता काले मृग की चमड़ी के वस्त्र में लिपटे निषाद को देखकर भौंकने लगा। क्रोधित होकर एकलव्य ने एक साथ सात तीर चलाकर उसका मुँह बंद कर दिया। जब वह कुत्ता लौटा तो पांडव तीरंदाजी का यह अद्भुत दृश्य देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने एकलव्य को तलाशा, उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया।

द्रोण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से एक बार यह कहा था कि वह उनके सभी शिष्यों में अद्वितीय तीरंदाज़ बनेगा। अर्जुन ने द्रोण को उनका यह प्रण याद दिलाया। द्रोण एकलव्य के पास गए जिसने उन्हें अपना गुरु मानकर प्रणाम किया। तब द्रोण ने गुरु दक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने फ़ौरन गुरु को अपना अँगूठा काट कर दे दिया। अब एकलव्य तीर चलाने में उतना तेज़ नहीं रहा। इस तरह द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निभाया : कोई भी अर्जुन से बेहतर धनुर्धारी नहीं रहा।

**32.**

प्रश्न:32.1 द्रोण ने एकलव्य को शिक्षा देने से क्यों मना कर दिया?

32.2 कहानी जाति और ज्ञान तक पहुँच के बारे में क्या बताती है?

32.3 क्या आपको लगता है कि एकलव्य के साथ उचित व्यवहार किया गया था? एक तर्कसंगत उत्तर दें।

उत्तर

32.1. द्रोण ने एकलव्य को पढ़ाने से मना कर दिया क्योंकि वह निषाद था, एक आदिवासी लड़का, और क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ण से नहीं था, जो पारंपरिक रूप से मार्शल शिक्षा के लिए पात्र थे।

32.2. कहानी ज्ञान और प्रशिक्षण तक पहुँच में जाति-आधारित भेदभाव को उजागर करती है। सामाजिक पदानुक्रम के कारण प्रतिभा को हमेशा पुरस्कृत नहीं किया जाता था।

32.3. एकलव्य के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया क्योंकि उसे उसके जन्म के कारण शिक्षा से वंचित रखा गया था और बाद में उसे अपने कौशल का त्याग करने के लिए मजबूर किया गया था। यह जातिवाद में निहित सामाजिक अन्याय को दर्शाता है।

# अध्याय- 4 विचारक, विश्वास और इमारतें
## सांस्कृतिक विकास
## (ईसा पूर्व 600 से 600 ईस्वी)

**इस पाठ को सीखने के उद्देश्य**

- समाज में हो रहे विभिन्न विचारों और विकासों **का अनुमान लगाने और तुलना** करने की क्षमता का निर्माण।
- समृद्ध धार्मिक मूर्तिकला को स्पष्ट करने और उसमें छिपी कहानियों का अनुमान लगाने की क्षमता विकसित करें।
- मानव समाज के सामाजिक-राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र के **परस्पर विकास का** पता लगाने के लिए।
- विचारों की 'विविधता' **और चर्चा और बहस की संस्कृति के महत्व की** सराहना करना।
- हमारी समृद्ध भारतीय संस्कृति में प्रस्तुत **एकता और परस्पर एक होने** की विश्वदृष्टि विकसित करना।
- आज के विश्व के मुद्दों जैसे आतंकवाद, युद्ध की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, संसाधन संरक्षण आदि से निपटने में **सत्य, अहिंसा**, मध्य मार्ग की अवधारणा की प्रासंगिकता को समझना।
- बौद्ध धर्म की विचारधारा में प्रस्तुत तर्क के **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** को विकसित करना।
- सक्रिय नागरिक बनने के लिए स्व-प्रयासों **के महत्व को बढ़ावा देना** और भारतीय समाज को आत्मनिर्भर भारत के रूप में विकसित करना।
- विश्व समुदाय द्वारा मान्यता प्राप्त **हमारी समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक विरासत के लिए गर्व की भावना** विकसित करना।

**अध्याय का सारांश**

**परिचय:** इस अध्याय में 600BCE से 600CE के दौरान होने वाले प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक विकास पर चर्चा की गई है।

**स्रोतों का विवरण**

| पाठ्य स्रोत | पुरातात्विक स्रोत |
|---|---|
| - बौद्ध ग्रंथ - जैन ग्रंथ - ब्राह्मणवादी ग्रंथ | - शिलालेख - स्मारक *उदाहरण: सांची में स्तूप* |

**विषय -1 सांची की एक झलक: सांची के संरक्षण में भोपाल के शासकों का योगदान**

- सांची स्तूप की खोज 1818 में हुई थी।
- शाहजहाँ बेगम ने इसे संरक्षित किया और यूरोप में प्लास्टर कास्ट भेजे।
- सुल्तान जहाँ बेगम ने संरक्षण, संग्रहालय और प्रकाशनों को वित्त पोषित किया।
- जॉन मार्शल ने अपना काम उसे समर्पित किया।

**विषय -2 पृष्ठभूमि: बलिदान और वाद-विवाद**

**यज्ञ परंपरा**

- देवताओं की स्तुति में वैदिक भजनों का जाप। (इंद्र, अग्नि, सोम)
- यज्ञ व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से दोनों किए गए।
- धन, स्वास्थ्य, दीर्घायु, पुत्र, पशु के लिए यज्ञ किए।
- राजसूय यज्ञ और अश्वमेध जैसे यज्ञ प्रमुखों और राजाओं द्वारा किए गए|

**चर्चा और बहस का काल**

- बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों का उल्लेख है।
- विचारकों ने जीवन और मानव-प्रकृति संबंधों का पता लगाया।
- शिक्षकों ने विचारों को साझा करने और बहस करने के लिए यात्राएं की।
- कुटाग्रशाला या वन उपवनों ***में होने वाली बहस***।

**मध्य-प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व: विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़**

- ❖ महान विचारकों का उदय –जैसे महावीर और बुद्ध
- ❖ सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन
- ❖ नए राज्यों और शहरों का विकास हुआ—सोलह महाजनपद
- ❖ समाज बदलने लगे
- ❖ लोगों ने पुरानी मान्यताओं पर उठाए सवाल –जैसे ब्राह्मणवादी वर्चस्व, पशुबलि, महंगे यज्ञ इत्यादि |
- ❖ विचारकों ने नए विचारों के साथ जवाब दिया

**विषय-3 सांसारिक सुखों से परे: महावीर का संदेश**

वर्धमान, जिन्हे छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महावीर के नाम से जाना जाता है।उनसे पहले 23 तीर्थंकर थे।

तीर्थंकर- अस्तित्व की नदी के पार पुरुषों और महिलाओं का मार्गदर्शन करने वाले शिक्षक।

**जैन धर्म का विचार:**

अहिंसा: सभी चीजों में जीवन है; किसी भी प्राणी को नुकसान पहुंचाने से बचें।

कर्म: पुनर्जन्म का कारण बनता है; कर्म त्यागकर मुक्ति संभव है |

मुक्ति मार्ग: त्याग , तपस्या और मठवासी जीवन के माध्यम से।

पांच प्रतिज्ञाएं: कोई हत्या, चोरी, झूठ नहीं; ब्रह्मचर्य का पालन करें; कोई संपत्ति का संग्रह नहीं।

**जैन धर्म का प्रसार**

**जैन पाठ** प्राकृत, संस्कृत और तमिल भाषाओं में लिखा गया है। उदाहरण: **उत्तराध्ययन सुत्त**।

**तीर्थंकरों के भक्तों द्वारा निर्मित** जैन मूर्तियां।

**विषय -4 बुद्ध और ज्ञान की खोज**

सिद्धार्थ (बुद्ध) शाक्य कुल के एक प्रमुख के पुत्र थे।

महल के भीतर उनकी सभी सुखों के बीच परवरिश हुई थी। उन्हे दुखों से अलग रखा गया |

**तीन टोकरियाँ (त्रिपिटक): बौद्ध साहित्य के तीन स्तम्भ**

| टोकरी (पिटका) | विषय |
|---|---|
| **1. विनय पिटक** | संघ के लिए नियम और कानून |
| **2. सुत्त पिटक** | बुद्ध के उपदेश |
| **3. अभिधम्म पिटक** | दार्शनिक विश्लेषण और व्याख्या |

नोट: **संतचरित्र ( Hagioraphy)** एक संत या धार्मिक नेता की जीवनी है।

**थेरीगाथा**, सुत्त पिटक का हिस्सा, भिक्खुनियों द्वारा रचित छंदों का एक संग्रह है।

**विषय-5 बुद्ध के उपदेश**

**दु:ख सार्वभौमिक** है, यहां तक कि खुशी भी अस्थायी है।

**दु:ख का कारण**: इच्छा और अज्ञानता।

**संसार**: क्षणिक, निरंतर बदलते और आत्माहीन।

**लक्ष्य**: *निर्वाण* – अहंकार और इच्छा का अंत।

**पथ**: आत्म-प्रयास, नैतिक जीवन, संयम का मार्ग।

**विषय-6 बुद्ध के अनुयायी**

**संघ**: बुद्ध द्वारा स्थापित भिक्षुओं का संगठन।

- भिक्षुओं ने धम्म सिखाया, सरलता से रहते थे, उनके पास बहुत कम स्वामित्व था।
- प्रारंभ में केवल पुरुष; बाद में महिलाओं को अनुमति दी गई। (आनंद, एक शिष्य, ने बुद्ध को महिलाओं को संघ में अनुमति देने के लिए राजी किया)।
- सभी सामाजिक समूहों के अनुयायी।
- भिक्षु और भिक्षुणी बनने के बाद सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार किया जाता है।
- चर्चा द्वारा किए गए निर्णय; जरूरत पड़ने पर मतदान।

**बौद्ध धर्म तेजी से क्यों विकसित हुआ?**

**बुद्ध की शिक्षाओं ने** उन लोगों को आकर्षित किया जो पुराने धर्मों और सामाजिक परिवर्तनों से नाखुश थे।

**प्रसार**: चीन, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया।

**सरल** शिक्षाएं: आचरण और मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करें, जन्म-आधारित श्रेष्ठता पर नहीं।

**विषय-7 स्तूप**

बौद्ध साहित्य में कई चैत्यों का उल्लेख है।

चैत्य- छोटे मंदिर के साथ पवित्र स्थान।

चैत्य - चिता शब्द से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है एक अंतिम संस्कार चिता, और विस्तार मे एक अंत्येष्टि टीला।

| स्तूप क्यों बनाए गए थे? | स्तूप कैसे बनाए गए थे? |
|---|---|
| बुद्ध के अवशेषों को रखने के लिए टीले के रूप में बनाया गया - बौद्ध धर्म में पवित्र हो गया<br>अशोक ने अवशेष वितरित किए और भरहुत, सांची और सारनाथ में स्तूप बनाए | दान के माध्यम से वित्त पोषित: राजाओं, गिल्ड, हाथी दांत कार्यकर्ता, आम लोगों<br>भिक्षुओं (भिक्षुओं) और नन (भिक्खुनियों) ने भी योगदान दिया। - दाताओं ने शिलालेखों में नाम, स्थान और व्यवसायों का उल्लेख किया (Votive Inscription) |

**स्तूप की संरचना**

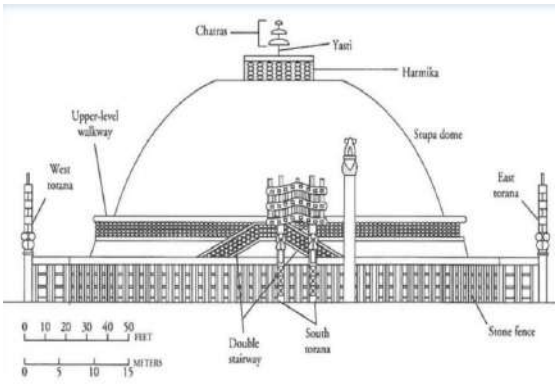


- ❖ अंड (गुंबद) - पृथ्वी का एक अर्ध-गोलाकार टीला, ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ हरमिका- एक बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती थी।
- ❖ यस्ति (एक दंड) – हरमिका से उत्पन्न, ब्रह्मांड की धुरी का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ छत्री- सुरक्षा और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करना।
- ❖ वेदिका - धर्मनिरपेक्ष दुनिया से पवित्र स्थान को अलग करना।
- ❖ तोरण- चार द्वार

**विषय-8 मूर्तिकला: पत्थर में कहानियां**

- ❖ **जातक कथाएं**: सांची स्तूप में वेसान्तर जातक के दृश्य दिखाए गए हैं।
- ❖ **प्रतीक पूजा**: बुद्ध को प्रतीकों (खाली आसन, पहिया, स्तूप) के माध्यम से दिखाया गया है।
- ❖ प्रतीक ध्यान और पहले उपदेश जैसी घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ❖ **लोकप्रिय धारणा**: शालभंजिका लोकप्रिय मान्यताओं के प्रभाव को दर्शाता है।
- ❖ माना जाता था कि इसके द्वारा छुए जाने से वृक्षों में फुल और फल खिल उठते थे ; शुभ के रूप में देखा जाता है।

- ❖ जानवर शक्ति और ज्ञान का प्रतीक हैं।
- ❖ कमल और हाथियों वाली महिला: माया या गजलक्ष्मी।
- ❖ लोकप्रिय परंपराओं से जुड़े, सर्प रूपांकन को शामिल किया गया है |

**विषय -9 नई धार्मिक परंपराएं**

| **महायान** | **हीनयान** |
|---|---|
| ईसा की प्रथम सदी के बाद विकसित बौद्ध शिक्षाएं<br>महायान - महान वाहन- **सभी के लिए मोक्ष ,** केवल एक के लिए नहीं।<br>मुक्तिदाता की अवधारणा का जन्म ।<br>***बोधिसत्व*** – करुणामय प्राणी जो पुण्य प्राप्त करते हैं – दूसरों की सहायता के लिए उपयोग करते हैं<br>***बुद्ध और बोधिसत्वों की*** मूर्ति पूजा की शुरुआत हुई | प्रारंभिक बौद्ध शिक्षाएं<br>हीनयान-छोटा वाहन-<br>***निर्वाण*** प्राप्त करने का *आत्म प्रयास*<br>बुद्ध – स्वयं के प्रयासों से ज्ञान प्राप्त करने वाले मानव<br>अनुयायियों को ***थेरवादी*** कहा जाता है। |

**पौराणिक हिंदू धर्म का विकास**

- ❖ वैष्णव और शैव धर्म, विष्णु और शिव की पूजा करते हैं।
- ❖ भक्ति पूजा महत्वपूर्ण थी।
- ❖ वैष्णव धर्म में विभिन्न पंथ और विष्णु के 10 अवतार थे।
- ❖ स्थानीय देवताओं को विष्णु के रूप में देखा जाता है।
- ❖ मूर्तियों में दिखाए गए देवता; शिव अक्सर लिंग के रूप में।
- ❖ देवी देवताओ के गुण पोशाक, गहने, हथियारों के माध्यम से दिखाए गए |
- ❖ पुराणों में सरल संस्कृत में देवताओं की कहानियां बताई गईं।
- ❖ पुराण सभी लोगों के बीच बातचीत के माध्यम से फैले।

**मंदिर निर्माण**

मंदिरों की संरचना:

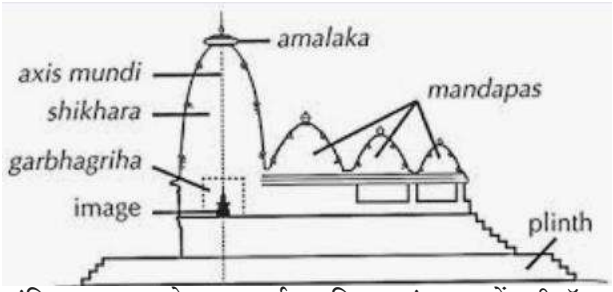


मंदिर वास्तुकला के तत्व: गर्भगृह, शिखर, मंडप (असेंबली हॉल), तोरण/गोपुरम (प्रवेश द्वार)।

**<u>मंदिर वास्तुकला के उदाहरण:</u>**

देवगढ़ मंदिर (उत्तर प्रदेश), 5 वीं शताब्दी ईस्वी

शेषनाग पर आराम करते हुए विष्णु की मूर्ति, देवगढ़ (यूपी), 5 वीं शताब्दी ईस्वी

बराबर गुफाएं (बिहार), c. तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व,चट्टान काट कर बनई गई कृत्रिम गुफा

कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा (महाराष्ट्र), 8 वीं शताब्दी, एकाश्म (एक चट्टान को काट कर बनाया गया

**विषय-11 क्या हम सब कुछ देख- समझ सकते हैं**

**अनजाने को समझने की कोशिश**

- प्रारंभिक विद्वानों ने भारतीय मूर्तिकला की तुलना ग्रीक कला से की।
- बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियों को छोड़क,र भारतीय कला को हीन पाया।
- तक्षशिला और पेशावर जैसी जगहों पर मिली ये मूर्तिया ग्रीक मॉडल से मिलती-जुलती थीं।
- प्रारंभिक भारतीय कला का सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है।
- अपरिचित (भारतीय) को समझने के लिए परिचित मानकों (ग्रीक) का इस्तेमाल किया।

**यदि लिखित और दृश्य का मेल न हो**

- ग्रंथ मूर्तियों को समझने में मदद करते हैं, लेकिन हमेशा स्पष्ट रूप से नहीं।
- महाबलीपुरम की मूर्ति एक कहानी दिखाती है, लेकिन इस पर बहस होती है।
- कुछ लोग कहते हैं कि यह गंगा नदी के अवतरण को दर्शाता है।
- दूसरों का मानना है कि यह महाभारत से अर्जुन की तपस्या को दर्शाता है।

**बहुविकल्पीय प्रश्न**

Q.1 वैदिक परंपरा के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

A प्रारंभिक वैदिक परंपरा ईसा पूर्व 1000 से 1600 सीई के बीच संकलित की गई थी।

B ऋग्वेद में अग्नि, इंद्र और सोम की स्तुति में भजन हैं।

C राजसूय और अश्वमेध यज्ञ राजाओं द्वारा किए जाते थे।

D उपनिषदों में कई वैदिक विचार पाए गए।

Q.2 बुद्ध के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?

(i) बुद्ध शाक्य वंश के एक प्रमुख के पुत्र थे।

(ii) संघ के भीतर उनकी सुखों के बीच परवरिश हुई थी।

(iii) उन्हें जीवन की कठोर वास्तविकताओं से अवगत कराया गया।

(iv) जब उन्होंने एक बूढ़े आदमी और एक बीमार आदमी को देखा तो उन्हे बहुत पीड़ा हुई।

सही विकल्प का चयन कीजिए

(a) (i) and (ii) (b) (ii) and (iii) (c) (i) and (iv) (d) (ii) and (iv)

Q. 3 बुद्ध के अनुयायियों के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
I. महाप्रजापति गौतमी भिक्षुणी के रूप में दीक्षा लेने वाली पहली महिला थीं।
II. संघ में प्रवेश करने वाली कई महिलाएं धम्म की शिक्षिका बनीं।
III. बुद्ध के अनुयायी राजाओं और दासों सहित कई सामाजिक समूहों से आए थे।
IV. एक बार संघ के भीतर प्रवेश करने पर, सभी को धम्म महामाता माना जाता था।
विकल्प:
(A) I और II
(B) I, II और IV
(C) I और III
(D) I, II और III
Q. 4 "अपने आप के लिए खुद ही दीपक बनो क्योंकि तुम्हें खुद ही अपनी मुक्ति का रास्ता ढूँढना है |"
नीचे दिए गए विकल्पों में से बुद्ध के शब्दों के सार को पहचानें:
A व्यक्ति को आंतरिक अस्तित्व से जुड़ना चाहिए।
B ब्रह्मचर्य का जीवन जीना चाहिए
C व्यक्ति को ध्यान केंद्रित करना चाहिए और भावनाओं को व्यक्त करना चाहिए
D हर जगह धर्म का प्रसार करना चाहिए।
Q. 5 निम्नलिखित में से कौन सा कथन जैन धर्म में 'तीर्थंकरों' के अर्थ का वर्णन करता है?
A व्यक्ति जो परमात्मा का अवतार है
B जो अस्तित्व की नदी के पार पुरुषों और महिलाओं का मार्गदर्शन करते हैं
C. वेदांत तपस्या के मार्ग का अनुसरण करने वाले
D. परम सत्य और धर्म को जानने वाले
Q. 6 बौद्ध धर्म के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें
I. बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के केंद्र में है।
II. बोधिसत्व आत्मज्ञान के रास्ते पर एक दयालु है।
III. बोधिसत्व व्यक्तिगत मोक्ष के लिए निर्वाण प्राप्त करते हैं।
विकल्प: A. केवल III B. II &III C. I & II D. I & III

**नीचे दिए गए प्रश्न(7-9) में एक अभिकथन और एक कारण है। उपयुक्त उत्तर चुनने के लिए निम्न कुंजी का उपयोग करें।**

A यदि अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण अभिकथन की सही व्याख्या है।
B यदि अभिकथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
C यदि अभिकथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
D यदि अभिकथन गलत है, लेकिन कारण सही है.
Q. 7 कथन (A): आठवीं शताब्दी में, कैलाशनाथ मंदिर को पहाड़ से काटकर बनाया गया था।
कारण (R): राजा अशोक ने मंदिरों के सदृश पहाड़ों को काटकर कृत्रिम गुफाएँ बनाने का निर्देश दिया था।
Q.8 अभिकथन (A): जैन परंपरा में मोक्ष की एक आवश्यक शर्त मठवासी अस्तित्व है।
कारण (R): जैन शिक्षाओं के अनुसार कर्म के चक्र से खुद को मुक्त करने के लिए सन्यास और तपस्या की आवश्यकता होती है।
Q. 9 अभिकथन (A): यह कहा जाता है कि बुद्ध और महावीर दोनों के कई विचार कमोबेश समान थे।
कारण (R): जैन धर्म से पहले बौद्ध धर्म की स्थापना हुई थी और महावीर बुद्ध से गहराई से प्रभावित थे।
Q. 10: कॉलम I को कॉलम II के साथ मिलाएं और सही विकल्प चुनें:

| कॉलम I (सांची की मूर्ति) | कॉलम II (प्रतीकवाद) |
|---|---|
| 1. स्तूप | i) सौभाग्य का प्रतीक |
| 2. चक्र | (ii) शुभ का प्रतीक |
| 3. शालभंजिका | (iii) बुद्ध का पहला उपदेश |

4. गजलक्ष्मी (iv) महापरिनिब्बान

विकल्प :

(A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii), 4-(iv)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iv), 4-(iii)

(C) 1-(iv), 2-(iii), 3-(ii), 4-(i)

(D) 1-(iii), 2-(iv), 3-(i), 4-(ii)

Q. 11 निम्नलिखित में से किसका सही मिलान किया गया है?

| (प्रथम सहस्राब्दी विचारक) | (वे जिस देश के थे) |
|---|---|
| A जरथुस्त्र - | ईरान |
| B कुंगज़ी - | जापान |
| C सुकरात - | रोम |
| D महावीर - | श्रीलंका |

Q. 12 निम्नलिखित का मिलान करें:

| सूची I (बौद्ध पाठ) | सूची II (प्राथमिक विषय) |
|---|---|
| A. विनय पिटक | I. द्वीप का इतिहास |
| B. अभिधम्म पिटक | II. मठवासी के लिए नियम |
| C. सुत्त पिटक | III. बौद्ध दर्शन और टीकाएँ |
| D. दीपवंश | IV. बौद्ध शिक्षाएं |

विकल्प :

(A)A- I B- II C-III D- IV

(B) A-II B- III C- IV D-I

(C)A- III B-IV C-II D- I

(D) A-IV B- I C- III D-II

Q 13. नीचे दी गई आकृति को देखिए और निम्नलिखित विकल्पों में से सांची स्तूप के 'A' के रूप में चिह्नित संरचनात्मक विशेषता की पहचान कीजिए:

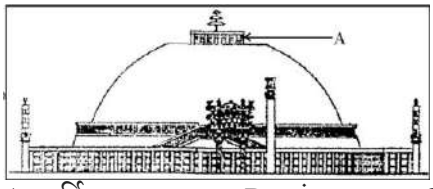


A हर्मिका B अंड C यष्टि D छतरी

Q.14 निम्नलिखित में से कौन सी शिक्षा महावीर या जैन दर्शन की शिक्षाओं से संबंधित नहीं है?

A. सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है |

B. अहिंसा (अहिंसा)

C. जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म से संबंधित नहीं है।

D. मठवासी अस्तित्व मोक्ष की एक आवश्यक शर्त है।

Q.15 दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित चित्र की पहचान करें:

1. फ्रांसीसी ने सांची स्तूप के पूर्वी प्रवेश द्वार को यूरोप ले जाने के लिए इस बेगम की अनुमति मांगी।

2. सांची के प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए धन प्रदान किया।

3. ताज-उल इकबाल तारीख भोपाल, या भोपाल का इतिहास, इस बेगम द्वारा लिखा गया था।

विकल्प:

A सुल्तान जहाँ बेगम B शाहजहाँ बेगम

C जहांआरा बेगम D रूकसार बेगम

Q. 16 भारत के किस राज्य में पांचवीं शताब्दी का मंदिर, देवगढ़ स्थित है?

A बिहार B पश्चिम बंगाल C उड़ीसा D उत्तर प्रदेश

Q. 17 निम्नलिखित में से किस स्थान पर बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था?

A लुम्बिनी B सारनाथ C कुशीनगर D बोधगया

Q. 18 सांची स्तूप के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं का सही कालक्रम क्या है?

i. अलेक्जेंडर कनिंघम ने भीलसा टोप्स प्रकाशित किया ii. स्तूप की खोज iii. जॉन मार्शल और अल्फ्रेड फाउचर द्वारा प्रकाशित 'सांची के स्मारक' iv. सांची विश्व धरोहर स्थल घोषित

A) ii, i,iii & iv B) i, ii, iv & iii C) iii, ii, i & iv D) iv, i, iii & ii

Q. 19 बुद्ध के दिए गए चित्र की सहायता से कला के स्कूल की पहचान करें।

A गांधार स्कूल ऑफ आर्ट

B मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट

C सारनाथ स्कूल ऑफ आर्ट

D अमरावती स्कूल ऑफ आर्ट

Q. 20 निम्नलिखित में से कौन सा बौद्ध धर्म का साहित्य नहीं है?

A विनय पिटक और सुत्त पिटक B दीपवंश और महावंश

C जातक कथाएं और अशोकावदान D उत्तराध्ययन सूत्र और तत्वार्थ सूत्र

Q. 21 उपनिषदिक विचार यज्ञ वैदिक परम्परा की विचारधारा से किन दृष्टियों मे भिन्न हैं?

1. उन्होंने अनुष्ठानों और बलिदानों के बजाय स्वयं के ज्ञान और अंतिम सत्य को महत्व दिया।

2. उन्होंने वेदों के अधिकार को अस्वीकार कर दिया।

3. भौतिक कल्याण के स्थान पर, उन्होंने मुक्ति या आध्यात्मिक ज्ञान के लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया |

सही विकल्प चुनिए: A.1 और 2 B. 2 और 3 C. 1 और 3 D. 1, 2 और 3

## उत्तर कुंजी: बहुविकल्पीय प्रश्न

Q.1 Ans. A प्रारंभिक वैदिक परंपरा ईसा पूर्व 1000 से 1600 सीई के बीच संकलित की गई थी।

Q.2 Ans. C (i) and (iv)

Q.3 Ans. D I, II और III

Q.4 Ans. A व्यक्ति को आंतरिक अस्तित्व से जुड़ना चाहिए।

Q.5 Ans. B जो अस्तित्व की नदी के पार पुरुषों और महिलाओं का मार्गदर्शन करते हैं

Q.6 Ans. C I & II

Q.7 Ans. B अभिकथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

Q.8 Ans. A अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण अभिकथन की सही व्याख्या है।

Q.9 Ans. C अभिकथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

Q.10 Ans. C 1-(iv), 2-(iii), 3-(ii), 4-(i)

Q.11 Ans. A जरथुस्त्र - ईरान

Q.12 Ans. B A-II B- III C- IV D-I

Q.13 Ans. A हर्मिका

Q.14 Ans C. जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म से संबंधित नहीं है।

Q.15 Ans. B शाहजहाँ बेगम

Q.16 Ans. D उत्तर प्रदेश

Q.17 Ans. B सारनाथ

Q.18 Ans.A ii, i,iii & iv

Q.19 Ans. B मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट

Q.20 Ans. D उत्तराध्ययन सूत्र और तत्वार्थ सूत्र

Q.21 Ans. C 1 और 3

**लघु उत्तरीय प्रश्न (60-80 शब्द)**

**Q. 22 मध्य पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व को अक्सर विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ क्यों माना जाता है? समझाइए |**

उत्तर : **विचारकों का उद्भव**:

- इस युग में ईरान में जरथुस्त्र, चीन में कोंग-ज़ी, ग्रीस में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू और भारत में बुद्ध और महावीर जैसे विचारकों का उदय हुआ।
- उन्होंने जीवन के रहस्यों और मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंधों को समझने की कोशिश की।

**विकास और परिवर्तन**:

- नए राज्य और शहर विकसित हो रहे थे।
- इन विचारकों ने उन घटनाक्रमों को समझने का प्रयास किया।

**Q.23 "जैन शिक्षाओं के अनुसार, जन्म और पुनर्जन्म कर्म के माध्यम से आकार लेते हैं। " कथन की व्याख्या कीजिए।**

**अथवा**

**जैन धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : **अहिंसा का विचार**:

- पूरी दुनिया प्राणवान है: यहां तक कि पत्थरों, चट्टानों और पानी में भी जीवन है।
- जीवित प्राणियों, विशेष रूप से मनुष्यों, जानवरों, पौधों और कीड़ों को कष्ट न पहुंचाए।

**कर्म का सिद्धांत**:

- जैन दर्शन के अनुसार, हमारे कर्म जन्म के चक्र के लिए जिम्मेदार हैं|
- अपने कर्मों के परिणाम का सामना करने के लिए, हम बार-बार जन्म लेते हैं।
- हम कर्म से छुटकारा पाकर खुद को जन्म और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर सकते हैं।

**मुक्ति का मार्ग**:

- हम सन्यास और तपस्या के मार्ग पर चलकर कर्म से छुटकारा पा सकते हैं।
- इसके लिए हमें संसार का त्याग करना होगा।
- त्याग के लिए हमें मठवासी जीवन में प्रवेश करना होगा।
- इसलिए मठवासी अस्तित्व मोक्ष की एक आवश्यक शर्त थी।

**जैन भिक्षुओं और भिक्षुणीयों के लिए पांच प्रतिज्ञाएं** : हत्या, चोरी और झूठ बोलने से बचना; ब्रह्मचर्य का पालन करना; और संपत्ति रखने से बचना।

**Q.24 बुद्ध को अपने समय के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक क्यों माना जाता था? समझाइए |**

**अथवा**

**बुद्ध के समय में बौद्ध धर्म का तेजी से विकास क्यों हुआ?**

उत्तर : **बौद्ध धर्म का प्रसार**:

- बुद्ध की शिक्षाओं ने कई लोगों को आकर्षित किया जो मौजूदा धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे और तेजी से सामाजिक परिवर्तनों को समझ नहीं प रहे थे।
- उनकी शिक्षाएं चीन, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया में फैलीं।

**समझने में आसान शिक्षा:**

- उन्होंने जन्म के आधार पर श्रेष्ठता के दावों के बजाय आचरण और मूल्यों को महत्व दिया।
- उन्होंने कमजोर वर्ग के लिए मेत (साथी भावना) और करुणा (करुणा) पर जोर दिया।
- उन्होंने मध्यम मार्ग या संयम के मार्ग का प्रचार किया।
- आम लोगों की भाषा में शिक्षाएं दी |

**संगठन**:

उन्होंने धम्म के प्रसार के लिए भिक्षुओं के संगठन 'संघ' की स्थापना की

**Q.25 "सांची का स्तूप शुरुआती समय के सबसे अच्छे संरक्षित स्मारकों में से एक है। " कथन की व्याख्या कीजिए।**

**अथवा**

**इस स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की क्या भूमिका थी?**

उत्तर :

- अमरावती स्तूप की खोज, विद्वानों द्वारा 'खोजों के मूल्य' को समझने और ऐतिहासिक स्मारकों के इन-सीटू संरक्षण के महत्व को महसूस करने से पहले की गई थी।
- 1850 के दशक तक, अमरावती से स्लैब को विभिन्न स्थानों पर ले जाया गया: कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, मद्रास में इंडिया ऑफिस और कुछ लंदन तक।
- 1854 में, गुंटूर (आंध्र प्रदेश) के आयुक्त वाल्टर इलियट कई मूर्तिकला पैनलों को मद्रास ले गए।
- लेकिन सांची स्तूप के मामले में, यथास्थान संरक्षण(**इन-सीटू संरक्षण)** के पक्ष में पुरातत्वविद् एचएच कोल की दलील को स्वीकार कर लिया गया था।

**भोपाल की बेगम की भूमिका**

- सांची स्तूप की खोज 1818 में हुई थी। उस समय टीला और तीन गेट अच्छी हालत में थे, केवल चौथा अपने स्थान पर पड़ा था।
- भोपाल की शाहजहाँ बेगम ने यूरोपीय लोगों (इंग्लैंड और पेरिस) को खुश करने के लिए प्लास्टर कास्ट प्रतियां बनाने का एक बुद्धिमान निर्णय लिया। इसके परिणामस्वरूप राज्य में मूल अवशेष बने रहे।
- उसने और उसके उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम ने प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए धन प्रदान किया।
- सुल्तान जहां बेगम ने संग्रहालय, गेस्टहाउस और जॉन मार्शल के संस्करणों के प्रकाशन को वित्त पोषित किया।
- जॉन मार्शल ने अपने संस्करणों को सुल्तान जहां बेगम को समर्पित किया।

**Q. 26 सांची के स्तूप की प्रमुख स्थापत्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर :**

**सांची में स्तूप की स्थापत्य विशेषताएं।**

- स्तूप (एक संस्कृत शब्द जिसका अर्थ है ढेर) एक सरल संरचना के रूप में विकसित हुआ
- पृथ्वी का अर्ध-गोलाकार टीला, जिसे बाद में अंड कहा जाता है।
- धीरे-धीरे, यह एक अधिक जटिल संरचना में विकसित हुआ, गोल और चौकोर आकार।
- अंड के ऊपर हर्मिका थी, एक बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती है |
- हर्मिका से निकल हुआ एक मस्तूल था जिसे यष्टी कहा जाता था, जो अक्सर छतरी या छतरी से घिरा होता था।
- टीले के चारों ओर एक रेलिंग थी, जो पवित्र स्थान को धर्मनिरपेक्ष दुनिया से अलग करती थी।

**Q.27. महायान बौद्ध धर्म के विकास को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर :

- महायान का अर्थ है महान वाहन जो सभी के उद्धार को सुनिश्चित करता है।
- पूर्व में निर्वाण प्राप्त करने में आत्म-प्रयास को महत्त्व दिया जाता था।
- बुद्ध को एक ऐसा मनुष्य माना जाता था जिसने अपने प्रयास से निर्वाण प्राप्त किया।
- पहली शताब्दी ईस्वी तक मुक्तिदाता का विचार बौद्ध धर्म में उभरा।
- उन मुक्तिदाताओ को बोधिसत्व कहा जाता था जो अन्य लोगों को निर्वाण प्राप्त करने में मदद करते थे।
- अब बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई|

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (300-350 शब्द)

**Q. 28 कला इतिहासकारों ने सांची स्तूप की मूर्तियों के माध्यम से बौद्ध धर्म को समझने की कोशिश की है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

**अथवा**

**सांची के स्तूप की कुछ मूर्तिकला विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर :

- सांची स्तूप में मूर्तिकला **में वेसांतरा जातक के एक दृश्य को दर्शाया गया है**।
- मूर्तिकारों ने **प्रतीकों के माध्यम से बुद्ध की उपस्थिति दिखाई**।
- खाली आसन बुद्ध के ध्यान का प्रतीक है |
- सारनाथ में दिए गए बुद्ध के पहले उपदेश के लिए 'चक्र' संकेतक है |
- स्तूप बुद्ध के महापरिनिब्बन को इंगित करने के लिए था। इस तरह की मूर्तियां बुद्ध के जीवन की एक घटना का प्रतीक हैं।
- **शालभंजिका** के उदाहरण से पता चलता है कि बौद्ध धर्म की ओर रुख करने वाले कई लोगों ने इसे अपने पूर्व-बौद्ध और यहां तक कि गैर-बौद्ध मान्यताओं, प्रथाओं और विचारों से समृद्ध किया।
- लोकप्रिय धारणा के अनुसार, यह एक ऐसी महिला थी जिसके स्पर्श से पेड़ खिलते थे और फल लगते थे। इसलिए इसे शुभ प्रतीक माना गया।
- **हाथियों, घोड़ों, बंदरों और मवेशियों जैसे जानवरों** को ताकत और ज्ञान का प्रतीक बनाने के लिए चित्रित किया गया था।
- कमल और हाथियों से घिरी एक महिला का रूपांकन भी स्तूप पर दिखाया गया है। कुछ इतिहासकार इस आकृति की पहचान बुद्ध की मां माया के रूप में करते हैं, जबकि अन्य उनकी पहचान एक लोकप्रिय देवी, **गजलक्ष्मी,** सौभाग्य की देवी के साथ करते हैं।
- **सांची में एक नाग आकृति** भी लोकप्रिय परंपराओं से ली गई प्रतीत होती है।

**Q.29. बुद्ध की प्रमुख शिक्षाओं का परीक्षण कीजिए ?**

**अथवा**

**बुद्ध की शिक्षाओं की विवेचना कीजिए। ये शिक्षाएं आज के जीवन में कितनी प्रासंगिक हैं? तर्क के साथ समझाइए।**

**उत्तर:**

**सुत्त पिटक ने बौद्ध धर्म के दर्शन या बुद्ध की शिक्षाओं का पुनर्निर्माण किया**

- बुद्ध की शिक्षाओं को कहानियों से पुनर्निर्मित किया गया है, जो मुख्य रूप से सुत्त पिटक में पाए जाते हैं।
- इस पाठ की अधिकांश कहानियों से पता चलता है कि बुद्ध ने **अलौकिक शक्ति के प्रदर्शन के बजाय तर्क** और **अनुनय** के माध्यम से लोगों को समझाने की कोशिश की । (उदाहरण – एक महिला की कहानी जिसका बच्चा मर गया था)।

**दुःख : दुःख मानव जीवन का आंतरिक हिस्सा है।**

- दुख न केवल वास्तविक दर्द है, बल्कि सांसारिक खुशी या आनंद भी दुख का हिस्सा हैं क्योंकि वे अस्थायी हैं।

**दुःख क्यों**

- इस दुनिया में हर चीज के पीछे एक कारण होता है।
- दुख के कारण **इच्छा (तृष्णा)** और **अज्ञान हैं**।

**सब कुछ बदल रहा है**

- दुनिया क्षणिक है और लगातार बदल रही है।
- यह आत्माहीन है क्योंकि कुछ भी स्थायी नहीं है।

**क्या हम अपने दुःख को समाप्त कर सकते हैं?**

- हाँ। हम पुनर्जन्म के चक्र से बच सकते हैं और **निर्वाण** (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं।
- निर्वाण का अर्थ है अहंकार और इच्छा का खत्म होना।

**हम निर्वाण कैसे प्राप्त कर सकते हैं?**

- अपने अनुयायियों के लिए बुद्ध के अंतिम शब्द थे: "अपने आप के खुद दीपक बनो क्योंकि आप सभी को अपनी मुक्ति के लिए खुद ही प्रयास करना होगा।"
- बुद्ध ने **व्यक्तिगत प्रयास** और **सही कार्य पर जोर दिया**।
- उन्होंने राजाओं और गहपतियों को मानवीय और नैतिक होने की सलाह दी।
- बुद्ध सामाजिक जगत को **ईश्वरीय उत्पत्ति की अपेक्षा** मनुष्यों की रचना मानते थे।
- बुद्ध के लिए, ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं, यह **अप्रासंगिक था**।
- उन्होंने **घोर तपस्या और आत्म-भोग के बीच** संयम का मार्ग निर्धारित किया।

**आज के जीवन में बुद्ध शिक्षण की प्रासंगिकता**

- हमारे समाज में बदलाव के बारे में जागरूक होने के लिए
- उचित और आलोचनात्मक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें
- आत्म-प्रयास में विश्वास रखें।
- अन्य समुदायों के प्रति सहिष्णुता विकसित करें।
- मध्य मार्ग विभिन्न तरीकों से मदद करेगा, जैसे हमारे पर्यावरण को बचाने के लिए (सतत विकास)

**Q.30. प्राचीन भारत में पौराणिक हिंदू धर्म के विकास को समझाइए।**

**उत्तर :**

- वैष्णव धर्म **और** शैव धर्म **की परंपराएं** हिंदू धर्म के हिस्से के रूप में विकसित हुईं: विष्णु और शिव को इन परंपराओं में प्रमुख देवता के रूप में पूजा जाता था।
- पूजा का रूप **भक्ति था**, जहां भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति का सबसे अधिक महत्व था।
- वैष्णव धर्म में **विष्णु के विभिन्न अवतारों के** आसपास विभिन्न पंथ विकसित हुए |
- इस परंपरा में दस अवतारों को मान्यता दी गई थी।
- देश के विभिन्न हिस्सों में, **स्थानीय देवताओं को** विष्णु के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- मूर्तियों **में देवताओं** को दर्शाया गया था।
- लिंग, शिव का **प्रतीक** हैं; शिव को मानव रूप में भी दर्शाया गया हैं।
- देवताओं और उनके **गुणों को** सिर-वस्त्र, गहने, हथियार आदि के माध्यम से दर्शाया गया है।
- **पुराणों** की रचना देवी-देवताओं की कथाओं के आधार पर की गई थी। वे सरल संस्कृत श्लोक में रचे गए थे और सभी को जोर से पढ़े जाने के लिए थे।
- पुराण लोगों के बीच बातचीत **के माध्यम से विकसित हुए** - पुजारियों, व्यापारियों, सामान्य पुरुषों और महिलाओं - जो विचारों को साझा करने के लिए जगह-जगह यात्रा करते थे।

**स्रोत आधारित प्रश्न**

**Q.31 निम्नलिखित स्रोतों का अध्ययन कीजिये और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

पुन्ना द्वारा रचित छंद निम्नलिखित हैं, ब्राह्मण के साथ उनकी बातचीत को आधार बनाते हुए:

मैं जल ले जाने वाली हूँ :
कितनी भी ठंड हो
मुझे पानी में उतरना ही है
सज़ा के डर से
या ऊँचे घरानों की रिवाज़ों के कटु वचनों के डर से ।
हे ब्राह्मण तुम्हें किसका डर है,
जिससे तुम जल में उतरते हो
(जबकि) तुम्हारे अंग ठंड से काँप रहे हैं?
ब्राह्मण बोले :

मैं बुराई को रोकने के लिए अच्छाई कर रहा हूँ;
बूढ़ा या बच्चा
जिसने भी कुछ बुरा किया हो
जल में स्नान करके मुक्त हो जाता है।
पुन्ना ने कहा :
यह किसने कहा है
कि पानी में नहाने से बुराई से मुक्ति मिलती है ? ...
वैसा हो तो सारे मेंढक और कछुए स्वर्ग जाएँगे
साथ में पानी के सर्प और मगरमच्छ भी !
इसके बदले में वे कर्म न करें
जिनका डर आपको पानी की और खींचता है
हे ब्राह्मण, अब तो रूक जाओ !
अपने शरीर को ठंड से बचाओ...

Q.31.1 यह स्त्रोत पुन्ना के आध्यात्मिक अनुभव की अंतर्दृष्टि कैसे प्रदान करता है?

उत्तर: पुन्ना अनुष्ठानों, जाति और पवित्र स्नान के महत्व को खारिज करते हुए, वह पाप करने से बचने पर जोर देती है; व्यक्ति को आत्म-प्रयास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और सत्य और निर्वाण की खोज करनी चाहिए।

Q.31.2 पुन्ना एक जागृत आत्मा के रूप में कैसे प्रतिबिंबित होती है?

उत्तर : वह महसूस करती है कि अनुष्ठान व्यर्थ हैं और आत्म-साक्षात्कार और निर्वाण के लिए व्यक्तिगत प्रयास सबसे महत्वपूर्ण है। वह तर्क और अनुनय के माध्यम से ब्राह्मण को समझाने की कोशिश करती है।

Q.31.3 इस स्त्रोत से बुद्ध की कौन सी शिक्षाएं स्पष्ट होती है?

उत्तर : बुद्ध ने कर्मकांडों की निंदा की। बुद्ध ने आध्यात्मिक अनुभव के माध्यम से ज्ञान की तलाश करने का आग्रह किया। उन्होंने जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था की निंदा की। उन्होंने तर्क और अनुनय के माध्यम से लोगों को समझाने की कोशिश की। व्यक्तिगत प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है।

**Q.32 निम्नलिखित स्रोतों का अध्ययन कीजिये और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

**व्यवहार में बौद्ध धर्म**

सुत्त पिटक से लिए गए इस उद्धरण में बुद्ध सिगल नाम के एक अमीर गृहपति को सलाह दे रहे हैं :
मालिक को अपने नौकरों और कर्मचारियों की पाँच तरह से देखभाल करनी चाहिए... उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें काम देकर, उन्हें भोजन और मज़दूरी देकर, बीमार पड़ने पर उनकी परिचर्या करके, उनके साथ स्वादिष्ट भोजन बाँटकर और समय-समय पर उन्हें छुट्टी देकर...गृहस्थ को लोगों को पाँच तरह से श्रमणों (जिन्होंने सांसारिक जीवन को त्याग दिया है) और ब्राह्मणों को देखभाल करनी चाहिए... कर्म, वचन और मन से सम्मान द्वारा, उनके स्वागत में हमेशा घर खुले रखकर और उनकी दिन-प्रतिदिन की ज़रूरतों की पूर्ति करके। सिंगल को माता-पिता, शिक्षक और पत्नी के साथ व्यवहार के लिए भी ऐसे ही उपदेश दिए गए हैं|

Q.32.1 बुद्ध ने सामाजिक पदानुक्रम में करुणा के महत्व को कैसे उजागर किया?

उत्तर :बुद्ध ने सिखाया कि जाति या स्थिति की परवाह किए बिना सभी प्राणियों के प्रति करुणा का व्यवहार किया जाना चाहिए, जिससे जन्म के आधार पर सामाजिक पदानुक्रम को खारिज किया जा सके और व्यक्तिगत प्रयासों को बढ़ावा दिया जा सके।

Q.32.2 बुद्ध ने सादगी पर क्यों बल दिया?

उत्तर :बुद्ध ने व्यक्तियों को दुख से बचने, अपने मन को शुद्ध करने और मुक्ति (निर्वाण) की ओर बढ़ने में मदद करने के लिए सादगी के व्यवहार पर जोर दिया।

Q.33.3 बुद्ध के अनुसार कर्म के किन्हीं दो सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के माध्यम से कार्य-कारण सिद्धांत के आधार पर आकार लेता है।
हम आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से कर्म से छुटकारा पा सकते हैं।

**मानचित्र कार्य**

Q.34 क भारत के राजनैतिक मानचित्र पर निम्नलिखित को उपयुक्त चिह्नों सहित अंकित कीजिए और उनके नाम लिखिए:
1 भरहुत 2 अमरावती /नागार्जुनकोंडा 3 लुम्बिनी अथवा बोधगया

ख  भारत के  ही राजनीतिक रूपरेखा मानचित्र पर,  बोद्ध धर्म के केंद्रों से संबंधित दो स्थान, A और B के रूप में चिह्नित किए गए है। उन्हें पहचानें और उनके पास चिह्नित लाइनों पर उनके नाम लिखें।

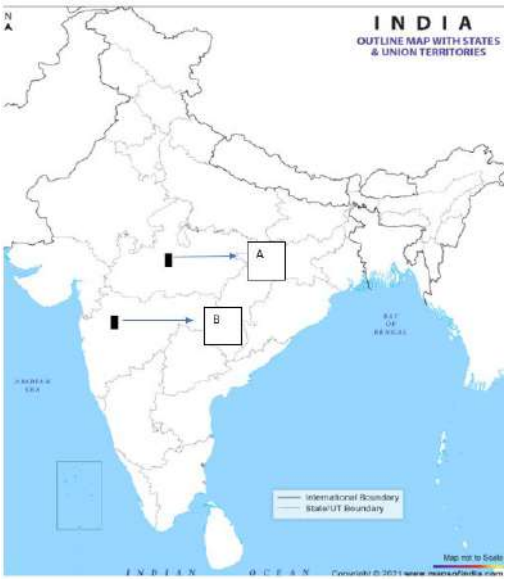


मानचित्र कार्य के लिए उत्तर कुंजी

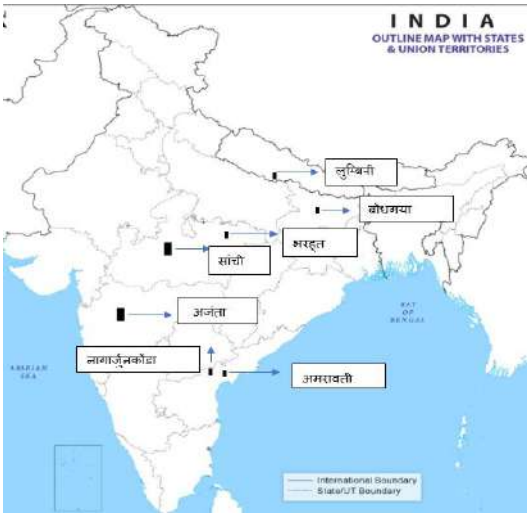

## विषय पांच
## यात्रियों की नज़रियें
## समाज के बारे में उनकी समझ (लगभग दसवीं से सत्रहवीं शताब्दी)

### अध्ययन उद्देश्य

- यात्रियों द्वारा वर्णित सामाजिक इतिहास की मुख्य विशेषताओं को समझें और सीख को वास्तविक जीवन में लागू करें।
- मध्यकाल में विभिन्न शासकों के कार्यकाल के दौरान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन को समझने के लिए विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों पर प्रकाश डालना ।

मध्यकाल में कई विदेशी यात्री भारत आए थे। वे विभिन्न उद्देश्यों से भारत आए थे।

1. भारत आने वाले अधिकांश यात्रियों ने अपने अनुभव और विवरण लिखे।
2. इन यात्रियों के विवरण विभिन्न पहलुओं से संबंधित हैं। कुछ यात्रियों के विवरण दरबार के मामलों से जुड़े हैं, जबकि कुछ धार्मिक मुद्दों पर केंद्रित हैं।
3. कुछ यात्री समकालीन वास्तुकला और स्मारकों की शैली के बारे में लिखते हैं, जबकि अन्य सामाजिक और आर्थिक जीवन को दर्शाते हैं।
4. भारत आने वाले यात्रियों ने अपने विवरणों में भारतीय सभ्यता की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है।

### मानचित्र/संकल्पना चार्ट (माइंड मैप )

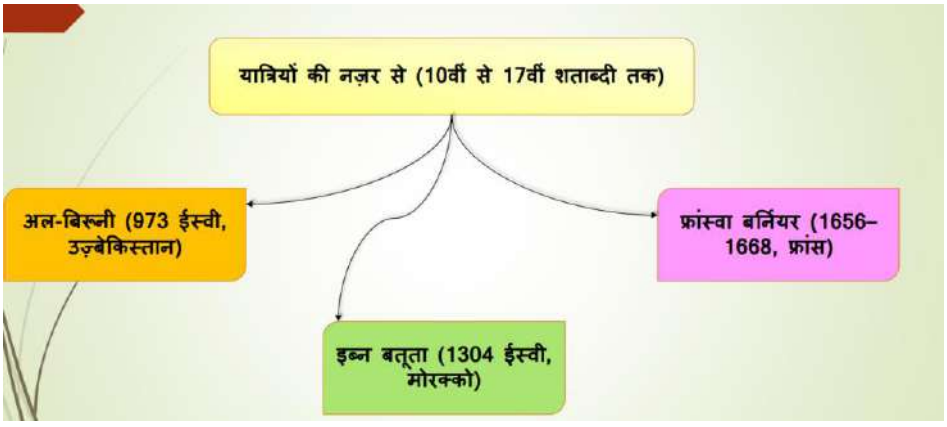


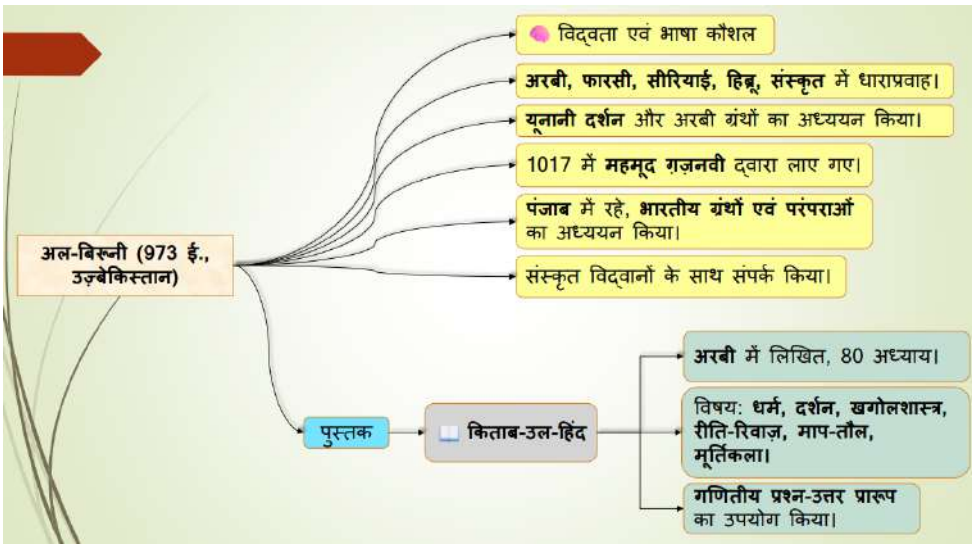

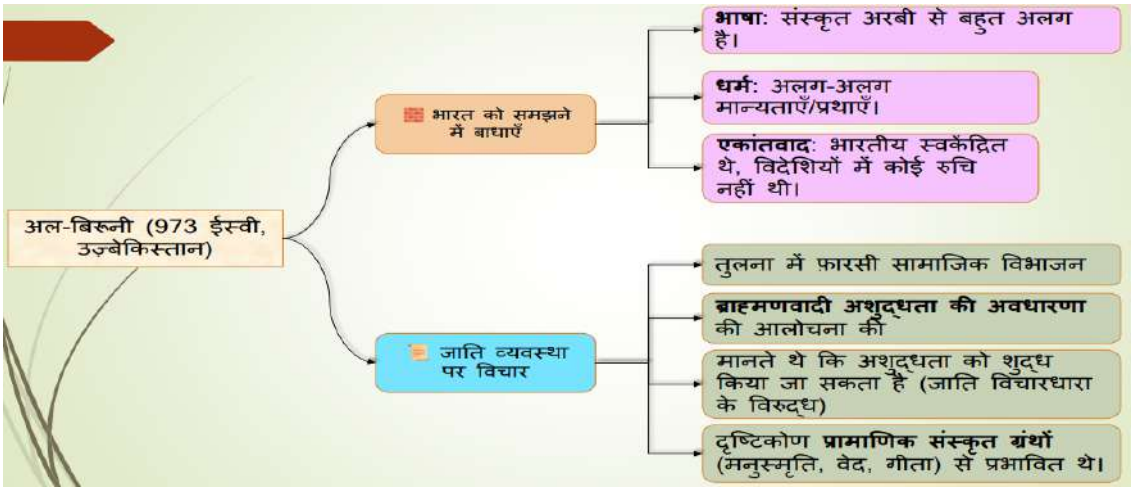
अल-बिरूनी (973 ईस्वी, उज़्बेकिस्तान)
भारत को समझने में बाधाएँ
भाषा: संस्कृत अरबी से बहुत अलग है।
धर्म: अलग-अलग मान्यताएँ/प्रथाएँ।
एकांतवाद: भारतीय स्वकेंद्रित थे, विदेशियों में कोई रुचि नहीं थी।
जाति व्यवस्था पर विचार
तुलना में फ़ारसी सामाजिक विभाजन
ब्राह्मणवादी अशुद्धता की अवधारणा की आलोचना की
मानते थे कि अशुद्धता को शुद्ध किया जा सकता है (जाति विचारधारा के विरुद्ध)
दृष्टिकोण प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों (मनुस्मृति, वेद, गीता) से प्रभावित थे।

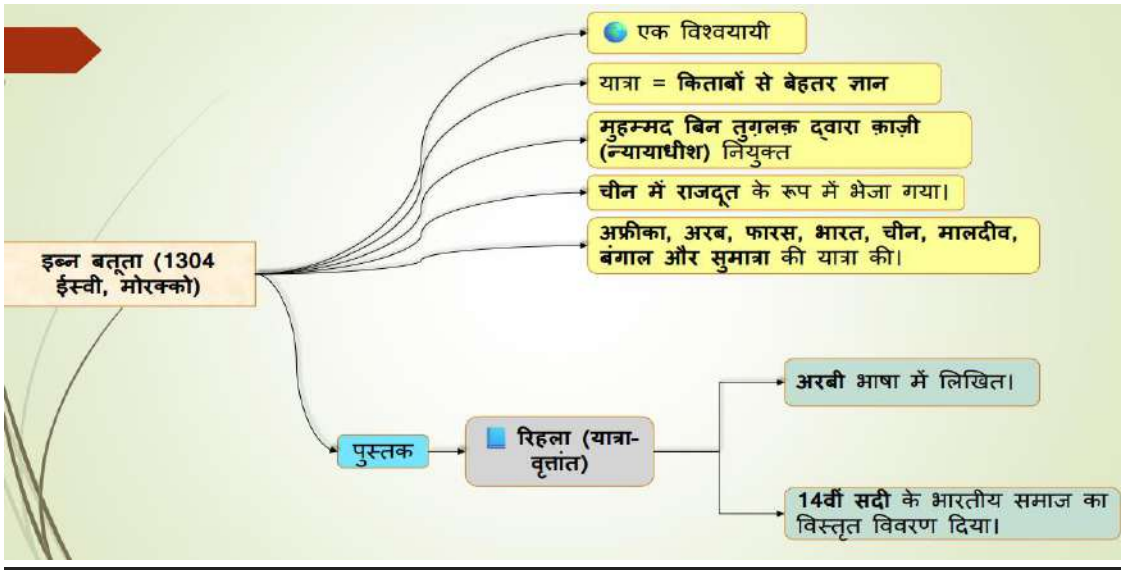
इब्न बतूता (1304 ईस्वी, मोरक्को)
एक विश्वयायी
यात्रा = किताबों से बेहतर ज्ञान
मुहम्मद बिन तुग़लक़ द्वारा क़ाज़ी (न्यायाधीश) नियुक्त
चीन में राजदूत के रूप में भेजा गया।
अफ्रीका, अरब, फारस, भारत, चीन, मालदीव, बंगाल और सुमात्रा की यात्रा की।
पुस्तक
रिहला (यात्रा-वृत्तांत)
अरबी भाषा में लिखित।
14वीं सदी के भारतीय समाज का विस्तृत विवरण दिया।

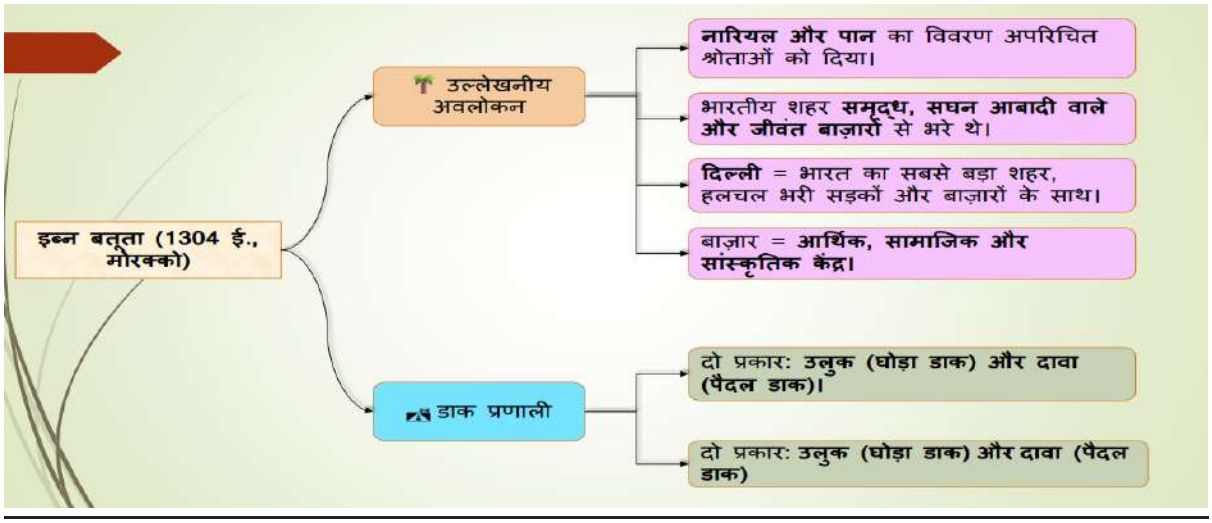
इब्न बतूता (1304 ई., मोरक्को)
उल्लेखनीय अवलोकन
नारियल और पान का विवरण अपरिचित श्रोताओं को दिया।
भारतीय शहर समृद्ध, सघन आबादी वाले और जीवंत बाज़ारों से भरे थे।
दिल्ली = भारत का सबसे बड़ा शहर, हलचल भरी सड़कों और बाज़ारों के साथ।
बाज़ार = आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्र।
डाक प्रणाली
दो प्रकार: उलुक (घोड़ा डाक) और दावा (पैदल डाक)।
दो प्रकार: उलुक (घोड़ा डाक) और दावा (पैदल डाक)

## बहुविकल्पीय व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**अभिकथन एवं कारण आधारित प्रश्न**

1. अभिकथन(A) अल-बिरूनी संस्कृत सहित कई भाषाओं में पारंगत थे।
कारण: (R)अल-बिरूनी की भारत में रुचि ने उन्हें संस्कृत सीखने के लिए प्रेरित किया।
A अभिकथन और R दोनों सही हैं और R, अभिकथन का सही स्पष्टीकरण है।
B A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
C सही है लेकिन R गलत है। D गलत है लेकिन R सही है।

2.अभिकथन(A) इब्न बतूता की " रिहला " चौदहवीं शताब्दी में भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में समृद्ध विवरण प्रदान करती है।
कारण: (R)इब्न बतूता तेरहवीं शताब्दी में भारत आये थे।
(ए) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
(बी) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
( सी) A सही है लेकिन R गलत है।
(डी) A गलत है लेकिन R सही है।

3.अभिकथन(A) अल-बिरूनी का मानना था कि भारत में जाति व्यवस्था अद्वितीय थी और अन्य समाजों में इसकी कोई समानता नहीं थी।
कारण: (R)अल-बिरूनी ने जाति व्यवस्था के ब्राह्मणवादी विवरण को स्वीकार किया।
(ए) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
(बी) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
( सी) A सही है लेकिन R गलत है।
(डी) A गलत है लेकिन R सही है।

4: अभिकथन(A) इब्न बतूता को भारत में अपनी यात्रा के दौरान कई बार लुटेरों के गिरोहों का सामना करना पड़ा।
कारण(R) इब्न बतूता कारवां की अपेक्षा अकेले यात्रा करना पसंद करता था।
(ए) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
(बी) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
( सी) A सही है लेकिन R गलत है।
(डी) A गलत है लेकिन R सही है।

5. निम्नलिखित का मिलान करें :

| | |
|---|---|
| (ए) डोमिंगो पेस | (I) पुर्तगाल |
| (बी) अब्दुर रज्जाक समरकंदी | (II) फारस |
| (सी) अफानासी निकितिन | (III) रूस |
| (डी) निकोलो डि कोंटी | (IV) इटली |

(ए) ए-II, बी-IV, सी-I, डी- III (बी) ए-IV, बी-III, सी-I, डी-II
( सी) ए-I, बी-II, सी-III, डी-IV (डी) ए-III, बी-IV, सी- I, डी-II

6- निम्नलिखित **का** मिलान करें :

| | |
|---|---|
| (ए) डुआर्टे बारबोसा | (I)कारखानों के कामकाज का विस्तृत विवरण प्रदान किया। |
| (बी) अल-बिरूनी | (II) डच यात्री भारत में व्यापक गरीबी देखकर हैरान रह गया |
| (सी) फ्रॉस्वा बर्नियर | (III) भारत में जाति व्यवस्था का विस्तृत विवरण दिया। |

| | |
|---|---|
| (डी) पेल्सर्ट | (IV) पुर्तगाली, व्यापार और समाज का विस्तृत विवरण लिखा |

(ए) ए -II, बी-IV, सी- I, डी- III
(बी) ए - I, बी-III, सी-II, डी-IV
(सी) ए - I, बी-II, सी-III, डी-IV
(डी)- ए-IV, बी-III, सी- I, डी-II

7.निम्नलिखित का मिलान करें :

| | |
|---|---|
| (ए) पीटर मुंडी. | ( I ) मोरक्को . |
| (बी) जे. बैप्टाइज़ टैवर्नियर. | (II) इंग्लैंड. |
| (सी) एंटोनियो मोनसेरेटे. | (III) फ्रांस. |
| (घ) इब्न-बतूता. | (IV) स्पेन. |

( ए) ए-II, बी-III, सी-IV, डी- I
(बी) - ए -IV, बी-III, सीआई, डी-II
(सी)- एआई, बी-II, सी-III, डी-IV
(डी)- ए-III, बी-IV, सीआई, डी-II

8- निम्नलिखित का मिलान करें :

| | |
|---|---|
| (ए) अल-बिरूनी. | ( I ) रिहला . |
| (बी) इब्न-बतूता. | (II) किताब-उल-हिंद। |
| (सी) फ्रांस्वा बर्नियर. | (III) मुगल साम्राज्य में यात्राएँ। |

(ए) ए-II, बी-III, सी- I
(बी) - ए- II, बी - I, सी-III
(सी)- ए-I, बी-II, सी-III,
(डी)- ए-III, बी-II, सी-I

9 . निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-
i बर्नियर के विवरण ने पंद्रहवीं शताब्दी के बाद से पश्चिमी सिद्धांतकारों को प्रभावित किया।
ii मोंटेस्क्यू ने इस विवरण का उपयोग प्राच्य निरंकुशता के विचार को विकसित करने के लिए किया।
iii. बर्नियर के विचार को कार्ल मार्क्स ने एशियाई उत्पादन पद्धति के रूप में विकसित किया।
iv. बर्नियर के अनुसार, मुगल शाही दरबार ग्राम समुदायों की अध्यक्षता करता था।
सही विकल्प चुनें:
(ए) ( i ), (ii) और (iii) (बी) (ii), (iii) और (iv)
(सी) ( i ), (iii) और (iv) (डी) ( i ), (ii) और (iv)

10 .निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
i. मध्यकालीन युग के दौरान, यूरोप और अरब प्रायद्वीप से यात्री भारत आए।
ii.उन्होंने भारत की संस्कृति, धर्मशास्त्र, खनिज विज्ञान और प्रशासन पर व्यापक लेख लिखे।
(ए) केवल (ii) सही है (बी) ( i ) और (ii) दोनों सही हैं
(सी) केवल ( i ) सही है (डी) उपरोक्त में से कोई नहीं

11. फ्रांस्वा बर्नियर के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
i वह एक डॉक्टर, दार्शनिक और इतिहासकार थे।

ii. वह अवसरों की तलाश में मुगल साम्राज्य में आया था।
iii.वह राजकुमार दारा शिकोह के चिकित्सक बन गए।
iv. बर्नियर की रचनाएँ स्पेन में प्रकाशित हुई।
सही विकल्प चुनें:
(ए) ( i ), (ii) और (iii) ( बी) ( ii), (iii) और (iv)
(सी) ( i ), (iii) और (iv) (डी) ( i ), (ii) और (iv)
12. अल-बिरूनी के जाति व्यवस्था के वर्णन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
i अल -बिरूनी ने प्रदूषण की अवधारणा को अस्वीकार किया।
ii उन्होंने सुझाव दिया कि सामाजिक विभाजन भारत के लिए अद्वितीय था।
iii उनका मानना था कि जाति व्यवस्था में अंतर्निहित सामाजिक प्रदूषण की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विपरीत है।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(ए) i और ii ( बी) i और iii
(सी) केवल iii (डी) ii और iii
13.चित्र में उल्लिखित धातु का नाम पहचानें।

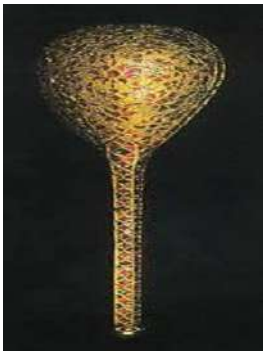

(ए) तांबा ( बी) कांस्य
(सी) सोना (डी) चांदी
नोट- निम्नलिखित प्रश्न प्रश्न संख्या 13 के स्थान पर दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए है
मुगल साम्राज्य के दौरान आयात और निर्यात के लिए किन धातुओं का उपयोग किया जाता था ?
(ए) सोना ( बी) चांदी
(सी) a और b दोनों (डी) उपरोक्त में से कोई नहीं
14. नीचे दी गई जानकारी के आधार पर व्यक्ति की पहचान करें-
( i )- वह पेशे से जौहरी थे
(ii)- वे फ्रांस के निवासी हैं और उन्होंने अपने जीवन में छह बार भारत की यात्रा की।
(ए) टैवर्नियर ( बी) फ्रांस्वा बर्नियर
(सी) पीटर मुंडी (डी) ) डुआर्टे बारबोसा
15. नीचे दी गई जानकारी के आधार पर स्थान की पहचान करें-
( i )-इब्न बतूता को शहर का काजी नियुक्त किया गया।
(ii)-सिंध से इस स्थान तक पहुंचने में उन्हें 50 दिन और मुल्तान से 40 दिन लगे।
(ए) - आगरा ( बी) दिल्ली
(सी)- दौलताबाद (डी)- लाहौर
16.नीचे दी गई जानकारी के आधार पर व्यक्ति की पहचान करें-
( i )- उन्हें ग्लोब ट्रॉटर माना जाता था।
(ii)- वह भारत में नारियल और पान के पत्ते देखकर आश्चर्यचकित हुए।
(ए)इब्न बतूता ( बी) अल बरूनी
(सी)- अब्दुल रज्जाक (डी)- मार्कोपोलो
17. मापतंत्र क्या है?
(ए)लिपियों का अध्ययन ( बी) सिक्कों का अध्ययन
(सी)- मापन का वैज्ञानिक अध्ययन (डी)- भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन
18 .निम्नलिखित में से कौन सा यात्री भारतीय शहरों को 'अवसरों से भरा' बताता है?
(ए) टैवर्नियर ( बी) अल बिरूनी
(सी)- इब्न बतूता (डी)- बर्नियर

19 .अल बिरूनी का जन्म किस देश में हुआ था?

(ए)मोरक्को ( बी) यमन

(सी)- ख़्वारिज़्म (डी)- फ्रांस

20. इब्न बतूता द्वारा उपहार देने के लिए सिंध से खरीदी गई चीजों की पहचान करें-

(ए)घोड़े, ऊँट और वस्त्र ( बी) घोड़ा, दास और ऊँट

(सी)- घोड़े, ऊँट और मलमल (डी)- घोड़ा, दास और हाथी

21. निम्नलिखित यात्रियों के भारत आने का सही क्रम पहचानिए-

(ए)अल बिरूनी, इब्न बतूता, बर्नियर और अब्दुर रज्जाक

(बी) इब्न बतूता, अल बिरूनी, अब्दुर रज्जाक और बर्नियर

(सी)- इब्न बतूता, अल बिरूनी, बर्नियर और अब्दुर रज्जाक

(डी)- अल बिरूनी, इब्न बतूता, अब्दुर रज्जाक और बर्नियर

**उत्तर**

1 (ए) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
2 (सी) A सही है लेकिन R गलत है।
3 (डी) A गलत है लेकिन R सही है
4 (सी) A सही है लेकिन R गलत है
5 (सी) ए- i, बी-II, सी-III, डी-IV
6 (डी) - ए-IV, बी-III, सीआई, डी-II
7 (ए) - ए -द्वितीय, बी-III, सी-IV, डी- I
8 (बी) ए- II, बीआई, सी-III
9 (बी) (ii), (iii) और (iv)
10 (बी) ( i ) और (ii) दोनों सही हैं
11 (ए) ( i ), (ii) और (iii)
12 ( बी) i और iii
13 ( सी) सोना दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए है- ए और बी दोनों
14- ( ए) टैवर्नियर
15 ( बी) दिल्ली
16 (ए) इब्न बतूता
17 ( सी) माप का वैज्ञानिक अध्ययन
18 ( सी) इब्न बतूता
19 ( सी) ख़्वारिज़्म
20 ( बी) घोड़ा, दास और ऊंट
21 ( डी) अल बिरूनी, इब्न बतूता, अब्दुर रज्जाक और बर्नियर

**✍ लघु उत्तर प्रश्न**

22. भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक घटना को समझते समय अल बिरूनी के सामने आई बुनियादी समस्याओं पर चर्चा करें?

उत्तर- **अल-बिरूनी के सामने चुनौतियाँ**

1. **भाषा बाधा** – भारतीय धार्मिक ग्रंथों, दर्शन और साहित्य की मूल भाषा संस्कृत थी, जिसे समझना कठिन था। इसकी जटिलता और सीमित उपलब्धता के कारण अल-बिरूनी को इसे सीखने में समय और प्रयास लगाना पड़ा।
2. **धार्मिक व सांस्कृतिक अंतर** – भारतीय समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ इस्लामी दुनिया से भिन्न थीं, जिनको समझने के लिए उन्होंने भारतीय पंडितों की सहायता ली।

3. **स्थानीय आत्म-अभिमान** – अल-बिरूनी के अनुसार, स्थानीय लोग बाहरी प्रभावों से अलग-थलग और आत्म-केंद्रित रहना पसंद करते थे।

प्रश्न 23- "किताब-उल-हिंद मध्यकालीन भारतीय इतिहास की जड़ों का पता लगाने के लिए एक मूल्यवान स्रोत है"। किताब-उल-हिंद के महत्व को उजागर करने के लिए कथन का विश्लेषण करें ।

उत्तर:- **अलबरूनी की 'किताब-उल-हिंद'**

i) ग्यारहवीं शताब्दी की शुरुआत में लिखी गई यह पुस्तक दक्षिण एशिया, खासकर भारत के इतिहास और समाज पर एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

ii) इसमें उन्होंने भूगोल, साहित्य, दर्शन, रीति-रिवाज, कानून और धार्मिक मान्यताओं का वर्णन किया है।

iii) पुस्तक में फारस और भारत की सामाजिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर भारतीय धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं को समझाया गया है।

iv) अलबरूनी ने भारत की सामाजिक प्रदूषण की धारणा की आलोचना की है।

24- "इब्न बतूता ने भारतीय शहरों को रोमांचक अवसरों से भरा पाया।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं? उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपना उत्तर सिद्ध करें।

उत्तर- (i) इब्न-बतूता ने भारतीय उपमहाद्वीप के शहरों को रोमांचक अवसरों से भरा पाया। वह दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल (1333 ई.) के दौरान भारत आए थे।

(ii) दिल्ली एक घनी आबादी वाला बड़ा क्षेत्र था। उन्होंने दिल्ली की समृद्धि, भव्यता और सांस्कृतिक विविधता से प्रभावित होकर इसे बाजारों, स्मारकों, विद्वानों और धार्मिक विविधता से संपन्न बताया। इब्न-बतूता को सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने काजी (न्यायाधीश) नियुक्त किया था, जो शिक्षित और कुशल विदेशी व्यक्तियों के लिए उपलब्ध अवसरों को दर्शाता है।

(iii) उन्होंने कहा कि दिल्ली के बाजारों के बीच में एक मंदिर और मस्जिद दोनों थे, और बाजार सार्वजनिक मंच नृत्यों और गायन जैसे प्रदर्शनों के लिए खुले थे। उस समय भारत और विदेश से व्यापारी यहां व्यापार और वाणिज्य के लिए आते थे। उन्होंने अपनी रिहला में भारत को धन, अवसर और जटिलता की भूमि के रूप में चित्रित किया, हालांकि वे राजनीति और न्याय के कई पहलुओं के आलोचक भी थे।

**25. रिहला में वर्णित महिला दासों की स्थिति का मूल्यांकन करें ।**

उत्तर:- भारत में दास प्रथा – इब्न बतूता का वर्णन

1- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के पास बड़ी संख्या में गुलाम थे, जिनमें कई आक्रमणों में पकड़े गए या गरीबी में बेचे गए बच्चे थे।

2- गुलाम उपहार के रूप में भी दिए जाते थे; बतूता ने सुल्तान को घोड़े, ऊँट और गुलाम भेंट किए।

3- सुल्तान ने धार्मिक उपदेशक नासिरुद्दीन को 200 गुलाम भेंट किए और इन्हें कुलीनों व साम्राज्य की गतिविधियों की सूचना पाने के लिए भी रखा जाता था।

4- दासियाँ अमीरों के घर नौकरानी बनकर सुल्तान को सूचना देती थीं; अधिकांश दास घरेलू काम करते थे, जबकि दरबारी दासों की स्थिति बेहतर थी।

5- बतूता ने स्वयं सिंध से दास खरीदे और उन्हें मुल्तान के गवर्नर व सुल्तान को उपहार दिए; शाही सेवाओं में कुशल महिला दासों को रखा जाता था।

26. " मुगल भारतीय नगरों को शिविर नगर कहा जाना उपयुक्त है"। मुगल इतिहासकारों की राय के साथ बर्नियर के इस कथन की जाँच कीजिए।

उत्तर( i ) बर्नियर ने मुगल शहरों को "शिविर नगर" के रूप में वर्णित किया।

(ii) उनका तात्पर्य उन शहरों से था जिनका अस्तित्व शाही शिविरों पर आधारित था।

(iii) ये शहर अपने अस्तित्व के लिए शाही शिविरों पर निर्भर थे।

(iv) उनका मानना था कि ये तब अस्तित्व में आए जब शाही दरबार आया और जब वह बाहर चला गया तो इनका तेजी से पतन हो गया।

(v) उन्होंने सुझाव दिया कि उनके पास व्यवहार्य सामाजिक और आर्थिक आधार नहीं था बल्कि वे शाही संरक्षण पर निर्भर थे।

(vi) यद्यपि उस समय भारत में सभी प्रकार के शहर थे: विनिर्माण शहर, व्यापारिक शहर, बंदरगाह शहर, पवित्र केंद्र, तीर्थ शहर, आदि।

(vii) उनका अस्तित्व व्यापारी समुदायों और पेशेवर वर्गों की समृद्धि का सूचक है।

27. "एक बारह वर्षीय युवा विधवा ने बर्नियर को बहुत आश्चर्यचकित किया जिसने उन्हें सती प्रथा का एक जीवंत आलोचक बना दिया"। बर्नियर द्वारा दिए गए सती प्रथा के साक्ष्य के तहत इस कथन का विश्लेषण करें।

उत्तर -

भारत में बर्नियर को एक बहुत ही नया अनुभव मिला जब उन्होंने देखा कि लाहौर में एक बारह वर्षीय विधवा लड़की को जलाया जा रहा था।

II) बर्नियर के अनुसार सती प्रथा पश्चिमी और पूर्वी समाज में महिलाओं के साथ व्यवहार में अंतर को दर्शाती है।

III) उन्होंने देखा कि कैसे एक बाल विधवा को जबरन चिता पर जला दिया गया और वह चीखती रही, जबकि कई वृद्ध महिलाएँ अपनी किस्मत को स्वीकार कर रही थीं। निम्नलिखित तत्वों ने उनका ध्यान आकर्षित किया ।

IV) इस क्रूर प्रथा के तहत जीवित विधवा को जबरन उसके पति की चिता पर बैठा दिया जाता था। लोगों को उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी।

V) वह विधवा सती प्रथा की अनिच्छुक शिकार थी। उसे सती होने के लिए मजबूर किया गया था।

इस प्रकार हम यह मान सकते हैं कि बर्नियर भारतीय समाज की सती प्रथा को देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए थे।

## दीर्घ उत्तर प्रश्न

28 . "जाति व्यवस्था में अंतर्निहित सामाजिक प्रदूषण की अवधारणा प्रकृति के नियम के विपरीत थी।" भारतीय जाति व्यवस्था पर अल-बरूनी के कथन का परीक्षण कीजिए।

उत्तर - अल-बरूनी द्वारा जाति व्यवस्था का विश्लेषण

(i) उन्होंने प्राचीन फारस में चार सामाजिक श्रेणियों का उल्लेख किया

(ii) ब्राह्मणवादी जाति विवरण स्वीकार किया, पर प्रदूषण की धारणा अस्वीकार की।

(iii) अशुद्ध वस्तु के पुनः शुद्ध होने की संभावना को रेखांकित किया।

(iv) सूर्य और समुद्र को शुद्धता बनाए रखने वाले प्राकृतिक उदाहरण बताए।

(v) सामाजिक प्रदूषण की अवधारणा को प्रकृति के नियम के विपरीत माना।

(vi) उनका वर्णन संस्कृत ग्रंथों और ब्राह्मण दृष्टिकोण से प्रभावित था; अंत्यज सस्ते श्रम के स्रोत थे, उत्पीड़न झेलते थे पर आर्थिक तंत्र में शामिल थे।

29. इब्न बतूता द्वारा भारतीय संचार प्रणाली के वर्णन की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर ( i ) इब्न -बतूता डाक प्रणाली की दक्षता से बहुत प्रभावित था।

(ii) इसने व्यापारियों को दूर-दूर तक सूचना भेजने और धन भेजने की अनुमति दी। इसने कम समय में माल भेजा।

(iii) इब्न-बतूता ने दो प्रकार की डाक प्रणाली का उल्लेख किया है।

(iv) अश्व (घोड़े) आधारित डाक प्रणाली को उलुक के नाम से जाना जाता था । इसे शाही घोड़ों द्वारा चलाया जाता था। इसके स्टेशन हर चार मील की दूरी पर स्थापित किए गए थे।

(v) पैदल डाक सेवा (प्रणाली) पर प्रति मील तीन स्टेशन होते थे जिन्हें दावा कहा जाता था ।

(vi) हर तीसरे मील पर एक लोककथा और आबादी वाला गाँव था, जिसके बाहर तीन मंडप थे जहाँ पुरुष रवाना होने के लिए कमर कस कर तैयार रहते थे।

(VII) पुरुष घन लंबाई की एक छड़ रखते थे , जिसके शीर्ष पर तांबे की घंटी बंधी होती थी।

(viii ) पुरुष घंटी बजाते हुए जितनी तेज गति से हो सकता था, अपने प्रारंभिक बिंदु से भागना शुरू करते थे, दूसरी चौकी के लोग तैयार रहते थे और पहले धावक से पत्र लेकर उसी प्रक्रिया का पालन करते हुए दूरी तय कर गंतव्य बिंदु पर पहुँचते थे

30. मुगल साम्राज्य में अधिक जटिल सामाजिक वास्तविकता के बारे में बर्नियर के विचारों की व्याख्या करें।

उत्तर:- बर्नियर का मुगल साम्राज्य का विवरण

(i) बर्नियर ने मुगल साम्राज्य को अत्याचारी बताया और जटिल सामाजिक वास्तविकता की ओर संकेत किया।

(ii) उन्होंने शाही कारखानों में अनेक कारीगरों के कामकाज का वर्णन किया, जहां वे स्वामी की देखरेख में कार्य करते थे।

(iii) मुख्य कारीगर कढ़ाई करने वाले, सुनार, चित्रकार, बढ़ई, टर्नर, जूता, रेशम, ब्रोकेड और मलमल निर्माता थे।

(iv) कारीगर गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते थे क्योंकि राज्य ने उनका स्वामित्व छीन लिया था, जिससे उत्पादन प्रभावित हुआ।

(v) किसी को भी अपनी जन्म स्थिति से सुधार का अवसर नहीं मिलता था।

## स्रोत आधारित प्रश्न

31 .स्रोत का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

**वर्ण व्यवस्था**

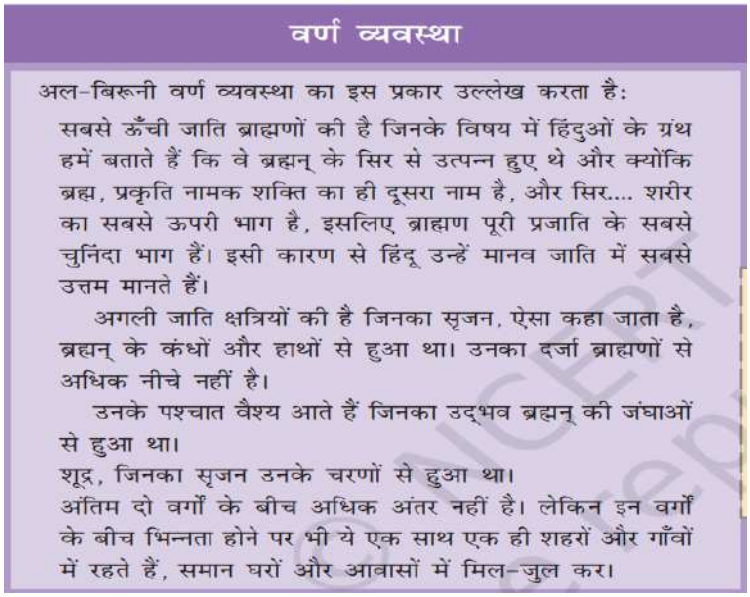

वर्ण व्यवस्था

अल-बिरूनी वर्ण व्यवस्था का इस प्रकार उल्लेख करता है:

सबसे ऊँची जाति ब्राह्मणों की है जिनके विषय में हिंदुओं के ग्रंथ हमें बताते हैं कि वे ब्रह्मन् के सिर से उत्पन्न हुए थे और क्योंकि ब्रह्म, प्रकृति नामक शक्ति का ही दूसरा नाम है, और सिर.... शरीर का सबसे ऊपरी भाग है, इसलिए ब्राह्मण पूरी प्रजाति के सबसे चुनिंदा भाग हैं। इसी कारण से हिंदू उन्हें मानव जाति में सबसे उत्तम मानते हैं।

अगली जाति क्षत्रियों की है जिनका सृजन, ऐसा कहा जाता है, ब्रह्मन् के कंधों और हाथों से हुआ था। उनका दर्जा ब्राह्मणों से अधिक नीचे नहीं है।

उनके पश्चात वैश्य आते हैं जिनका उद्भव ब्रह्मन् की जंघाओं से हुआ था।

शूद्र, जिनका सृजन उनके चरणों से हुआ था।

अंतिम दो वर्गों के बीच अधिक अंतर नहीं है। लेकिन इन वर्गों के बीच भिन्नता होने पर भी ये एक साथ एक ही शहरों और गाँवों में रहते हैं, समान घरों और आवासों में मिल-जुल कर।

31.1 वर्ण व्यवस्था के संबंध में अल-बिरूनी के विवरण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर -अल-बरूनी ने वर्ण व्यवस्था के बारे में जो बताया है वह इस प्रकार है: सबसे ऊंची जाति ब्राह्मण है, जिसके बारे में हिंदुओं की किताबें बताती हैं कि वे ब्रह्मा के सिर से पैदा हुए थे। अगली जाति क्षत्रिय है, जो, जैसा कि वे कहते हैं, ब्रह्मा के कंधों और हाथों से पैदा हुए थे। उनके बाद वैश्य आते हैं जो ब्रह्मा के पेट से विकसित हुए और अंत में शूद्र आए जो ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुए।

31.2 क्या आप इस प्रकार के विभाजन को उचित मानते हैं? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -हम अल-बिरूनी के काम का ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में सम्मान करते हैं, न कि मूल्य निर्णय के रूप में। हम जाति व्यवस्था की भेदभावपूर्ण प्रकृति और समय के साथ इसके विकास को पहचानते हैं, जिसे आधुनिक भारत ने कानूनी और सामाजिक रूप से संबोधित करने का प्रयास किया है।

31.3 वास्तविक जीवन में व्यवस्था इतनी कठोर क्यों नहीं थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -अल-बिरूनी का मानना था कि वर्ण व्यवस्था एक आदर्श सैद्धांतिक ढांचा था, जिसका वर्णन अक्सर मनु स्मृति जैसे धार्मिक ग्रंथों में किया जाता है, लेकिन वास्तविक सामाजिक प्रथाएँ काफी अलग थीं। वास्तविक जीवन में, सामाजिक गतिशीलता और लचीलापन कठोर ग्रंथों द्वारा सुझाए गए से कहीं अधिक था।

32. स्रोत का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें

32.1 डाक प्रणाली के दो प्रकार के नाम बताइए।

उत्तर-भारत में डाक व्यवस्था दो प्रकार की है: घोड़े से खींची जाने वाली डाक, जिसे ' उलूक ' कहते हैं, हर चार मील पर तैनात शाही घोड़ों द्वारा ले जाई जाती है। पैदल डाक के लिए तीन स्टेशन हैं। इसे ' दावा ' कहते हैं, यानी एक-तिहाई मील

32.2 बताइये कि पैदल साक प्रणाली किस प्रकार कार्य करता है।

उत्तर-पैदल डाक के लिए तीन स्थान निर्धारित हैं। इसे ' दावा ' कहते हैं, यानी एक तिहाई मील... अब, हर तीसरे मील पर एक अच्छी आबादी वाला गाँव है, जिसके बाहर तीन मंडप हैं, जिनमें कमर कस कर लोग रवाना होने के लिए तैयार बैठे हैं। उनमें से प्रत्येक में दो हाथ लंबी एक छड़ है। जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुँचता है, उनमें से एक अपने हाथ से पत्र लेता है और छड़ को हिलाते हुए पूरी गति से भागता है

## घोड़े पर और पैदल

डाक व्यवस्था का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है:

भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था है। अश्व डाक व्यवस्था जिसे उलुक कहा जाता है, हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोड़ों द्वारा चालित होती है। पैदल डाक व्यवस्था के प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं; इसे *दावा* कहा जाता है, और यह एक मील का एक-तिहाई होता है... अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गाँव होता है जिसके बाहर तीन मंडप होते हैं जिनमें लोग कार्य आरंभ के लिए तैयार बैठे रहते हैं। उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लंबी एक छड़ होती है जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती हैं। जब संदेशवाहक शहर से यात्रा आरंभ करता है तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों सहित छड़ लिए वह क्षमतानुसार तेज़ भागता है। जब मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज़ सुनते हैं तो वे तैयार हो जाते हैं। जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुँचता है, उनमें से एक उससे पत्र लेता है और वह छड़ हिलाते हुए पूरी ताकत से दौड़ता है, जब तक वह अगले दावा तक नहीं पहुँच जाता। पत्र के अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने तक यही प्रक्रिया चलती रहती है। यह पैदल डाक व्यवस्था अश्व डाक व्यवस्था से अधिक-तीव्र होती है; और इसका प्रयोग अकसर खुरासान के फलों के परिवहन के लिए होता है, जिन्हें भारत में बहुत पसंद किया जाता है।

32.3 इब्न- बत्तुआ का मानना है कि भारत में डाक प्रणाली कुशल थी?

उत्तर- इब्न - बतूता का मानना है कि भारत में डाक व्यवस्था कुशल थी क्योंकि

(I) इस प्रणाली से समाचार और आधिकारिक संदेश विशाल साम्राज्य में तेजी से पहुँचते थे। यह सुल्तान के लिए दूरदराज के प्रांतों में प्रशासन का प्रबंधन करने के लिए विशेष रूप से उपयोगी था।

(II) इस प्रणाली ने लोगों को कुशल डाक सेवाएँ प्रदान कीं।

## विषय छः

## भक्ति -सूफी परंपराएं
## धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रन्थ
## (लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक)

### अध्ययन उद्देश्य

- धार्मिक विकास को समझें।
- मध्यकालीन काल के दौरान धार्मिक विकास को समझने के लिए विभिन्न भक्ति और सूफी संतों के दर्शन का सारांश दीजिए।
- समाज में एकता, शांति, सद्भाव और भाईचारा स्थापित करने के लिए धार्मिक आंदोलन को समझना

### अध्याय का सारांश

**1. धार्मिक विश्वासों और आचरणों की गंगा-जमुनी बनावट**

- इस कल की सबसे प्रभावी विशेषता यह है कि साहित्य और मूर्ति कला दोनों में ही अनेक तरह के देवी देवता आधिकारिक दृष्टिगत होते हैं
- **मणिक्वचक्कार** नयनार संत था।

**1.1 पूजा प्रणालियों का समन्वय**

- महान और लघु परंपराएं 20वीं शताब्दी के समाजशास्त्री **रॉबर्ट रेडफील्ड** द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरण का वर्णन करने के लिए मुद्रित की। **जगन्नाथ** (संपूर्ण विश्व का स्वामी),बलभद्र व बहन सुभद्रा की मूर्ति उड़ीसा में आदिवासी लकड़ी से बनाते हैं।

यह आकृति (दाहिने) जगन्नाथ की है जो अपनी बहन सुभद्रा (मध्य) और भाई बलराम (बाएं) के साथ है|

**8. नवीन भक्ति पंथ**

**उत्तरी भारत में संवाद और असहमति**

- **कबीर** (14-15वी शताब्दी )की वाणी- **'कबीर बीजक'** कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी व अन्य स्थानों पर संरक्षित **'कबीर ग्रंथावली',** दादू पंथियों द्वारा राजस्थान तथा कबीर के पद **आदि ग्रंथ साहिब** में भी संकलित हैं।
- कबीर की रचनाएं अन्य भाषाओं और बोलियां -निर्गुण कवियों की **संत भाषा** ,**उलटभाषी (** उल्टी कहीं जाने वाली युक्तियां )आदि में हैं।
- **कबीर की शिक्षा-** कबीर इस्लामी दर्शन की तरह परम सत्य को अल्लाह , खुदा , हजरत और पीर कहते हैं। वेदांत दर्शन से प्रभावित होते हुए सत्य को अलख, अदृश्य,निराकार, ब्रह्म और आत्मा कहकर भी संबोधित करते हैं। कबीर ने योगी परंपरा से शब्द और शून्य जैसे शब्दों का भी इस्तेमाल किया। कबीर की कविताएं इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्ति भंजन का समर्थन करती है तो हिंदू धर्म के बहुदेवद और मूर्ति पूजा का खंडन करती है।
- वैष्णव परंपरा की जीवनियों में कबीर( कबीर का अरबी में अर्थ है महान) को जन्म से हिंदू कबीर दास बताया गया है उनका लालन-पालन नीरू निर्माण नामक मुस्लिम जुलाहे ने किया, कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे।
- **बाबा गुरु नानक**( 1469 से 1539 ) का जन्म हिंदू व्यापारी परिवार में पाकिस्तान के पंजाब में ननकाना गांव में रवि नदी के पास हुआ।
- **नानक जी की शिक्षा-** नानक जी ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया और यज्ञ अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप आदि का विरोध किया ,हिंदू -मुसलमान के धर्म ग्रंथो को नकारा। उन्होंने परम रब को निराकार बताया तथा रब की उपासना का उपाय था उनका निरंतर स्मरण व नाम का जाप।
- बाबा ने पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से विचार रखें ,अलग-अलग रागों में बाबा गुरु नानक गाते थे, वह सेवक **मर्दाना रबाब** बजाता था।

- बाबा ने **सामुदायिक उपासना (संगत)** के नियम बनाए तथा अपने अनुयाई **अंगद** को अपने बाद गुरु पद पर आसीन किया, जिसका पालन 200 वर्षों तक हुआ।
- बाबा नवीन धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे।
- पांचवे **गुरु अर्जन देव** ने बाबा गुरु नानक तथा उनके चार उत्तराधिकारियों ,बाबा फरीद, रविदास और कबीर की वाणी को '**आदि ग्रंथ साहिब**' में संकलित किया इनको गुरु वाणी कहा जाता है और यह अनेक भाषा में रचे गए,।
- 17वीं शताब्दी में दसवें **गुरु गोविंद सिंह जी** ने नवे गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को भी इसमें शामिल किया और इस ग्रंथ को '**गुरु ग्रंथ साहिब**' कहा गया।
- गुरु गोविंद सिंह ने **खालसा पंथ** की 1699 में स्थापना की ( पवित्रों की सेना)और उसके पांच प्रतिकों का वर्णन किया -बिना काटे कैश, कृपाण ,कच्छ, कंघा और लोहे का कटार।
- गुरु गोविंद सिंह के नेतृत्व में समुदाय एक सामाजिक, धार्मिक और सैन्य बल के रूप में संगठित होकर सामने आया।
- **मीराबाई** संभवतः भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवित्री हैं।
- मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की राजपूत राजकुमारी थी जिसका विवाह मेवाड़ के सिसोदिया कुल में किया गया।
- मीरा के **गुरु रैदास (रविदास)** थे जो एक चर्मकार थे।
- मीराबाई के आसपास अनुयायियों का जमघट नहीं लगा और उन्होंने किसी निजी मंडली की नींव भी नहीं डाली।
- 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में असम में **शंकरदेव वैष्णव धर्म** के मुख्य प्रचारक के रूप में उभरे। उनके उपदेशों को '**भगवती धर्म**' कहकर संबोधित किया। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के लिए सत्र या मठ तथा **नामघर जैसे प्रार्थना ग्रह** की स्थापना को बढ़ावा मिला। शंकर देव की प्रमुख काव्य रचनाओं में **कीर्तन घोष** भी हैं।

**मानचित्र/संकल्पना चार्ट (माइंड मैप )**

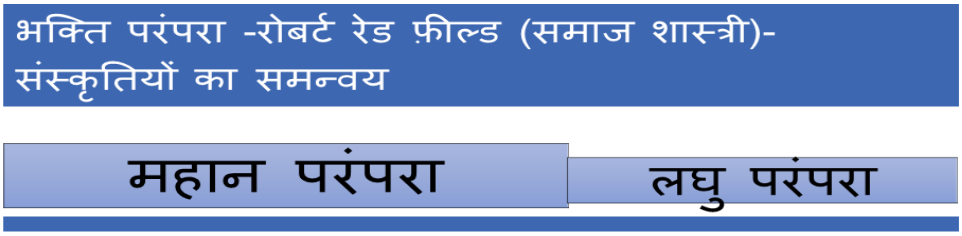


**माईंड मैप-2**

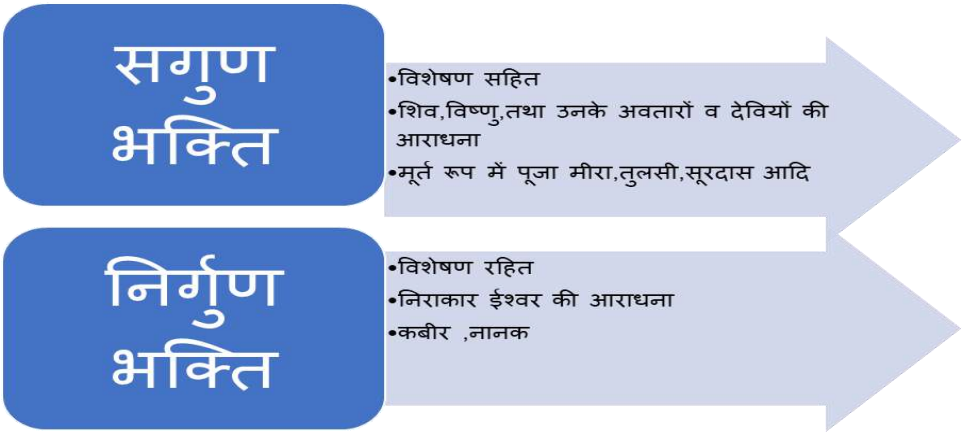


**माईंड मैप-3**

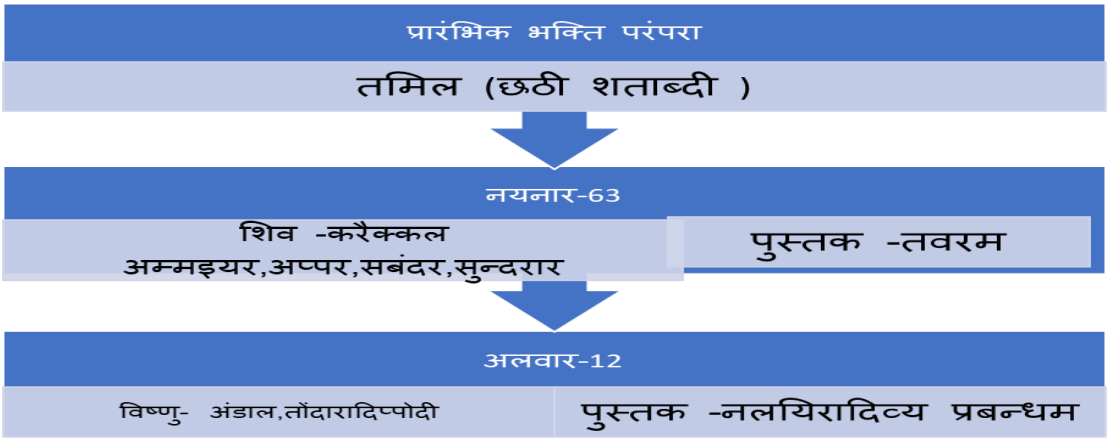


**माईंड मैप-4**

**लिंगायत /वीरशैव**

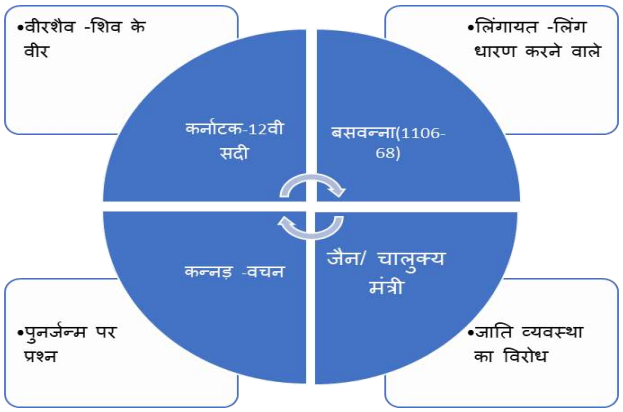


## बहुविकल्पीय व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित है?

| | (सूफी) | (क्षेत्र) |
|---|---|---|
| A | शेख मुईनुद्दीन चिश्ती | -आगरा |
| B | ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी | -दिल्ली |
| C | शेख निजामुद्दीन औलिया | -अजमेर |
| D | शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए- देहली | -जयपुर |

Q. 2 सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:

| सूची I (संत) | सूची II (परम्पराएँ) |
|---|---|
| i अंडाल | 1. सूफी |
| ii बासवन्ना | 2. लिंगायत |
| iii कराइक्काल अम्मइयार | 3. अलवार |
| iv बाबा फरीद | 4. नयनार |

विकल्प :

A i-1, ii-3, iii-2, iv-4

B i-2, ii-4, iii-1, iv-3

C i-3, ii-2, iii-4, iv-1

D i-4, ii-1, iii-3, iv-2

Q. 3 निम्नलिखित में से कौन-सा सही जोड़ा सुमेलित है?

| | संत | उनका क्षेत्र |
|---|---|---|
| A | कबीरदास | - कर्नाटक |
| B | मीराबाई | - राजस्थान |
| C | बासवन्ना | - असम |
| D | शंकरदेव | - उत्तर प्रदेश |

4. अगर आपको अमीर खुसरो पर एक वृतचित्र (DOCUMENTARY) बनाना हो, तो कौन-सा पहलू उनके सांस्कृतिक महत्ता को सबसे अच्छा उजागर करेगा?

A अरबी भाषा में उनकी महारत
B उनकी कविताएँ और संगीत समा
C उर्दू के विकास में उनका योगदान
D दिल्ली सल्तनत के साथ उनका सम्बन्ध

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, अभिकथन (A) और कारण (R)। निम्नलिखित को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

अभिकथन (A): मीराबाई निर्गुण भक्ति परंपरा की कवयित्री थीं।

कारण (R) : वह शताब्दियों से प्रेरणा का स्रोत रहीं हैं।

A अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है।
B अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
C अभिकथन (A) सही है, परन्तु कारण (R) ग़लत है।।
D अभिकथन (A) ग़लत है, परन्तु कारण (R) सही है।

6. निम्नलिखित को काल अनुसार क्रमबद्ध कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए:

(i) गुरु गोबिन्द सिंह (ii) गुरु अर्जन देव
(iii) गुरु हरकिशन देव (iv) गुरु नानक देव

विकल्प :

A (i), (iv), (iii), (ii) B (ii), (iii), (iv), (i)
C (iii), (i), (ii), (iv) D (iv), (ii), (iii), (i)

7. मध्यकालीन भारत के नाथ सम्प्रदाय के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है ?

A नाथ सम्प्रदाय मुख्यतः कारीगर समूहों का था।
B यह सामान्य भाषा में अपने विचार रखते थे।
C ये भक्त लोग उत्तर भारत के थे।
D अमीर खुसरो इस सम्प्रदाय में से एक प्रमुख थे।

8. निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :

| सूची-I (पंथ) | सूची-II (संत) |
|---|---|
| a. अलवार | 1. गुरु गोबिंद सिंह |
| b. नयनार | 2. अंडाल |
| c. सूफीवाद | 3. कराईक्काल अम्मइयार |
| d. सिख धर्म | 4. बाबा फरीद |

विकल्प :

| | a | b | c | d |
|---|---|---|---|---|
| (A) | 1 | 3 | 2 | 4 |
| (B) | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (C) | 2 | 3 | 4 | 1 |
| (D) | 4 | 2 | 3 | 1 |

9. भक्ति संत कराइक्कल अम्मइयार के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं ?

(i) वह कर्नाटक की एक महिला भक्त थी।

(ii)वह एक महिला नयनार थी।

(iii) वह शिव भक्त थी।

(iv) उन्होंने नलयिरा दिव्यप्रबंधम् की रचना की।

सही विकल्प का चयन कीजिए :

A (ii) और (iv) B (iii) और (iv)

C (i) और (iii) D (ii) और (iii)

10. निम्नलिखित में से किसने गुरु तेग बहादुर जी की रचना को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया?

(A) गुरु हरगोबिंद साहिबजी (B) गुरु गोबिंद सिंहजी

(C) गुरु अर्जन देवजी (D) गुरु हरकृष्ण साहिबजी

11. वीरशैव या लिंगायत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

A वे ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता मानते हैं।

B वे अपने मृतकों को दफनाते नहीं हैं।

C उनका मानना है कि मृत्यु के बाद वे शिव से एक हो जायेंगे।

D वे विष्णु के अनुयायी हैं।

12. निम्नलिखित में से कौन अमीर खुसरो के मार्गदर्शक थे ?

A शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली B शेख मुइनुद्दीन चिश्ती

C शेख सलीम चिश्ती D शेख निज़ामुद्दीन औलिया

13. निम्नलिखित जानकारी की सहायता से शेख निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य की पहचान कीजिए :

- वह मध्यकाल के एक महान कवि और संगीतकार थे।
- इन्होंने चिश्ती समा को एक अनूठा रूप दिया।
- इन्होंने कव्वाली की शुरुआत की।

A बाबा फरीद B दाता गंज बख्श

C अमीर खुसरो D ज़ियाउद्दीन बरनी

14. नीचे दी गई जानकारी की सहायता से प्रारंभिक भक्ति परंपरा की स्त्री भक्त के नाम की पहचान कीजिए :

- वह शिव भक्त थीं।
- उन्होंने अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

A करइक्काल अम्मइयार B मीराबाई

C अंडाल D मुक्ताबाई

15. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सुमेलित है ?

| | सूफी संत | दरगाह का स्थान |
|---|---|---|
| A | शेख मुइनुद्दीन चिश्ती | अजोधन (पाकिस्तान) |
| B | ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी | आगरा |
| C | शेख निजामुद्दीन औलिया | दिल्ली |
| D | शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर | अजमेर |

16. निम्नलिखित जानकारी को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इस दरगाह का स्थान नीचे दिए विकल्पों में से पहचानिए।

- यह शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है।
- अकबर ने इस दरगाह का कई बार दौरा किया।

विकल्प:

A अजमेर B दिल्ली

C आगरा D फतेहपुर सीकरी

17. निम्नलिखित में से वीरशैव परंपरा के संदर्भ में सही विकल्प का चयन कीजिए:

A इस परंपरा का उद्भव कर्नाटक में हुआ।

B वे विष्णु के अनुयायी थे।

C वे पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानते थे।

D वे श्राद्ध संस्कार का पालन करते थे।

18. निम्नलिखित में से सिक्खों के किस गुरु ने 'आदि ग्रंथ साहिब' का संकलन किया ?

A गुरु नानक देव जी B गुरु अर्जुन देव जी

C गुरु हरगोबिंद साहिबजी D गुरु गोबिंद सिंह जी

19. बॉक्स में दी गई निम्नलिखित जानकारी को सावधानीपूर्वक पढ़िए :

सगुण भक्ति के भक्त की पहचान कीजिए और उसका नाम लिखिए।

- वह मारवाड़ के मेड़ता की एक राजपूत राजकुमारी थी।
- उसका विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया।
- उसने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इनकार किया ।
- उसने प्रभु कृष्ण को अपना प्रेमी माना।

A करइक्काल अम्मइयार B मीराबाई

C अंडाल D मुक्ताबाई

20. उस बोधवर्धक या सिख समुदाय के गुरु की पहचान कीजिए और उनका नाम लिखिए जिनके कार्यों और योगदानों को नीचे दिया गया है:

-उन्होंने खालसा पंथ की नींव डाली।

- उन्होंने अपने सिखों को पाँच भिन्न प्रतीक समर्पित किए।
- उन्होंने समुदाय को सामाजिक, धार्मिक और सैन्य बल के रूप में संगठित किया।
- उन्होंने नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित किया।

A गुरु नानक देव जी B गुरु अर्जुन देव जी

C गुरु हरगोबिंद साहिबजी D गुरु गोबिंद सिंह जी

21. निम्न में से किस स्थान पर यह मूर्ति रखी है?

A तंजावुर B मदुरई

C पुरी D मैसूर

**नोट:** निम्नलिखित **प्रश्न केवल दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए** है, प्रश्न संख्या 21 के स्थान पर भगवान जगन्नाथ का सम्बन्ध निम्नलिखित से है:

A ब्रह्मा B शिव

C विष्णु D उपरोक्त सभी

**उत्तर कुंजी बहुवुकल्पीय प्रश्न**

**1 (B)** ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी -दिल्ली

2 **(C)** i-3, ii-2, iii-4, iv-1

3 **(B)** मीराबाई - राजस्थान
4 **(B)** उनकी कविताएँ और संगीत समा
5 **(D)** अभिकथन (A) ग़लत है, परन्तु कारण (R) सही है।
6 **(D)** (iv), (ii), (iii), (i)
7 **(D)** अमीर खुसरो इस सम्प्रदाय में से एक प्रमुख थे।
8 **(C)** 2 3 4 1
9 **(D)** (ii) और (iii)
10 **(B)** गुरु गोबिंद सिंहजी
11 (C) उनका मानना है कि मृत्यु के बाद वे शिव से एक हो जायेंगे।
12 **(D)** शेख निज़ामुद्दीन औलिया
13 **(C)** अमीर खुसरो
14 **(A)** करइक्काल अम्मइयार
15 **(C)** शेख निजामुद्दीन औलिया दिल्ली
16 **(D)** फतेहपुर सीकरी
17 **(A)** इस परंपरा का उद्भव कर्नाटक में हुआ।
18 **(B)** गुरु अर्जुन देव जी
19 **(B)** मीराबाई
20 **(D)** गुरु गोबिंद सिंह जी
21 **(C)** पुरी/ **(C)** विष्णु(दृष्टिबाधित उम्मीदवारों)

### ✍ लघु उत्तर प्रश्न

**22. कल्पना कीजिए कि आप मीराबाई के जीवन पर एक प्रोजेक्ट बना रहे है | आप उनकी कविताओं में भक्ति की भावनाओं को कैसे स्पष्ट करेंगे?**

**अथवा**

**मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के संदर्भ में मीराबाई के जीवन और योगदान का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर:-मीराबाई**

(i) मीराबाई (लगभग 15वीं-16वीं शताब्दी) भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध महिला कवयित्री हैं।
(ii) वह सगुण भक्ति परंपरा से संबंधित हैं।
(iii) वह मारवाड़ के मेड़ता की एक राजपूत राजकुमारी थीं।
(iv) उनकी शादी उनकी इच्छा के विरुद्ध राजस्थान के मेवाड़ के सिसोदिया वंश के एक राजकुमार से हुई थी।
(v) उन्होने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इंकार किया।
(vi) वह कृष्ण की प्रेमिका के रूप में भक्ति संत थीं।
(vii) उनके ससुराल वालों ने उन्हें जहर देने की कोशिश की लेकिन वह राजमहल से निकल कर एक घुमक्कड़ गायिका बन गई।
(viii) उनके गुरु रैदास थे, जो चर्मकार थे।
(ix) उन्होंने जातिगत समाज के मानदंडों को नहीं माना।
(x) वह विधवा का श्वेत वस्त्र अथवा सन्यासिनी के जोगिया वस्त्र पहनती थी।
(xi) उन्होने अपने पति के राजमहल की सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया।

23. **अलवार और नयनार परंपराओं में महिला भक्तों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।**

**अथवा**

**"प्रारंभिक भक्ति परंपरा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता स्त्रियों की उपस्थिति थी।" इस कथन को सिद्ध करने के लिए उदाहरण दीजिए।**

उत्तर:-

(i) महिला संत प्रारंभिक भक्ति परंपरा का हिस्सा थीं।

(ii) अंडाल नामक अलवार स्त्री के भक्ति गीत व्यापक स्तर पर गाए जाते थे और आज भी गाए जाते हैं।

(iii) अंडाल स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेम भावना को छंदों में व्यक्त करती थी।

(iv) उनके छंद देवता के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करते हैं।

(v) एक और स्त्री शिव भक्त करईक्काल अम्मैयार थी।

(vi) अपने उद्देश्य को पाने के लिए घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

(vii) उनकी रचनाएँ नयनार परंपरा के भीतर संरक्षित हैं।

(viii) इन स्त्रियों की जीवन पद्धति और इनकी रचनाओं ने पितृसतात्मक आदर्शों को चुनौती दी।

(ix) वह किसी वैकल्पिक व्यवस्था अथवा भिक्षुणी समुदाय की सदस्या नहीं बनी।

25. **चोल सम्राटों ने भक्ति परंपरा का समर्थन किस प्रकार किया? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर:-

(i) कुछ ऐसे उदाहरण थे जो ये दर्शाते हैं कि अलवार एवं नयनार भक्ति संतों के शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे।

(ii) उन्हें शाही संरक्षण प्राप्त था।

(iii) चोल शासकों ने विष्णु और शिव के मंदिरों के निर्माण के लिए अनुदान दिया।

(iv) तंजावुर और चिदम्बरम में महत्त्वपूर्ण मंदिरों का निर्माण चोल शासकों के संरक्षण में किया गया था।

(v) चोल शासकों ने दैवीय समर्थन का दावा किया।

(vi) उन्होंने शानदार मंदिरों का निर्माण करके अपनी शक्ति और स्थिति की घोषणा की।

(vii) इन राजाओं ने तमिल भजनों का गायन भी शुरू किया।

(viii) उन्होंने तमिल भाषा के शैव भजनों का एक संकलन एक ग्रंथ (तवरम) में किया।

(xi) चोल शासक परांतक प्रथम ने एक शिव मंदिर में संत कवि अप्पार, संबंदर और सुंदरार की धातु की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की।

26. **कबीर के दर्शन और शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**

**अथवा**

**'कबीर एक ऐसे संत के रूप में जाने जाते हैं जिनके दर्शन ने भक्ति आंदोलन को अत्यधिक प्रभावित किया।' उपयुक्त बिंदुओं द्वारा कथन को न्यायसंगत ठहराइये।**

**अथवा**

**भक्ति आंदोलन में कबीर के योगदान और धार्मिक व सामाजिक सद्भाव पर उनके प्रभावों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर:-

(i) कबीर निर्गुण विचारधारा के चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी के कवियों के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक थे।

(ii) कबीर की वाणी कबीर-बीजक, कबीर-ग्रंथावली आदि ग्रंथ साहिब में संकलित है।

(iii) कबीर की रचनाएँ संत भाषा, उलटबाँसी में है।

(iv) उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया

(v) अल्लाह, खुदा, हज़रत, अलख, निराकार, ब्रह्मन्, आत्मन् कहकर परम सत्य को पुकारा है।

(vi) मूर्तिपूजा, बलि, छूआछूत की आलोचना।

(vii) नाम सिमरन, जप को महत्त्व दिया है।

(viii) समानता और गुरु की भक्ति पर बल दिया है।

(ix) संसार के एक ही स्वामी की विचारधारा का समर्थन।

(x) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (किन्हीं 3 बिंदुओं की व्याख्या अपेक्षित है)

27. **'बारहवीं शताब्दी, में कर्नाटक में वीरशैव संतों के द्वारा एक धार्मिक और सामाजिक आंदोलन हुआ'। उपयुक्त बिंदुओं के साथ कथन को स्पष्ट कीजिए।**

**अथवा**

**बासवन्ना द्वारा शुरू की गई वीरशैव परंपरा ने मध्ययुगीन कर्नाटक में धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों में कैसे योगदान दिया ? उपयुक्त तर्कों द्वारा कथन को न्यायसंगत ठहराइए|**

उत्तर:-

लिंगायत शिक्षण और दर्शन

कर्नाटक में 12वीं सदी में बसवन्ना (1106 से 68 ) के नेतृत्व में वीरशैव या लिंगायत( शिव के वीर / लिंग धारण करने वाले ) परंपरा चलाई। बसवन्ना (ब्राह्मण ) प्रारंभ में जैन मत को मानता था और चालुक्य राजा के दरबार में मंत्री थे।

(i) कर्नाटक में इस आंदोलन का नेतृत्व बासवन्ना नामक एक ब्राह्मण ने किया था।

(ii) उनके अनुयायियों को वीरशैव (शिव के वीर) या लिंगायत (लिंग धारण करने वाले) के रूप में जाना जाता था।

(iii) लिंगायत शिव की लिंग के रूप में पूजा करते हैं।

(iv) वे आम तौर पर चांदी के पिटारे में एक छोटा लिंग बाएं कंधे(वाम) पर धारण करते है।

(v) लिंगायत जाति की अवधारणा के खिलाफ थे।

(vi) उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और वयस्क विवाह का समर्थन किया।

(vii) लिंगायतों का मानना है कि मरने पर भक्त शिव के साथ एक हो जाएगा और इस दुनिया में वापस नहीं आएगा।

(viii) उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी सवाल उठाए।

(ix) वीरशैव परंपरा आंदोलन में शामिल होने वाले महिलाओं और पुरुषों द्वारा कन्नड़ में रचित वचनों (शाब्दिक रूप से, कहावत) से ली गई है।

## दीर्घ उत्तर प्रश्न

**28. गुरु नानक देव के दर्शन और शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए|**

**अथवा**

**बाबा गुरु नानक देव जी ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया इस कथन की व्याख्या कीजिए|**

उत्तर:-

बाबा गुरु नानक (1469 से 1539) का जन्म हिंदू व्यापारी परिवार में पाकिस्तान के पंजाब के ननकाना गांव में रवि नदी के पास हुआ था।

(i) गुरु नानक देव जी ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया, जिसमें उन्होंने परम रब को निराकार बताया।

(ii) उन्होंने बलिदानों और अनुष्ठानों को अस्वीकार किया, जैसे यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा और कठोर तप का विरोध किया।

(iii) अकाल परमात्मा के बारे में चर्चा की और हिंदू-मुस्लिम धर्मग्रंथों को नकारा।

(iv) सामाजिक समानता के लिए लंगर (सामूहिक भोज) की स्थापना की।

(v) अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से रखें, जिसमें रब की उपासना का उपाय उनके निरंतर स्मरण और नाम का जाप था।

(vi) सामूहिक उपासना के लिए नियम बनाए जिसे संगत कहा जाता है।

(vii) अपने अनुयायी अंगद को गुरु पद पर आसीन किया, जिन्हें लगभग 200 वर्षों तक अनुसरित किया गया।

(viii) पाँचवें गुरु अर्जुन देव ने आदि ग्रंथ साहिब में बाबा गुरु नानक और उनके चार उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास, कबीर की बानी को संकलित किया, जिसका नाम 'गुरबानी' है।

**29. अलवारोंऔर नयनारों के विचारों की व्याख्या कीजिए | राज्यों के साथ इन्होनें अपने संबंध किस प्रकार स्थापित किए? स्पष्ट कीजिए |**

**अथवा**

**अलवार और नयनार संतों ने तमिल भक्ति आन्दोलन के विकास में किस प्रकार योगदान दिया? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए |**

**उत्तर:-**

(i) प्रारंभिक भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व अलवार और नयनारों ने किया था।

(ii) अलवार भगवान विष्णु के भक्त थे और नयनार भगवान शिव के भक्त थे।

(iii) वे अपने देवताओं की स्तुति में तमिल में भजन गाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे।
(iv) इन संत कवियों की रचनाओं का मंदिरों में गायन और संतों की छवियों की पूजा मंदिर के अनुष्ठानों का हिस्सा बन गई।
(v) उनकी रचनाएँ वेदों जितनी ही महत्वपूर्ण थी, उदाहरण के लिए नलयिरादिव्यप्रबंधम
(vi) अंडाल (अलवार संत) और कराइक्काल अम्मड्यार (नयनार संत) जैसी महिलाएं भक्ति संत थी।
(vii) भक्ति संतों ने जातिगत समानता का प्रचार किया क्योंकि इस पंथ के अनुयायी विविध सामाजिक पृष्ठभूमि से आते थे।
(vii) वे सुधारवादी थे क्योंकि उन्होंने जाति और लैंगिक असमानता को चुनौती दी थी।
(ix) उन्हें चोलों से संरक्षण मिला और चोल राजाओं के संरक्षण में कई मंदिरों का निर्माण किया गया।
(x) नयनार और अलवार संत वेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे।

**राज्य के साथ संबंध :**

(i) कुछ ऐसे उदाहरण थे जो ये दर्शाते हैं कि अलवार एवं नयनार भक्ति संतों के शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे।
(ii) उन्हें शाही संरक्षण प्राप्त था।
(iii) चोल शासकों ने विष्णु और शिव के मंदिरों के निर्माण के लिए अनुदान दिया।
(iv) तंजावुर और चिदम्बरम में महत्त्वपूर्ण मंदिरों का निर्माण चोल शासकों के संरक्षण में किया गया था।
(v) चोल शासकों ने दैवीय समर्थन का दावा किया।
(vi) उन्होंने शानदार मंदिरों का निर्माण करके अपनी शक्ति और स्थिति की घोषणा की।
(vii) इन राजाओं ने तमिल भजनों का गायन भी शुरू किया।
(viii) उन्होंने तमिल भाषा के शैव भजनों का एक संकलन एक ग्रंथ (तवरम) में किया।
(xi) चोल शासक परांतक प्रथम ने एक शिव मंदिर में संत कवि अप्पार, संबंदर और सुंदरार की धातु की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की।

**30. सूफीवाद के उदय के कारणों की व्याख्या कीजिए और सूफियों के राज्य के साथ संबंधों को भी स्पष्ट कीजिए| 4+4**

**अथवा**

**सूफीवाद की मान्यताओं और प्रथाओं की व्याख्या कीजिए|**

**अथवा**

**इस्लामिक शिक्षाओं और दर्शन का वर्णन कीजिए।**

उत्तर:- सूफीवाद

(i) सूफियों ने रहस्यवाद को अपनाया।
(ii) ईश्वर के प्रति भक्ति की बात की।
(iii) पैगंबर मुहम्मद को इंसान-ए-कामिल मानकर अनुसरण सिखाया।
(iv) खानकाह में शेख/पीर के नेतृत्व में समुदाय बनाया।
(v) दीक्षा के विशेष अनुष्ठान बने।
(vi) शेख की मृत्यु पर दरगाह जियारत का स्थान बनी और पीर ने उत्तराधिकार तय किया।
(vii) खानकाह में आचरण-नियम व दान से चलने वाली लंगर प्रथा रही; संगीत व नृत्य से ईश्वर से जुड़ाव।

**राज्य के साथ सूफियों के संबंध**

(i) सूफी साहित्य और प्रथाएँ विकसित हुईं।
(ii) राजनीतिक वर्ग से अनुदान व दान स्वीकार किए।
(iii ) शासकों ने खानकाहों को कर-मुक्त भूमि दी और उनका समर्थन चाहा।
(iv) सूफी संत अल्लाह से मिली सत्ता पर बल देते और उलमा की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।
(v) सुल्तान चाहते थे उनकी कब्रें सूफी स्थलों के पास हों; कुछ मामलों में दोनों में संघर्ष भी हुआ।

**इस्लाम की शिक्षा**

(i) ईश्वर एक है, पैगंबर मुहम्मद उसके दूत हैं (शहादत)।
(ii) दिन में पाँच बार नमाज़ (सलात),
(iii) ज़कात देना,
(iv) रमज़ान में रोज़ा (सौम),

(v) मक्का की हज यात्रा।

### स्रोत आधारित प्रश्न

**31. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:**

**अमीर खुसरो और कौल**

अमीर खुसरो (1253–1325) महान कवि, संगीतज्ञ तथा शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। उन्होंने *कौल* (अरबी शब्द जिसका अर्थ है कहावत) का प्रचलन करके चिश्ती *समा* को एक विशिष्ट आकार दिया। कौल को कव्वाली के शुरू और आखिर में गाया जाता था। इसके बाद सूफ़ी कविता का पाठ होता था जो फारसी, हिंदवी अथवा उर्दू में होती थी और कभी-कभी इन तीनों ही भाषाओं के शब्द इसमें मौजूद होते थे। शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर गाने वाले कव्वाल अपने गायन की शुरुआत कौल से करते हैं। उपमहाद्वीप की सभी दरगाहों पर कव्वाली गाई जाती है।

31.1 अमीर खुसरो ने चिश्ती 'समा' का कौन सा अनोखा रूप प्रचलित किया?
उत्तर- उन्होंने कौल की शुरुआत की।
31.2 चिश्ती-सूफी परंपराओं ने अमीर खुसरो की आध्यात्मिकता की समझ को किस प्रकार आकार दिया?
उत्तर- (i) क्रौल कव्वाली के परिचय निष्कर्ष के रूप में कार्य करता है।
(ii) सूफ़ी काव्य में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग।
(iii) उन्होंने चिश्ती समा को अनोखा रूप दिया।
32.3 कव्वाली में सूफीवाद के महत्व का विश्लेषण कीजिये।
उत्तर- (i) सृष्टि की एकता
(ii) प्रेम और भक्ति
(iii) सेवा और मानवता
(iv) आत्म की अनुभूति
(v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु/किन्हीं दो का मूल्यांकन

**32. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:**

**एक ईश्वर**

यह रचना कबीर की मानी जाती है:
हे भाई यह बताओ, किस तरह हो सकता है
कि संसार के एक नहीं दो स्वामी हों ?
किसने तुम्हें भ्रमित किया है ?
ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा जाता है जैसे अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि तथा हजरत ।
विभिन्नताएँ तो केबल शब्दों में हैं जिनका आविष्कार हम स्वयं करते हैं।
32.1 कबीर ने परम सत्यता का विवरण कैसे किया है?
**उत्तर:**i. कबीर ने एकता पर आधारित परंपराओं की श्रृंखलाएँ खींचकर 'परम सत्य' का वर्णन किया।
ii. उन्होंने परम सत्य को राम, करीम, केशव, हरि, खुदा, हजरत और पीर के रूप में चित्रित किया था।

iii.अलख, निराकार, ब्राह्मण, आत्मा जैसे वेदान्तिक परंपराओं के कई शब्द भी लिए गए।
iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।
(कोई एक बिंदु)
32.2 कबीर का दर्शन अध्यात्म की व्यापक समझ में कैसे योगदान देता है?
**उत्तर:**(i.) कबीर ने एक सार्वभौमिक मार्ग बताकर धर्मों का समन्वय करने का प्रयास किया जिसका अनुसरण सभी मनुष्य कर सकें।
(ii.) उनके अनुसार प्रत्येक जीवन का संबंध दो आध्यात्मिक सिद्धांतों से है।
(iii.) वेदान्तिक परंपरा के शब्दों का उपयोग कबीर ने भी किया था, जैसे अलख (अदृश्य), निराकार (निराकार), ब्राह्मण, आत्मा, आदि।
(iv.) रहस्यमय अर्थ वाले अन्य शब्द जैसे शब्द (ध्वनि) या शून्य (शून्यता) योगिक परंपराओं से लिए गए थे।
(v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु ।
32.3 कबीर ने किस प्रकार मानवता के प्रति समावेशी एवं दयालु दृष्टिकोण की बात की है?
**उत्तर:**(i.) कबीर ईश्वर की एकता में विश्वास करते थे।
(ii.) कबीर जाति-पाति समानता में विश्वास करते थे।।
(iii.) कबीर का उद्देश्य प्रेम पर आधारित सार्वभौमिक धर्म का प्रचार करना था।
(iv.) उन्होंने हमेशा लोगों से अन्य जीवित प्राणियों के प्रति सहानुभूति रखने का आग्रह किया।
(v)उन्होंने परमात्मा की खोज में स्थापित धार्मिक और सामाजिक संस्थानों, विचारों और प्रथाओं पर सवाल उठाया।
(vi.)उन्होंने लोगों से मानवीय और दयालु बनने को कहा।
(vii.)कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।

## विषय सात

## एक साम्राज्य की राजधानी: विजयनगर (लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक)

### अध्ययन उद्देश्य

❖ विद्यार्थी विजयनगर साम्राज्य की विशिष्ट स्थापत्य कला की विशेषताओं का वर्गीकरण कर सकेंगे, जिससे दक्कन भारत की मिश्रित संस्कृतियों की समृद्धि को समझा जा सकेगा।

❖ विजयनगर पर विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों का विश्लेषण कर, वे उस नगर के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की व्याख्या कर सकेंगे।

❖ नगर नियोजन, जल प्रबंधन प्रणाली तथा शासकों के प्रशासन का मूल्यांकन और प्रशंसा कर सकेंगे।

### अध्याय का सारांश

**विजयनगर : एक सम्राटीय राजधानी**

**नाम और स्थापना(हम्पी की खोज)**

➤ *विजयनगर* का अर्थ है "**विजय का नगर**" — यह शब्द एक नगर और एक साम्राज्य दोनों को संदर्भित करता है।

➤ यह साम्राज्य **चौदहवीं शताब्दी** में स्थापित हुआ था।

➤ अपने उत्कर्ष काल में यह साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था।

➤ सन् 1565 में इस नगर को नष्ट कर दिया गया और इसके बाद यह वीरान हो गया; सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी तक यह खंडहर बन गया।

➤ **कृष्णा-तुंगभद्रा दोआब क्षेत्र** में लोग **इसे *हम्पी*** के नाम से याद करते थे, जो स्थानीय **मातृ देवी *पम्पादेवी*** से व्युत्पन्न है।

**खोज और पुनः खोज**

➤ सन् 1800 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अभियंता और **पुरातत्त्ववेत्ता कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी** ने हम्पी के खंडहरों को खोजा।

➤ मैकेंज़ी ने स्थल का **पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया** और ***विरुपाक्ष मंदिर* एवं *पम्पादेवी मंदिर* के पुजारियों** की स्मृतियों से प्रारंभिक जानकारी एकत्र की।

➤ सन् 1856 से फोटोग्राफरों ने स्मारकों के चित्र लेने शुरू किए, जिससे विद्वानों के लिए अध्ययन सरल हुआ।

➤ सन् 1836 से शिलालेखों के विद्वान हम्पी और अन्य मंदिरों से अभिलेख संकलित करने लगे।

➤ इतिहासकारों ने विदेशी यात्रियों के विवरण, तेलुगु, कन्नड़, तमिल और संस्कृत साहित्य को इन स्रोतों से जोड़कर नगर का इतिहास पुनर्निर्मित किया।

➤ 1815 में मैकेंज़ी को भारत का पहला सर्वेयर जनरल नियुक्त किया गया। उनका उद्देश्य भारत के अतीत को समझना और उपनिवेशी शासन को बेहतर बनाना था। वे मानते थे कि विजयनगर का अध्ययन करके तत्कालीन संस्थाओं, कानूनों और प्रथाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

**राजनीतिक परिदृश्य : राय, नायक और सुल्तान**

➤ परंपरा और शिलालेखीय प्रमाणों के अनुसार, इस साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में दो भाइयों — **हरिहर और बुक्का** — ने की थी।

➤ साम्राज्य में विविध भाषायी और धार्मिक समुदाय शामिल थे।

➤ विजयनगर के राजा (जिन्हें **राय** कहा जाता था) उपजाऊ नदी घाटियों और समुद्री व्यापार से प्राप्त संसाधनों के लिए दक्कन

के सुल्तानों और उड़ीसा के गजपति शासकों से प्रतिस्पर्धा करते थे।

➤ इन राज्यों के साथ हुए संपर्कों से स्थापत्य शैलियों का आदान-प्रदान हुआ और विजयनगर के शासकों ने निर्माण तकनीकों को अपनाकर विकसित किया।

➤ समकालीन स्रोतों में इस साम्राज्य को ***कर्नाटक साम्राज्यमु*** कहा गया है।

➤ विजयनगर के शासकों ने चोल और होयसला जैसे शक्तिशाली राज्यों की परंपराओं को आगे बढ़ाया, जिन्होंने भव्य मंदिरों को संरक्षण दिया था।

**अर्थव्यवस्था : शासक और व्यापारी**

➤ युद्ध के लिए प्रभावी अश्वसेना अत्यंत आवश्यक थी, इसलिए *अरब* और *मध्य एशिया* से घोड़ों का आयात अत्यंत महत्वपूर्ण था।

➤ इस व्यापार पर प्रारंभ में *अरबी व्यापारियों* का नियंत्रण था, लेकिन स्थानीय व्यापारी जिन्हें **कुदिरई चेट्टी** (घोड़े के व्यापारी) कहा जाता था, भी इसमें भाग लेते थे।

➤ सन् 1498 के बाद *पुर्तगाली* भारत पहुंचे। उन्होंने व्यापारिक और सैन्य ठिकाने स्थापित करने का प्रयास किया और अपनी *श्रेष्ठ सैन्य तकनीक* (विशेषकर बंदूकें – मस्केट्स) के कारण प्रमुख शक्ति बन गए।

➤ *विजयनगर अपने मसालों, वस्त्रों और कीमती रत्नों के बाज़ारों के लिए प्रसिद्ध था।*

➤ व्यापार *प्रतिष्ठा का प्रतीक* माना जाता था और धनवान जनसंख्या विदेशी और महंगे वस्तुओं की मांग करती थी।

➤ व्यापार से प्राप्त *राजस्व* राज्य की समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान देता था।

➤ ***कृष्णदेव राय*** (शासनकाल: 1509–1529) विजयनगर के सबसे प्रसिद्ध शासक माने जाते हैं।

➤ उन्होंने ***"आमुक्तमल्यद"*** नामक एक ग्रंथ की रचना की, जिसमें राज्य संचालन से संबंधित सुझाव दिए गए। उन्होंने शासकों को सलाह दी कि वे:

- बंदरगाहों को सुधारें,
- व्यापार को प्रोत्साहित करें,
- विदेशी नाविकों की देखभाल करें,
- विदेशी व्यापारियों को *दरबार, उपहार और लाभ* प्रदान कर आकर्षित करें,
- जिससे व्यापारिक वस्तुएँ *शत्रुओं* के पास न चली जाएं।

**साम्राज्य का उत्कर्ष और पतन**

➤ पहला वंश **संगम** था, जिन्होंने 1485 तक राज्य किया, इसके बाद **सलुव** 1503 तक शासन में रहे और फिर **तुलुव** आए, जिनमें कृष्णदेव राय शामिल थे।

➤ **कृष्णदेव राय** (1509–1529) के राज्य की विशेषता विस्तार और एकीकरण था—उन्होंने:

- 1512 में रायचूर दोनों क्षेत्रों पर कब्जा किया,
- 1514 में उड़ीसा के शासकों को वश में किया,
- 1520 में बीजापुर के सुल्तान को पराजित किया।

➤ युद्ध-कुशलता के बावजूद, उनके शासनकाल में असाधारण "**शांति एवं समृद्धि**" देखने को मिली।

➤ उन्होंने मंदिरों का निर्माण और मौजूदा मंदिरों में भव्य **गोपुरम** जोड़े, और अपनी माता की स्मृति में **नगलापुरम** की स्थापना की।

➤ कृष्णदेव राय के 1529 में निधन के बाद, साम्राज्य की शक्ति कमजोर पड़ गई—विशेषतः नायकों (सैन्य प्रमुखों) की विद्रोही गतिविधियों के कारण।

➤ 1542 तक नियंत्रण **अराविदु वंश** के हाथ चला गया, जिसने अठारहवीं शताब्दी तक शासन किया।

➤ सैनिक महत्वाकांक्षाओं के कारण विजयनगर और डेक्कन सुल्तानों के बीच गठबंधन-बदलते रहे, अंततः विजयनगर के खिलाफ सुल्तानों का एक संयुक्त गठबंधन बना।

➤ 1565 में **तलिकोटा (राक्षसी–तांगड़ी) युद्ध** में विजयनगर सेना, जिसका नेतृत्व मुख्य मंत्री **राम राया** कर रहे थे, बीजापुर, अहमदनगर और गोलकोंडा की संयुक्त सेनाओं द्वारा पराजित हुई।

➤ विजयनगर नगर कुछ ही वर्षों में नष्ट होकर वीरान हो गया। अरविदु वंश का केंद्र पूर्व की ओर—**पेनुकोण्डा**, फिर **चंद्रगिरि**—स्थानांतरित हो गया।

➤ धार्मिक मतभेदों के बावजूद, सुल्तान और राय के संबंध हमेशा शत्रुतापूर्ण नहीं थे। कृष्णदेव राय ने सुल्तानों में सफल दावेदारी का समर्थन किया और उनमें "यवन राज्य का संस्थापक" कहलाए (यहाँ 'यवन' से यूनान और उत्तर-पश्चिमी जनों का तात्पर्य है)। बीजापुर का सुल्तान विजयनगर के उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप करता था।

➤ राम राया की नीतियों में सुल्तानों को आपस में विभाजित करना शामिल था—जिसका परिणाम विजयनगर की संयुक्त सेनाओं द्वारा पतन हुआ।

### राय और नायक (The Rayas and the Nayakas)

➤ **नायक** सैन्य प्रमुख थे, जो दुर्गों पर नियंत्रण रखते थे, समर्थित सशस्त्र समूह रखते थे, और खेतिहर मजदूरों (कृषकों) के साथ आवागमन करते थे। **ये तेलुगू या कन्नड़** भाषी होते थे।

➤ कई नायक राजा को अधीन होते थे, पर अक्सर विद्रोह कर देते थे—जिसके लिए राज्य को बार-बार सैन्य कार्रवाई करनी पड़ती थी।

➤ यह ***अमरा-नायक* व्यवस्था** थी—राजा द्वारा **सैनिक कमांडरों** को क्षेत्रीय अधिकार दिए जाते थे, और वे कृषकों, कारीगरों व व्यापारियों से कर वसूलते थे। वे राजस्व का एक हिस्सा व्यक्तिगत उपयोग के लिए रखते और निर्धारित संख्या में घोड़े व हाथी सेना में रखते—ये गुट विजयनगर सेना का आधार थे।

➤ राजस्व का उपयोग मंदिरों व सिंचाई कार्यों में भी होता था।

➤ नायक हर वर्ष **राज आभूषण** (उपहार) भेजते थे और दरबार में शाही प्रस्तुति देते थे, जिससे उनकी वफादारी सिद्ध होती थी। राजा इन्हें किसी भी समय दूसरे स्थान पर नियुक्त कर सकते थे — यह नियंत्रण का माध्यम था।

➤ 17वीं शताब्दी में कई नायक स्वतंत्र राज्यों की स्थापना करने लगे, जिससे केंद्रीय साम्राज्य कमजोर होकर टूट गया।

### विजयनगर: राजधानी और उसका परिप्रदेश(आसपास का क्षेत्र) (The Capital and its Environs)

**भौतिक रूपरेखा निर्माण**

यह नगर **तुंगभद्रा नदी** के बेसिन में स्थित था और चारों ओर **ग्रेनाइट पहाड़ियों** से घिरा था।
यहाँ वर्षा जल को संगृहीत करने के विस्तृत उपाय थे।

**जल संसाधन**

- नदियों के किनारे **बाँध** बनाए गए, जिससे जलाशय बने।
- **कमलापुरम टैंक**, 15वीं सदी के आरंभ में निर्मित था—यह पास के खेतों को पानी देता था और "राजकीय केंद्र" तक चैनल के माध्यम से पानी पहुंचता था।
- **हिरिया नहर** तुंगभद्रा नदी पर बांध से पानी खींचती थी—जो "पवित्र केंद्र" और "शहरी केंद्र" के बीच की घाटी की सिंचाई करती थी; संभवतः संगम वंश द्वारा निर्मित।
- पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पायस ने वर्णन किया कि कृष्णदेव राय ने एक टैंक बनवाया, जो दो पहाड़ियों और झील के पाइपों से पानी जमा करता था, और इसके निर्माण में पंद्रह से बीस हज़ार लोग कार्यरत थे।

### किले और सड़कें

- **अब्दुर रज्जाक** ने सात परतों वाले किलों का वर्णन किया—नगर, खेत और जंगल तक फैले हुए।
- बाहरी दीवारें आस-पास की पहाड़ियों को जोड़ती थीं, कोई गारा (मोर्टार) नहीं, पत्थरों को फिट कर निर्माण किया गया था।

- खेत, बगीचे और जल स्रोत किलेबंदी के भीतर थे—अंदरूनी दीवारों से शहर का कोर और **राजकीय केंद्र** घिरा हुआ था।
- प्रवेश द्वारों पर **इंडो-इस्लामिक शैली** की मेहराबें और गुंबद थे।
- सड़कें मंदिर द्वारों से निकलती थीं और बाज़ारों से होकर जाती थीं।
- Link https://youtu.be/IYwc9bBmTBg?si=ESfy2IkjmNRIF9j2
  (Credit -Epic Channel)

**शहरी कोर और आम निवास**

- आम घरों के प्रमाण सीमित हैं, पर **चीनी चीनीमिट्टी** के बर्तन समृद्ध व्यापारियों की मौजूदगी दर्शाते हैं।
- **मुस्लिम बस्ती** में मकबरे और मस्जिदें मंदिर मंडपों जैसी थीं।
- बारबोसा के अनुसार, आम लोग **खपड़ैल के घरों** में रहते थे, व्यवसाय के अनुसार व्यवस्थित।
- कई छोटे मंदिर और कुएँ पानी के स्रोत थे।

- **राजकीय केंद्र और महानवमी डिब्बा**
- दक्षिण-पश्चिम में स्थित इस क्षेत्र में **60 से अधिक** मंदिर थे, जिनसे शासकों की धार्मिक नीति और शक्ति प्रदर्शन झलकता है।
- लगभग 30 बड़ी इमारतों को *महल* माना गया, लेकिन ये लकड़ी जैसे नष्ट होने वाले पदार्थों से बनी थीं।
- **महानवमी डिब्बा**:
- एक विशाल मंच, जिसकी ऊँचाई लगभग **40 फीट और आधार 11,000 वर्ग फीट** है।
- इसमें लकड़ी का ढांचा रहा होगा, आधार पर शिल्पकारी है।
- **महानवमी उत्सव** (दशहरा/नवरात्रि) पर यहां नृत्य, यज्ञ, बलि, और राजा द्वारा सैनिकों का निरीक्षण होता था।
- नायकों और अधीन राजाओं द्वारा उपहार भेंट किए जाते थे।
- पायस ने इसे "विजय गृह" कहा और कहा कि इसमें कई मंच और मूर्ति के लिए कक्ष था।
- इसका वास्तविक उपयोग आज भी रहस्य बना हुआ है।

- **लोटस महल**: इस भवन को यह नाम ब्रिटिश यात्रियों ने दिया था। इसका वास्तविक उपयोग स्पष्ट नहीं है, किंतु मैकेंज़ी के मानचित्र से संकेत मिलता है कि यह संभवतः एक परिषद कक्ष रहा होगा, जहाँ राजा अपने मंत्रियों से सलाह-मशविरा करते थे। इसकी वास्तुकला में मेहराबों का प्रयोग किया गया है, जो संभवतः **इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली** से प्रेरित है।

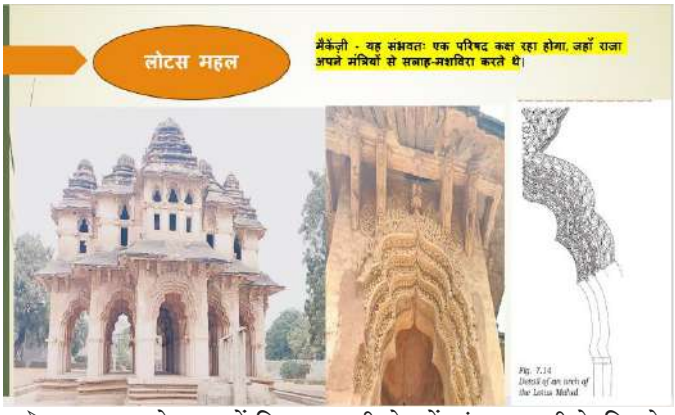


➢ **हज़ारा राम मंदिर**:
यह मंदिर संभवतः राजा और उनके परिवार के लिए बनाया गया था। इसके गर्भगृह में मूर्तियाँ नहीं हैं, लेकिन आंतरिक दीवारों पर रामायण के दृश्यों को दर्शाने वाले उकेरे गए पैनल पाए जाते हैं।

➢ नायकों (नायकाओं) ने भव्य भवनों के निर्माण की परंपरा को आगे बढ़ाया।

**पवित्र क्षेत्र (Sacred Centre):**

- यह नगर के उत्तर में स्थित चट्टानी क्षेत्र में, तुंगभद्रा नदी के किनारे पर स्थित था।
- स्थानीय परंपराएँ इन पहाड़ियों को रामायण के पात्र **वाली और सुग्रीव** के वानर राज्य से और **पंपादेवी** (स्थानीय माँ देवी) से जोड़ती हैं, जिन्होंने **विरूपाक्ष (शिव के एक रूप)** से विवाह के लिए तप किया था। यह विवाह आज भी **विरूपाक्ष मंदिर** में प्रतिवर्ष मनाया जाता है।
- इस क्षेत्र में **विजयनगर-पूर्व काल** के **जैन मंदिर** भी पाए गए हैं, जो यहाँ की दीर्घकालिक पवित्र परंपरा को दर्शाते हैं।
- मंदिर निर्माण इस क्षेत्र में एक प्राचीन परंपरा रही है (पल्लव, चालुक्य, होयसल और चोल राजवंशों के समय से)।
- शासक स्वयं को दिव्यता से जोड़ने के लिए मंदिरों को प्रोत्साहन देते थे, क्योंकि देवी-देवताओं को अक्सर राजा से जोड़ा जाता था।
- मंदिर **शिक्षा के केंद्र** थे, इन्हें भूमि और संसाधन प्रदान किए जाते थे, और वे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक गतिविधियों के प्रमुख स्थल बन गए थे।
- मंदिरों का निर्माण और उनका संरक्षण शासकों को अपनी शक्ति, धन और धार्मिकता का समर्थन प्राप्त करने में मदद करता था।
- **विरूपाक्ष** और **पंपादेवी** के मंदिरों के कारण ही संभवतः विजयनगर की स्थापना की गई थी।
- विजयनगर के राजा स्वयं को **विरूपाक्ष** का प्रतिनिधि मानते थे, और सभी शाही आदेशों की समाप्ति **"श्री विरूपाक्ष"** से की जाती थी।
- शासकों ने अपने को ईश्वर से जोड़ने के लिए **"हिंदू सूरतराणा"** (अरबी 'सुल्तान' शब्द का संस्कृतिकरण) की उपाधि का प्रयोग किया।
- मंदिरों में **राजाओं की प्रतिमा** स्थापित करना तथा मंदिर-यात्राओं को **राजकीय अवसर** के रूप में मनाना (नायकों की उपस्थिति सहित), इनकी **नई परंपराओं** में शामिल था।

**मंदिर वास्तुकला: गोपुरम और मंडप**

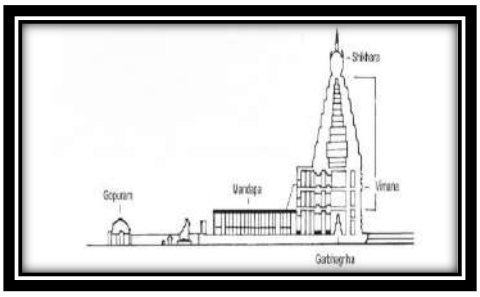


- विशाल आकार की नई विशेषताएँ साम्राज्यिक सत्ता की निशानी थीं।
- राय **गोपुर**म (शाही प्रवेशद्वार) प्रमुख थे, जो अक्सर मुख्य गर्भगृह के शिखरों से भी ऊँचे होते थे।
- ये दूर से ही मंदिर का संकेत देते थे और राजा की शक्ति एवं संसाधनों की याद दिलाते थे।
- अन्य विशिष्ट विशेषताओं में मंडप (प्रवेश कक्ष) और लंबे, स्तंभों वाले बरामदे शामिल थे।
- **विरूपाक्ष मंदिर:** यह मंदिर कई शताब्दियों में बना, जिसकी सबसे पुरानी वेदी नौवीं-दसवीं शताब्दी की मानी जाती है। साम्राज्य की स्थापना के बाद इसका काफी विस्तार हुआ।
- कृष्णदेव राय ने अपने राज्याभिषेक को चिह्नित करने के लिए मुख्य गर्भगृह के सामने एक सभा मंडप बनवाया, जिसे नक्काशीदार स्तंभों से सजाया गया। उन्हें पूर्वी गोपुरम के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है। इन परिवर्धनों के कारण मूल गर्भगृह मंदिर परिसर का एक अपेक्षाकृत छोटा भाग बन गया।

- इन हॉलों का उपयोग देवी-देवताओं की मूर्तियों को संगीत और नृत्य के लिए रखने, दिव्य विवाह (कल्याण मंडप) मनाने और झूला झुलाने जैसे अनुष्ठानों में किया जाता था।
- **विट्ठल मंदिर**: यह मंदिर महाराष्ट्र में पूजे जाने वाले विष्णु के एक रूप विट्ठल को समर्पित है, जो इस बात को दर्शाता है कि शासक विभिन्न परंपराओं को अपनाकर एक साम्राज्यिक संस्कृति का निर्माण करना चाहते थे।

- इसमें कई सभा मंडप हैं और एक अनोखा गर्भगृह है जो रथ के रूप में निर्मित है।
- मंदिर के गोपुरमों से रथ सड़कों का विस्तार होता था, जिन्हें पत्थर की पटियों से पक्का किया गया था और उनके किनारे स्तंभयुक्त मंडप बने होते थे, जहाँ व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे।
- नायकों ने मंदिर निर्माण की परंपराओं को आगे बढ़ाया और कई भव्य गोपुरमों का निर्माण स्वयं किया।

**विजयनगर का दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण**

- मैकेंज़ी के प्रारंभिक सर्वेक्षणों के बाद, यात्रियों के वृत्तांतों और अभिलेखों से जानकारी एकत्र की गई।
- पूरे बीसवीं शताब्दी में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और कर्नाटक पुरातत्व और संग्रहालय विभाग ने इस स्थल को संरक्षित किया।
- 1976 में, हम्पी को राष्ट्रीय महत्व के स्थल के रूप में मान्यता दी गई।
- 1980 के दशक की शुरुआत में, एक प्रमुख परियोजना शुरू हुई, जिसका उद्देश्य स्थल की भौतिक संरचनाओं को विस्तृत रूप से दर्ज करना था। इसमें अनेक विद्वान लगभग दो दशकों तक लगे रहे।
- मानचित्रण में क्षेत्र को 25 बड़े वर्गों में विभाजित किया गया, जिन्हें छोटे और फिर और छोटे इकाइयों में विभाजित कर संरचनाओं को सावधानीपूर्वक दर्ज किया गया।
- इन सर्वेक्षणों में हजारों संरचनाओं, सड़कों, रास्तों और बाजारों के चिन्ह मिले (जैसे स्तंभों के आधार और चबूतरे)।
- विद्वानों जैसे जॉन एम. फ्रिट्ज़, जॉर्ज मिशेल और एम.एस. नागराज राव ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें गायब हो चुकी लकड़ी की संरचनाओं (जैसे खंभे, ब्रैकेट, छत, छज्जे, टावर) की कल्पना करनी चाहिए, जिन्हें संभवतः सजाया और रंगा गया था।
- यात्रियों के वर्णन, जैसे डोमिंगो पैस के जीवंत विवरण, उस समय के जीवंत जीवन की पुनर्रचना में सहायक हैं। पैस ने शहर की चौड़ी और सुंदर सड़कों का वर्णन किया जिनके किनारे व्यापारी बहुमूल्य वस्तुएँ बेचते थे और प्रतिदिन घोड़ों, फलों और लकड़ी के मेले लगते थे। उन्होंने इसे "दुनिया का सबसे अच्छी तरह से सुसज्जित नगर" कहा, जहाँ अन्न, फल और मांस सहित आवश्यक वस्तुएँ भरपूर मात्रा में और सस्ते में उपलब्ध थीं

**मानचित्र/संकल्पना चार्ट (माइंड मैप )**

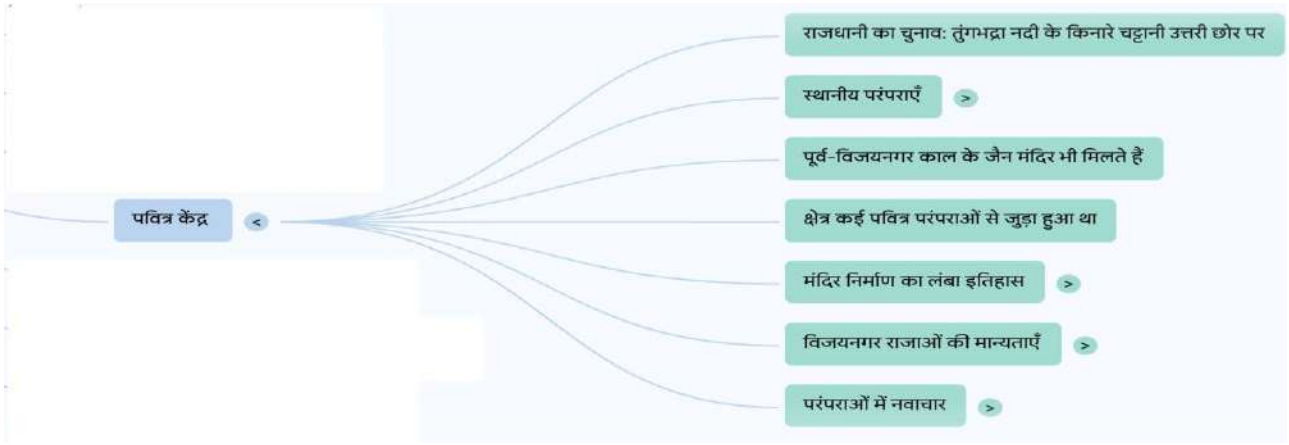


## बहुविकल्पीय व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस साम्राज्य को "कर्नाटक साम्राज्यमु" कहा जाता था?

A. चेरा B. चोल C. पल्लव D. विजयनगर

2. विजयनगर साम्राज्य में दशहरा उत्सव बड़ी प्रतिष्ठा और शक्ति के साथ कहाँ मनाया जाता था?

A. हजारराम मंदिर B. विरुपाक्ष मंदिर

C. कमल महल D. महानवमी डिब्बा

3. दिए गए संकेतों के आधार पर विजयनगर की वंशावली की पहचान कीजिए:

हरिहर और बुक्का हरिहर और बुक्का इस वंश से संबंधित थे। उन्होंने हिरिया नहर का निर्माण किया। यह विजयनगर साम्राज्य का पहला वंश था।

A. संगम B. सालुव C. तुलुव D. अराविडु

4. रिक्त स्थान भरें:

विजयनगर साम्राज्य के स्थानीय व्यापारी जो घोड़ों के व्यापार में भाग लेते थे उन्हें _____ कहा जाता था:

A. गजपति B. महानायक C. कुदिरई चेट्टी D. नरपति

5. नीचे दी गई छवि को देखकर ऐतिहासिक स्मारक की पहचान कीजिए:

A. कमल महल

B. विरुपाक्ष मंदिर

C. विट्ठल मंदिर

D. हाथी अस्तबल

6. निम्नलिखित में से किस यात्री ने 15वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की और वहाँ की प्राचीर से अत्यधिक प्रभावित हुआ?

A. डुआरटे बारबोसा B. कॉलिन मैकेंज़ी C. अब्दुर रज़्ज़ाक D. डोमिंगो पायस

7. 'आमुक्तमाल्यद' के लेखक कौन थे?

A. कृष्णदेव राय B. बुक्का C. हरिहर D. राम राय

8. विजयनगर साम्राज्य की वंशावलियों का सही कालानुक्रम क्या है?

I. सालुव II. संगम III. तुलुव IV. अराविडु

A. I, II, III, IV

B. II, I, III, IV

C. III, II, I, IV

D. IV, I, II, III

9. स्तंभ I और स्तंभ II का मिलान करें:

| स्तंभ I (मंदिर) | स्तंभ II (स्थान) |
|---|---|
| 1. हजारराम मंदिर | (ii) विजयनगर |
| 2. चिदंबरम मंदिर | (i) तमिलनाडु |
| 3. बृहदेश्वर मंदिर | (iv) तंजावुर |
| 4. चेनकेशव मंदिर | (iii) बेलूर |

सही विकल्प चुनें:

A. 1-(ii), 2-(iv), 3-(i), 4-(iii)

B. 1-(ii), 2-(i), 3-(iv), 4-(iii)

C. 1-(ii), 2-(iii), 3-(iv), 4-(i)

D. 1-(ii), 2-(i), 3-(iii), 4-(iv)

10. स्तंभ I और स्तंभ II का मिलान करें:

| स्तंभ I (यात्री) | स्तंभ II (देश) |
|---|---|
| a. निकोलो दी कॉन्ती | iii. इटली |
| b. अब्दुर रज़्ज़ाक | i. फारस |
| c. डोमिंगो पायस | ii. पुर्तगाल |
| d. अफानासी निकितिन | iv. रूस |

सही विकल्प चुनें:

A. a-ii, b-i, c-iii, d-iv

B. a-ii, b-iv, c-iii, d-i

C. a-iii, b-i, c-ii, d-iv

D. a-i, b-ii, c-iii, d-iv

11. निम्नलिखित विवरणों के आधार पर भारत के पहले सर्वेयर जनरल की पहचान करें:

- कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी एक इंजीनियर और पुराविद् थे।
- वे ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी थे।
- उन्होंने इस स्थल का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया।

B. कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी

C. फर्नाओ नूनीज़

D. डुआरटे बारबोसा

12. अमर नायकों के बारे में निम्न में से कौन सा कथन गलत है?

A. अमर नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक नवीनता थी।

B. इस प्रणाली की कई विशेषताएँ दिल्ली सल्तनत की इक्तादारी प्रणाली से ली गई थीं।

C. अमर नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें नायक द्वारा क्षेत्र शासन हेतु दिए जाते थे।

D. वे किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर वसूलते थे।

13. निम्न में से कौन-सा विकल्प विजयनगर साम्राज्य के समकालीनों के संदर्भ में सही नहीं है?

A. उड़ीसा में गजपति राज्य की स्थापना

B. मालवा सल्तनत की स्थापना

C. बीजापुर सल्तनत का उदय

D. कर्नाटक में चालुक्यों का उदय

14. विजयनगर साम्राज्य के बारे में कौन-सी जानकारी सही है?
I. इसकी पहली वंशावली संगम वंश थी।
II. तुलुवों को अराविडु ने प्रतिस्थापित किया।
III. कृष्णदेव राय सालुव वंश से थे।
IV. हरिहर और बुक्का अराविडु वंश से थे।
सही विकल्प:
A. II&III B. I&III C. I&IV D. I&II
15. विजयनगर साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण क्या था?
A. आंतरिक संघर्ष और सुल्तानों के साथ गठबंधन
B. तालिकोटा में बीजापुर, अहमदनगर और गोलकोंडा की हार
C. व्यापार और अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट
D. पुर्तगाली और फ्रांसीसी आक्रमण
16. निम्नलिखित संकेतों के आधार पर विजयनगर के शासक की पहचान करें:
i. वे तुलुव वंश से थे।
ii. उनके शासन में विस्तार और समेकन हुआ।
iii. उन्होंने कई सुंदर मंदिर बनवाए और दक्षिण भारत के प्रमुख मंदिरों में गोपुरम जोड़े।
A. कृष्णदेव राय
B. राम राय
C. हरिहर
D. बुक्का
17. विट्ठल मंदिर परिसर से संबंधित "रथ मार्गों" की विशेषताओं की पहचान करें: (HOT)
A. यह संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियाँ थीं।
B. केवल शाही जुलूस और सैन्य परेड के लिए सुरक्षित थीं।
C. मंदिर के गोपुरम से सीधे पक्की पत्थरों की सड़कें थीं, जिनके किनारे खंभों वाले मंडप थे जहाँ व्यापारी दुकानें लगाते थे।
D. यह मंदिर की सुरक्षा के लिए किलेबंदी थीं।
18. डोमिंगो पायस ने कृष्णदेव राय द्वारा बनाए गए एक टैंक के बारे में लिखा:
"राजा ने दो पहाड़ियों के बीच एक टैंक बनवाया ताकि दोनों ओर से आने वाला सारा पानी उसमें इकट्ठा हो सके..."।
ऐसे टैंक कैसे बनाए जाते थे?
A. पहाड़ी को काटकर
B. धरती को गहराई से खोदकर
C. भवन की छत पर
D. चारों ओर दीवारें बनाकर
19. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): विजयनगर अपने मसालों, वस्त्रों और रत्नों के बाजारों के लिए प्रसिद्ध था।
कारण (R): व्यापार को अक्सर एक प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में देखा जाता था।
विकल्प:
(A) दोनों (A) और (R) सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) दोनों (A) और (R) सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है।
(D) (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है।
20. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए
अभिकथन (A): कृष्णदेव राय का शासन विस्तार और समेकन से चिह्नित था।

कारण (R): विजयनगर साम्राज्य ने तुंगभद्रा और कृष्णा नदी के बीच का क्षेत्र सैन्य तैयारी के कारण प्राप्त किया।
विकल्प:
(A) दोनों (A) और (R) सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) दोनों (A) और (R) सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है।
(D) (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है।
21. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए
अभिकथन (A): हम्पी के खंडहरों को 1800 ई. में कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी ने प्रकाश में लाया।
कारण (R): विरुपाक्ष मंदिर और अन्य मंदिरों से दर्जनों अभिलेख प्राप्त हुए।
विकल्प:
(A) दोनों (A) और (R) सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) दोनों (A) और (R) सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है।
(D) (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है।

**उत्तर (ANSWERS):**

1. D. विजयनगर
2. D. महानवमी डिब्बा
3. A. संगम वंश
4. C. (स्थानीय घोड़े व्यापारी)
5. A. कमल महल
6. C. अब्दुर रज़्ज़ाक
7. A. कृष्णदेव राय
8. B. II, I, III, IV (संगम ⟶ सालुव ⟶ तुलुव ⟶ अराविडु)
9. B. 1-(ii), 2-(i), 3-(iv), 4-(iii)
10. C. a-iii, b-i, c-ii, d-iv
11. B. कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी
12. C. अमर नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें नायक द्वारा क्षेत्र शासन हेतु दिए जाते थे।
13. D. कर्नाटक में चालुक्यों का उदय
14. D. कथन I एवं II सही हैं।
15. A. आंतरिक संघर्ष और सुल्तानों के साथ गठबंधन
16. A. कृष्णदेव राय
17. C. वे मंदिर के गोपुरम से सीधे पत्थर की पटियों से बनी सड़कों के रूप में फैले हुए थे और उनके किनारे खंभों वाले मंडप बने थे जहाँ व्यापारी दुकानें लगाते थे।
18. A. टैंक पहाड़ी को काटकर बनाए गए थे।
19. A. कथन (A) और तर्क (R) दोनों सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
20. A. कथन (A) और तर्क (R) दोनों सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
21. B. कथन (A) और तर्क (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

### ✍ लघु उत्तर प्रश्न

22. विजयनगर साम्राज्य के जल संसाधनों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
उत्तर i. विजयनगर का प्राकृतिक बेसिन तुंगभद्रा नदी द्वारा निर्मित था।
ii. इन पथरीली पहाड़ियों से कई जलधाराएँ नदी की ओर बहती थीं।

iii. इन धाराओं के साथ-साथ जलाशय बनाने के लिए तटबंध (एंबैंकमेंट्स) बनाए गए थे।
iv. वर्षा जल को संचित करने के लिए विस्तृत व्यवस्थाएँ की गई थीं।
v. सबसे महत्वपूर्ण टैंक कमलापुरम टैंक था।
vi. प्रमुख जल-सिंचन योजनाओं में हिरिया नहर (Hiriya Canal) प्रमुख थी।
vii. यह नहर तुंगभद्रा नदी पर बने एक बांध से जल खींचती थी।
viii. जल संसाधनों से "पवित्र क्षेत्र" और "नगरीय केंद्र" के बीच की उपजाऊ घाटी में सिंचाई होती थी।
ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।
23. विदेशी यात्रियों द्वारा विजयनगर शहर के बारे में दिए गए विवरणों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:विदेशी यात्रियों ने विजयनगर शहर के बारे में कई महत्वपूर्ण विवरण दिए –
i. **कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी** – 1800 में हैम्पी के खंडहरों की खोज एक इंजीनियर और पुरातत्त्ववेत्ता कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी ने की थी। वे ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी थे और उन्होंने इस स्थल का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया।
ii. **अब्दुर रज़्ज़ाक** – उन्होंने उल्लेख किया कि पहले, दूसरे और तीसरे परकोटे के बीच खेत, बाग-बगिचे और घर थे।
iii. **डोमिंगो पैस** – उन्होंने देखा: "पहली किलेबंदी से नगर तक एक लंबी दूरी है, जिसके बीच में धान के खेत, बगीचे और बहुत सा जल है, जो दो झीलों से आता है।"
iv. **पुर्तगाली यात्री बारबोसा** – उन्होंने आम लोगों के घरों का वर्णन किया जो आज जीवित नहीं हैं: "आम लोगों के घर घास-फूस से बने होते थे, लेकिन फिर भी वे अच्छी तरह से बनाए गए थे और व्यवसायों के अनुसार लंबी सड़कों में व्यवस्थित थे, जिनमें कई खुले स्थान थे।"
24. विजयनगर शहर के राजसी क्षेत्र में इमारतों ने विजयनगर साम्राज्य की प्रतिष्ठा कैसे बढ़ाई?
उत्तर:i. इस क्षेत्र में 60 से अधिक मंदिर शामिल थे।
ii. लगभग 30 भवन परिसरों की पहचान महलों के रूप में की गई है।
iii. यहाँ **महानवमी डिब्बा** स्थित था।
iv. "राजा का महल" सबसे बड़ा परिक्षेत्र था।
v. इसमें दो प्रभावशाली मंच थे – "दरबार कक्ष" और "महानवमी डिब्बा"।
vi. इन संरचनाओं से जुड़े अनुष्ठान संभवतः अश्विन मास के दशहरा / दुर्गा पूजा से जुड़े थे।
vii. **लोटस महल** इस क्षेत्र की सबसे सुंदर इमारतों में से एक था।
viii. **हज़ारा राम मंदिर** एक भव्य इमारत थी, जो संभवतः केवल राजा और उसके परिवार के लिए थी।
ix. मंदिर की भीतरी दीवारों पर रामायण के दृश्य अंकित हैं।
25. विजयनगर साम्राज्य के परकोटे वाले क्षेत्र में कृषि भूमि को क्यों शामिल किया गया? कारण बताइए।
उत्तर:i. फारस के राजदूत अब्दुर रज़्ज़ाक ने सात परकोटों का उल्लेख किया है, जो न केवल नगर को बल्कि उसकी कृषि भूमि और जंगलों को भी घेरे हुए थे।
ii. सबसे बाहरी दीवार आसपास की पहाड़ियों को जोड़ती थी। इसकी विशाल पत्थर की बनावट कुछ झुकी हुई थी।
iii. निर्माण में कहीं भी चूना या सीमेंट का उपयोग नहीं हुआ। पत्थरों को कीलनुमा आकार देकर जोड़ा गया और बीच में मलबा भरकर मिट्टी डाली गई।
iv. पहले, दूसरे और तीसरे परकोटे के बीच खेत, बाग-बगिचे और घर थे।
v. पवित्र क्षेत्र और नगरीय केंद्र के बीच की कृषि भूमि भी किलेबंदी के भीतर थी।
26. विजयनगर साम्राज्य की सैन्य एवं प्रशासनिक व्यवस्था में 'अमरा-नायक प्रणाली' की जांच कीजिए।

अथवा

'अमरा-नायक प्रणाली' विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक नवाचार थी।
उत्तर:
i. इस प्रणाली की कई विशेषताएँ **दिल्ली सल्तनत की इक्तादारी प्रणाली** से ली गई थीं।
ii. **अमर-नायक** सैन्य कमांडर होते थे जिन्हें राजा (राय) द्वारा शासन हेतु क्षेत्र सौंपे जाते थे।
iii. वे किसानों, कारीगरों और व्यापारियों से कर तथा अन्य उपकर वसूलते थे।
iv. वे प्राप्त राजस्व का एक हिस्सा **स्वयं के उपयोग** और घोड़े व हाथियों की एक निर्धारित सेना के रख-रखाव हेतु रखते थे।

v. यही सेनाएँ विजयनगर के राजाओं को एक **प्रभावी सैन्य शक्ति** प्रदान करती थीं, जिससे उन्होंने पूरे दक्षिणी प्रायद्वीप पर नियंत्रण स्थापित किया।
vi. राजस्व का उपयोग मंदिरों और **सिंचाई कार्यों** के रख-रखाव में भी होता था।
vii. अमरा-नायक प्रतिवर्ष राजा को **कर अर्पित करते थे** और उपहारों के साथ दरबार में उपस्थित होकर अपनी निष्ठा प्रकट करते थे।
viii. कभी-कभी राजा उन्हें **स्थानांतरण** करके अपना नियंत्रण स्थापित करते थे।
ix. लेकिन 1600 के दशक में कई नायकों ने अपने **स्वतंत्र राज्य** स्थापित कर लिए।
27. विजयनगर साम्राज्य के पतन के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
उत्तर:i. **1529 में कृष्णदेव राय की मृत्यु** के बाद साम्राज्य में तनाव दिखने लगा।
ii. उनके उत्तराधिकारी कमजोर साबित हुए।
iii. उत्तराधिकारियों को **विद्रोही नायकों** (सैन्य प्रमुखों) से परेशान होना पड़ा।
iv. केंद्रीय सत्ता **अराविडु वंश** के हाथों में चली गई।
v. विजयनगर के शासकों तथा दक्खन के सुल्तानों की **सैन्य महत्वाकांक्षाओं** के कारण गठबंधन लगातार बदलते रहे।
vi. **रक्षासी-तंगड़ी (तालिकोटा)** के युद्ध में विजयनगर को पूरी तरह **ध्वस्त कर दिया गया।**

## दीर्घ उत्तर प्रश्न

28. विजयनगर साम्राज्य के रॉयल सेंटर में स्थित महा नवमी डिब्बा से जुड़ी रीति-रिवाज और परंपराओं की पहचान कीजिए।
i) महा नवमी डिब्बा का नाम इसकी आकृति और महा नवमी उत्सव से जुड़ा है।
ii) इससे जुड़े अनुष्ठान थे – दशहरा, दुर्गा पूजा और नवरात्रि।
iii) विजयनगर के राजा इस मंच से प्रतिष्ठा, शक्ति और अधीनता का प्रदर्शन करते थे।
iv) मूर्ति पूजा, राज्य के घोड़े की पूजा और जानवरों की बलि रस्मों में शामिल थी।
v) नृत्य, कुश्ती, शोभायात्रा तथा सेना, घोड़ों, हाथियों और रथों का प्रदर्शन होता था।
vi) नायक और अधीन राजा उपहार व कर (tribute) लाते थे और राजा सेना का निरीक्षण करता था।
vii) परिसर ऊँची दोहरी दीवारों से घिरा था, बीच में सड़क थी।
viii) "ऑडियंस हॉल" एक ऊँचा मंच था, जिसमें लकड़ी के खंभों के स्लॉट और ऊपर जाने की सीढ़ियाँ थीं।
ix) महा नवमी डिब्बा लगभग 11,000 वर्ग फुट के आधार से 40 फीट ऊँचा था और आधार पर सुंदर नक्काशी थी।
29. विजयनगर साम्राज्य के रॉयल सेंटर में स्थित विरुपाक्ष मंदिर और विट्ठल मंदिर की विशिष्ट वास्तुकला और सांस्कृतिक विशेषताओं की तुलना कीजिए।

| **विरुपाक्ष मंदिर** | **विट्ठल मंदिर** |
|---|---|
| | |
| भगवान शिव, जो रक्षक देवता हैं, को समर्पित एक प्राचीन मंदिर। | मुख्य देवता विट्ठल थे, जो भगवान विष्णु का एक रूप हैं। |
| जब विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई, तो इस मंदिर का विस्तार किया गया। | इस मंदिर में कई मंडप (हॉल) थे और एक अनोखा गर्भगृह था जिसे रथ के रूप में डिज़ाइन किया गया था। |

| | |
|---|---|
| मुख्य गर्भगृह के सामने का मंडप कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया था। | मंदिर परिसरों की एक विशेष विशेषता 'रथ मार्ग' (Chariot Streets) थी, जो गोपुरम से सीधे रेखा में फैली होती थीं। |
| इस मंडप को बारीकी से तराशे गए स्तंभों से सजाया गया था। | इस मंदिर को संगीत उत्पन्न करने वाले सुंदर नक्काशीदार स्तंभों से सजाया गया था। |
| गोपुरम (राजसी प्रवेशद्वार) — ये मंदिर के मुख्य शिखरों की तुलना में विशाल होते थे और मंदिर की उपस्थिति का संकेत देते थे। | सड़कों को पत्थर की पटियों से बनाया गया था और उनके किनारों पर स्तंभयुक्त मंडप थे, जिनमें व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे। |
| मुख्य गर्भगृह (Central shrine / गर्भगृह) | |
| मंदिर में मंडप या स्तंभयुक्त गलियारे पाए जाते थे। | मंदिर में मंडप या स्तंभयुक्त गलियारे पाए जाते थे |
| सामाजिक महत्त्व<br>● देवताओं की मूर्तियाँ विशेष कार्यक्रमों जैसे संगीत, नृत्य और नाटकों को देखने के लिए रखी जाती थीं।<br>● इन मंदिरों में देवताओं के विवाह समारोह मनाए जाते थे।<br>● कुछ स्थानों पर देवमूर्तियों को झूला झुलाने के लिए झूले की व्यवस्था भी की जाती थी। | विट्ठल, विष्णु का एक रूप हैं जिन्हें सामान्यतः महाराष्ट्र में पूजा जाता है। |
| शासनिक मान्यता<br>● विजयनगर के शासक भगवान वीरुपाक्ष के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे।<br>● सभी राजाज्ञाएँ "श्री वीरुपाक्ष" के नाम से जारी की जाती थीं।<br>https://youtu.be/6dTTz2jy27c?si=qEC7hIrI1QHZOtmS | https://youtu.be/RHI_zuzHOdg?si=kcX6Io-jrPy5-g11<br>National Geographic India |

30.कमल महल (Lotus Mahal) और हाथी शालाओं (Elephant Stables) जैसी संरचनाओं की स्थापत्य विशेषताओं से यह कैसे पता चलता है कि इन्हें बनवाने वाले विजयनगर शासकों के सांस्कृतिक मूल्य और प्रशासनिक प्राथमिकताएँ क्या थीं?
उत्तर:कमल महल और हाथी शालाओं जैसी इमारतों की वास्तुकला यह दर्शाती है कि विजयनगर के शासकों ने भारतीय पारंपरिक प्रतीकों, चिह्नों और टोटेमों को अपनाया था। यद्यपि वे धार्मिक रूप से हिंदू थे, परंतु स्वभाव से उदार और सहिष्णु थे।

- **कमल महल (Lotus Mahal):**
- i) कमल महल का नाम 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश यात्रियों द्वारा रखा गया था।
  ii) इतिहासकारों के बीच इस भवन के उपयोग को लेकर भिन्न मत हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, यह भवन राजा और उनके सलाहकारों की सभा के लिए प्रयुक्त होता था।
  iii) इस संदर्भ में, कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी द्वारा बनाए गए एक मानचित्र को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
  iv) यह भवन **हिंदू-मुस्लिम मिश्रित (इंडो-इस्लामिक)** स्थापत्य शैली में निर्मित है।
  v) इसके स्तंभ और मेहराब मुस्लिम शैली में बने हैं, जबकि दीवारें और छत भारतीय शैली में निर्मित हैं।
  vi) दीवारों और छतों पर लकड़ी और पत्थर की नक्काशी की गई थी ताकि उसे सजावटी रूप दिया जा सके।
  vii) समय के साथ इस भवन का अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है, अतः इसकी भव्यता का अनुमान लगाना कठिन है।

**कमल महल**

**हाथी शाला (Elephant Stables):**

i) विजयनगर के राय (शासक) एक बहुत बड़ी सेना और सैन्य टुकड़ियों का संचालन करते थे।

ii) उनकी सेना में बड़ी संख्या में हाथी शामिल थे।

iii) इन हाथियों को रखने के लिए कमल महल के पास एक हाथी शाला का निर्माण किया गया था, जिसमें कई कक्ष पंक्तिबद्ध तरीके से बने हुए थे।

**हाथी शाला**

### स्रोत आधारित प्रश्न

31.दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

**राजा और व्यापारी**

विजयनगर के सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्णदेव राय (शासनकाल 1509 29 )ने शासन काल के विषय में अमुक्त्यमल्यद तेलुगु भाषा में कृति लिखी। व्यापारियों के विषय में उसने लिखा:

एक राजा को अपने बंदरगाहों को सुधारना चाहिए वाणिज्य को इस प्रकार प्रोत्साहित करना चाहिए की घोड़ों ,हाथियों रत्नों चंदन ,मोती तथा अन्य वस्तुओं का खुले तौर पर आयात किया जा सके ...उसे प्रबंध करना चाहिए कि उन विदेशी नाविकों जिन्हें तूफानों ,बीमारी या थकान के कारण उनके देश में उतरना पड़ता है, की भली-भांति देखभाल की जा सके.. सुदूर देशों के व्यापारियों जो हाथियों और अच्छे घोड़ों का आयात करते हैं ,को रोज बैठक में बुलाकर ट्रॉफी देकर उचित मुनाफे की स्वीकृति देकर अपने साथ संबंध करना चाहिए। ऐसा करने पर यह वस्तु में कभी भी तुम्हारे दुश्मनों तक नहीं पहुंचेंगी।

31.1. कृष्णदेव राय ने अपने राज्य में बंदरगाहों के सुधार पर क्यों जोर दिया?

उत्तर: उन्होंने माना कि बंदरगाहों के विकास से व्यापार को बढ़ावा मिलेगा, जिससे घोड़े, हाथी, कीमती रत्न, चंदन और मोती जैसी वस्तुएं स्वतंत्र रूप से राज्य में आयात की जा सकेंगी।

31.2. कृष्णदेव राय के अनुसार, किसी शासक को विदेशी नाविकों और व्यापारियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर: उन्होंने सुझाव दिया कि तूफान, बीमारी या थकावट से प्रभावित विदेशी नाविकों की उचित देखभाल की जाए, और व्यापारियों को प्रतिदिन दरबार में प्रवेश, उपहार और न्यायसंगत लाभ दिया जाए ताकि उनकी वफादारी बनी रहे।

31.3. कृष्णदेव राय के व्यापार और व्यापारियों पर विचारों से उनकी विदेशी शक्तियों के प्रति रणनीति का क्या पता चलता है?

उत्तर: उनके विचार दर्शाते हैं कि उन्होंने अपने राज्य को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए व्यापार और कूटनीति का उपयोग किया तथा बहुमूल्य वस्तुओं को प्रतिद्वंद्वी राज्यों में जाने से रोकने के लिए विदेशी व्यापारियों को अपने पक्ष में बनाए रखा।

32. दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

**हौजों/जलाशयों का निर्माण किस प्रकार होता था?**

कृष्णदेव राय द्वारा बनाए गए जलाशय के विषय में पेस लिखता है:

राजा ने एक जलाशय बनवाया दो पहाड़ियों के मुख्य विबर पर जिससे दोनों में से किसी पहाड़ी से आने वाला सारा जल वहां इक्कठा हो, इसके अलावा जल 9 मिल (लगभग 15 किलोमीटर) से भी अधिक की दूरी से पाइपों से आता है जो बाहरी श्रृंखला के निचले हिस्से के साथ-साथ बनाए गए थे ।यह जल एक झील से लाया जाता है जो छलकाव से खुद एक छोटी नदी में मिलती है। जलाशय में तीन विशाल स्तंभ बने हैं जिन पर खूबसूरती से चित्र उकेरे गए हैं ;यह ऊपरी भाग में कुछ पाइपों से जुड़े हुए हैं जिनसे यह अपने बगीचों तथा धान के खेतों की सिंचाई के पानी लाते हैं। यह जलाशय को बनाने के लिए इस राजा ने पूरी पहाड़ी को तुड़वा दिया ...जलाशय में मैंने इतने लोगों को कार्य करते देखा कि वहां पंद्रह से बीस हज़ार आदमी थे, चीटियों की तरह....

32.1 कृष्णदेव राय ने तालाब का निर्माण क्यों किया?

उत्तर: कृष्णदेव राय ने सिंचाई के उद्देश्य से पानी संग्रह करने और कृषि, विशेष रूप से बाग़ों और धान के खेतों के लिए निरंतर जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए तालाब का निर्माण किया।

32.2 कृष्णदेव राय ने तालाब बनाने के लिए दो पहाड़ियों के मुहाने को ही क्यों चुना?

उत्तर: उन्होंने दो पहाड़ियों के मुहाने को इसलिए चुना ताकि दोनों तरफ़ से बहने वाला पानी प्राकृतिक रूप से एक स्थान पर एकत्रित हो सके, जिससे यह जल संग्रहण के लिए आदर्श और प्रभावी स्थान बन जाए।

32.3 तालाब के पानी का उपयोग किन तरीकों से किया जाता था?

उत्तर: तालाब के पानी का उपयोग बाग़ों और धान के खेतों की सिंचाई के लिए किया जाता था। यह पानी सुंदर नक्काशीदार स्तंभों से जुड़े पाइपों के माध्यम से वितरित किया जाता था, जिससे कृषि के लिए उपयुक्त जल प्रबंधन सुनिश्चित होता था।

दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

34. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित स्थानों को दर्शाए

(मानचित्र (पृष्ठ 174) —(सीबीएसई पाठ्यक्रम 2025-26 के अनुसार हैं)
बीदर, गोलकोंडा, बीजापुर, विजयनगर, चंद्रगिरी, कांचीपुरम, मैसूर, तंजावुर, कोलार, तिरुनेलवेली

विजयनगर चित्र

ऑडियो नोट

यू ट्यूब लिंक

# विषय -आठ
# किसान, जमींदार और राज्य
# कृषि समाज और मुगल साम्राज्य
# (लगभग सोलहवीं -सत्रहवीं शताब्दी))

## अध्ययन उद्देश्य

- मुगल काल के दौरान राज्य और कृषि के बीच संबंधों को समझने के लिए कृषि विकास के पहलुओं को समझना।
- सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों के दौरान हुए कृषि परिवर्तनों की तुलना और अन्तर स्पष्ट होगा।
- एक तालिका की सहायता से कृषि क्षेत्र में समझ विकसित होगी

## अध्याय का सारांश

**किसान और कृषि उत्पादन**

- कृषि समाज की मूल इकाई गांव थी, जिसमें किसान रहते थे जो विविध मौसमी कार्य करते थे जिनसे कृषि और व्यापर से सम्बंधित वस्तुओं का उत्पादन होता था।चीनी और तेल जैसे कृषि आधारित वस्तुओं का उत्पादन।

**स्रोतों की तलाश**

- सबसे महत्वपूर्ण इतिहास आइन-ए अकबरी (संक्षेप में आइन, भाग 8 भी देखें) है, जिसे अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा था।
- इसमें खेती को सुनिश्चित करने, राज्य की एजेंसियों द्वारा राजस्व संग्रह को सक्षम बनाने तथा राज्य और ग्रामीण दिग्गजों, यानी जमींदारों के बीच संबंधों को विनियमित करने के लिए राज्य द्वारा की गई व्यवस्थाओं का विवरण दिया गया है।
- आइन के लेखक की नज़र में मुगल राज्य के खिलाफ़ कोई भी विद्रोह या स्वायत्त सत्ता का दावा, असफल होने के लिए पूर्वनिर्धारित था। किसानों, ज़मींदारों और राज्य के बीच संघर्ष के उदाहरणों को इसमें दर्ज किया गया ह

**किसान और उनकी ज़मीनें**

- **मुगल काल** के इंडो-फ़ारसी स्रोतों में किसान को दर्शाने के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द **"रैयत"** या **" मुज़रियान "** था। इसके अलावा हमें **"किसान"** या **"असामी"** जैसे शब्द भी मिलते हैं।
- किसानों के दो प्रकार होते थे – ख़ुद-**काश्त** और **पाही-काश्त**
  - **ख़ुद-काश्त** वे किसान होते थे जो उस गांव के निवासी होते थे जहां उनकी ज़मीन होती थी।
  - **पाही-काश्त** गैर-निवासी किसान होते थे, जो किसी अन्य गांव से आते थे, लेकिन अनुबंध के आधार पर किसी दूसरी जगह की ज़मीन पर खेती करते थे।
  - लोग अपनी **पसंद या मजबूरी** के चलते **पाही-काश्त** बन जाते थे।
- **उत्तर भारत का औसत किसान** – एक जोड़ी बैल और दो हल रखता था।
- **गुजरात में**, 6 एकड़ ज़मीन वाला किसान समृद्ध माना जाता था।
- **बंगाल में**, 5 एकड़ ज़मीन को अधिकतम सीमा माना जाता था, और 10 एकड़ ज़मीन वाले को **अमीर असामी** कहा जाता था।
- खेती प्रायः **व्यक्तिगत स्वामित्व** में होती थी।

**सिंचाई और तकनीक**

- भूमि की प्रचुरता, श्रम की उपलब्धता और किसानों की गतिशीलता — ये तीन प्रमुख कारक कृषि के निरंतर विस्तार के लिए उत्तरदायी थे।
- **मानसून** भारतीय कृषि की रीढ़ बना रहा, परंतु कुछ फसलों के लिए अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होती थी। इसी कारण **रहट (Persian wheel)** जैसी कृत्रिम सिंचाई प्रणालियाँ विकसित की गईं।
- सिंचाई परियोजनाओं को राज्य का समर्थन भी प्राप्त था। उत्तर भारत में राज्य ने नई **नहरें** और **नालों** की खुदाई करवाई, और **शाहजहाँ** के शासनकाल के दौरान **पंजाब** में **शाहनहर** जैसी पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई गई।

**कृषि में उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकियाँ:**

- **लकड़ी का हल**
- **बैलों द्वारा खींची जाने वाली बीज ड्रिल**
- **एक छोटे लकड़ी के हैंडल के साथ संकीर्ण लोहे के ब्लेड वाली कुदाल**, जिसका उपयोग **निराई** और **खरपतवार हटाने** के लिए किया जाता था।

**फसलों की प्रचुरता**

- कृषि दो प्रमुख मौसमी चक्रों, खरीफ (शरद ऋतु) और रबी (वसंत) के इर्द-गिर्द संगठित थी।
- अधिकांश शुष्क या दुर्गम क्षेत्रों में प्रति वर्ष कम से कम दो फसलें पैदा होती थीं, जबकि कुछ क्षेत्रों में, जहां वर्षा या सिंचाई से पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती थी, वहां तीन फसलें भी पैदा होती थीं।
- आइन ने बताया कि आगरा के मुगल प्रांत में दो मौसमों में 39 किस्म की फसलें पैदा होती थीं और दिल्ली में 43 किस्म की फसलें पैदा होती थीं। बंगाल में अकेले चावल की 50 किस्में पैदा होती थीं।
- कपास और गन्ना जैसी फसलें **जिन्स-ए-कामिल (सर्वोत्तम फसलें) थीं।**
- विश्व के विभिन्न भागों से कई नई फसलें भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंचीं, जैसे स्पेन और अफ्रीका से मक्का, टमाटर, आलू, मिर्च, अनानास और पपीता।

।

**गांव समुदाय**

- किसान अपनी ज़मीनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व रखते थे और सामूहिक ग्राम समुदाय का हिस्सा होते थे। इस समुदाय के तीन घटक थे - किसान, पंचायत और ग्राम प्रधान **(मुकद्दम या मंडल)।**

**जाति और ग्रामीण माहौल**

- कृषक एक अत्यधिक विषम समूह थे, जो भूमि पर खेती करते थे, तथा उनमें से एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो छोटे-मोटे काम या कृषि मजदूर के रूप में काम करते थे।
- मुस्लिम समुदायों में हलालखोरन (मैला ढोने वाले) जैसे नौकरों को गांव की सीमा के बाहर रखा जाता था; इसी प्रकार, बिहार में मल्लाहजादों (नाविक के बेटे) की तुलना दासों से की जाती थी।
- मारवाड़ में राजपूतों का उल्लेख किसान के रूप में किया गया है, जो जाटों के साथ समान स्थान साझा करते थे, जिन्हें जाति पदानुक्रम में निचला दर्जा दिया गया था
- वृंदावन के गौरवों ने राजपूत दर्जे की मांग की
- अहीर, गुज्जर और माली - पशुधन और बागवानी की लाभप्रदता के कारण पदानुक्रम में वृद्धि हुई।
- सदगोप और कैवर्त - जो पशुपालक और मछुआरा जातियां थीं - ने कृषकों का दर्जा प्राप्त कर लिया।

**पंचायतें और मुखिया** ग्राम पंचायत बुजुर्गों की एक सभा थी, गांवों में कई जातियों के लोग रहते थे पंचायत आमतौर पर एक विषम निकाय होती थी। एक कुलीनतंत्र, पंचायत विभिन्न जातियों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करती थी।

- पंचायत का प्रमुख एक मुखिया होता था जिसे **मुकद्दम या मंडल** कहा जाता था। कुछ स्रोतों से पता चलता है कि मुखिया का चुनाव गांव के बुजुर्गों की सहमति से होता था।
- मुखिया का मुख्य कार्य गांव के खातों की तैयारी की देखरेख करना था, जिसमें पंचायत के लेखाकार या पटवारी उनकी सहायता करते थे।
- पंचायत को व्यक्तियों द्वारा दिए गए योगदान से धन प्राप्त होता था, जिसका उपयोग गांव में आने वाले राजस्व अधिकारियों के आतिथ्य की लागत को पूरा करने, सामुदायिक कल्याण गतिविधियों जैसे प्राकृतिक आपदाओं (जैसे बाढ़) से निपटने और निर्माण गतिविधियों के लिए किया जाता था।
- उन्होंने विभिन्न समुदायों के बीच जातिगत सीमाएं सुनिश्चित कीं, जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासन जैसे अधिक गंभीर दंड देने का अधिकार भी उनके पास था।

- ग्राम पंचायत के अतिरिक्त गांव में प्रत्येक जाति या जाति की अपनी जाति पंचायत होती थी।

**ग्रामीण दस्तकार**

- मराठी दस्तावेजों और ग्रामीण सर्वेक्षणों से पता चला है कि कारीगरों की संख्या काफी अधिक है, कभी-कभी गांवों में कुल परिवारों की संख्या का 25 प्रतिशत तक भी कारिगंरो की संख्या हो जाती है।
- ग्रामीण समाज में कारीगरों और किसानों के बीच अंतर परिवर्तनशील था, क्योंकि कई समूह दोनों का कार्य करते थे।
- गांव के कारीगर विशेष सेवाएं प्रदान करते थे, जिसके बदले में उन्हें गांव के लोग कई तरह से पारिश्रमिक देते थे। ऐसा करने का सबसे आम तरीका उन्हें फसल का हिस्सा देना या जमीन का आवंटन करना था, शायद खेती योग्य बंजर भूमि। महाराष्ट्र में ऐसी जमीनें जो कारिगंरो को मिलती थी मीरा या वतन कही जाती थीं।
- कारीगरों और व्यक्तिगत किसान परिवारों ने पारिश्रमिक की एक पारस्परिक निर्भरता प्रणाली में प्रवेश किया, अधिकांशतः सेवाओं के बदले वस्तु दी जाती थी, जिसे जजमानी प्रणाली के रूप में वर्णित किया गया।

**सत्रहवीं शताब्दी की एक पेंटिंग जिसमें कपड़ा उत्पादन को दर्शाया गया है**

**एक "छोटा गणराज्य"?**

- ब्रिटिश अधिकारियों ने गांव को एक "छोटे गणराज्य" के रूप में देखा, जो संसाधनों और श्रम को सामूहिक रूप से साझा करने वाले भ्रातृभावी साझेदारों से बना था।
- परिसंपत्तियों पर व्यक्तिगत स्वामित्व था।
- जाति और लिंग के आधार पर गहरी असमानताएं मौजूद हैं।
- शक्तिशाली व्यक्तियों का एक समूह गाँव के मामलों का निर्णय करता था।
- गांवों और कस्बों के बीच व्यापार के ज़रिए नकदी का संबंध पहले से ही विकसित हो चुका था। मुगलों के गढ़ में भी राजस्व का आकलन और संग्रह नकदी में ही होता था।

**कृषि समाज में महिलाएँ**

- खेतों में महिलाओं और पुरुषों को कंधे से कंधा मिलाकर काम करना पड़ता था। स्वाभाविक रूप से, घर (महिलाओं के लिए) और दुनिया (पुरुषों के लिए) के बीच लैंगिक भेदभाव नहीं था।
- पश्चिमी भारत में मासिक धर्म वाली महिलाओं को हल या कुम्हार के चाक को छूने की अनुमति नहीं थी, तथा बंगाल में पान के बागानों में प्रवेश की भी अनुमति नहीं थी।
- कारीगरी के काम महिला श्रम पर निर्भर थे। उत्पाद जितना अधिक व्यावसायिक होता था, उसे बनाने के लिए महिलाओं के श्रम की उतनी ही अधिक मांग होती थी। वे ज़रूरत पड़ने पर अपने मालिकों के घर या बाज़ार भी जाती थीं।
- कृषि प्रधान समाज में महिलाओं को एक महत्वपूर्ण संसाधन इसलिए भी माना जाता था क्योंकि श्रम पर निर्भर समाज में वे ही बच्चे पैदा करती थीं।
- कई ग्रामीण समुदायों में विवाह के लिए दुल्हन के परिवार को दहेज के बजाय वधू-मूल्य का भुगतान करना पड़ता था। तलाकशुदा और विधवा महिलाओं के पुनर्विवाह को वैध माना जाता था।
- संपन्न परिवारों में में महिलाओं को संपत्ति विरासत में पाने का अधिकार था। पंजाब के उदाहरणों से पता चलता है कि विधवाओं सहित महिलाओं ने ग्रामीण भूमि बाजार में अपनी विरासत में मिली संपत्ति के विक्रेता के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया।

**जंगल और कबीलें**

- 'जंगली' के नाम से पहचाने जाने वाले वनवासी वे लोग थे जिनकी आजीविका वनोपजों के संग्रहण, शिकार और स्थानान्तरणीय कृषि से आती थी।
- कभी-कभी जंगल विध्वंसक जगह बन जाते थे, उपद्रवियों के लिए शरणस्थली बन जाते थे , वनवासी राजाओं को हाथी मुहैया कराते थे।

- शिकार करना राजाओं की पसंदीदा गतिविधि थी, कभी-कभी इससे सम्राट को अपने साम्राज्य में व्यापक रूप से यात्रा करने और व्यक्तिगत रूप से अपने विषयों की शिकायतों को सुनने का मौका मिलता था। वनवासी शहद, मधुमक्खियों का मोम, गोंद लाख आदि की आपूर्ति करते थे।
- गांव के 'बड़े लोगों' की तरह जनजातियों के भी अपने सरदार होते थे।
- कई आदिवासी सरदार ज़मींदार बन गए थे, कुछ तो राजा भी बन गए थे।
- सिंध क्षेत्र की जनजातियों के पास 6,000 घुड़सवार और 7,000 पैदल सेनाएं थीं

**जमींदार**

1. ज़मींदारों के पास **मिल्कियत (संपत्ति)** नामक विशाल निजी ज़मीन होती थी और ग्रामीण समाज में उन्हें कुछ सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त थे। ज़मींदार अक्सर राज्य की ओर से राजस्व एकत्र करते थे।

2.अधिकांश ज़मींदारों के पास किले के साथ-साथ घुड़सवार सेना, तोपखाना और पैदल सेना की एक सशस्त्र टुकड़ी भी थी। इस अवधि में, अपेक्षाकृत 'निम्न' जातियाँ ज़मींदारों के पद पर आसीन हो गईं क्योंकि ज़मींदारियों की खरीद-फरोख्त काफ़ी तेज़ी से होती थी।

3. यद्यपि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि ज़मींदार एक शोषक वर्ग थे, फिर भी किसानों के साथ उनके रिश्ते में पारस्परिकता, पितृसत्ता और संरक्षण का तत्व मौजूद था।

**भू-राजस्व प्रणाली**

भूमि से प्राप्त राजस्व मुगल साम्राज्य का आर्थिक आधार था। दीवान, राजस्व अधिकारी और रिकार्ड रखने वाले का कार्यालय कृषि क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हो गया।

- राजस्व निर्धारण का कार्य राजस्व कलेक्टर या अमल - गुजार द्वारा किया जाता है।
- भू-राजस्व व्यवस्था में दो अवस्थाएं शामिल थीं, पहला, मूल्यांकन (जमा) और दूसरा वास्तविक संग्रह (हासिल)।
- प्रत्येक प्रांत में कृषि योग्य और कृषियोग्य दोनों प्रकार की भूमि को मापा गया।
- अकबर के समय भूमि को पोलज, परौती, चाचर और बंजर में विभाजित किया गया था।

**अकबर के अधीन भूमि का वर्गीकरण**

- **पोलाज:** प्रतिवर्ष खेती की जाने वाली भूमि
- **परती:** उर्वरता पुनः प्राप्त करने के लिए कुछ समय के लिए खेती से बाहर छोड़ी गई भूमि
- **चाचर:** 3 से 4 वर्षों तक परती छोड़ी गई भूमि
- **बंजर**: 5 वर्ष या उससे अधिक समय से बंजर भूमि

**मुगल साम्राज्य का विस्तार**

**मनसबदारी प्रणाली**

मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैन्य-सह-नौकरशाही तंत्र (मनसबदारी) था, जो राज्य के नागरिक और सैन्य मामलों की देखभाल के लिए जिम्मेदार था।

कुछ मनसबदारों को नकद (नकदी) में भुगतान किया जाता था, जबकि उनमें से अधिकांश को साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में राजस्व (जागीर) के आवंटन के माध्यम से भुगतान किया जाता था। उन्हें समय-समय पर स्थानांतरित किया जाता था

**चांदी का बहाव**

- सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान मिंग (चीन), सफावीद (ईरान) और ओटोमन (तुर्की)। इन सभी साम्राज्यों द्वारा प्राप्त राजनीतिक स्थिरता ने चीन से भूमध्य सागर तक भूमि व्यापार के जीवंत नेटवर्क बनाने में मदद की।
- व्यापार के विस्तार के कारण भारत से खरीदे गए माल के भुगतान के लिए एशिया में भारी मात्रा में चांदी आई, तथा उस चांदी का एक बड़ा हिस्सा भारत की ओर आकर्षित हुआ।

- इससे सिक्कों की ढलाई और अर्थव्यवस्था में मुद्रा के प्रचलन में अभूतपूर्व विस्तार हुआ, साथ ही मुगल राज्य को कर और राजस्व नकद में वसूलने की क्षमता भी प्राप्त हुई।
- जोवान्नी कारेरी, जो 1690 के आसपास भारत से होकर गुजरे थे, ने इस बात का स्पष्ट विवरण दिया है कि चांदी किस प्रकार विश्व भर से होते हुए भारत पहुंची।
  - आइन-ए-अकबरी, अकबरनामा का तीसरा हिस्सा है, जिसमें सम्राट अकबर के शासनकाल की प्रशासनिक रिपोर्टें शामिल हैं। इसे उनके दरबारी इतिहासकार अबुल फ़ज़ल ने फारसी भाषा में लिखा था और 1598 में पाँच संशोधनों के बाद पूरा किया गया।
  - यह ग्रंथ तीन पुस्तकों का संग्रह है: पहली दो पुस्तकों में ऐतिहासिक विवरण हैं, जबकि तीसरी पुस्तक शाही नियमों और मुगल साम्राज्य के प्रशासन का विस्तृत संग्रह प्रस्तुत करती है।
  - आइन-ए-अकबरी में अकबर के दरबार, प्रशासन, सेना के संगठन, राजस्व के स्रोत, साम्राज्य के प्रांतों का भौगोलिक और आर्थिक विवरण, साथ ही लोगों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं की जानकारी दी गई है।
  - इसके पाँच भाग हैं: पहली पुस्तक मंज़िल-आबादी जिसमें शाही घराने और उसका रखरखाव शामिल है; दूसरी पुस्तक सिपह-आबादी जो सैन्य और नागरिक प्रशासन तथा नौकरों की व्यवस्था को कवर करती है; तीसरी पुस्तक मुल्क-आबादी जो राजस्व और वित्तीय विभागों की जानकारी तथा बारह प्रांतों के लेखे-जोखे पर केंद्रित है; चौथी और पाँचवीं पुस्तकें धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं से संबंधित हैं।
- आइन-ए-अकबरी की कुछ सीमाएँ भी हैं, जैसे इसमें कुछ अंकगणितीय त्रुटियाँ होना, सभी प्रांतों से समान रूप से आंकड़े न मिलना तथा सभी क्षेत्रों के मूल्यों और मजदूरी के आंकड़े उपलब्ध न होना। हालांकि यह ग्रंथ मुगल प्रशासन और साम्राज्य के विस्तृत दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

**मानचित्र/संकल्पना चार्ट (माइंड मैप )**

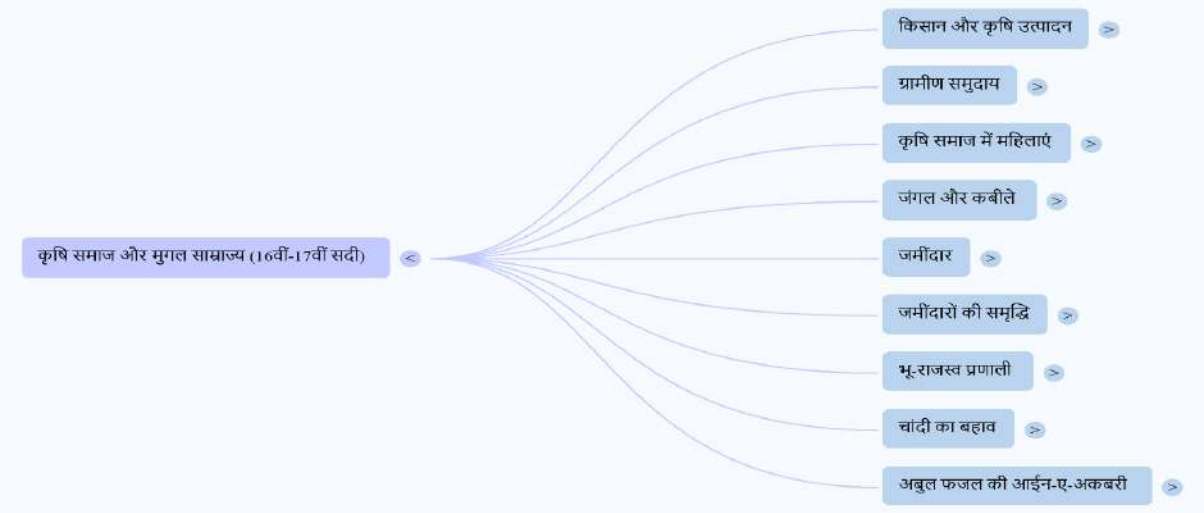


### बहुविकल्पीय व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित को सही विकल्पों के साथ पूरा करें: आइन-ए-अकबरी: अबुल फजल :: आलमगीर नामा:_____

(ए) अबुल फजल

(बी) मिर्ज़ा गुलाम आज़ाद

(सी) मिर्ज़ा ग़ालिब

(डी) मिर्ज़ा मुहम्मद काज़िम

2. अभिकथन(A) किसान ज़्यादातर कृषि उत्पादन में लगे हुए थे।

कारण(R)किसान अपनी जमीनों में वक्तिगत स्वामित्व थे|

(ए) कथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण कथन का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(बी) कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण, कथन का सही स्पष्टीकरण है।
(सी) अभिकथन असत्य है, परन्तु कारण सत्य है
(डी) अभिकथन सत्य है, परन्तु कारण असत्य है
3.निम्नलिखित युग्मों में से पता लगाएं कि कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है:
(ए) हुमायूँ नामा: अब्दुल लाहौरी
(बी) नस्तलिक: सुलेख
(सी) सियाही: कार्बन स्याही
(डी) खत: पत्र
4. आइन-ए-अकबरी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
I. यह 1598 में पूरा हुआ था
II. यह अकबरनामा की तीन भागीय श्रृंखला की दूसरी पुस्तक थी।
III. आइन-ए-अकबरी पांच दफ्तरों (खंडों) से बना है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सत्य है/हैं?
(ए) केवल II (बी) I और III (सी) केवल I (डी) ये सभी
5.रिक्त स्थान भरें:
मुगल शासकों ने यह विचार प्रचारित किया कि उन्हें लोगों पर शासन करने की वैधता ----- से प्राप्त हुई है।
(ए) सूफी संत (बी) अभिजात वर्ग (सी) पुजारी (डी) ईश्वर
6.शाहजहाँनामा पुस्तक किसने लिखी?
(ए) चाँद बीबी (बी) मुमताज महल (सी) इनायत खान (डी) फैजी
7.आइन-ए अकबरी के बारे में सही कथन का चयन करें।
I. पहली किताब का नाम है मंज़िल-आबादी।
II. दूसरी पुस्तक मुल्क-अ -आबादी है।
III. तीसरी किताब सिपाह-आबदी है।
IV. चौथी पुस्तक भारत के लोगों की धार्मिक परंपराओं से संबंधित है।
(ए) I और IV (बी) III और IV (सी) I और II (डी) II और III
8.निम्नलिखित का मिलान करें।

| सूची I | सूची II |
|---|---|
| अ . हुमायूं नामा | 1. अबुल फजल . |
| ब.अकबरनामा | 2.गुलबदन बेगम |
| स. जहाँगीरनामा | 3. जहाँगीर |
| ड. आलमगीर नामा | 4. मुहम्मद काजिम |

कोड:
(ए) ए-3, बी-2, सी-4, डी-1
बी) ए-4, बी-3, सी-1, डी-2
(सी) ए-1, बी-4, सी-2, डी-3
(डी) ए-2, बी-1, सी-3, डी-4
9. निम्नलिखित में से कौन अबुल हामिद लाहौरी द्वारा लिखी गई है?
(A) आलमगीर नामा (बी) अकबरनामा (सी) बादशाह नामा (डी) जहांगीरनामा
10. मुगल ग्रंथ सामान्यतः इसी _____भाषा में लिखे गए थे।
(ए) अरबी (बी) फ़ारसी (सी) उर्दू (डी) हिंदी
11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): मुगल सत्ता का केंद्र दरबार था।
कारण (R): मुग़ल धार्मिक रूप से सहिष्णु थे।

(ए) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(बी) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(सी) (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है।
(डी) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है।

12. अंतिम मुगल शासक कौन था?
(ए) शाह आलम द्वितीय (बी) फारुख सियार (सी) दारा शिकोह (डी) बहादुर शाह जफर

13. रिक्त स्थान भरें: __ ने अकबरनामा पुस्तक लिखी।
(ए) फ़ैज़ी (बी) अबुल फजल (सी) अमीर खुसरो (डी) मिर्ज़ा ग़ालिब

14. निम्नलिखित को क्रम में व्यवस्थित करें।
(i) शाहजहाँ का शासनकाल (ii) अकबर का शासनकाल
(iii) हुमायूँ का शासनकाल (iv) औरंगजेब का शासनकाल
(ए) (iv), (ii), (iii), (i)
(बी) (i), (ii), (iii), (iv)
(सी) (iii), (iv), (ii), (i)
(डी) (iii), (ii), (i), (iv)

15.आइन का केंद्रीय उद्देश्य क्या प्रस्तुत करना था?
(ए) अकबर के साम्राज्य का एक दर्शन
(बी) शाहजहाँ के साम्राज्य का दृष्टिकोण
(सी) न्यायालय की राजनीति
(डी) इनमें से कोई नहीं

16. साम्राज्य की राजकोषीय प्रणाली की देखरेख के लिए कौन जिम्मेदार था?
(ए) मीर बख्शी. (बी) दीवान (सी) काजी (डी) ये सभी

17. रिक्त स्थान भरें मुगल साम्राज्य में वनवासियों को ……. कहा जाता था?
(ए) जंगली (बी) किसान
(सी)खुद (डी) असामी

18. निम्नलिखित में से कौन सी फसल जिन्स-ए-कामिल मानी जाती थी?
(ए) कपास और गन्ना (बी) मक्का और गन्ना
(सी) चावल और गेहूं (डी) मिर्च और आलू

19. खुद-काश्त शब्द से आप क्या समझते हैं?
(ए) किसान जो गांव के निवासी थे (बी) अनिवासी कृषक
(सी) राजस्व संग्रहकर्ता (डी) जाति पंचायत का मुखिया

20. आइन -ए -अकबरी का तीसरा भाग मुल्क आबादी किससे संबंधित था?
(ए) साम्राज्य का सामाजिक (बी) साम्राज्य का प्रशासनिक पक्ष
(सी) साम्राज्य का राजकोषीय पक्ष (डी) प्रयुक्त में से कोई नहीं

21. ओटोमन साम्राज्य किससे संबंधित था?
(ए) चीन (बी) तुर्की (सी) ईरान (डी)इराक

**उत्तर**

उत्तर 1. (ए) मिर्जा मुहम्मद काज़िम
उत्तर 2. (बी) कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण, कथन का सही स्पष्टीकरण है।
उत्तर 3. (ए) हुमायूँ नामा: अब्दुल लाहौरी
उत्तर 4. (बी) I और III
उत्तर 5. (डी)ईश्वर
उत्तर 6. (सी) इनायत खान

उत्तर 7. (ए) I और IV
उत्तर 8. (डी) ए-2, बी-1, सी-3, डी-4
उत्तर 9.(C) बादशाह नामा
उत्तर 10. (बी) फ़ारसी
उत्तर 11. बी) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उत्तर 12. (डी) बहादुर शाह जफर
उत्तर 13. (बी) अबुल फजल
उत्तर 14. (डी) (iii), (ii), (i), (iv)
उत्तर 15. (ए) अकबर के साम्राज्य का एक दर्शन।
उत्तर 16. (बी) दीवान.
उत्तर 17 : - (ए (जंगली)
उत्तर 18 (ए) कपास और गन्ना
उत्तर 19. (ए) किसान जो गांव के निवासी थे
उत्तर 20. (सी) साम्राज्य का राजकोषीय पक्ष
उत्तर 21. (बी) तुर्की

**✍ लघु उत्तर प्रश्न**

1. पंचायत के कार्यों का वर्णन करें?

उत्तर: पंचायत का मुख्य कार्य:

(1) विकास और कल्याण: पंचायतें कृषि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा में सुधार, तथा गांव में सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता सुनिश्चित करना। वे हाशिए पर पड़े वर्गों के कल्याण पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं, तथा संसाधनों और अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित करते हैं।

(2) बुनियादी ढांचा और रखरखाव: पंचायतें अपने अधिकार क्षेत्र में सड़क, पुल, स्कूल और अस्पताल जैसे सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार हैं। वे सार्वजनिक संपत्ति के रखरखाव की भी देखरेख करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह समुदाय की प्रभावी रूप से सेवा करे।

(3) सामाजिक न्याय और अधिकारिता: पंचायतें सामाजिक न्याय और अधिकारिता सुनिश्चित करने की दिशा में काम करती हैं, खास तौर पर महिलाओं और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए। वे एक समावेशी माहौल बनाने का प्रयास करते हैं जहाँ सभी नागरिकों को निर्णय लेने में भाग लेने का अवसर मिले।

2. कृषि समाज में महिलाओं की क्या भूमिका थी?

उत्तर:1. महिलाएँ खेतों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती थीं।
2. महिलाएँ फसल की बुआई, निराई, मड़ाई और फटकने का काम करती थीं।
3. शिल्प उत्पादन - जैसे सूत कातना, मिट्टी के बर्तन बनाने और कढ़ाई के लिए मिट्टी को छानना और गूंथना।
4. महीने के कुछ दिनों में कुछ प्रतिबंध - पश्चिमी भारत में महिलाओं को हल या कुम्हार के चाक को छूने की अनुमति नहीं थी।
5. बच्चे पैदा करें और उनका पालन-पोषण करें।

3. भू-राजस्व कैसे तय किया जाता था?

उत्तर: इसमें दो चरण होते हैं - जामा और हासिल। जामा वह राशि होती थी जो निर्धारित की जाती थी और हासिल वह राशि होती थी जो एकत्रित की जाती थी।
2. प्रत्येक प्रांत में मापी गई कृषि योग्य और कृषि योग्य भूमि दोनों।
3. प्रत्येक गांव में कृषकों की संख्या का वार्षिक रिकार्ड तैयार करना
4. भू-राजस्व मापने के लिए अधिकारी नियुक्त किये गये।
5. दीवान, जो साम्राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देखरेख के लिए जिम्मेदार था।

4. ज़ब्ती प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ बताइए?

उत्तर: 1. भूमि की माप अनिवार्य थी।

2. भूमि का वर्गीकरण:- पोलज, परौती, चाचर, बंजर।
3. औसत उत्पादों की गणना.
4. राज्य के हिस्से का निर्धारण।
5. नकदी में रूपांतरण।
6. भू-राजस्व का संग्रह

5. 16वीं और 17वीं शताब्दी के ग्रामीण कारीगरों के बारे में बताएं।

उत्तर: i.गांव का एक और दिलचस्प पहलू विभिन्न उत्पादकों के बीच विनिमय का विस्तृत संबंध था। सूत्रों के अनुसार, कारीगरों की पर्याप्त संख्या थी।

ii.लांकि, गांव के समाज में कारीगरों और किसानों के बीच का अंतर बहुत ही अस्थिर था, क्योंकि कई समूह दोनों के काम करते थे। किसान और उनके परिवार शिल्प उत्पादन में भी भाग लेते थे - जैसे रंगाई, कपड़ा छपाई, मिट्टी के बर्तनों को पकाना और पकाना, कृषि उपकरणों को बनाना और उनकी मरम्मत करना।

iii. ऑफ सीजन के दौरान, किसान कारीगरी उत्पादन में संलग्न हो सकते थे। कारीगरों को फसल के हिस्से या जमीन के आवंटन से भुगतान किया जाता था, महाराष्ट्र में ऐसी जमीनें कारीगरों की मीरा या वतन बन जाती थीं - जो उनकी वंशानुगत संपत्ति होती थी।

iv.सेवाओं के लिए माल कभी-कभी कारीगर और व्यक्तिगत किसान पारिश्रमिक की पारस्परिक बातचीत प्रणाली में प्रवेश करते हैं, ज्यादातर समय सेवाओं के लिए माल

प्रश्न 6. मनसबदारी प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:i. मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैन्य-सह-नौकरशाही तंत्र (मनसबदारी) था जो राज्य के नागरिक और सैन्य मामलों की देखभाल के लिए जिम्मेदार था।

ii.कुछ मनसबदारों को नकद (नकदी) में भुगतान किया जाता था, जबकि उनमें से अधिकांश को साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में राजस्व (जागीर) के आवंटन के माध्यम से भुगतान किया जाता था

iii.उन्हें समय-समय पर स्थानांतरित किया जाता था।

## दीर्घ उत्तर प्रश्न प्रश्न

1. उन साक्ष्यों की जाँच करें जो बताते हैं कि मुगल राजकोषीय प्रणाली के लिए भू-राजस्व महत्वपूर्ण था?

उत्तर:- मुगल राजकोषीय प्रणाली में भू-राजस्व का महत्व

- भूमि से प्राप्त राजस्व मुगल साम्राज्य का आर्थिक आधार था, इसलिए कृषि उत्पादन पर नियंत्रण और पूरे साम्राज्य से राजस्व तय व एकत्र करने के लिए प्रशासनिक तंत्र आवश्यक था।
- राज्य ने कृषि क्षेत्र की सीमा और कृषि संबंधों की जानकारी जुटाकर निर्णायक भूमिका निभाई।
- भू-राजस्व निर्धारण के दो चरण थे – भूमि राजस्व व्यवस्था और वास्तविक संग्रह; जमा आंकी गई राशि थी, जबकि हासिल एकत्र की गई राशि। आमिल राजस्व संग्रहकर्ता था।
- अकबर ने किसानों से नकद भुगतान को प्राथमिकता दी, पर वस्तु में भुगतान का विकल्प भी रखा। स्थानीय परिस्थितियों से दावे प्रभावित होते थे।
- प्रत्येक प्रांत में कृषि योग्य व कृषियोग्य भूमि का मापन हुआ; ऐन में अकबर काल का कुल योग दर्ज है।
- औरंगजेब ने 1665 में प्रत्येक गांव के किसानों की वार्षिक सूची तैयार करने का आदेश दिया, हालांकि वन क्षेत्र अधिकांशतः अमापित रहे।

**2. सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में वनवासियों के जीवन में क्या परिवर्तन आया?**

1- ग्रामीण भारत में स्थिर कृषि के अलावा भी अन्य गतिविधियाँ थीं।
2- ग्रंथों में जंगल में रहने वालों को जंगली कहा जाता था, पर इसका अर्थ सभ्यता का अभाव नहीं था।
3- यह उन लोगों के लिए था जिनकी जीविका वनोपज संग्रह, शिकार और स्थानांतरित कृषि से होती थी।
4- राज्य के लिए जंगल उपद्रवियों का शरणस्थल (मवास) था और सेना हेतु हाथियों की पेशकाश ली जाती थी।
5- मुगल विचारधारा में शिकार प्रजा के प्रति सम्राट की चिंता का प्रतीक था और इससे सम्राट को क्षेत्रों का दौरा व शिकायतों का

समाधान करने का अवसर मिलता था।

6- वाणिज्यिक कृषि के प्रसार और शहद, मोम, गोंद लाख जैसे वन उत्पादों की मांग से वनवासियों पर प्रभाव पड़ा; गोंद लाख विदेश निर्यात की प्रमुख वस्तु बनी।

7- पंजाब की लोहानी जनजाति भारत-अफगानिस्तान व्यापार और स्थानीय ग्राम-शहर व्यापार में सक्रिय थी।

8- सामाजिक रूप से, जनजातियों के सरदार जमींदार या राजा भी बन गए थे।

**3. 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान ग्राम पंचायत के गठन और कार्य की व्याख्या करें।**

I. गांव की पंचायत बुजुर्गों की सभा थी, जिसमें संपत्ति पर वंशानुगत अधिकार रखने वाले प्रभावशाली लोग शामिल होते थे।

II. मिश्रित जाति के गांवों में पंचायत विषम निकाय होती थी और छोटे किसान व मजदूर आमतौर पर प्रतिनिधित्व से वंचित रहते थे।

III. पंचायत का मुखिया मुकद्दम या मंडल कहलाता था, जिसे बुजुर्गों की सहमति से चुना और जमींदार द्वारा अनुमोदित किया जाता था; विश्वास खोने पर हटाया जा सकता था।

मुख्य कार्य

● मुखिया गांव के खातों की तैयारी की देखरेख करता था, जिसमें पटवारी मदद करता था। पंचायत का धन ग्रामीणों के योगदान से बनता था और इसका उपयोग राजस्व अधिकारियों के स्वागत, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने, बांध-नहर जैसे सामुदायिक कार्यों में होता था।

● पंचायत जातिगत सीमाएं बनाए रखने, आचरण पर निगरानी, अपराध रोकने, जुर्माना लगाने और निष्कासन जैसी सज़ा देने का काम करती थी।

● गांव की हर जाति की अपनी जाति पंचायत होती थी, जो विवादों का निपटारा, भूमि दावों में मध्यस्थता और विवाह पर निर्णय करती थी। राज्य अधिकतर इनके फैसलों का सम्मान करता था।

● गरीब तबकों द्वारा अत्यधिक कर या मुफ्त श्रम की मांग के खिलाफ पंचायत में याचिकाएं दी जाती थीं, और पंचायत अपील की अदालत की तरह काम करती थी।

## स्रोत आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

### अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण

*आइन* में वर्गीकरण के मापदंड की निम्नलिखित सूची दी गई है:

अकबर बादशाह ने अपनी गहरी दूरदर्शिता के साथ ज़मींनों का वर्गीकरण किया और हरेक (वर्ग की ज़मीन) के लिए अलग-अलग राजस्व निर्धारित किया। *पोलज* वह ज़मीन है जिसमें एक के बाद एक हर फ़सल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है। *परौती* वह ज़मीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके। *चचर* वह ज़मीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है। *बंजर* वह ज़मीन है जिस पर पाँच या उससे ज़्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो। पहले दो प्रकार की ज़मीन की तीन किस्में हैं, अच्छी, मध्यम और खराब। वे हर किस्म की ज़मीन के उत्पाद को जोड़ देते हैं, और इसका तीसरा हिस्सा मध्यम उत्पाद माना जाता है, जिसका एक-तिहाई हिस्सा शाही शुल्क माना जाता है।

1. आइन-ए-अकबरी के लेखक का नाम बताइये?

उत्तर -अबुल फजल

प्रश्न 2. भूमि की विभिन्न श्रेणियों के नाम बताइए?

उत्तर- 1.पोलज 2. परौती 3 . चाचर 4. बँजर

प्रश्न 3. भूमि की कौन सी श्रेणी अधिक उपजाऊ थी और क्यों?

उत्तर – पोलाज, क्योंकि प्रत्येक फसल के लिए प्रतिवर्ष इसकी खेती की जाती है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

## नक़द या जीन्स ?

*आइन* से यह एक और अनुच्छेद है:

*अमील-गुज़ार* सिर्फ़ नक़द लेने की आदत न डाले बल्कि फ़सल भी लेने के लिए तैयार रहे। यह बाद वाला तरीक़ा कई तरह से काम में लाया जा सकता है। पहला, *कणकुत:* हिंदी ज़ुबान में *कण* का मतलब है, अनाज, और *कुत*, अंदाज़ा ..... अगर कोई शक हो, तो फ़सल को तीन अलग-अलग पुलिंदों में काटना चाहिए– अच्छा, मध्यम और बदतर, और इस तरह शक दूर करना चाहिए। अकसर अंदाज़ से किया गया ज़मीन का आकलन भी पर्याप्त रूप से सही नतीजा देता है। दूसरा, बटाई जिसे *भाओली* भी कहते हैं (में), फ़सल काट कर जमा कर लेते हैं, और फ़िर सभी पक्षों की मौजूदगी में व रजामंदी में बँटवारा करते हैं। लेकिन इसमें कई समझदार निरीक्षकों की जरूरत पड़ती है; वर्ना दुष्ट-बुद्धि और मक्कार धोखेबाज़ी की नीयत रखते हैं। तीसरे, खेत बटाई जब वे बीज बोने के बाद खेत बाँट लेते हैं। चौथे, लाँग बटाई; फ़सल काटने के बाद, वे उसका ढ़ेर बना लेते हैं और फ़िर उसे अपने में बाँट लेते हैं, और हरेक (पक्ष) अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे मुनाफ़ा कमाता है।

प्रश्न 1. भू-राजस्व एकत्र करने के लिए नियुक्त अधिकारी का नाम क्या है?
उत्तर: हिंदी भाषा में कण् का अर्थ अनाज होता है और कुट का अर्थ अनुमान होता है
प्रश्न 2. मुगल शासन के दौरान प्रचलित विभिन्न प्रकार की बटाई प्रणाली को सूचीबद्ध करें।
उत्तर: फसल काटकर, ढेर लगाकर, दोनों पक्षों में सहमति से बांट ली जाती है। लेकिन इस नकदी में कई बुद्धिमान निरीक्षकों की आवश्यकता होती है, अन्यथा दुष्ट बुद्धि वाले और झूठे लोग धोखे में पड़ जाते हैं।
प्रश्न 3. आपके अनुसार किस प्रकार की बटाई प्रणाली अच्छी थी?
उत्तर: अनाज काटने के बाद वे उसे ढेर में रखते हैं और आपस में बांट लेते हैं, और प्रत्येक अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे लाभ कमाता है।

### मानचित्र आधारित गतिविधियाँ

A. भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को ढूंढें और लेबल करें।

- बाबर, अकबर और औरंगजेब के अधीन क्षेत्र:
- दिल्ली, आगरा, पानीपत, अम्बर, अजमेर, लाहौर, गोवा

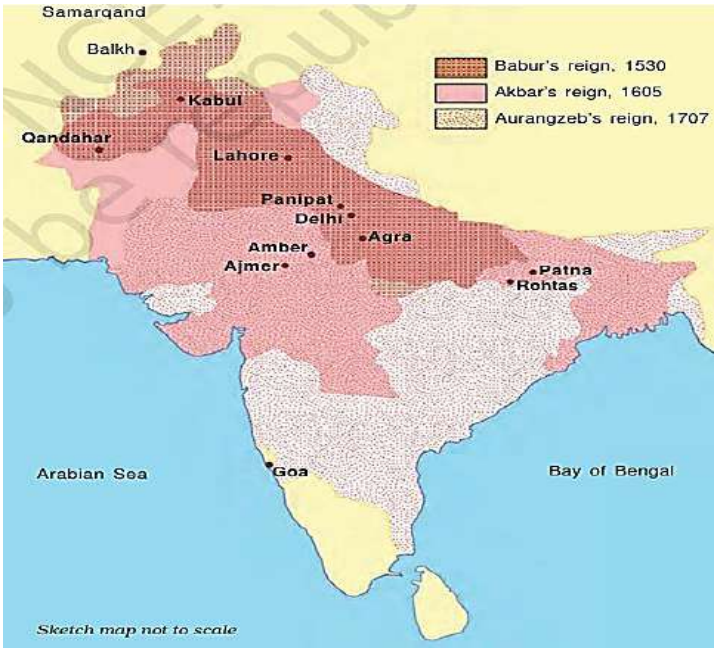

## अध्याय 9

## उपनिवेशवाद और देहात (सरकारी अभिलेखों का अध्ययन)

### अध्ययन उद्देश्य

a) भारत में उपनिवेशवाद के आर्थिक पक्षों को समझने के लिए ब्रिटिशों द्वारा लागू की गई राजस्व प्रणालियों का मूल्यांकन करना।

b) ब्रिटिश और भारतीयों के परस्पर विरोधी हितों को समझने के लिए उपनिवेशकालीन अधिकारियों के अभिलेखों और रिपोर्टों का विश्लेषण करना।

c) इस सदी में किसानों और कारीगरों की रक्षा के लिए उठाए जाने वाले उपायों को खोजना।

### अध्याय का सारांश

#### माइंड मेपस्थायी बंदोबस्त

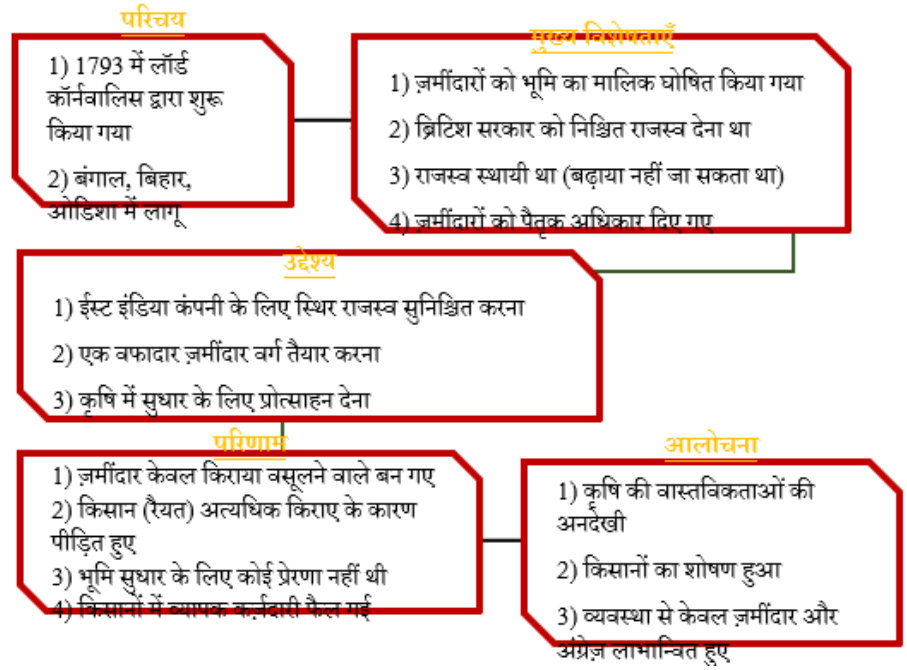


#### जोतदार

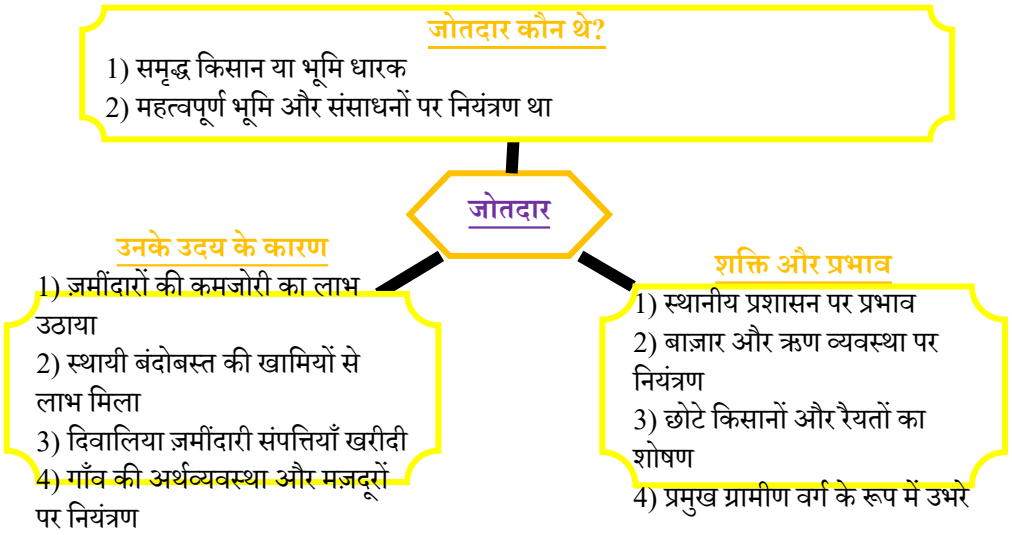

## पाँचवीं रिपोर्ट

**रिपोर्ट का उद्देश्य**
1) यह रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत की गई थी।
2) ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन, राजस्व प्रणाली और भ्रष्टाचार की जांच करना।

**महत्व**
1) व्यापारिक नियंत्रण से प्रशासनिक नियंत्रण की ओर बदलाव को दर्शाता है।
2) ब्रिटेन में कंपनी के शासन को लेकर बहस हुई।

**रिपोर्ट की मुख्य बातें**
1) ब्रिटिश अधिकारियों और संसद सदस्यों द्वारा लिखा गया।
2) कंपनी अधिकारियों द्वारा सत्ता का दुरुपयोग
3) ज़मींदारों की शक्ति में गिरावट
4) किसानों का शोषण राजस्व संग्रहण का दस्तावेज़ीकरण

---

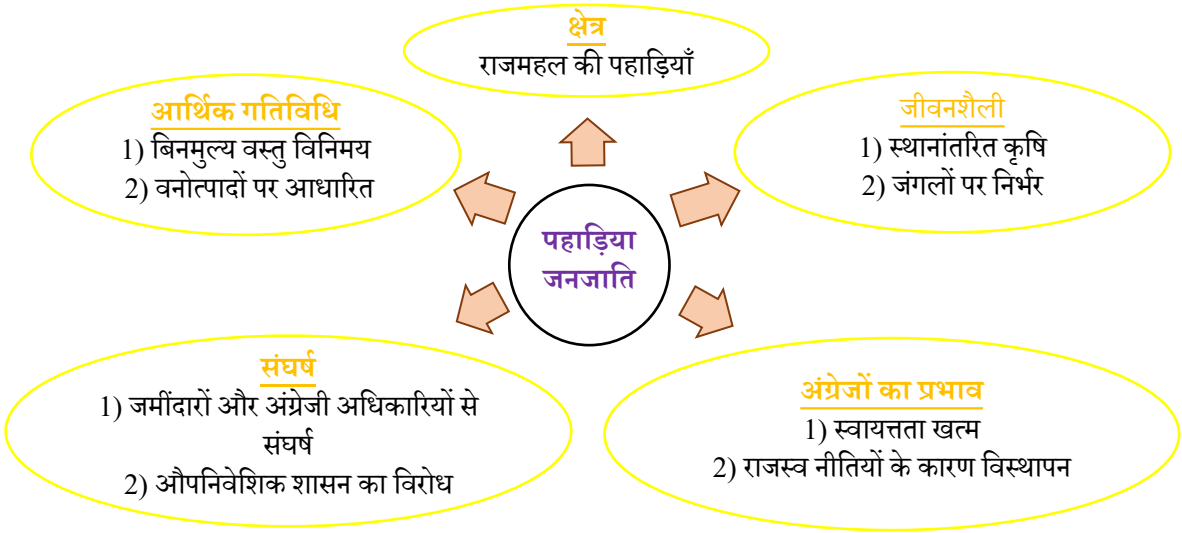


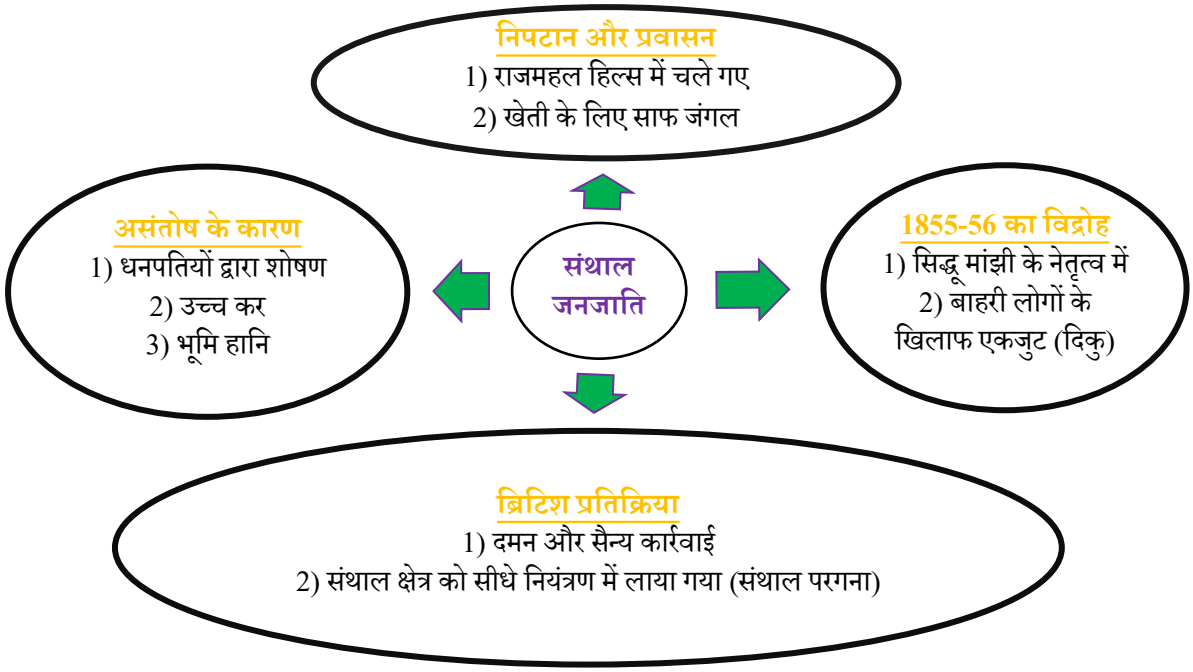

## फ्रांसिस बुकानन

**परिचय:**
1) फ्रांसिस बुकानन एक स्कॉटिश चिकित्सक थे जो बाद में सर्वेक्षक बने।
2) उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा पूर्वी भारत का सर्वेक्षण करने के लिए भेजा गया था।

**सर्वेक्षण का उद्देश्य:**
1) ग्रामीण भारत की आर्थिक स्थिति जानने के लिए।
2) वनस्पति, जीव-जंतु, फसलें, भूमि उपयोग, व्यापार पर जानकारी इकट्ठा करना।
3) राजस्व संभावनाओं का आकलन करना।

**उपयोग की गई विधियाँ:**
1) विस्तृत रोजनामचा और रिपोर्टें तैयार कीं।
2) स्थानीय लोगों से बातचीत – किसान, ज़मींदार।
3) भू-दृश्य, बाज़ार, सिंचाई प्रणालियों का निरीक्षण किया।

**ऐतिहासिक महत्व:**
1) बुकानन की रिपोर्टें ब्रिटिश प्रशासन के लिए मूलभूत आंकड़े बनीं।
2) भूमि राजस्व नीति बनाने में मदद मिली।
3) औपनिवेशिक शासन का प्रभाव ग्रामीण भारत पर स्पष्ट हुआ।

## रैयतवाड़ी प्रणाली

**परिचय**
1) मद्रास प्रेसिडेंसी & बॉम्बे प्रेसिडेंसी में लागू भूमि राजस्व प्रणाली
2) सरकार और किसानों (रायटों) के बीच सीधा समझौता
3) ज़मींदार जैसे मध्यस्थ नहीं थे

**फ़ायदा**
1) मध्यस्थों द्वारा शोषण कम हुआ
2) किसानों में ज़मीन की जिम्मेदारी बढ़ी

**नुकसान**
1)उच्च राजस्व मांग से किसानों पर दबाव
2) खराब फसल पर किसानों को समस्याएं
3) सरकार कड़ी थी, टैक्स में कोई छूट नहीं

**प्रभाव**
1) किसानों का कर्ज़ बढ़ना
2) राजस्व न चुका पाने पर जमीन का छिन जाना
3) पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का क्षरण

## बम्बई दक्कन दंगे

**पृष्ठभूमि:**

1) ब्रिटिश राजस्व नीतियाँ
2) भूमि कर की ऊँची माँग
3) अमेरिकी गृह युद्ध के बाद कपास व्यापार में गिरावट

**विद्रोह के कारण**

1) किसानों की बढ़ती ऋणग्रस्तता
2) साहूकारों का शोषण
3) भूमि की जब्ती
4) ऋण वसूली के कठोर तरीके

**विद्रोह की प्रकृति**

1) साहूकारों की संपत्ति पर हिंसक हमले
2) हिसाब की किताबों को जलाना
3) साहूकारों का बहिष्कार
4) किसानों का सामूहिक प्रतिरोध

**सरकार की प्रतिक्रिया**

आयोगों की नियुक्ति
साहूकारी पर नियंत्रण लगाने का प्रयास

**प्रभाव**

1)किसानों के लिए कानूनी संरक्षण
2) ग्रामीण समुदायों में बढ़ी जागरूकता
3) औपनिवेशिक कृषि नीतियों की खामियाँ उजागर हुईं

## बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न

**खंड क** – प्रश्न संख्या 1 से 21 बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का होता है।

**अभिकथन और कारण आधारित प्रश्न:**

प्रश्न 1 से 4 तक नीचे दिए गए प्रश्न में अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और उचित विकल्प का चयन कीजिए।

**विकल्प:**

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) असत्य है लेकिन R सत्य है।

**1)** कथन (A): बंगाल के राजाओं और तालुकदारों के साथ स्थायी बंदोबस्त किया गया था। उन्हें अब जमींदारों के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
कारण (R): जमींदार गाँव में ज़मींदार नहीं था, बल्कि राज्य का राजस्व कलेक्टर था।
**2)** कथन (A): बर्दवान राजा की जागीरें सार्वजनिक रूप से बेची गई थीं, लेकिन उनकी जमींदारी पर उनका नियंत्रण बना रहा।
कारण (R): ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजा को स्थायी बंदोबस्त के तहत अपनी जमींदारी बनाए रखने की अनुमति दी।

**3)** कथन (A): स्थायी बंदोबस्त में जमींदार राजस्व मांग का भुगतान करने में विफल रहे और बकाया राशि जमा हो गई।

कारण (R): सूर्यास्त कानून के अनुसार, यदि निर्दिष्ट तिथि के सूर्यास्त तक भुगतान नहीं होता है, तो जमींदारी नीलाम होने के लिए उत्तरदायी थी।

**4)** कथन (A): **1862** तक ब्रिटेन में **90** प्रतिशत से अधिक कपास आयात भारत से आ रहा था।

कारण (R): 1865 में गृह युद्ध समाप्त हो गया, कपास का निर्यात फिर से शुरू हुआ, कपास की कीमतें और भारत से कपास की मांग कम हो गई।

**चित्र आधारित प्रश्न:**

प्रश्न 5 से 8 तक चित्र आधारित प्रश्न हैं। चित्र की पहचान कीजिए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

**5)** दिए गए चित्र की घटना की पहचान कीजिये जो लंदन समाचार**, 23** फरवरी **1856** में प्रकाशित हुई थी।

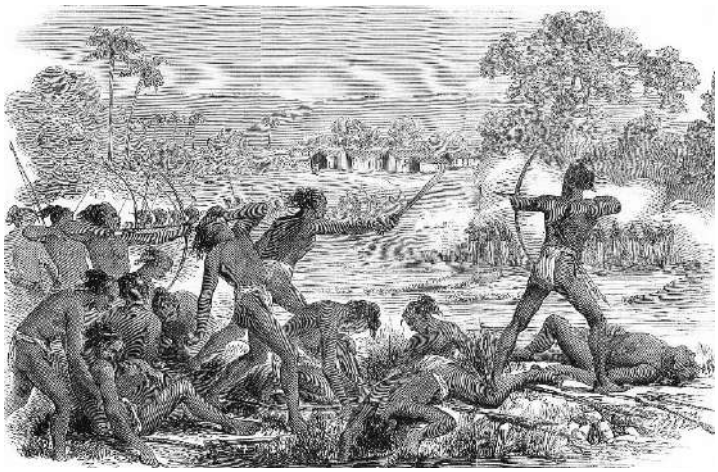

(A) 1857 का विद्रोह (B) दक्कन के दंगे (C) नील विद्रोह (D) संथाल विद्रोह

**6)** नीचे दिए गए संथाल विद्रोह के नेता की पहचान करें।

(A) मंगल पांडे
(B) सिद्धू मांझी
(C) बिरसा मुंडा
(D) वारिस अली

**7)** निचली राजमहल पहाड़ियों में संथाल देश में एक पहाड़ी गांव। गांव शांतिपूर्ण, शांत और रमणीय प्रतीत होता है। जीवन बाहरी दुनिया से अप्रभावित लगता है। लंदन समाचार, 23 फरवरी 1856 में चित्रित छवि। चित्रकार का नाम पहचानें:

(A) वाल्टर शेरविल (B) चार्ल्स कॉर्नवॉलिस (C) ऑगस्टस क्लीवलैंड (D) डेविड रिकार्डो

**8)** इस्तमरारी बंदोबस्त के तहत  इनके शासन में बर्दवान की जमींदारी काफी फली फूली | उन्होंने संथाल विद्रोह और 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों की मदद की। व्यक्ति की पहचान करें:

(A) बहादुर शाह 'जफर'
(B) लॉर्ड चार्ल्स कार्नवालिस
(C) सिद्धू मांझी
(D) महाराज मेहताब चंद

**कथन का अर्थ पहचानें / आधारित प्रश्नों के सार को पहचानें:**

प्रश्न 9 से 12 तक बहुविकल्पीय आधारित प्रश्न। उपयुक्त विकल्प की पहचान कीजिए।

**9)** सही विकल्प की पहचान कीजिये:

1) संथालों को जमींदारों द्वारा काम पर रखा गया था और ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें जंगल महलों में बसने के लिए आमंत्रित किया था।

2) उन्हें इसके भीतर रहना था और स्थानांतरित कृषि का अभ्यास करना था।

3) संथाल को एक बड़ा क्षेत्र प्रदान किया गया था जिसे दामिन-ए-कोह के नाम से जाना जाता था।

विकल्प:

(A) केवल 1 (B) 1 और 2 (C) 1 और 3 (D) केवल 3

**10)** निम्नलिखित में से कौन-सा एक इस्तमरारी बंदोबस्त की महत्त्वपूर्ण कमी थी?

(A) जमींदारों को भूमि पर स्थायी अधिकार मिल गए।
(B) अंग्रेजों ने सीधे किसानों से संपर्क किया।
(C) इस व्यवस्था ने आदिवासी समुदायों के प्रभाव को बढ़ाया।
(D) इस प्रणाली के परिणामस्वरूप बॉम्बे-दक्कन दंगे हुए।

**11)** निम्नलिखित में से कौन सी 'बॉम्बे दक्कन' में अंग्रेजों द्वारा लागू रैयतवाड़ी प्रणाली की प्राथमिक विशेषता थी?

(A) जमींदारों के माध्यम से अप्रत्यक्ष राजस्व संग्रहण।
(B) ग्राम समुदाय द्वारा भूमि का सामूहिक स्वामित्व।
(C) अंग्रेजों ने किसानों के साथ सीधे राजस्व का निपटान किया।
(D) समानता को बढ़ावा देने के लिए जोतदारों को भूमि दी गई।

**12)** निम्नलिखित में से किसने 1770 में भागलपुर में पहाड़िया के साथ 'शांति की नीति' प्रस्तावित की थी?

(A) विलियम हॉज (B) ऑगस्टस क्लीवलैंड (C) जॉर्ज चिनरे (D) कप्तान कुक

**कथन आधारित प्रश्न:**

प्रश्न 13 से 16 तक कथन आधारित प्रश्न हैं। उपयुक्त विकल्प की पहचान कीजिए।

**13)** राजमहल पहाड़ियों के पहाड़िया के बारे में गलत कथनों की पहचान कीजिये**?**

(A) वे इमली के पेड़ों के बीच बनी झोपड़ियों में रहते थे और पूरे जंगल को अपनी निजी भूमि मानते थे।
(B) वे जंगल में बाहरी लोगों के प्रवेश का विरोध करते थे और जंगल में प्रवेश करने वाले किसी भी बाहरी व्यक्ति को लूटकर भगा देते थे।
(C) वे अक्सर मैदानी इलाकों पर हमला करते थे, ये हमले भोजन, पशुधन और अपनी ताकत दिखाने के लिए किए जाते थे।
(D) जंगल में रहने वाले लोगों को अंग्रेजों द्वारा सभ्य माना जाता था।

**14)** जोतदारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन कीजिए।

I. जोतदार वे किसान थे जिनके पास कम मात्रा में भूमि संपदा थी।
II. कुछ स्थानों पर जोतदार उन्हें हवलदार, गंटीदार या मंडल भी कहा जाता था।
III. उनकी जमीन पर बटाईदारों द्वारा खेती की जाती थी।

**विकल्प:**

(A) I & III (B) II &III (C) I & II (D) I, II & III

**15)** बर्दवान नीलामी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है**?**

(A) इस नीलामी में बर्दवान के राजा की संपत्ति बेची जा रही थी क्योंकि राजा ने राजस्व राशि का भुगतान नहीं किया था।

(B) कई लोग बोली लगाने के लिए नीलामी में शामिल हुए और अंत में संपत्तियों को सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को बेच दिया गया।

(C) लेकिन बाद में पता चला कि नीलामी में शामिल ज्यादातर खरीदार राजा या उनके परिचितों के नौकर थे। इस नीलामी में की गई 95% से अधिक खरीदारी नकली थी।

(D) इस नीलामी से पहले ही राजा ने अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा अपनी बेटी को दे दिया था।

**16)** दक्कन के दंगों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है**?**

(A) आंदोलन पूना (वर्तमान पुणे) जिले के एक बड़े गांव सुपा में शुरू हुआ।

(B) आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के रैयत इकट्ठा हुए और ब्रिटिश आवासीय क्षेत्रों पर हमला किया।

(C) किसानों के हमलों से घबराकर, साहूकार गांवों से भाग गए, अक्सर अपनी संपत्ति और सामान को पीछे छोड़ देते थे।

(D) विद्रोही किसानों को डराने के लिए गांवों में पुलिस थाने स्थापित किए गए थे।

**कॉलम/कालानुक्रमिक क्रम आधारित प्रश्न का मिलान करें:**

प्रश्न **17** से **21** तक कॉलम / कालानुक्रमिक क्रम आधारित प्रश्न का मिलान किया जाता है। उपयुक्त विकल्प की पहचान कीजिए।

**17)** स्तंभ **I** को स्तंभ **II** से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

| स्तंभ **I** | स्तंभ **II** |
|---|---|
| a) 1780s | **1.** ब्रिटिश संसद को सौंपी गई पांचवी रिपोर्ट |
| b) 1813 | **2.** ऑगस्टस क्लीवलैंड की शांति की नीति |
| c) 1793 | **3.** भारत में कपास में उछाल |
| d) 1861 | **4.** बंगाल में इस्तमरारी बंदोबस्त की शुरुआत |

**विकल्प:**

| | **a** | **b** | **c** | **d** |
|---|---|---|---|---|
| **A** | 2 | 3 | 1 | 4 |
| **B** | 4 | 2 | 3 | 1 |
| **C** | 2 | 1 | 4 | 3 |
| **D** | 1 | 2 | 3 | 4 |

**18)** निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें और सही विकल्प चुनें:

(i) परिसीमन कानून

(ii) सूर्यास्त कानून

(iii) संथाल विद्रोह

(iv) बॉम्बे-दक्कन दंगे

**विकल्प:**

(A) (ii), (iii), (i), (iv)

(B) (i), (ii), (iv), (iii)

(C) (iii), (iv), (ii), (i)

(D) (iv), (iii), (i), (ii)

**19)** निम्नलिखित में से कौन सा ईस्ट इंडिया कंपनी से संबंधित घटनाओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है**?**

I. ईस्ट इंडिया कंपनी इंग्लैंड की एकमात्र कंपनी थी जो भारत और चीन के साथ व्यापार कर सकती थी।

II. पाँचवीं रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद को सौंपी गई।

III. ब्रिटिश संसद ने कंपनी को भारत के प्रशासन पर नियमित रिपोर्ट तैयार करने के लिए मजबूर किया।

IV. ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1773 के बाद बंगाल में अपना शासन स्थापित किया, इसकी निगरानी ब्रिटिश प्रणाली द्वारा की जा रही थी।

**विकल्प:**

(A) I, IV, III & II

(B) II, III, IV & I

(C) III, I, II & IV

(D) I, IV, II & III

**20)** निम्नलिखित में से कौन सा संथाल और पहाड़िया से संबंधित घटनाओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है**?**

I. पहाड़ी लोग (पहाड़िया) बंगाल में स्थित राजमहल की पहाड़ियों पर रहते थे।

II. 1780 के दशक में, भागलपुर के कलेक्टर ऑगस्टस क्वींसलैंड ने पहाड़िया लोगों को शांति की नीति का प्रस्ताव दिया।

III. अंग्रेजों ने इन लोगों (पहाड़िया) को नियंत्रण में लाने और उन्हें सभ्य बनाने और खेती में संलग्न करने का फैसला किया।

IV. संथाल विद्रोह के परिणामस्वरूप, संथाल परगना नामक एक क्षेत्र बनाया गया था।

**विकल्प:**

(A) I, IV, II & III

(B) I, III, II & IV

(C) III, I, II & IV

(D) I, IV, III & II

**21)** स्तंभ **I** को स्तंभ **II** से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

| स्तंभ **I** | स्तंभ **II** |
|---|---|
| **a)** फ्रांसिस बुकानन | **1.** भारत और चीन के साथ व्यापार पर ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिकार |
| **b)** रॉयल चार्टर | **2.** भारत के गवर्नर-जनरल लॉर्ड वेलेजली के सर्जन |
| **c)** दिकू | **3.** एक जमींदार के पास केवल "औसत किराए" का दावा होना चाहिए। |
| **d)** डेविड रिकार्डो | **4.** साहूकार |

विकल्प:

| | **a** | **b)** | **c)** | **d)** |
|---|---|---|---|---|
| **A** | 2 | 3 | 1 | 4 |
| **B** | 4 | 2 | 3 | 1 |
| **C** | 2 | 1 | 4 | 3 |
| **D** | 1 | 2 | 3 | 4 |

**उत्तर**

1) (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

2) (C) सत्य है लेकिन R असत्य है।

3) (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

4) (B) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

5) (D) संथाल विद्रोह

6) (B) सिद्धू मांझी

7) (A) वाल्टर शेरविल

8) (D) महाराज मेहताब चंद

9) (C) 1 और 3

10) (A) जमींदारों को भूमि पर स्थायी अधिकार मिल गए।

11) (C) अंग्रेजों ने किसानों के साथ सीधे राजस्व का निपटान किया।

12) (B) ऑगस्टस क्लीवलैंड
13) (D) जंगल में रहने वाले लोगों को अंग्रेजों द्वारा सभ्य माना जाता था।
14) (B) II &III
15) (D) इस नीलामी से पहले ही राजा ने अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा अपनी बेटी को दे दिया था।
16) (B) आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के रैयत इकट्ठा हुए और ब्रिटिश आवासीय क्षेत्रों पर हमला किया।
17) (C) a.2 b.1 c.4 d.3
18) (A) (ii), (iii), (i), (iv)
19) (A) I, IV, III & II
20) (B) I, III, II & IV
21) (C) a.2 b.1 c.4 d.3

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**खंड ख – प्रश्न संख्या 22 से 27 लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का होता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए।**

**22) जमींदारों ने इस्तमरारी बंदोबस्त के तहत अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को राजस्व भुगतान में चूक क्यों की?**

**उत्तर:**

(i) कंपनी द्वारा प्रारंभिक मांग बहुत अधिक थी, यह तर्क देते हुए कि जमींदारों पर बोझ धीरे-धीरे कम हो जाएगा क्योंकि कृषि उत्पादन का विस्तार होता है और कीमतें बढ़ती हैं।
(ii) यह ऊँची माँग 1790 के दशक में लागू की गई थी, जब कृषि उत्पादों की कीमतें नीची थीं, जिससे रैयत के लिए जमींदार को अपनी देय राशि का भुगतान करना मुश्किल हो गया था।
(iii) फसल की परवाह किए बिना राजस्व अपरिवर्तनीय था और समय पर भुगतान किया जाना था। सूर्यास्त कानून के अनुसार, यदि निर्दिष्ट तिथि के सूर्यास्त तक भुगतान नहीं होता है, तो जमींदारी नीलाम होने के लिए उत्तरदायी थी।
(iv) इस्तमरारी बंदोबस्त ने शुरू में जमींदार की शक्ति को रैयत से किराया इकट्ठा करने और अपनी जमींदारी का प्रबंधन करने के लिए सीमित कर दिया।

**23) पाँचवीं रिपोर्ट इंग्लैण्ड में गहन बहस का आधार क्यों बनी?**

**उत्तर:** (i) पांचवीं रिपोर्ट 18वीं शताब्दी के अंत में बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की प्रकृति और परिणामों पर आधारित थी, जिसे 1813 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया।
(ii) 1760 के दशक के मध्य में बंगाल में कंपनी का शासन शुरू होने से ही इंग्लैंड में इसकी गतिविधियों पर नजर रखी गई और बहस हुई।
(iii) ब्रिटेन में कुछ समूह भारत और चीन के साथ व्यापार पर कंपनी के एकाधिकार के विरोध में थे।
(iv) कई राजनीतिक समूह मानते थे कि बंगाल की विजय का लाभ केवल ईस्ट इंडिया कंपनी को हो रहा था, राष्ट्र को नहीं।
(v) कंपनी के कुशासन, भ्रष्टाचार और अधिकारियों के लालच पर ब्रिटेन में बहस हुई और प्रेस में इन घटनाओं का व्यापक प्रचार हुआ।

**24) 18वीं शताब्दी के अंत में 'जोतदारों' की स्थिति का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर**: (i) 18वीं शताब्दी में जमींदारों के संकट के दौरान अमीर किसान, जिन्हें जोतदार कहा जाता था, गांवों में मजबूत हो गए।
(ii) जमींदारों के विपरीत, जोतदार गांवों में रहते थे और वहां की आबादी पर उनका प्रभाव था।
(iii) उनकी भूमि अधियार या बरगादारों से जोती जाती थी।
(iv) उन्होंने जमींदारों का विरोध किया, गाँव का जामा बढ़ाने और राजस्व भुगतान में देरी की।
(v) जमींदारों की नीलाम सम्पदा को खरीदकर जोतदार उत्तर बंगाल में सबसे शक्तिशाली बन गए।

**25) बुकानन कौन थे और उनके वृत्तांत उपनिवेशकालीन भारतीय ग्रामीण जीवन के बारे में क्या बताते हैं?**

**उत्तर:**

फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक और सर्वेक्षक थे जिन्हें ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के कुछ हिस्सों का सर्वेक्षण करने के लिए कमीशन किया था। उनके खातों के प्रमुख बिंदु हैं:

(i) फ्रांसिस बुकानन के अनुसार, पहाड़ियाँ अभेद्य और खतरनाक थीं, जहाँ कम यात्री जाते थे।

(ii) जहां भी वह गए, लोग शत्रुतापूर्ण, अधिकारियों से भयभीत और बातचीत के इच्छुक नहीं थे।

(iii) उन्होंने व्यावसायिक रूप से मूल्यवान खनिज और पत्थर खोजे।

(iv) उन्होंने परिदृश्य के रूपांतरण, उपयुक्त फसलों की खेती, पेड़ों की कटाई और रोपण के सुझाव दिए।

(v) उनकी प्राथमिकताएं कंपनी की व्यावसायिक चिंताओं से प्रभावित थीं और स्थानीय निवासियों से भिन्न थीं।

(vi) वे वनवासियों की जीवनशैली के आलोचक थे और जंगलों को कृषि भूमि में बदलने के पक्षधर थे।

**26) "जैसा कि ब्रिटिश शासन बंगाल से भारत के अन्य हिस्सों में विस्तारित हुआ, स्थायी बंदोबस्त को शायद ही कभी बंगाल से परे किसी भी क्षेत्र में बढ़ाया गया था"। ऐसा क्यों था?**

**उत्तर:**

(i) 1810 के बाद, कृषि की कीमतें बढ़ीं, चूंकि राजस्व मांग को स्थायी बंदोबस्त के तहत तय किया गया था, इसलिए औपनिवेशिक राज्य इस बढ़ी हुई आय के किसी भी हिस्से का दावा नहीं कर सकता था।

(ii) औपनिवेशिक सरकार को अपने भू-राजस्व को अधिकतम करने के तरीकों के बारे में सोचना पड़ा।

(iii) अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो के विचारों के अनुसार, एक जमींदार के पास केवल "औसत किराए" का दावा होना चाहिए जो एक निश्चित समय में प्रचलित था।

(iv) बॉम्बे दक्कन में शुरू की गई राजस्व प्रणाली को रैयतवाड़ी बस्ती के रूप में जाना जाने लगा। राजस्व का निपटारा सीधे रैयत से किया जाता था।

(v) हर 30 साल में भूमि का पुनर्सर्वेक्षण किया गया और राजस्व दरों में वृद्धि हुई। इसलिए राजस्व मांग अब स्थायी नहीं थी।

**27) दक्कन के ग्रामीण इलाकों में विद्रोह के कारणों और प्रभाव का मूल्यांकन करे।**

**उत्तर: कारण:**

(i) रैयत साहूकार को कुटिल और धोखेबाज के रूप में देखने लगे। उन्होंने साहूकारों द्वारा कानूनों में हेरफेर करने और खातों में हेराफेरी करने की शिकायत की।

(ii) 1859 में अंग्रेजों ने एक परिसीमन कानून पारित किया जिसमें कहा गया था कि साहूकारों और रैयतों के बीच हस्ताक्षरित ऋण बंधपत्र की वैधता केवल तीन वर्षों के लिए होगी।

(iii) साहूकारों ने रैयत को बदलने के लिए कई अन्य साधनों का इस्तेमाल किया: उन्होंने ऋण चुकाने पर रसीद देने से इनकार कर दिया, बंधपत्र में काल्पनिक आंकड़े दर्ज किए, कम कीमतों पर किसानों की फसल का अधिग्रहण किया, और अंततः किसानों की संपत्ति पर कब्जा कर लिया।

**प्रभाव:**

(i) बम्बई सरकार दंगों के कारणों की जांच करने के लिए एक जांच आयोग गठित करेगी। आयोग ने एक रिपोर्ट तैयार की जिसे 1878 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया था।

(ii) आयोग ने उन जिलों में पूछताछ की जहां दंगे फैले थे, रैयतों, साहूकारों और प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दर्ज किए, विभिन्न क्षेत्रों में राजस्व दरों, कीमतों और ब्याज दरों पर आंकड़े इकट्ठे किये गये और जिला कलेक्टरों द्वारा भेजी गई रिपोर्टों का संकलन किया

**दीर्घ उत्तरीय (LA) प्रकार के प्रश्न**

**28) बंगाल में स्थायी बंदोबस्त की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए। ब्रिटिश इस राजस्व व्यवस्था से अपनी समस्याओं के समाधान की अपेक्षा क्यों कर रहे थे?**

**उत्तर:**

स्थायी बंदोबस्त की प्रमुख विशेषताएँ:

(i) लॉर्ड चार्ल्स कॉर्नवालिस, जो अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम के समय ब्रिटिश सेनाओं के कमांडर थे, बाद में बंगाल के गवर्नर जनरल बने।

(ii) 1793 में उन्होंने *स्थायी बंदोबस्त* की नीति लागू की।

(iii) इस व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदार को जो राजस्व देना था, वह स्थायी रूप से तय कर दिया गया। यह राज्य से एक प्रकार का अनुबंध था कि ज़मींदार निश्चित राशि अदा करेगा।

(iv) वास्तव में ज़मींदार भूमि का स्वामी नहीं होता था, वह तालुकेदारों से राजस्व वसूल कर कंपनी को देता था।

**स्थायी बंदोबस्त के अच्छे परिणाम:**

(i) इसने राजस्व की दरों को स्थायी रूप से तय कर दिया।
(ii) इससे सरकार को नियमित आय प्राप्त होने लगी।
(iii) इसने व्यापारियों और निवेशकों को कृषि में निवेश कर लाभ कमाने का अवसर दिया।
(iv) इससे *नए कृषक वर्ग* और *समृद्ध ज़मींदार वर्ग* का उदय हुआ।
(v) कृषि में सुधार आया; कृषि में निवेश से व्यापार और राजस्व संसाधनों का विकास हुआ।
(vi) कई गाँव ज़मींदारों के अधीन कर दिए गए, जो उनसे किराया लेकर ईस्ट इंडिया कंपनी को राजस्व देते थे।
(vii) ज़मींदारों में स्थायित्व और सुरक्षा की भावना आई।

**दुष्परिणाम:**

(i) कई बार रैयतों (किसानों) को ज़मींदार को किराया चुकाना मुश्किल हो जाता था।
(ii) राजस्व की राशि में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता था, भले ही फसल खराब हो।
(ii) *सनसेट लॉ* ज़मींदारों को अस्वीकार्य था—इस कानून के तहत अगर वे तय दिन की *सूर्यास्त* तक भुगतान नहीं कर पाते, तो उनकी ज़मीन नीलाम कर दी जाती।
(iv) इससे ज़मींदारों की रैयतों से किराया वसूलने की शक्ति सीमित हो गई।
(v) जब फसल खराब होती थी, तब किराया वसूली एक बड़ी समस्या बन जाती थी।

**निष्कर्ष:**

लॉर्ड कॉर्नवालिस का उद्देश्य किसानों की स्थिति में सुधार लाना था, लेकिन यह नीति असफल रही। इससे कुछ धनी ज़मींदारों को लाभ हुआ, पर अधिकांश किसान कर्ज़ में डूब गए। सरकार को भी राजस्व में घाटा उठाना पड़ा। इस प्रकार, स्थायी बंदोबस्त ने अपेक्षित परिणाम नहीं दिए।

**29) राजमहल की तराई में संथालों का बसना और 19वीं सदी के मध्य में उनका विद्रोह क्यों हुआ?**

**उत्तर:**

संथालों का आगमन:

a) संथाल लगभग 1800 ई. में राजमहल की पहाड़ियों में आकर बसे। उन्होंने इस क्षेत्र में पहले से रहने वाले पहाड़ियों (पहारियों) को विस्थापित कर दिया।
b) उन्होंने जंगलों को साफ किया और भूमि की खेती शुरू की।
c) वे आदर्श बसने वाले साबित हुए, इसलिए उनकी बस्तियाँ तेजी से फैलने लगीं।
d) उन्होंने खेतों में हल चलाया और चावल व कपास की खेती की।
e) उन्होंने निचली पहाड़ियों पर कब्जा कर लिया और पहाड़ियों को राजमहल की गहराई में पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।
f) वे पहाड़ियों के द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कुदाल के मुकाबले हल की ताकत का प्रतीक बन गए।

ब्रिटिशों की भूमिका:

a) ब्रिटिश एक सुव्यवस्थित, सभ्य और स्थायी समाज स्थापित करना चाहते थे।
b) वे पहाड़ियों को पसंद नहीं करते थे क्योंकि वे उन्हें असभ्य, आदिम और अव्यवस्थित मानते थे।
c) वे जंगलों को अराजकता से जोड़ते थे और पहाड़ियों को शासन करना कठिन मानते थे।
d) जब वे पहाड़ियों को कृषक बनाने में असफल रहे, तो उन्होंने संथालों की ओर रुख किया।

संथालों के लिए भूमि:

a) ब्रिटिशों ने संथालों को राजमहल की तराई में भूमि देकर उन्हें प्रोत्साहित किया।
b) उनके बसने की सुविधा के लिए एक बड़े भू-भाग को 'दामिन-इ-कोह' के रूप में चिह्नित किया गया।
c) इसे संथालों की भूमि घोषित किया गया।
d) ब्रिटिश चाहते थे कि सभी संथाल इसी क्षेत्र में बसें।
e) संथाल निरंतर जगह की तलाश में भटकते रहते थे, इसलिए उन्हें यहां बसने का अच्छा अवसर मिला।
f) ब्रिटिशों ने उन्हें 'दामिन-इ-कोह' क्षेत्र देकर एक बड़ा उपकार किया।

संथाल विद्रोह:

संथालों की बस्ती तेजी से फैली। कंपनी को भी अधिक भूमि कर (रेवेन्यू) मिलने लगा। लेकिन धीरे-धीरे संथाल असंतुष्ट होने लगे और उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

संथाल विद्रोह के मुख्य कारण:

a) संथाल कंपनी के कर-प्रणाली से खुश नहीं थे। उन्हें लगता था कि भूमि कर दरें बहुत ऊँची और शोषणकारी थीं।

b) ज़मींदारों ने उन क्षेत्रों पर अधिकार जताना शुरू कर दिया जिन्हें संथालों ने खेती योग्य बनाया था। यह कंपनी की नीति का हिस्सा था, जिससे संथाल नाराज़ हो गए।

c) ग्रामीण क्षेत्रों के महाजन (साहूकार) संथालों की नजर में ब्रिटिश शासन के एजेंट और अत्याचारी थे। यदि कोई संथाल ऋण चुका नहीं पाता, तो महाजन उसकी ज़मीन नीलाम कर सकते थे। यह संथालों को बिल्कुल स्वीकार नहीं था।

ब्रिटिशों की प्रतिक्रिया:

ब्रिटिशों ने बाद में संथालों को शांत करने के लिए कदम उठाए। 'संथाल परगना' नामक एक अलग जिला बनाया गया और उनके संरक्षण के लिए कानून बनाए गए।

**30) रैयतवारी प्रणाली (Ryotwari System) ब्रिटिशों द्वारा 19वीं शताब्दी की शुरुआत में बॉम्बे दक्कन क्षेत्र में लागू की गई थी। यह प्रणाली मुख्यत: थॉमस मुनरो के नेतृत्व में शुरू की गई और बंगाल में प्रचलित जमींदारी प्रणाली से अलग थी।**

**उत्तर:**

रैयतवारी प्रणाली के मुख्य पक्ष:

किसानों से प्रत्यक्ष लगान वसूली:

इस प्रणाली में सरकार ने प्रत्यक्ष रूप से किसानों (रैयतों) से भूमि कर वसूल किया, न कि जमींदारों या बिचौलियों के माध्यम से।

भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व:

रैयतों को भूमि का स्वामी माना गया और वे ही लगान चुकाने के लिए उत्तरदायी थे।

स्थायी लगान निर्धारण:

भूमि की उपज क्षमता और फसलों के प्रकार के आधार पर लगान का निर्धारण किया गया, और इसे 20 से 30 वर्षों के लिए तय किया गया।

भारी कर बोझ:

रैयतों को अक्सर उच्च दर पर नकद में कर चुकाना पड़ता था, जिससे उन्हें फसल खराब होने या कीमतें गिरने पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

कर्ज में फँसना:

नकद लगान भुगतान के कारण, कई रैयतों को साहूकारों से ऋण लेना पड़ता था, जिससे वे कर्ज के जाल में फँसते और अपनी भूमि भी खो बैठते।

सामाजिक प्रभाव:

इस प्रणाली से किसानों में असंतोष, ग्रामीण गरीबी में वृद्धि, और किसानों तथा साहूकारों के बीच संघर्ष पैदा हुआ।

**खण्ड घ में प्रश्न संख्या 31 से 33 स्रोतआधारित प्रश्न हैं-, जिनमें प्रत्येक में चार अंकों के तीन उपप्रश्न होते हैं।-**

**31) दिए गए स्रोत को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:**

**पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत**

जमींदारों की हालत और जमीनों की नीलामी के बारे में पाँचवी रिपोर्ट में कहा गया है:

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफ़ी हद तक जमीनें समय-समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं। स्थानीय वर्ष 1203. तदनुसार सन् 1796-97 में बिक्री के लिए विज्ञापित जमीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70.061 सिक्का रु. थी और वह वास्तव में 1790.416 रु. में बेची गई और 14,18,756 रु. की राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई। स्थानीय संवत 1204, तद्नुसार सन् 1797-98 में 2666,191 सिक्का र. के लिए जमीन विज्ञापित की गई, 22.74,076 सिक्का रु की जमीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रु. थी। बाकीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे। ये थे नदिया, राजशाही, विशनपुर (सभी बंगाल के जिले) आदि के राजा...। साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत बिगड़ गई। उन्हें ग़रीबी और बरबादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफ़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

**31.1) इसे "पाँचवीं रिपोर्ट" कहने का कारण स्पष्ट कीजिए। (1 अंक)**

**उत्तर:** ब्रिटिश संसद ने अठारहवीं शताब्दी के अंत में भारत में कंपनी के शासन को नियंत्रित और नियमित करने के लिए कई अधिनियम पारित किए। इन अधिनियमों के तहत कंपनी को भारत के शासन पर नियमित रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए बाध्य किया गया और कंपनी के मामलों की जांच के लिए समितियाँ नियुक्त की गईं। **"फिफ्थ रिपोर्ट" (पाँचवीं रिपोर्ट)** ऐसी ही एक रिपोर्ट थी जिसे एक चयन समिति (सेलेक्ट कमेटी) द्वारा तैयार किया गया था।

**31.2) इंग्लैंड में ईस्ट इंडिया कंपनी की गतिविधियों पर गहन बहस क्यों होती थी? (1 अंक)**

**उत्तर:** ब्रिटेन के कई राजनीतिक समूहों का तर्क था कि बंगाल पर विजय से केवल ईस्ट इंडिया कंपनी को लाभ हो रहा है, जबकि पूरे ब्रिटिश राष्ट्र को इसका कोई विशेष लाभ नहीं मिल रहा।

**31.3) रिपोर्ट की कोई दो सीमाओं का विश्लेषण कीजिए। (2 अंक)**

**उत्तर:** रिपोर्ट की दो सीमाएँ थीं:

a) यह रिपोर्ट उन राजनीतिक समूहों द्वारा लिखी गई थी जो ईस्ट इंडिया कंपनी की आलोचना करते थे। हालिया शोध से पता चला है कि फिफ्थ रिपोर्ट में दिए गए तर्कों और प्रमाणों को बिना आलोचनात्मक विश्लेषण के स्वीकार नहीं किया जा सकता।

b) फिफ्थ रिपोर्ट ने पारंपरिक जमींदारी शक्ति के पतन को बढ़ाचढ़ाकर प्-रस्तुत किया और यह भी अतिरंजित किया कि जमींदार बड़े पैमाने पर अपनी ज़मीनें खो रहे थे।

**32) दिए गए स्रोत को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:**

**दिनाजपुर के जोतदार**

बुकानन ने बताया है कि उत्तरी बंगाल के दिनाजपुर जिले के जोतदार किस प्रकार जमींदार के अनुशासन का प्रतिरोध और उसकी शक्ति की अवहेलना किया करते थे :

भूस्वामी इस वर्ग के लोगों को पसंद नहीं करते थे, लेकिन यह स्पष्ट है कि इन लोगों का होना बहुत जरूरी था क्योंकि इनके बिना, जरूरतमंद काश्तकारों को पैसा उधार कौन देता....

जोतदार, जो बड़ी-बड़ी जमीनें जोतते हैं, बहुत ही हठीले और जिद्दी हैं और यह जानते हैं कि जमींदारों का उन पर कोई वश नहीं चलता। वे तो अपने राजस्व के रूप में कुछ थोड़े से रुपये ही दे देते हैं और लगभग हर किस्त में कुछ-न-कुछ बक़ाया रक़म रह जाती है। उनके पास उनके पट्टे की हकदारी से ज्यादा जमीनें हैं। जमींदार की रक़म के कारण, अगर अधिकारी उन्हें कचहरी में बुलाते थे और उन्हें डराने-धमकाने के लिए घंटे-दो घंटे कचहरी में रोक लेते हैं तो वे तुरंत उनकी शिकायत करने के लिए फ़ौजदारी थाना (पुलिस थाना) या मुन्सिफ़ की कचहरी में पहुँच जाते हैं और कहते हैं कि जमींदार के कारिंदों ने उनका अपमान किया है। इस प्रकार राजस्व की बक़ाया रक़मों के मामलें बढ़ते जाते हैं और जोतदार छोटे-छोटे रैयत को राजस्व न देने के लिए भड़काते रहते हैं...

**32.1) दिनाजपुर के ज़मींदारों का जोतेदारों ने विरोध क्यों किया? (1 अंक)**

**उत्तर:** जोतदार उत्तरी बंगाल के संपन्न देते (उधार) किसान थे। वे ज़रूरतमंद किसानों को ऋण (धनी)थे। वे विशाल भूमि क्षेत्रों पर नियंत्रण रखते थे। कभीकभी उनके पास कई हज़ार एकड़ ज़मीन का भी नियंत्रण होता था।-

**32.2) जोतेदारों ने रैयतों को कैसे उकसाया? (1 अंक)**

**उत्तर:** उन्होंने गांव का जमाबढ़ाने के ज़मींदारों के सभी प्रयासों का विरोध किया। उन्होंने ज़मींदारी अधिकारियों को अपने कर्तव्यों का पालन करने से रोका और जानबूझकर ज़मींदारों को लगान का भुगतान देर से किया।

**32.3) जोतेदारों ने गांव में सत्ता कैसे प्राप्त की? (2 अंक)**

**उत्तर:** a) क्योंकि वे गांव में ही रहते थे, इसलिए उनका गरीब ग्रामीणों के बड़े वर्ग पर सीधा नियंत्रण था।

b) वे स्थानीय व्यापार को नियंत्रित करते थे और ज़रूरतमंदों को ऋण भी देते थे।

## अध्याय 10
## विद्रोही और राज

**अध्ययन उद्देश्य:**

- 1857 की घटनाओं का परीक्षण।
- 1857 के विद्रोहियों की योजना और समन्वय को इसके क्षेत्र और स्वरूप के साथ संबद्ध।
- विद्रोह की गति को समझने के लिए इसके प्रसार का अध्ययन।

- यह विश्लेषण  कि किस प्रकार विद्रोह ने भारतीयों के बीच एकता की भावना उत्पन्न की।
- दृश्यात्मक छवियों की व्याख्या ताकि यह समझा जा सके कि राष्ट्रवादियों और ब्रिटिशों द्वारा किस प्रकार की भावनाएं दर्शाई गईं ।

## अध्याय का सारांश

मेरठ में विद्रोह

● 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में मौजूद सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। भारतीय सैनिकों से बनी पैदल सेना ने इस विद्रोह की शुरुआत की और जल्दी ही घुड़सवार सेना भी इसमें शामिल हो गई।

● सैनिकों ने सबसे पहले बेल ऑफ आर्म्स (जहाँ हथियार और गोला-बारूद रखे जाते थे) पर कब्जा किया ताकि वे विद्रोह के लिए आवश्यक हथियार इकट्ठा कर सकें।

● सभी सरकारी इमारतों जैसे रिकॉर्ड कार्यालय, डाकघर, सरकारी खजाना, न्यायालय आदि को लूटकर अंततः नष्ट कर दिया गया।

दिल्ली में विद्रोह

● वे इस विद्रोह को पूरे देश में फैलाना चाहते थे, इसलिए सैनिकों का एक दल 10 मई की रात को मेरठ से रवाना हुआ ताकि वे इस विद्रोह को आगे बढ़ा सकें और देशभर में फैला सकें। वे दिल्ली जाकर सम्राट बहादुर शाह ज़फर से जुड़ना चाहते थे।

● यह दल अगले दिन सुबह 11 मई को दिल्ली के लाल किले पहुंचा और बहादुर शाह ज़फर से बातचीत करने की अनुमति मांगी।

विद्रोह के कारण (CAUSES OF THE REVOLT)

तात्कालिक कारण:

● **नई एनफील्ड राइफल और कारतूस** का परिचय। 1857 में ब्रिटिश भारतीय सेना में 36,000 अंग्रेज और 2,57,000 भारतीय सैनिक थे।

● 1857 में यह अफ़वाह फैली कि नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगी होती है, जो हिंदू और मुस्लिम दोनों के लिए आपत्तिजनक थी।

राजनीतिक कारण:

**सहायक संधि प्रणाली (Subsidiary Alliance System)** – दत्तक अवैधता /**विलय का सिद्धांत (Doctrine of Lapse)**

● झांसी – **गंगाधर राव** की मृत्यु प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना हुई – उन्होंने एक पुत्र को गोद लिया – जिसे ब्रिटिशों ने मान्यता नहीं दी – **रानी लक्ष्मीबाई** ब्रिटिशों की विरोधी बन गईं।

**सामाजिक और धार्मिक कारण**

● नस्लीय अहंकार, सामाजिक सुधार कानून।

● सती प्रथा का उन्मूलन – 1829।

● विधवा पुनर्विवाह अधिनियम – 1856 ।

● ईसाई धर्म में धार्मिक परिवर्तन।

सैन्य कारण

● सिपाहियों में असंतोष, उच्च पद नहीं – कोई पदोन्नति नहीं।

● धार्मिक प्रतीकों का प्रतिबंध – ड्रेस कोड।

विद्रोह का स्वरूप

विद्रोह की शुरुआत कैसे हुई?

● सिपाही अपनी कार्रवाई की शुरुआत एक संकेत से करते थे – शाम की तोप दागने या बिगुल बजाने से।

● उन्होंने बेल ऑफ आर्म्स पर कब्जा किया और खजाना लूट लिया।

● उन्होंने जेल, खजाना, टेलीफोन कार्यालय, रिकॉर्ड कक्ष, बंगले आदि सरकारी भवनों पर हमला किया – और सभी रिकॉर्ड

जला दिए।

● जो भी व्यक्ति या वस्तु गोरे लोगों से जुड़ी थी, वह विद्रोहियों का निशाना बन गई।

● कानपुर, लखनऊ और बरेली जैसे प्रमुख शहरों में साहूकारों और अमीर लोगों को विद्रोहियों ने निशाना बनाया।

संचार :-

● यह स्पष्ट है कि विभिन्न छावनियों में सिपाहियों के बीच संपर्क था।

● अवध मिलिट्री पुलिस के कैप्टन हर्सी को विद्रोह के समय उनके भारतीय अधीनस्थों ने सुरक्षा दी।

● उसी स्थान पर तैनात 41वीं नेटिव इन्फैंट्री ने कहा कि चूंकि उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला है, इसलिए मिलिट्री पुलिस को भी हर्सी को मार देना चाहिए या कैदी बनाकर सौंप देना चाहिए।

● लेकिन मिलिट्री पुलिस ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। यह मामला प्रत्येक रेजीमेंट के देशी अधिकारियों द्वारा गठित पंचायत द्वारा तय किया जाना था।

● चार्ल्स बॉल ने विद्रोह के इतिहास में से एक प्रारंभिक विवरण लिखा।

नेता और अनुयायी

● अंग्रेजों से लड़ने के लिए नेतृत्व और संगठन की आवश्यकता थी, इसके लिए विद्रोहियों के लिए **मुग़ल सम्राट बहादुर शाह ज़फर** ने नाममात्र का नेता बनना स्वीकार किया।

● **कानपुर** में सिपाहियों और नगरवासियों ने **नाना साहब** का समर्थन किया।

● **झाँसी की रानी** को विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए बाध्य किया गया।

● **बिहार के आरा** में स्थानीय ज़मींदार **कुंवर सिंह** ने भी नेतृत्व संभाला।

● स्थानीय नेताओं ने किसानों, ज़मींदारों और जनजातियों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया – जैसे:

– शाह मल ने उत्तर प्रदेश के परगना बड़ौत के ग्रामीणों को संगठित किया।

– गोनू, छोटानागपुर के सिंहभूम का एक जनजातीय किसान, कोल जनजातियों का नेता बन गया।

अफवाहें और भविष्यवाणियाँ

● यह अफवाह फैली कि ब्रिटिश सरकार हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने की एक बड़ी साजिश रच रही है।

● यह कहा गया कि बाजार में बिकने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डियों की चूरा मिलाया गया है।

● सिपाहियों और आम जनता ने ऐसा आटा छूने से इनकार कर दिया।

● लोगों में यह डर और संदेह था कि अंग्रेज उन्हें ईसाई बनाना चाहते हैं।

● सिपाहियों को डर था कि गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों को दाँत से काटने से उनकी जाति और धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।

**अवध में विद्रोह**

**"एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में गिर जाएगी"**

● 1851 में गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौज़ी ने अवध को "एक चेरी" कहा जो एक दिन अपने आप ब्रिटिश साम्राज्य में समा जाएगी।

● पाँच वर्षों बाद इसे ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

● अवध पर सहायक संधि (Subsidiary Alliance) थोप दी गई।

● इसके अंतर्गत नवाब को अंग्रेजी सैन्य बल को हटाना पड़ा, और ब्रिटिश सलाह पर शासन करना पड़ा।

● नवाब अपनी सेना से वंचित हो गया और उसे कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए ब्रिटिशों पर निर्भर रहना पड़ा।

**"देह से जान जा चुकी थी"**

● नवाब वाजिद अली शाह को गलत शासन के नाम पर पदच्युत कर कोलकाता निर्वासित कर दिया गया।

● ब्रिटिशों को यह भ्रम था कि नवाब अलोकप्रिय हैं, परंतु वे अत्यंत प्रिय थे।

- जब वे लखनऊ से गए तो कई लोग उन्हें गाते-बजाते हुए कानपुर तक छोड़ने आए।
- एक समकालीन पर्यवेक्षक ने लिखा: "शहर के शरीर से जान चली गई, यह अब जीवित नहीं रहा।"

फिरंगी राज और एक युग का अंत

- "फिरंगी" शब्द फ़ारसी भाषा से लिया गया है।
- वाजिद अली शाह को हटाने के बाद दरबार के संगीतकारों, कलाकारों, रसोइयों और कामगारों की स्थिति बिगड़ गई।
- तालुकदारों की हालत ब्रिटिश शासन में अत्यंत दयनीय हो गई।
- तालुकदार वे होते थे जो मुगल शासन में किसानों से कर वसूलते थे।
- अवध पर कब्जे के बाद ब्रिटिशों ने इन्हें हटा दिया, उनके किले नष्ट कर दिए और उनकी सेना को समाप्त कर दिया।
- ब्रिटिशों को लगा कि किसानों से सीधे कर लेकर शोषण को कम किया जा सकेगा।

**विद्रोहियों की माँगें: एकता की दृष्टि**

- विद्रोह को एक ऐसे युद्ध के रूप में देखा गया जिसमें हिंदू और मुसलमान दोनों का भविष्य जुड़ा हुआ था।
- इश्तेहारों में ब्रिटिश शासन से पहले की हिन्दू-मुस्लिम एकता और मुग़ल शासन की तारीफ की गई।
- 1857 में अंग्रेजों ने हिंदुओं को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काने के लिए ₹50,000 खर्च किए, लेकिन वे असफल रहे।

**दमन (REPRESSION)**

- उत्तर भारत को दोबारा जीतने के लिए सेना भेजने से पहले अंग्रेजों ने कई कानून बनाए।
- मई और जून 1857 में पारित अधिनियमों द्वारा समस्त उत्तर भारत को मार्शल लॉ के अंतर्गत रखा गया।
- सैन्य अधिकारियों और सामान्य अंग्रेजों को विद्रोहियों को दंडित करने का अधिकार दिया गया।
- न्याय की सामान्य प्रक्रिया को निलंबित कर दिया गया और केवल एक ही दंड रखा गया – मृत्यु।
- दो दिशाओं से ब्रिटिश सेना ने हमला किया – एक कलकत्ता से और एक पंजाब से।
- विद्रोहियों को फांसी दी गई।

विद्रोह की छवियाँ (IMAGES OF THE REVOLT)

- प्रशासनिक और सैन्य अधिकारियों ने पत्रों, डायरियों, आत्मकथाओं और इतिहासों में अपनी कहानियाँ दर्ज कीं।
- ब्रिटिश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में सिपाहियों की हिंसा को प्रमुखता दी गई।
- ब्रिटिश चित्रों में विभिन्न भावनाओं को उकसाने के लिए छवियाँ बनाई गईं।
- "**रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ**" – थॉमस जोन्स बार्कर द्वारा 1859 में चित्रित।

आतंक का प्रदर्शन

- बदला लेने की भावना से विद्रोहियों को बंदूक से उड़ाया गया या फांसी दी गई।
- इन क्रूरताओं की छवियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित की गईं।
- जब गवर्नर जनरल कैनिंग ने दया और क्षमा की बात की, तो उन्हें ब्रिटिश प्रेस ने मजाक उड़ाया।

राष्ट्रवादी चित्रण (NATIONALIST IMAGERIES)

- राष्ट्रवादी आंदोलन को 1857 की घटनाओं से प्रेरणा मिली।
- कला और साहित्य ने 1857 की यादों को जीवित रखा।
- रानी लक्ष्मीबाई के साहस की वीरगाथाएँ लिखी गईं।
- रानी को एक वीरांगना के रूप में चित्रित किया गया जो दुश्मनों को मारती हुई अंत तक लड़ती रही।
- ब्रिटिश और भारतीयों दोनों द्वारा चित्र, रेखाचित्र, कार्टून और बाज़ार प्रिंट बनाए गए।

माईंड मैप

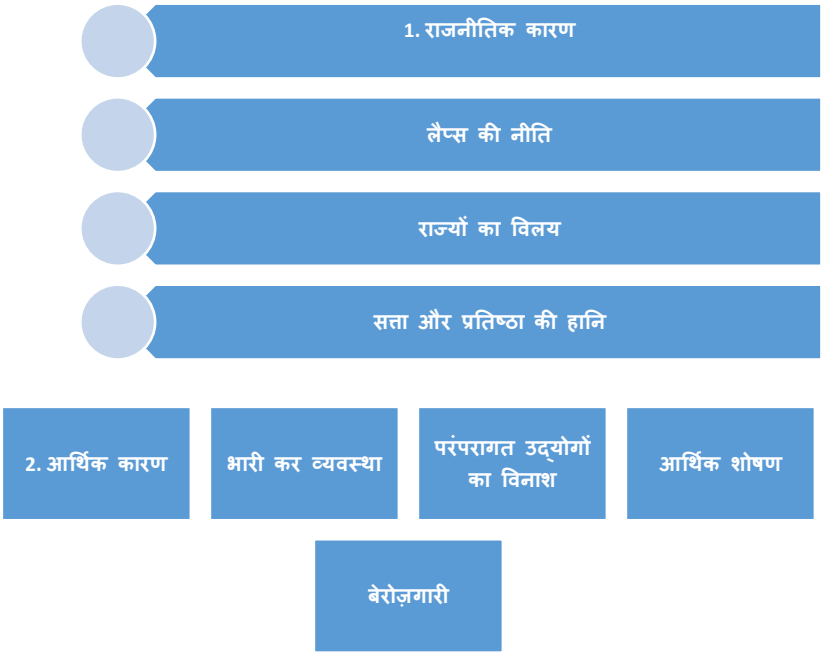


**बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)**

**प्रश्न संख्या 1-5: तथ्य और जानकारी पर आधारित**

1.निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण था?

A. हड़प नीति

B. एनफील्ड राइफल की कारतूस जिनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी होने की अफ़वाह थी

C. ज़मींदारी प्रणाली की शुरुआत

D. लॉर्ड कर्ज़न द्वारा बंगाल का विभाजन

2.दिल्ली में विद्रोह के दौरान विद्रोहियों द्वारा किसे प्रतीकात्मक नेता (हिंदुस्तान का सम्राट) घोषित किया गया था?

A. नाना साहिब B. बहादुर शाह द्वितीय (ज़फ़र) C. तात्या टोपे D. रानी लक्ष्मीबाई

3.वह शहर जहाँ नाना साहब ने विद्रोह का प्रतिनिधित्व किया :

A. लखनऊ B. कानपुर C. झांसी D. बरेली

4.भारतीय समाज का कौन-सा वर्ग आमतौर पर विद्रोह से दूर रहा या ब्रिटिशों की मदद की, क्योंकि उन्हें हाल में मिली विशेषाधिकारों को खोने का डर था?

A. बंगाल सेना के सिपाही

B. अवध के तालुकदार

C. स्थायी बंदोबस्त द्वारा बने व्यावसायिक वर्ग और ज़मींदार

D. बुंदेलखंड के ग्रामीण किसान

5.1857 के बाद राष्ट्रवादी चित्रों में रानी लक्ष्मीबाई की छवि को अक्सर किस रूप में दर्शाया गया?

A. भारतीय शासकों के प्रति ब्रिटिश दया को उजागर करने हेतु

B. भारतीय रानियों को निष्क्रिय पीड़िता के रूप में दिखाने हेतु

C. विद्रोह में लक्ष्मीबाई की छवि को मर्दाना योध्दा के रूप में

D. ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में लैंगिक समानता दर्शाने हेतु

**कथन और कारण आधारित प्रश्न (प्रश्न संख्या 6-10)**

सही विकल्प चुनें:

A. दोनों सही हैं, और कारण, कथन का सही स्पष्टीकरण है।

B. दोनों सही हैं, परन्तु कारण, कथन का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

C. कथन सही है, पर कारण गलत है।

D. कथन गलत है, पर कारण सही है।

6.कथन: 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने में असफल रहा।

कारण: विद्रोह में समन्वित नेतृत्व की कमी थी और यह स्थानीय स्तर तक सीमित था।

7.कथन: विद्रोहियों ने बहादुर शाह ज़फ़र को भारत का सम्राट घोषित किया।

कारण: वह लंबे समय से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की गुप्त सैन्य तैयारी कर रहे थे।

8.कथन: ब्रिटिश इतिहासकारों ने 1857 के विद्रोह को केवल सिपाही विद्रोह बताया।

कारण: वे भारतीय भागीदारी और राष्ट्रवाद को कम करके दिखाना चाहते थे।

9.कथन: 1857 में दिल्ली को दोबारा जीतने के बाद ब्रिटिशों ने भीषण प्रतिशोध किया।

कारण: दिल्ली ब्रिटिश भारत की प्रशासनिक राजधानी थी और सबसे बड़ा खतरा बन गई थी।

10.कथन: 1857 के बाद के चित्रों में ब्रिटिश महिलाओं और बच्चों को निर्दोष पीड़ितों के रूप में दिखाया गया।

कारण: इन चित्रों ने विद्रोह को कुचलने हेतु ब्रिटिश दमनात्मक कार्रवाई को उचित ठहराने में मदद की

11.नेताओं को विद्रोह के स्थानों से मिलाएं

| कॉलम ए ( नेता) | | कॉलम बी (स्थान) | |
|---|---|---|---|
| A | रानी लक्ष्मीबाई | I | कानपुर |
| B | नाना साहब | ii | लखनऊ |
| C | कुंवर सिंह | iii | झांसी |
| D | बिरजिस कद्र | iv | आरा |

विकल्प

A A–iii, B–i, C–iv, D–ii

B A–i, B–iii, C–ii, D–iv

C A–iv, B–ii, C–i, D–iii

D A–ii, B–iv, C–iii, D–i

12.ब्रिटिश अधिकारियों को 1857 के दौरान उनकी भूमिकाओं से मिलाएं:

| कॉलम ए (अधिकारी) | | कॉलम बी (भूमिकाएं) | |
|---|---|---|---|
| A | लॉर्ड कैनिंग | I | 1857 के दौरान नया मुख्य कमांडर |
| B | कॉलिन कैम्पबेल | ii | विद्रोह के दौरान गवर्नर-जनरल |
| C | विलियम हडसन | iii | दिल्ली की पुनः कब्ज़ा |
| D | हेनरी लॉरेंस | iv | लखनऊ का कमिश्नर |

विकल्प

A A–ii, B–i, C–iii, D–iv

B A–i, B–ii, C–iv, D–iii

C A–iii, B–iv, C–i, D–ii

D A–ii, B–iii, C–i, D–iv

13. स्थानों को विद्रोह में उनके महत्व से मिलाएं

| कॉलम ए (स्थान) | | कॉलम बी (महत्व) |
|---|---|---|
| A | मेरठ | I सैनिकों की फांसी ने विद्रोह को भड़काया |
| B | कानपुर | ii नाना साहब का गढ़ |
| C | लखनऊ | iii घेराबंदी और ब्रिटिश पुनर्प्राप्ति |
| D | झाँसी | iv रानी लक्ष्मीबाई द्वारा नेतृत्व किया गया |

विकल्प:

A A–i, B–ii, C–iii, D–iv

B A–ii, B–i, C–iv, D–iii

C A–iv, B–iii, C–i, D–ii

D A–iii, B–iv, C–ii, D–i

14. स्रोतों को उनके प्रतिनिधित्व के साथ मिलाएं:

| | स्तंभ A (स्रोत) | | स्तंभ B (प्रतिनिधित्व) |
|---|---|---|---|
| A | "लखनऊ का राहत" जैसे चित्र | I | ब्रिटिश वीरता का महिमामंडन |
| B | सिपाही की गवाही | ii | पहले व्यक्ति के विद्रोही दृष्टिकोण |
| C | ब्रिटिश अधिकारियों के पत्र | iii | उपनिवेशी सैन्य दृष्टिकोण |
| D | भारतीय राष्ट्रवादी लेख | iv | विरोधी उपनिवेशी व्याख्या |

विकल्प:

A A–i, B–ii, C–iii, D–iv

B A–iv, B–iii, C–ii, D–i

C A–iii, B–iv, C–i, D–ii

D A–ii, B–i, C–iv, D–iii

15. नेताओं को उनके भूमिकाओं के साथ मिलाएं

| | स्तंभ A (नेता) | | स्तंभ B (भूमिका/क्रिया) |
|---|---|---|---|
| A | तात्या टोपे | I | नाना साहिब की सेना के जनरल |
| B | मंगल पांडे | ii | बैरकपुर में विद्रोह चलाया |
| C | रानी लक्ष्मीबाई | iii | झाँसी की रक्षा के लिए बहादुरी से लड़ीं |
| D | बहादुर शाह ज़फर | iv | विद्रोह का प्रतीकात्मक नेता |

विकल्प

A A–i, B–ii, C–iii, D–iv

B A–ii, B–i, C–iv, D–iii

C A–iv, B–iii, C–ii, D–i

D A–iii, B–iv, C–i, D–ii

**कथन आधारित प्रश्न (प्रश्न संख्या 16-20 )**

सही विकल्प चुनें

A दोनों कथन सत्य हैं

B दोनों कथन असत्य हैं

C कथन I सत्य है; कथन II असत्य है

D कथन I असत्य है; कथन II सत्य है

**16.कथन I**: 1857 का विद्रोह केवल बंगाल सेना तक सीमित था और इसमें नागरिक समर्थन नहीं मिला।

**कथन II**: किसानों, कारीगरों और ज़मींदारों सहित समाज के कई वर्गों ने इस विद्रोह में सक्रिय भागीदारी की।

**17.कथन I**: ब्रिटिश सरकार ने 1857 के विद्रोह को दबाने के लिए क्रूर बल का प्रयोग किया।

**कथन II**: 1857 के बाद ब्रिटिश क्राउन ने ईस्ट इंडिया कंपनी से भारतीय प्रशासन का सीधा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया।

**18.कथन I**: हड़प नीति भारतीय शासकों के बीच असंतोष का एक प्रमुख कारण थी।

**कथन II**: हड़प नीति के अनुसार, भारतीय शासकों के दत्तक पुत्रों को सिंहासन का उत्तराधिकारी बनने की अनुमति थी।

**19.कथन I**: बहादुर शाह ज़फ़र ने विद्रोह की योजना बनाने और उसे अंजाम देने में सक्रिय सैन्य भूमिका निभाई।

**कथन II**: विद्रोहियों ने बहादुर शाह ज़फ़र को प्रतीकात्मक नेता और सम्राट घोषित किया ।

20.**कथन I**: 1857 की घटनाओं को ब्रिटिश और भारतीय स्रोतों ने अलग-अलग रूपों में चित्रित किया।

**कथन II**: ब्रिटिश स्रोतों ने विद्रोह को बर्बर और विश्वासघाती बताया, जबकि भारतीय स्रोतों ने इसे स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रस्तुत किया।

21.नीचे दिए गए प्रसिद्ध चित्र की पहचान करें और उसका नाम लिखें।

A मुग़ल साम्राज्य का विस्तार
B दिल्ली की वापसी भारतीय शासकों को
C बहादुर शाह का चित्र
D भारतीय विद्रोहियों द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों का मुक़दमा

**बहुविकल्पीय प्रश्न के उत्तर**

**उत्तर 1** B – एनफ़ील्ड राइफ़ल कारतूस जिनके बारे में अफ़वाह थी कि उन्हें गाय और सूअर की चर्बी से चिकना किया गया है।

**उत्तर 2** B – बहादुर शाह द्वितीय (ज़फ़र)

**उत्तर 3** B – कानपुर (कॉनपुर)

**उत्तर 4** C – स्थायी बंदोबस्त द्वारा बनाए गए व्यावसायिक व्यापारी और ज़मींदार

**उत्तर 5** C – विद्रोह में लक्ष्मीबाई की छवि को मर्दाना योध्दा के रूप में

**उत्तर 6** A – कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, आरोप की सही व्याख्या है।

**उत्तर 7** C – कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

**उत्तर 8** A – कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, आरोप की सही व्याख्या है।

**उत्तर 9** C – कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

**उत्तर 10** A – कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, आरोप की सही व्याख्या है।

**उत्तर 11** A – A–iii, B–i, C–iv, D–ii

**उत्तर 12** A – A–ii, B–i, C–iii, D–iv

**उत्तर 13** A – A–i, B–ii, C–iii, D–iv

**उत्तर 14** A – A–i, B–ii, C–iii, D–iv

**उत्तर 15** A – A–iii, B–iv, C–i, D–ii

**उत्तर 16** D – वाक्य I ग़लत है; वाक्य II सही है।

**उत्तर 17** A – दोनों वाक्य सही हैं।

**उत्तर 18** C – वाक्य I सही है; वाक्य II ग़लत है।

**उत्तर 19** D – वाक्य I ग़लत है; वाक्य II सही है।

**उत्तर 20** A – दोनों वाक्य सही हैं।

**उत्तर 21** C – बहादुर शाह का चित्र

**लघु उत्तर प्रश्न SHORT QUESTION ANSWERS – 3 Marks (तीन अंक वाले)**

**Q1** 1857 से पहले भारतीय सिपाहियों के बीच असंतोष के तीन कारण समझाइए।

उत्तर:

1. ब्रिटिश सैनिकों की तुलना में कम वेतन और खराब व्यवहार।
2. पदोन्नति के अवसरों की कमी और नस्लीय भेदभाव।
3. चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग, जिसने हिंदू और मुस्लिम सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं को आहत किया।

Q2 लैप्स/विलय की नीति क्या थी ? इसने भारतीय शासकों में असंतोष कैसे पैदा किया?

उत्तर:

1. लैप्स / विलय की नीति के अंतर्गत, जिन राज्यों के शासक का कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं होता था, उन्हें अंग्रेजों द्वारा अपने साम्राज्य में मिला लिया जाता था।
2. शासकों को दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने की अनुमति नहीं थी।

3. इससे झाँसी और सतारा जैसे राज्यों के शासक अपने राज्य से वंचित हो गए, जिससे परंपराओं और संप्रभुता का अपमान महसूस हुआ।

**Q3** 1857 के विद्रोह में बहादुर शाह जफ़र की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर:

1. दिल्ली में सिपाहियों द्वारा बहादुर शाह जफ़र को विद्रोह का प्रतीकात्मक नेता घोषित किया गया।
2. वे बूढ़े और अनिच्छुक थे, फिर भी उनका नाम विद्रोह को वैधता प्रदान करता था।
3. दिल्ली पर अंग्रेजों के पुनः अधिकार के बाद उन्हें गिरफ्तार कर रंगून भेज दिया गया, जिससे मुग़ल साम्राज्य का औपचारिक अंत हो गया।

**Q4** ब्रिटिशों ने 1857 के विद्रोह को "बगावत" क्यों कहा?

उत्तर:

1. अंग्रेजों ने इसे "सिपाही विद्रोह" कहा ताकि इसकी गंभीरता को कम करके दिखाया जा सके।
2. उन्होंने इसे केवल सैन्य विद्रोह बताकर एक सीमित घटना के रूप में प्रस्तुत किया।
3. इससे उन्हें यह दर्शाने में मदद मिली कि उनका शासन स्थिर है और इस विद्रोह को जन समर्थन प्राप्त नहीं है।

**Q5** 1857 के विद्रोह का ब्रिटिश नीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर:

1. ईस्ट इंडिया कंपनी को समाप्त कर शासन ब्रिटिश क्राउन को सौंप दिया गया।
2. सेना का पुनर्गठन किया गया ताकि भविष्य में ऐसे विद्रोह न हों।
3. धार्मिक और सांस्कृतिक मामलों में हस्तक्षेप से बचने की नीति अपनाई गई।

**Q6** 1857 के विद्रोह में महिलाओं की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर:

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता से लड़ाई लड़ी और युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई।
2. अवध की बेगम हज़रत महल ने अपने पति के निष्कासन के बाद विद्रोह का नेतृत्व किया।
3. अन्य महिलाओं ने विद्रोहियों को शरण दी, सूचनाएँ इकट्ठा कीं, और विरोध किया।
4. ब्रिटिश कथाओं में महिलाओं को पीड़ित बताया गया, जबकि भारतीय स्रोतों ने उनकी शक्ति को उजागर किया।
5. उनकी भागीदारी ने लिंग भेद की सीमाओं को चुनौती दी और भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित किया।

## दीर्घ उत्तर प्रश्न

**प्रश्न 1 1857 के विद्रोह के दृश्य चित्रणों का परीक्षण कीजिए, जिन्होंने विभिन्न प्रकार की भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कीं।**

**उत्तर** 1857 के विद्रोह को चित्रित करने के लिए कई प्रकार के दृश्य माध्यमों का उपयोग किया गया जैसे चित्र, पेंसिल ड्रॉइंग, नक्काशी, पोस्टर, कार्टून, बाज़ार चित्र आदि। ये चित्र ब्रिटिश और भारतीय कलाकारों द्वारा बनाए गए थे।

1. **ब्रिटिश चित्रों** में ऐसे चित्र शामिल थे जो भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करते थे। जैसे कि थॉमस जोन्स बार्कर द्वारा 1859 में बनाया गया 'रिलीफ ऑफ लखनऊ' चित्र जेम्स आउट्रम, हैनरी हैवलॉक और कॉलिन कैम्पबेल द्वारा ब्रिटिश गैरीसन को बचाने के प्रयासों को दर्शाता है।
2. **अखबारों की रिपोर्टों** ने लोगों की कल्पना पर गहरा असर डाला। इसमें महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा की घटनाएँ छपीं, जिससे ब्रिटेन में बदला लेने की मांग तेज़ हो गई।
3. **"इन मेमोरियम"** नामक चित्र जोसेफ नोएल पैटन द्वारा बनाया गया था, जिसमें अंग्रेज महिलाएँ और बच्चे एक घेरे में बैठे प्रतीत होते हैं और विद्रोहियों से भयभीत दिखाए गए हैं।
4. **कुछ चित्रों में महिलाएँ नायिका के रूप में** दिखाई गई हैं, जैसे मिस व्हीलर अकेले विद्रोहियों से लड़ रही हैं और बाइबिल ज़मीन पर पड़ी है, जो ईसाई धर्म की रक्षा का प्रतीक है।
5. **ब्रिटेन में आक्रोश की लहर** फैलने पर न्याय की देवी की एक छवि उभरी जिसमें तलवार और ढाल लिए हुए महिला आकृति विद्रोही सिपाहियों को रौंद रही है।
6. **ब्रिटिश प्रेस में लॉर्ड कैनिंग का मज़ाक उड़ाया गया**, जहाँ उन्हें एक पिता के रूप में दिखाया गया जो खूनी तलवार और खंजर लिए सिपाही को सर पर हाथ रखकर बचा रहा है।

7. **भारतीय चित्रों में** रानी लक्ष्मीबाई को घोड़े पर सवार, हाथ में तलवार लिए शत्रुओं से लड़ती हुई दिखाया गया है जो अन्याय और विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है।

**प्रश्न 2 "अवध में राजकुमार, तालुकेदार, किसान और सिपाही ब्रिटिशों के खिलाफ विद्रोह में एक साथ जुड़े" – इस कथन की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर** अवध में 1800 के बाद कई शिकायतें थीं जिनके कारण राजकुमार, तालुकेदार, किसान और सिपाही सभी ने 1857 के विद्रोह में भाग लिया।

**अवध का विलय:**

1. 1801 में ब्रिटिशों ने अवध पर सहायक संधि थोप दी जिससे नवाब की शक्ति सीमित हो गई।
2. अवध की आर्थिक और भौगोलिक स्थिति के कारण ब्रिटिश उसे अपने साम्राज्य में शामिल करना चाहते थे।
3. 1856 में नवाब वाजिद अली शाह को गलत शासन के आरोप में गद्दी से हटाकर कलकत्ता भेज दिया गया।
4. इससे लोगों को भावनात्मक और आर्थिक नुकसान हुआ।

**तालुकेदारों का विस्थापन:**

1. पहले तालुकेदार सशस्त्र सेना रखते थे और स्वतंत्रता के साथ रहते थे।
2. अवध के विलय के बाद ब्रिटिशों ने उन्हें निःशस्त्र किया और उनके किले तोड़े।
3. 'एकमुश्त बंदोबस्त' नामक राजस्व नीति ने उन्हें हटाने का प्रयास किया।

**किसानों की दुर्दशा:**

1. ब्रिटिश राज में फसल खराब होने पर भी लगान नहीं घटाया जाता था और कोई आर्थिक सहायता नहीं दी जाती थी।
2. किसानों और तालुकदारों दोनों को ही ब्रिटिश शासन से कोई राहत नहीं मिली।

**सिपाहियों का आक्रोश:**

1. 1820 तक ब्रिटिश अधिकारी सिपाहियों के प्रति सम्मान रखते थे पर 1840 के बाद स्थिति बदल गई।
2. अंग्रेज अफसर उन्हें अपमानित करते थे और शारीरिक दंड भी देते थे।
3. अधिकांश सिपाही अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश से थे। कारतूस, छुट्टी, नस्लीय भेदभाव आदि ने उन्हें भड़का दिया।

**प्रश्न 3 "1857 के विद्रोह के दौरान अफ़वाहों और भविष्यवाणियों ने लोगों को कार्यवाही के लिए प्रेरित किया" – इस कथन की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर** 1857 के विद्रोह में अफ़वाहों और भविष्यवाणियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ये लोगों की मानसिक स्थिति, भय और विश्वास को दर्शाती हैं।

**प्रमुख अफ़वाहें:**

1. **एनफील्ड राइफल की गोली** में गाय और सूअर की चर्बी लगी थी, जिससे उसे दाँतों से काटना धार्मिक रूप से अपवित्र माना गया।
2. **बाजार में बिकने वाले आटे** में गाय और सूअर की हड्डियों का चूरा मिलाया गया है – ऐसी अफ़वाहें भी फैलीं।

**इन अफ़वाहों पर विश्वास के कारण:**

1. लॉर्ड विलियम बेंटिक के शासनकाल से भारतीय समाज में 'सुधार' के नाम पर पाश्चात्य शिक्षा, विचार और संस्थाएँ लागू की गईं।
2. **सती प्रथा का अंत (1829)** और **हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह का कानून** जैसे बदलावों ने धार्मिक भावनाओं को आहत किया।

**प्रश्न 4 "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में गिर जाएगी।" – इस कथन को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर**

1851 में लॉर्ड डलहौज़ी ने अवध राज्य को "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में गिर जाएगी" कहा और 1856 में इस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

1. 1801 में अवध पर सहायक संधि थोप दी गई।
2. इसके अंतर्गत नवाब को अपनी सेना भंग करनी पड़ी और ब्रिटिश सेना को राज्य में तैनात करना पड़ा।
3. नवाब अब पूरी तरह ब्रिटिशों पर निर्भर हो गया और विद्रोही सरदारों पर नियंत्रण नहीं रख सका।
4. ब्रिटिशों की दृष्टि में अवध की उपजाऊ भूमि और व्यापारिक दृष्टिकोण से इसका महत्व बहुत अधिक था।

## स्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

*स्रोत सिपाहियों का विचार*

*1. यह विद्रोही सिपाहियों में से एक की अर्ज़ी है जो आज भी (याचिका या आवेदन)उपलब्ध है:*

"एक सदी पहले अंग्रेज हिंदोस्तान आए और धीरे-धीरे अपनी सेवा में सैनिकों को रखा और हर राज्य पर अधिकार जमा लिया। हमारे पूर्वजों ने हमेशा उनकी सेवा की और हम भी उनकी सेवा में शामिल हुए... भगवान की कृपा और हमारी सहायता से अंग्रेजों ने हर वह स्थान जीता जहाँ उन्होंने चाहा, जिसमें हजारों हिंदोस्तानी पुरुष बलिदान हुए, लेकिन हमने कभी कोई बहाना नहीं बनाया और न ही विद्रोह किया...

लेकिन सन् 1857 में अंग्रेजों ने आदेश दिया कि इंग्लैंड से आए नए कारतूस और बंदूकें वितरित की जाएँगी, जिनमें गाय और सूअर की चर्बी मिली थी; और साथ ही गेहूं का आटा जिसमें पिसी हुई हड्डियाँ मिली थीं, खाने के लिए कहा गया...

ये कारतूस 3री लाइट कैवेलरी के सवारों को दिए गए और उन्हें आदेश दिया गया कि उन्हें काटें (दाँतों से खोलें); सवारों ने इसका विरोध किया और कहा कि अगर वे ऐसा करेंगे तो उनका धर्म और आस्था नष्ट हो जाएगी...

इस कारण हम और हमारे देशवासियों ने एकजुट होकर अपने धर्म की रक्षा के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया..."

**1.1 इस अनुच्छेद का स्रोत क्या है?**

**उत्तर:** यह विद्रोही सिपाहियों की एक अर्ज़ी (याचिका) है जो 1857 के विद्रोह के समय की बची हुई है।

**1.2 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?**

**उत्तर:** तात्कालिक कारण था एनफील्ड राइफलों का प्रयोग, जिनके कारतूस गाय और सूअर की चर्बी से ग्रीस किए गए थे।

**1.3 भारतीय सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ क्यों थे?**

**उत्तर:**

I भारतीय सिपाहियों के साथ अंग्रेज अफसरों द्वारा भेदभाव और खराब व्यवहार किया जाता था।

ii उन्हें कम वेतन दिया जाता था।

iii पदोन्नति के अवसर सीमित थे।

iv चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से उनके धार्मिक विश्वासों को ठेस पहुँची।

**प्रश्न 2 सिस्टन और तहसीलदार**

*बगावत और विद्रोह के संदेश के संप्रेषण के संदर्भ में, सीतापुर के एक देशी ईसाई पुलिस इंस्पेक्टर फ्रांस्वा सिस्टन का अनुभव काफ़ी महत्वपूर्ण है। वह मजिस्ट्रेट को सम्मान प्रकट करने के लिए सहारनपुर गया था। सिस्टन भारतीय कपड़ों में था और पालथी मारकर बैठा था। बिजनौर का एक मुस्लिम तहसीलदार कमरे में आया; जब उसे पता चला कि सिस्टन अवध से है, तो उसने पूछा, "अवध से क्या ख़बर है? काम कैसे चल रहा है, भाई?"*

सावधानी बरतते हुए सिस्टन ने उत्तर दिया, "अगर अवध में कोई काम होगा, तो हुज़ूर को ज़रूर पता चल जाएगा।" इस पर तहसीलदार ने कहा, "निश्चित मानिए, इस बार हम ज़रूर सफल होंगे। इस काम की बागडोर अब सक्षम हाथों में है।"

बाद में यह तहसीलदार बिजनौर के मुख्य विद्रोही नेता के रूप में पहचाना गया। सिपाहियों और जनता के बीच विद्रोह और बगावत के संदेश के संचार के संदर्भ में, सीतापुर के मूल निवासी ईसाई पुलिस इंस्पेक्टर फ्राँस्वा सिस्टन का अनुभव उल्लेखनीय है...

**2.1 फ्राँस्वा सिस्टन कौन था?**

**उत्तर** फ्राँस्वा सिस्टन सीतापुर का एक मूल निवासी ईसाई पुलिस इंस्पेक्टर था।

**2.2 तहसीलदार ने सिस्टन को विद्रोही क्यों समझा?**

**उत्तर** क्योंकि सिस्टन भारतीय वस्त्रों में बैठा था और पालथी मारकर बैठा था, जिससे वह स्थानीय विद्रोही समर्थक जैसा प्रतीत हो रहा था।

**2.3 विभिन्न स्थानों पर विद्रोह के समान पैटर्न से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं?**

**उत्तर**

यह स्पष्ट करता है कि विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच सक्रिय संचार था। संदेशवाहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर विद्रोह का संदेश फैला रहे थे। यह योजना, समन्वय और व्यापक स्तर पर विद्रोह की तैयारी को दर्शाता है।

## मानचित्र आधारित प्रश्न (5 अंक)

भारत के राजनीतिक मानचित्र पर निम्नलिखित स्थलों को चिन्हित कीजिए और नाम लिखिए:

*1.1 वर्ष 1857 में ब्रिटिश नियंत्रण वाले क्षेत्र :नगर /*

पंजाब, सिंध, बॉम्बे, मद्रास, फोर्ट सेंट डेविड, मछलीपट्टनम, बेरार, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, अवध, सूरत, कलकत्ता, पटना, बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ।

(*पुस्तक का पृष्ठ संख्या 297 देखें*)

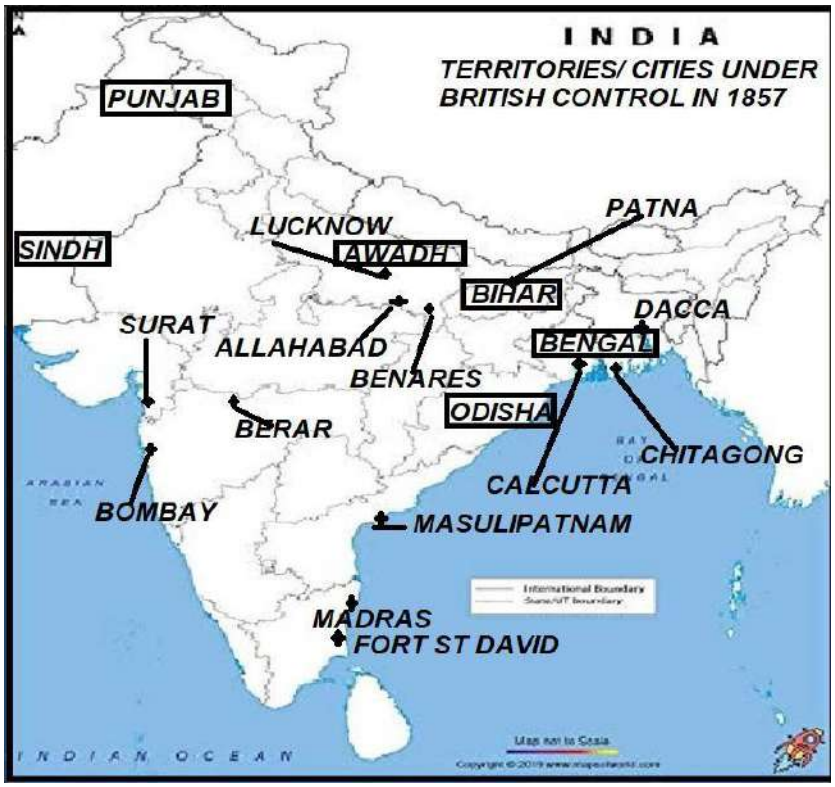

# अध्याय 11
# महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन
# सविनय अवज्ञा और उसके आगे

## अध्ययन उद्देश्य

❖ राष्ट्रीय आंदोलन को कालानुक्रमिक क्रम में समझना।

❖ गांधीवादी नेतृत्व के अंतर्गत विचारों, व्यक्तियों और संस्थाओं की प्रकृति तथा राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण तत्वों के बीच संबंध स्थापित करना।

❖ गांधी के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करना ताकि यह समझा जा सके कि राष्ट्रवाद के लिए उनका जनआकर्षण क्यों था।

❖ ऐतिहासिक स्रोतों जैसे समाचार पत्रों, जीवनियों, आत्मकथाओं, डायरी और पत्रों की व्याख्या करने के तरीकों का अन्वेषण करना।

## अध्याय का सारांश

**संक्षेप में महात्मा गांधीजी (1869–1948) के बारे में:**

- जैसे हम गैरीबाल्डी को इटली के एकीकरण से, जॉर्ज वॉशिंगटन को अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से, और हो ची मिन्ह को वियतनाम को उपनिवेशवाद से मुक्त कराने के संघर्ष से जोड़ते हैं,
- उसी प्रकार, महात्मा गांधी को भारत के 'राष्ट्र पिता' के रूप में माना जाता है।
- वे 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में जन्मे थे। उनका विवाह कस्तूरबा बाई से हुआ और उन्होंने उच्च शिक्षा इंग्लैंड में प्राप्त की।
- महात्मा गांधी 1893 में वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए, वहाँ लगभग 22 वर्षों तक रहे।
- वहाँ उन्होंने रंगभेद (Apartheid) व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया। इतिहासकार चंद्रन देवनसन ने सही ही कहा है कि "दक्षिण अफ्रीका ने उन्हें 'महात्मा' बनाया।"
- दक्षिण अफ्रीका में ही महात्मा गांधी ने अपने अहिंसात्मक प्रतिरोध या **सत्याग्रह** की तकनीक को अपनाया।
- वे 1915 में भारत लौटे। उनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे।
- उन्होंने 1917 से 1942 के बीच स्थानीय और जन आंदोलनों का नेतृत्व किया।
- उनकी हत्या 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने की थी।

बी.एच.यू. में गांधीजी के भाषण ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नए युग की शुरुआत की:

- अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर महात्मा गांधी ब्रिटिश भारत में लोगों की समस्याओं को जानने के लिए यात्रा कर रहे थे।
- फरवरी 1916 में, गांधीजी बी.एच.यू. के उद्घाटन समारोह में अपने पहले प्रमुख सार्वजनिक कार्यक्रम में उपस्थित हुए।
- अपने भाषण में उन्होंने इस आयोजन को एक भव्य प्रदर्शन करार दिया और वहां उपस्थित अमीर और सजे-धजे रईसों तथा करोड़ों गरीबों के बीच की बड़ी खाई पर चिंता व्यक्त की।

गांधीजी के भारत में आरंभिक तीन राजनीतिक आंदोलन:

- उन्होंने 1917 में चंपारण में नील किसानों के आंदोलन के साथ भारत के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया।
- 1918 में अहमदाबाद के कपड़ा मिल मजदूरों ने मजदूरी बढ़ाने की मांग को लेकर गांधीजी से नेतृत्व का आग्रह किया।
- गांधीजी ने खेड़ा (1918) के किसान आंदोलन का भी समर्थन किया, जिसमें किसानों को कर भुगतान से राहत मिली।

रॉलेट एक्ट:

- सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में बनी समिति की सिफारिश पर 1919 में एक नया कानून पास किया गया जिसे रॉलेट एक्ट कहा गया। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय आंदोलनों को दबाना था।
- रॉलेट एक्ट ने सरकार को यह अधिकार दिया कि वह किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमे के गिरफ़्तार कर सकती है। सरकार ने अख़बारों में किसी भी राष्ट्रविरोधी लेख के प्रकाशन पर भी प्रतिबंध लगा दिया। प्रेस पर सेंसरशिप लागू कर दी गई।
- गांधीजी ने इस कानून के विरोध में रॉलेट सत्याग्रह (1919) शुरू किया।

- रॉलेट एक्ट के विरोध में प्रदर्शन तेज हो गए और 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में इनका चरम उस समय आया जब ब्रिटिश ब्रिगेडियर जनरल डायर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का आदेश दिया। इसमें 400 से अधिक लोग मारे गए, जिसे जलियाँवाला बाग हत्याकांड के नाम से जाना जाता है।
- रॉलेट एक्ट ही वह कारण बना जिससे गांधीजी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे।

**खिलाफत आंदोलन (1919-20):**

- तुर्की के सुल्तान या खलीफा को सभी मुसलमानों का आध्यात्मिक नेता माना जाता था, लेकिन तुर्की के शासक कमाल अतातुर्क ने, ब्रिटिशों के समर्थन से, खलीफा की सत्ता को समाप्त कर दिया।
- मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में भारत के मुसलमानों ने तुर्की के खलीफा की शक्ति और पद की पुनः स्थापना के लिए एक शक्तिशाली आंदोलन शुरू किया, जिसे खिलाफत आंदोलन कहा जाता है।

**असहयोग आंदोलन (1920-22):**

- 1920 में कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में, जो कलकत्ता में हुआ था, असहयोग आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया। इस निर्णय की पुष्टि दिसंबर 1920 में नागपुर अधिवेशन में की गई।
- असहयोग आंदोलन दरअसल ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के विरुद्ध एक शांतिपूर्ण और अहिंसक युद्ध की घोषणा थी।

**असहयोग आंदोलन के कारण:**

- प्रथम विश्व युद्ध के अंत में भारत को अधिक स्वायत्तता न मिल पाना,
- युद्ध के कारण भारतीयों को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा,
- रॉलेट एक्ट का पारित होना और जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919) ने भारतीय राजनीति को नया मोड़ दिया,
- सबसे महत्वपूर्ण कारण था स्वराज की माँग, और
- खिलाफत आंदोलन की सफलता ने गांधीजी को इस आंदोलन की शुरुआत करने के लिए प्रेरित किया।

**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा की गई गतिविधियाँ:**

- सरकारी स्कूलों और कॉलेजों से बच्चों को क्रमिक रूप से हटाना।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, वकीलों द्वारा ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार, तथा काउंसिल के चुनावों का बहिष्कार।
- सभी उपाधियों का परित्याग।
- राष्ट्रीय विद्यालयों और कॉलेजों की स्थापना।
- हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना और स्वदेशी वस्तुओं को लोकप्रिय बनाना।

- 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी-चौरा में, एक उग्र भीड़ ने थाने में आग लगा दी और 22 पुलिसकर्मियों को मार डाला। इसके परिणामस्वरूप गांधीजी ने 12 फरवरी 1922 को बारडोली में सत्याग्रह को स्थगित कर दिया।
  - गांधीजी को मार्च 1922 में गिरफ़्तार किया गया और देशद्रोह के आरोप में मुकदमा चलाया गया।
- इस मुकदमे की अध्यक्षता कर रहे न्यायाधीश जस्टिस सी.एन. ब्रूमफील्ड ने सजा सुनाते समय एक उल्लेखनीय वक्तव्य दिया:"यदि भारत में परिस्थितियाँ ऐसी बनें कि सरकार आपकी सजा कम कर दे और आपको रिहा कर दे, तो मुझसे अधिक प्रसन्न कोई नहीं होगा।"

  **प्रभाव:**
  - लोगों को अपने राजनीतिक अधिकारों का बोध हुआ और उन्होंने ब्रिटिश शासन से विश्वास खो दिया।
  - आत्मनिर्भरता में उनका विश्वास बढ़ा।
  - पहली बार देश के कोने-कोने से और समाज के हर वर्ग से लोगों ने भाग लिया।
  - असहयोग आंदोलन ने देशभर में अभूतपूर्व उत्साह और जागरूकता उत्पन्न की।

  **राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में चरखा चुनने का कारण:**

- चरखा शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान का प्रतीक था और अपने कार्य को स्वयं करने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता था।
- यह जाति व्यवस्था की जड़ों पर भी प्रहार करता था।
- यह लघु उद्योगों को भी बढ़ावा देता था।

**गांधीजी की चमत्कारी शक्तियों की अफवाहें:**

- कुछ स्थानों पर कहा गया कि राजा ने उन्हें किसानों की शिकायतों का समाधान करने के लिए भेजा है और उनके पास सभी स्थानीय अधिकारियों को हटाने की शक्ति है।
- यह भी दावा किया गया कि गांधीजी का अधिकार अंग्रेजी सम्राट से भी श्रेष्ठ है और उनके आगमन के साथ ही औपनिवेशिक अधिकारी जिले से भाग जाएंगे।

**महात्मा गांधी का आम जनता से जुड़ाव:**

- गांधीजी की भारतीयों के प्रति चिंता उनके वस्त्रों से भी झलकती है। उन्होंने न केवल चरखे से स्वयं के लिए वस्त्र बनाए, बल्कि लोगों से भी ऐसा करने की अपील की।
- उनके सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों ने उनके व्यक्तित्व को परिभाषित किया।
- गांधीजी के उच्च नैतिक मूल्यों, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा ने उन्हें भारतीयों के बीच अत्यंत लोकप्रिय बना दिया।

**भारतीयों द्वारा साइमन कमीशन का बहिष्कार**:

- नवम्बर 1927 में सर जॉन साइमन को भारतीय वैधानिक आयोग (Indian Statutory Committee) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- दुर्भाग्यवश, आठ सदस्यों वाली इस समिति में एक भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया था।
- इसलिए भारतीयों ने इस आयोग की निष्पक्षता और कार्यक्षमता पर संदेह व्यक्त किया और इसके फरवरी 1928 में भारत आगमन पर काले झंडे दिखाकर इसका विरोध करने का निर्णय लिया।

**लाहौर अधिवेशन (1929):**

- पहली बार कांग्रेस नेतृत्व बुज़ुर्गों से युवा पीढ़ी को सौंपा गया। जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।
- 31 दिसंबर 1929 को कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज' को अपना लक्ष्य घोषित किया।
- कांग्रेस ने गांधीजी में विश्वास दोहराया और उनके नेतृत्व में एक जन आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया।
- 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया, जब तक भारत को स्वतंत्रता प्राप्त न हो जाए।

**सविनय अवज्ञा आंदोलन (दांडी मार्च, 1930):**

- यह आंदोलन 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी द्वारा दांडी मार्च (जिसे नमक यात्रा या नमक सत्याग्रह भी कहा जाता है) के साथ शुरू हुआ।
- गांधीजी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से गुजरात के तट पर स्थित "दांडी" तक पदयात्रा शुरू की।
- 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचकर उन्होंने समुद्री जल से नमक बनाकर ब्रिटिश नमक कानून का उल्लंघन किया। इसी के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।

**सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण:**

- 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने ब्रिटिश शासन की बुराइयों को उजागर किया और पूर्ण स्वराज की मांग की।
- उन्होंने लॉर्ड इरविन को ग्यारह सूत्रीय मांगें प्रस्तुत कीं, लेकिन लॉर्ड इरविन ने गांधीजी की मांगों पर ध्यान नहीं दिया।

**सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रभाव:**

- पूर्वी भारत में चौकीदार कर का भुगतान करने से इनकार कर दिया गया। यह 'नो टैक्स' अभियान गाँव में बहुत लोकप्रिय हो गया।
- देश में वन कानूनों की अवहेलना ने जन आंदोलन का रूप ले लिया।
- गांधी-इरविन समझौता और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता के बाद यह आंदोलन नए उत्साह के साथ पुनः शुरू किया गया।
- सरकार ने दमनकारी कदम उठाए, कांग्रेस को अवैध संगठन घोषित कर दिया गया और दंडात्मक कर लगाए गए।

**महत्व (Significance):**

- इस आंदोलन ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया और गांधीजी विश्वप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिक नेता बन गए।
- ब्रिटेन से आयात में भारी कमी आई।
- मुसलमानों की भागीदारी उल्लेखनीय रही।
- यहां तक कि मध्यम और उच्च वर्ग की मुस्लिम महिलाएं भी सक्रिय रहीं।

**गांधी-इरविन समझौता (मार्च 1931):**

- गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त करने पर सहमति व्यक्त की।

- कांग्रेस ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय लिया।
- हिंसा के दोषी न पाए गए राजनीतिक बंदियों को तुरंत रिहा करने का निर्णय लिया गया।
- सरकार ने कर-मुक्त नमक एकत्र करने की अनुमति देने पर सहमति जताई।

**कम्युनल अवॉर्ड / साम्प्रदायिक पंचाट(1932):**

- लंदन में हुई सम्मेलन असफल रहा, अतः गांधीजी भारत लौट आए और उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः शुरू किया।
- भारत के नए वायसराय लॉर्ड विलिंगडन ने अपनी बहन को एक निजी पत्र में लिखा: "यह दुनिया कितनी सुंदर होती, अगर इसमें गांधी न होते!"
- 17 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्ज़े मैकडोनाल्ड ने कुख्यात "कम्युनल अवॉर्ड" पारित किया, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को तोड़ना था।
- इस योजना के अंतर्गत दलित वर्ग के लिए अलग निर्वाचक मंडल (Separate Electorate) की व्यवस्था की गई।
- इसके विरोध में गांधीजी ने आमरण अनशन शुरू किया। परिणामस्वरूप गांधीजी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के बीच पूना समझौता (Poona Pact) हुआ, जिसमें दलित वर्ग के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की बजाय विशेष आरक्षित सीटों का प्रावधान किया गया।

**भारत छोड़ो आंदोलन (1942):**

- 8 अगस्त 1942 को बंबई (अब मुंबई) में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (AICC) ने ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया।
- गांधीजी ने इस आंदोलन का नेतृत्व करते हुए देशवासियों को मंत्र दिया: "करो या मरो", "हम भारत को स्वतंत्र कराएंगे या इस प्रयास में मर जाएंगे।"

**भारत छोड़ो आंदोलन के कारण:**

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान से खतरा और ब्रिटेन की भारत की रक्षा करने की क्षमता पर संदेह।
- युद्धकालीन कठिनाइयाँ जैसे – वस्तुओं के ऊँचे दाम, खाद्यान्न की कमी आदि।
- क्रिप्स मिशन की असफलता और पूर्ण स्वतंत्रता की बढ़ती मांग।

**भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव और परिणाम:**

- 1945 में भारत के वायसराय लॉर्ड वेवेल ने शिमला सम्मेलन में वेवेल योजना प्रस्तुत की।
- 1946 की गर्मियों में भेजा गया कैबिनेट मिशन कांग्रेस और मुस्लिम लीग को संघीय व्यवस्था पर सहमत कराने में विफल रहा।
- वार्ताएं विफल होने के बाद, मोहम्मद अली जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को 'सीधी कार्रवाई दिवस' का आह्वान किया, जिससे कलकत्ता में भीषण दंगे भड़क उठे।
- लॉर्ड माउंटबेटन ने घोषणा की कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्र किया जाएगा लेकिन विभाजित भी किया जाएगा।
- सत्ता के औपचारिक हस्तांतरण की तिथि 15 अगस्त 1947 निर्धारित की गई।
- जब वह दिन आया, तो भारत के विभिन्न हिस्सों में उसे उत्सवपूर्वक मनाया गया।

**गांधीजी के अंतिम वीरतापूर्ण दिन:**

- 15 अगस्त 1947 को गांधीजी दिल्ली में नहीं थे और उन्होंने आज़ादी के जश्न में भाग नहीं लिया।
- वे कलकत्ता में थे और उन्होंने 24 घंटे का उपवास रखा।
- बंगाल में शांति स्थापना के प्रयास के बाद, वे दिल्ली आए, जहाँ से वे पंजाब के दंगाग्रस्त इलाकों में जाने की योजना बना रहे थे।
- 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की नाथूराम गोडसे द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई।
- गांधीजी की मृत्यु से गहरा शोक फैल गया और पूरे राजनीतिक जगत से उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।
- जॉर्ज ऑरवेल और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसी अंतर्राष्ट्रीय हस्तियों ने भी गांधीजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
- वह Time पत्रिका, जिसने कभी गांधीजी के शारीरिक आकार और उनके "तर्कहीन प्रतीत होने वाले विचारों" का मज़ाक उड़ाया था, अब उनके बलिदान की तुलना अब्राहम लिंकन से कर रही थी।

**गांधीजी को जानना एवं राष्ट्रवादी आंदोलन का इतिहास:**

- गांधीजी के राजनीतिक जीवन और राष्ट्रवादी आंदोलन के इतिहास को पुनः निर्मित करने के लिए हमारे पास कई प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं।

- इनमें शामिल हैं: महात्मा गांधी और उनके समकालीनों के पत्र, लेख तथा भाषण, आत्मकथाएँ, पुलिस की नजरों से प्राप्त जानकारी, सरकारी अभिलेख, समाचार पत्र आदि।

## माइंड मैप

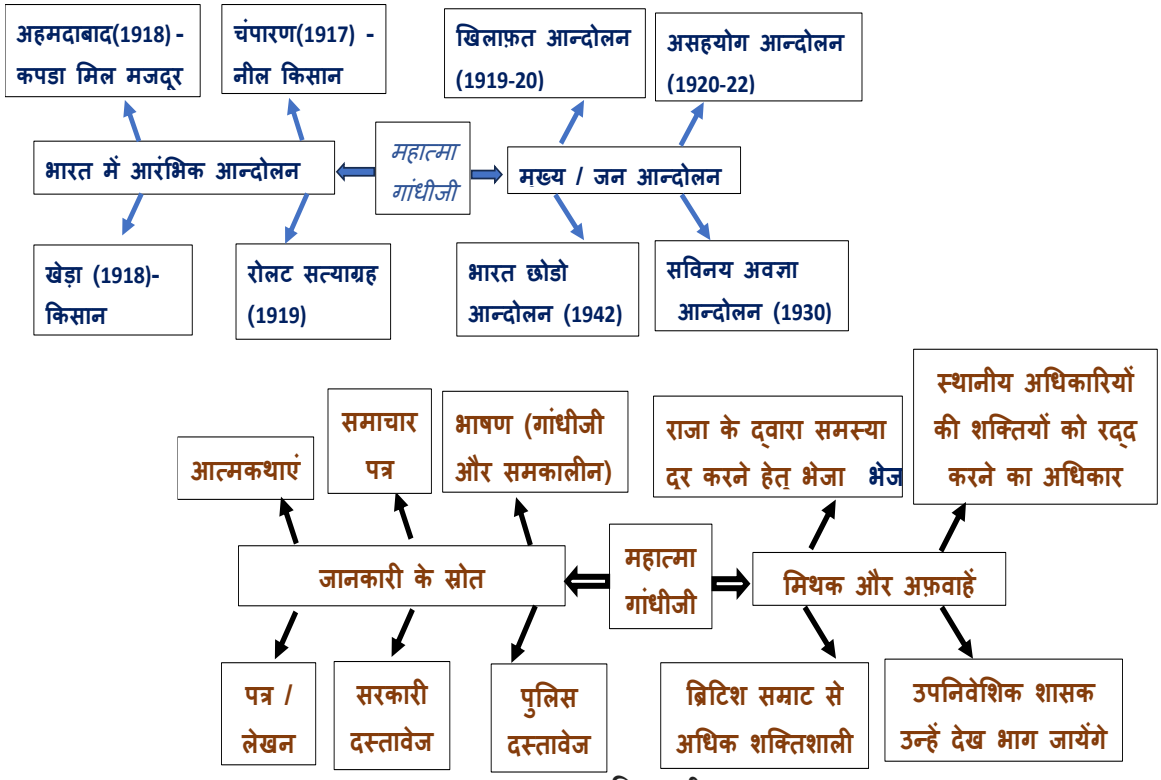





## बहुविकल्पीय प्रश्न

1. महात्मा गांधी की 'अहिंसा' की विचारधारा को व्यक्त करने वाला शब्द कौन-सा है?

(A) स्वराज
(B) सर्वोदय
(C) बहिष्कार
(D) सत्याग्रह

2. महात्मा गांधी ने नमक एकाधिकार को चुनकर अपनी रणनीतिक बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। निम्नलिखित में से कौन-कौन से कथन इसे सिद्ध करते हैं?

1. नमक पर राज्य का एकाधिकार अत्यंत अलोकप्रिय था।
2. लोगों को घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाने से रोका गया था।
3. नमक आवश्यक वस्तु नहीं थी।

**उत्तर विकल्प:**

(A) केवल (1) और (2)
(B) केवल (2) और (3)
(C) (1), (2) और (3)
(D) केवल (2)

**3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'भारत छोड़ो आंदोलन' के संदर्भ में सही नहीं है?**

(A) भारत छोड़ो आंदोलन एक जन आंदोलन था।
(B) हजारों भारतीयों ने इस आंदोलन में भाग लिया।

(C) सतारा और मेदिनीपुर में 'स्वतंत्र' सरकारों की घोषणा की गई थी।
(D) रियासतों में 'प्रजा मंडलों' की एक श्रृंखला स्थापित की गई थी।

**4. निम्नलिखित में से किस आंदोलन को 'लाल-बाल-पाल' ने व्यापक बनाया और 1905-1907 के बीच इसे अखिल भारतीय संघर्ष का रूप प्रदान किया?**

(A) गदर आंदोलन
(B) स्वदेशी आंदोलन
(C) सत्याग्रह आंदोलन
(D) किसान आंदोलन

**5. निम्नलिखित घटनाओं को क्रम में लगाइए:**

(i) गांधीजी का असहयोग आंदोलन का आह्वान
(ii) गांधीजी का खेड़ा सत्याग्रह
(iii) गांधीजी का चंपारण सत्याग्रह
(iv) गांधीजी का बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भाषण
सही विकल्प चुनें:
(a) (ii), (iv), (i), (iii)
(b) (iii), (i), (iv), (ii)
(c) (i), (ii), (iii), (iv)
(d) (iv), (iii), (ii), (i)

**6. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:**

**अभिकथन (A):** असहयोग आंदोलन को व्यापक बनाने के लिए गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया।
**कारण (R):** गांधीजी को आशा थी कि असहयोग और खिलाफत को एक साथ जोड़ने से औपनिवेशिक शासन का अंत हो सकता है।

**विकल्प:**

(a) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(b) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) अभिकथन (A) सत्य है, लेकिन कारण (R) असत्य है।
(d) अभिकथन (A) असत्य है, लेकिन कारण (R) सत्य है।

**7. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:**

**अभिकथन (A):** कांग्रेस का 1929 का लाहौर अधिवेशन ऐतिहासिक था।
**कारण (R):** इस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' या संपूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा पारित की गई थी।

**विकल्प:**

(A) दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) दोनों (A) और (R) सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (R) सत्य है, लेकिन (A) असत्य है।

**8. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:**

**अभिकथन (A):** जलियांवाला बाग हत्याकांड भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक निर्णायक मोड़ था।
**कारण (R):** इस हत्याकांड ने ब्रिटिशों के साथ संबंधों को खराब कर दिया और यह गांधीजी की भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति प्रतिबद्धता की शुरुआत थी।

**विकल्प:**

(a) दोनों कथन सत्य हैं, और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन (A) सत्य है, लेकिन कारण (R) असत्य है।
(d) कथन (A) असत्य है, लेकिन कारण (R) सत्य है।

**9. नीचे दो कथन दिए गए हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:**

**अभिकथन (A):** गांधीजी ने रौलेट एक्ट के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का आह्वान किया।

**कारण (R):** ब्रिटिश सरकार ने बिना मुकदमा चलाए लोगों को जेल में डालने का अधिकार दिया था।

**विकल्प:**

(A) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) दोनों (A) और (R) सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(D) (R) सही है, लेकिन (A) गलत है।

**10. गांधीजी द्वारा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू करने का तात्कालिक कारण क्या था?**

(A) कैबिनेट मिशन
(B) क्रिप्स मिशन
(C) साइमन कमीशन
(D) माउंटबेटन योजना

**11. 1946 में कैबिनेट मिशन भारत क्यों आया था?**

निम्नलिखित विकल्पों में से उपयुक्त कारण चुनिए:

(A) ब्रिटिशों की विधायिका में भागीदारी बढ़ाने के लिए
(B) विधायी स्तर पर द्वैध शासन लागू करने के लिए
(C) स्वतंत्र भारत के लिए उपयुक्त राजनीतिक ढाँचा सुझाने के लिए
(D) भारतीयों को एक संघीय न्यायालय प्रदान करने के लिए

**12. अगस्त 1946 में मुस्लिम लीग द्वारा 'सीधी कार्रवाई दिवस' घोषित करने का मुख्य कारण क्या था?**

(A) पाकिस्तान की माँग को मनवाना
(B) भारत में सरकार बनाना
(C) विधानसभा में आरक्षण प्राप्त करना
(D) उपरोक्त सभी

**13. कथन (A) और कारण (R) नीचे दिए गए हैं। उन्हें ध्यान से पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:**

**कथन (A):** जब कांग्रेस पार्टी को मजबूरी में विभाजन स्वीकार करना पड़ा, तब भी उसने 'दो राष्ट्र सिद्धांत' को कभी नहीं स्वीकारा।

**कारण (R):** भारत कई धर्मों और जातियों की भूमि है और इसे ऐसा ही बने रहना चाहिए।

विकल्प:

(A) कथन (A) सत्य है, लेकिन कारण (R) असत्य है।
(B) कथन (A) असत्य है, लेकिन कारण (R) सत्य है।
(C) दोनों कथन सत्य हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(D) दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

**14. 'गांधी-इरविन समझौता' की कौन-कौन सी बातें सही हैं?**

(A) सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त कर दिया जाएगा
(B) सभी कैदियों को रिहा किया जाएगा
(C) समुद्र तट पर नमक बनाने की अनुमति दी जाएगी
(D) उपरोक्त सभी

**15. कांग्रेस का 1929 का लाहौर अधिवेशन क्यों महत्वपूर्ण था?**

सही विकल्प चुनिए:

(A) पूर्ण स्वराज की घोषणा के लिए

(B) ब्रिटिशों के साथ गठबंधन के लिए

(C) गांधीजी के नेतृत्व के लिए

(D) रॉलेट एक्ट के लिए

**16. महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत ने वैश्विक आंदोलनों को कैसे प्रभावित किया?**

(A) यह केवल भारत में प्रासंगिक था और वैश्विक स्तर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

(B) इसने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं को प्रेरित किया।

(C) इससे विश्व के विभिन्न हिस्सों में हिंसक विद्रोह शुरू हुए।

(D) इसे भारत के बाहर सभी राजनीतिक नेताओं ने अस्वीकार कर दिया।

**17. निम्नलिखित घटनाओं को उनके संबंधित वर्षों से मिलाइए:**

| **घटना** | **वर्ष** |
|---|---|
| (i) चंपारण सत्याग्रह | (a) 1942 |
| (ii) असहयोग आंदोलन | (b) 1930 |
| (iii) सविनय अवज्ञा आंदोलन | (c) 1920 |
| (iv) भारत छोड़ो आंदोलन | (d) 1917 |

**विकल्प:**

(A) i-a, ii-b, iii-c, iv-d

(B) i-b, ii-c, iii-d, iv-a

(C) i-d, ii-c, iii-b, iv-a

(D) i-c, ii-a, iii-b, iv-d

**18. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार करें:**

1. कैबिनेट मिशन
2. पाकिस्तान प्रस्ताव
3. खिलाफत आंदोलन
4. क्रिप्स मिशन

इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?

(A) 4, 3, 2, 1

(B) 3, 2, 4, 1

(C) 3, 4, 1, 2

(D) 3, 4, 2, 1

**19. गांधीजी के राजनीतिक जीवन के पुनर्निर्माण हेतु किन स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है?**

(A) महात्मा गांधी के लेख और भाषण

(B) सरकारी अभिलेख

(C) समकालीन समाचार पत्र

(D) उपरोक्त सभी

**20. निम्नलिखित जानकारी के आधार पर राजनीतिक नेता की पहचान कीजिए और सही विकल्प चुनिए:**

1. उनके सुझाव पर गांधीजी ने ब्रिटिश भारत में एक वर्ष की यात्रा की थी।
2. वे गांधीजी के राजनीतिक गुरु थे।

**विकल्प:**

(A) बाल गंगाधर तिलक

(B) एम. जी. रानाडे

(C) मोतीलाल नेहरू

(D) गोपाल कृष्ण गोखले

**21. चित्र में दर्शाए गए ऐतिहासिक घटनाक्रम की पहचान कीजिए:**

.

**विकल्प:**

(A) खिलाफत आंदोलन

(B) असहयोग आंदोलन

(C) भारत छोड़ो आंदोलन

(D) दांडी मार्च

**उत्तर कुंजी:**

1. D सत्याग्रह
2. A केवल (1) और (2)
3. D रियासतों में 'प्रजा मंडलों' की एक श्रृंखला स्थापित की गई थी।
4. B स्वदेशी आन्दोलन
5. D (iv), (iii), (ii), (i)
6. A अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
7. A दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
8. A दोनों कथन सत्य हैं, और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
9. A दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
10. B क्रिप्स मिशन
11. C स्वतंत्र भारत के लिए उपयुक्त राजनीतिक ढाँचा सुझाने के लिए
12. A पाकिस्तान की माँग को मनवाना
13. C दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
14. D उपरोक्त सभी
15. A पूर्ण स्वराज के लिए
16. B इसने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं को प्रेरित किया।
17. C i-d, ii-c, iii-b, iv-a
18. B 3, 2, 4, 1
19. D उपरोक्त सभी
20. D गोपाल कृष्ण गोखले
21. D दांडी मार्च

**लघु उत्तरीय प्रश्न (60-80 शब्द)**

**22. भारत में महात्मा गांधी के प्रारंभिक योगदान को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:** (i) 1915 में भारत लौटने पर गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर एक वर्ष भारत भ्रमण किया।

(ii) उनका पहला बड़ा सार्वजनिक प्रकट होना फरवरी 1916 में BHU के उद्घाटन पर हुआ, जहां उन्होंने अभिजात वर्ग पर श्रमिक वर्ग की उपेक्षा का आरोप लगाया और किसानों-श्रमिकों की याद दिलाई।

(iii) चंपारण में नील की खेती के अत्याचार को सामने लाया, अहमदाबाद में मिल मजदूरों के लिए बेहतर स्थितियों की मांग की, और

खेड़ा में अकाल पीड़ित किसानों के कर माफ़ी आंदोलन का नेतृत्व किया।
(iv) इन आंदोलनों ने उन्हें गरीबों के प्रति सहानुभूति रखने वाले राष्ट्रवादी नेता के रूप में स्थापित किया और इसके बाद उन्होंने रॉलेट सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

**23. गांधीजी को 'जन नेता' क्यों कहा जाता है और उन्होंने आम लोगों से जुड़ने के लिए क्या प्रयास किए? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:**

(i) 1922 तक गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप पूरी तरह बदल दिया था।
(ii) यह अब केवल बुद्धिजीवियों का आंदोलन नहीं रहा; लाखों सामान्य लोग इससे जुड़ गए।
(iii) गांधीजी आम लोगों की तरह वस्त्र पहनते थे।
(iv) लोगों ने सराहा कि गांधीजी उनकी तरह कपड़े पहनते हैं, उनकी भाषा बोलते हैं और उन्हीं की तरह जीवन जीते हैं।
(v) गांधीजी धोती और लंगोट में लोगों के बीच जाते थे।
(vi) वे प्रतिदिन का कुछ समय चरखा पर सूत कातने में लगाते थे।
(vii) उनका स्वरूप पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसानों जैसा लगता था।
(viii) जहाँ भी गांधीजी जाते, उनकी चमत्कारी शक्तियों की अफवाहें फैल जातीं।
(ix) लोग उन्हें "गांधी बाबा" या "महात्मा" कहने लगे।
(x) आम जनता से उनका जुड़ाव वास्तविक और आत्मीय था।

**24. भारत में 1905 से 1907 के बीच राष्ट्रवादी आंदोलन की गतिविधियों को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:**

(i) भारत उस समय एक उपनिवेश था, फिर भी राजनीतिक रूप से बहुत सक्रिय था।
(ii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएं कई नगरों और कस्बों में स्थापित थीं।
(iii) 1905 से 1907 के बीच चला स्वदेशी आंदोलन मध्यम वर्गों के बीच लोकप्रिय हो गया था।
(iv) इस आंदोलन ने लाल-बाल-पाल जैसे प्रमुख नेताओं को सामने लाया।
(v) इन नेताओं के नामों की समानता (alliteration) उनके संघर्ष को अखिल भारतीय स्वरूप देती थी, जबकि उनके प्रदेश अलग-अलग थे।
(vi) ये नेता जहाँ उपनिवेशवाद का उग्र विरोध करते थे, वहीं एक वर्ग 'उदारवादियों' का था जो शांतिपूर्ण और क्रमिक सुधारों में विश्वास रखता था।
(vii) इन उदारवादियों में गांधीजी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले तथा मोहम्मद अली जिन्ना भी शामिल थे। वे 'स्वराज' की माँग कर रहे थे।

**25. उपनिवेशवाद के विरोध में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी नेताओं की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:**

(i) उदारवादी नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक काल (1885–1905) से संबंधित थे।
(ii) वे शांतिपूर्ण, क्रमिक और तर्कसंगत सुधारों में विश्वास रखते थे।
(iii) गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक मार्गदर्शक माना।
(iv) उन्होंने राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया।
(v) उन्होंने ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की।
(vi) उन्होंने प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी की माँग की।
(vii) उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा दिया और इसके लिए भारतीय धन का प्रयोग करने की वकालत की।
(viii) प्रमुख नेता: दादा भाई नौरोजी, डब्ल्यू. सी. बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले।

**26. गांधी-इरविन समझौते के प्रावधानों की व्याख्या कीजिए। इसे उग्र राष्ट्रवादियों ने क्यों आलोचना की?**

**उत्तर: गांधी-इरविन समझौता (1931):**

(i) सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त कर दिया जाएगा।
(ii) सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाएगा।

(iii) समुद्र तट पर नमक निर्माण की अनुमति दी जाएगी।
(iv) गांधीजी ने लंदन में होने वाले द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमति व्यक्त की।
(v) (कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य है।)

**आलोचना (उग्र राष्ट्रवादियों द्वारा):**

(i) गोलमेज सम्मेलन किसी ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा।
(ii) गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू किया, लेकिन वह पहले जैसा प्रभावशाली नहीं रहा।
(iii) वायसराय भारत के प्रति सहानुभूति नहीं रखते थे।
(iv) गांधीजी की आलोचना इसलिए हुई क्योंकि वे वायसराय से भारत के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता की कोई ठोस प्रतिबद्धता नहीं प्राप्त कर सके।

**27. ''1915 में जब गांधीजी भारत लौटे तो भारत वह नहीं था जिसे उन्होंने 1893 में छोड़ा था।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

**अथवा**

**गांधीजी द्वारा अफ्रीका से लौटने के बाद भारत में देखी गई परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर:**

(i) गांधीजी ने देखा कि 1893 में जिसे वे छोड़कर गए थे, 1915 का भारत उससे काफी भिन्न था।
(ii) भारत, यद्यपि ब्रिटिश उपनिवेश था, परंतु 1915 तक राजनीतिक रूप से कहीं अधिक सक्रिय हो चुका था।
(iii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएँ अधिकांश प्रमुख शहरों और नगरों में स्थापित थीं।
(iv) 1905–1907 के स्वदेशी आंदोलन ने मध्यम वर्गों के बीच व्यापक समर्थन प्राप्त किया था।
(v) एक वर्ग, जिसे "उदारवादी" कहा गया, क्रमिक और तर्कपूर्ण तरीके से सुधार चाहता था।
(vi) इन उदारवादियों में गोपाल कृष्ण गोखले और मोहम्मद अली जिन्ना जैसे नेता शामिल थे।
(vii) इसी समय लाल-बाल-पाल (बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल और लाला लाजपत राय) जैसे प्रभावशाली नेता भी भारतीय राजनीति में सक्रिय हुए।
(viii) इन नेताओं ने औपनिवेशिक शासन का उग्र विरोध किया।

**<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u> (300 – 350 शब्द)**

**28. "जन भागीदारी ने असहयोग आंदोलन की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।" इस कथन को उचित तर्कों सहित स्पष्ट कीजिए।**

**अथवा**

**गांधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन शुरू करने के कारणों का वर्णन कीजिए तथा इस आंदोलन के महत्व को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर: परिस्थितियाँ (Causes):**

(i) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने प्रेस सेंसरशिप लागू की।
(ii) 1919 में रॉलेट एक्ट लागू किया गया।
(iii) इस कानून के तहत बिना मुकदमे के लोगों को बंदी बनाया जा सकता था।
(iv) गांधीजी ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध देशव्यापी बंद का आह्वान किया।
(v) पंजाब में मार्शल लॉ लागू किया गया।
(vi) जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ।
(vii) गांधीजी और कई कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
(viii) गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया।
(ix) देश में राष्ट्रवाद की भावना और स्वराज की मांग तेज हो गई।
(x) कलकत्ता और नागपुर में कांग्रेस के अधिवेशन हुए।
(xi) भारत सरकार अधिनियम 1919 से असंतोष।

(xii) इन सभी परिस्थितियों में गांधीजी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया।

**महत्व (Significance):**

(i) पहली बार ब्रिटिश शासन की नींव हिल गई।

(ii) हर वर्ग के भारतीय इस आंदोलन से जुड़ गए।

(iii) इसे खिलाफत आंदोलन का भी समर्थन प्राप्त हुआ।

(iv) यह आत्म-शासन के लिए प्रशिक्षण था।

(v) यह भारतीय जनजीवन के लिए एक युगांतरकारी घटना बन गया।

(vi) ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार से उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा।

(vii) स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया गया — उदाहरण: खादी का उपयोग मिल के कपड़े के स्थान पर।

(viii) सभी वर्गों के लोगों ने आंदोलन में भाग लिया।

(ix) असहयोग आंदोलन ने हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया।

(कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य है।)

**गतिविधियाँ (Activities):**

(i) विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल और कॉलेजों में जाना बंद कर दिया।

(ii) वकीलों ने अदालतों में पेश होना बंद कर दिया और कई लोगों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई उपाधियाँ वापस लौटा दीं।

(iii) कई नगरों और शहरों में श्रमिकों ने हड़ताल की।

(iv) सरकारी आँकड़ों के अनुसार, 1921 में 396 हड़तालें हुईं जिनमें 6 लाख मजदूर शामिल हुए और 70 लाख कार्य दिवसों का नुकसान हुआ।

(v) उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।

(vi) अवध के किसानों ने कर देने से मना कर दिया, कुमाऊँ के किसानों ने उपनिवेशी अधिकारियों का सामान ढोने से इंकार कर दिया।

(vii) कई विरोध स्थानीय नेतृत्व के निर्देशों की अवहेलना करते हुए भी हुए।

(viii) किसानों, मजदूरों और अन्य लोगों ने 'असहयोग' को अपने-अपने तरीके से अपनाया।

(ix) हजारों भारतीयों को जेल भेजा गया।

(x) 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार ब्रिटिश शासन की नींव हिल गई।

(xi) लेकिन चौरी-चौरा कांड के कारण गांधीजी ने आंदोलन को स्थगित कर दिया।

(कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य है।)

**29. "नमक सत्याग्रह ने विश्वभर का ध्यान आकर्षित किया और यह राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत बना।" इस कथन को उपयुक्त उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।**

**अथवा**

**नमक सत्याग्रह के कारणों और घटनाओं की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर:**

(i) गांधीजी ने नमक कानून के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की।

(ii) नमक कानून ने राज्य को नमक के निर्माण और बिक्री पर एकाधिकार प्रदान किया था।

(iii) हर भारतीय घर में नमक अनिवार्य था और लोगों को नमक बनाने की अनुमति नहीं थी, जिससे यह कानून अत्यंत अलोकप्रिय बन गया।

(iv) गांधीजी ने व्यापक असंतोष को संगठित करने के लिए दांडी यात्रा प्रारंभ की और वहाँ पहुँचकर नमक बनाकर कानून का उल्लंघन किया।

(v) देश के अन्य भागों में भी समानांतर नमक यात्राएँ आयोजित की गईं।

(vi) किसानों ने उपनिवेशी वन कानूनों का उल्लंघन किया।

(vii) फैक्ट्री मजदूरों ने हड़ताल की।

(viii) वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया।
(ix) छात्रों ने सरकारी स्कूल-कॉलेजों में जाना बंद कर दिया।
(x) लगभग 60,000 भारतीयों को गिरफ्तार किया गया।
(xi) गांधीजी ने ऊँची जातियों से कहा कि वे अछूतों की सेवा करें।
(xii) हिंदू, मुसलमान, पारसी और सिखों से एकजुट होने की अपील की गई।
(xiii) हजारों स्वयंसेवकों ने इस आंदोलन में भाग लिया।
(xiv) कई अधिकारियों ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया।
(xv) गांधीजी की सभाओं में सभी वर्गों के लोग शामिल होते थे।
(xvi) महिलाएं भी बड़ी संख्या में शामिल हुईं।
(xvii) दांडी यात्रा ने गांधीजी को वैश्विक मंच पर प्रसिद्ध कर दिया। यूरोपीय और अमेरिकी प्रेस ने इसका खूब प्रचार किया।
(xviii) नमक यात्रा ने ब्रिटिश सरकार को यह एहसास कराया कि उन्हें भारतीयों को अधिकार देने ही पड़ेंगे।
(xix) गांधीजी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली।
(xx) अमेरिकी समाचार पत्रिका *टाइम* ने गांधीजी की रूप-रंग की आलोचना की थी, लेकिन बाद में उन्हें एक 'संत' और 'राजनेता' के रूप में सम्मानित किया।
(xxi) इस आंदोलन से यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश शासन हमेशा के लिए नहीं टिकेगा।
(xxii) यह पहला राष्ट्रव्यापी आंदोलन था जिसमें महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।
(xxiii) समाजवादी कार्यकर्ता कमला देवी चट्टोपाध्याय ने नमक कानून और शराब कानून तोड़कर गिरफ्तारी दी।

**30. "भारत छोड़ो आंदोलन वास्तव में एक जन आंदोलन था, जिसने लाखों आम भारतीयों को अपनी परिधि में शामिल किया।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए।**

**अथवा**

**'भारत छोड़ो आंदोलन' के कारणों और घटनाओं की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन** को अगस्त 1942 में गांधीजी ने शुरू किया। यह आंदोलन एक **वास्तविक जन आंदोलन** था जिसमें लाखों आम भारतीयों ने भाग लिया।

**कारण :**

(i) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्रता देने से ब्रिटिश सरकार का इंकार।
(ii) कांग्रेस और वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो की बैठक में भारत की युद्ध में भागीदारी पर चर्चा विफल रही, जिससे कांग्रेस की सभी मंत्रिपरिषदों ने इस्तीफा दे दिया।
(iii) यह आंदोलन क्रिप्स मिशन की विफलता, भारत सरकार अधिनियम 1935 और जापानी आक्रमण के खतरे के विरुद्ध जनता की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा।
(iv) राजनीतिक परिदृश्य जटिल हो गया क्योंकि अब संघर्ष कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ब्रिटिश सरकार के बीच त्रिकोणीय हो गया था।
(v) भारत को बिना परामर्श के द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल किए जाने से जनमानस में भारी असंतोष था।
(vi) लोगों की स्वतंत्रता की भावना अब निर्णायक मोड़ पर पहुँच चुकी थी।
(कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य है।)

**घटनाक्रम :**

(i) देशभर में हड़तालें और तोड़फोड़ की घटनाएँ हुईं।
(ii) यह वास्तव में एक जन आंदोलन था क्योंकि इसमें हजारों भारतीयों ने भाग लिया।
(iii) आम लोग भी ब्रिटिश राज के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में आ गए।
(iv) युवाओं में इस आंदोलन ने नई ऊर्जा भर दी।
(v) गांधीजी ने "करो या मरो" का मंत्र दिया।
(vi) ब्रिटिश सरकार ने हजारों लोगों को गिरफ्तार किया और जेलों में डाल दिया।

(vii) नागरिक अधिकारों का दमन किया गया।
(viii) वाणी की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया।
(ix) ब्रिटिश सरकार को यह एहसास हो गया कि अब उन्हें भारत छोड़ना ही पड़ेगा।
(x) सतारा (पश्चिम) और मेदिनीपुर (पूर्व) जैसे जिलों में **स्वतंत्र सरकारों** की स्थापना हुई।
(xi) कांग्रेस के समाजवादी नेताओं जैसे **जयप्रकाश नारायण** द्वारा भूमिगत प्रतिरोध संगठित किया गया।
(xii) यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अंतिम निर्णायक संघर्ष था।
(कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु स्वीकार्य है।)

## स्रोत आधारित प्रश्न

31. **निम्नलिखित स्रोत का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए** :

**चरखा**

महात्मा गाँधी आधुनिक युग, जिसमें मशीनों ने मानव को गुलाम बनाकर श्रम को हटा दिया था, के घोर आलोचक थे। उन्होंने चरखा को एक ऐसे, मानव समाज के प्रतीक रूप में देखा, जिसमें मशीनों और प्रौद्योगिकी को बहुत महिमामंडित नहीं किया जाएगा। इससे भी अधिक चरखा गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान कर सकता था तथा उन्हें स्वावलंबी बना सकता था।

मेरी आपत्ति मशीन के प्रति सनक से है। यह सनक श्रम बचाने वाली मशीनरी के लिए है। ये तब तक 'श्रम बचाते' रहेंगे जब तक कि हजारों लोग बिना काम के और भूख से मरने के लिए सड़कों पर न फेंक दिए जाएँ। मैं मानव समुदाय के किसी एक हिस्से के लिए नहीं बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता हूँ| मैं धन का केंद्रीकरण कुछ ही लोगों के हाथों में नहीं बल्कि सभी के हाथों में करना चाहता हूँ।

------ यंग इंडिया, 13 नवंबर 1924

खद्दर मशीनरी को नष्ट नहीं करना चाहता बल्कि यह इसके प्रयोग को नियमित करता है और इसके विकास को नियंत्रित करता है। यह मशीनरी का प्रयोग सर्वाधिक गरीब लोगों के लिए उनकी अपनी झोपड़ियों में करता है। पहिया अपने आप में ही मशीनरी का एक उत्कृष्ट नमूना है। ------ यंग इंडिया, 17 मार्च, 1927

**प्रश्न**

**31.1 गांधीजी मशीनों के आलोचक क्यों थे?**

**उत्तर-** गांधी आलोचनात्मक थे क्योंकि उनका मानना था कि मशीन मनुष्य को गुलाम बनाती है और इस प्रकार मानव श्रम विस्थापित हो गया है।

कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

**31.2 गांधीजी चरखे को पवित्र क्यों मानते थे?**

**उत्तर-** (i) गांधीजी के लिए चरखा एक सेवा के समान था, आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम था।
(ii) धर्म का प्रतीक, आत्म-सहायता और आत्मनिर्भरता।
(iii) श्रम और मानवीय मूल्यों की गरिमा की।
कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

**31.3 गांधीजी ने खद्दर को महत्व क्यों दिया?**

**उत्तर-** (i) गांधी जी के अनुसार, खद्दर ने मशीनरी के उपयोग को विनियमित किया और इसकी खरपतवार वृद्धि को रोका।
(ii) इसने अपने स्वयं के कॉटेज में सबसे गरीब लोगों की सेवा के लिए सरल और घरेलू मशीनरी का उपयोग किया।
कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।

**32. निम्नलिखित स्रोत का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:**

**"कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे"**

5 अप्रैल 1930 को महात्मा गाँधी ने दांडी में कहा था :

जब मैं अपने साथियों के साथ दांडी के इस समुद्रतटीय टोले की तरफ चला था तो मुझे यकीन नहीं था कि हमें यहाँ तक आने दिया जाएगा। जब मैं साबरमती में था तब भी यह अफवाह थी कि मुझे गिरफ्तार किया जा सकता है। तब मैंने सोचा था कि सरकार मेरे साथियों को तो दांडी तक आने देगी लेकिन मुझे निश्चय ही यह छूट नहीं मिलेगी। यदि कोई यह कहता कि इससे मेरे हृदय में अपूर्ण

आस्था का संकेत मिलता है तो मैं इस आरोप को नकारने वाला नहीं हूँ। मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ, इसमें शांति और अहिंसा का कम हाथ नहीं है; इस सत्ता को सब महसूस करते हैं। अगर सरकार चाहे तो वह अपने इस आचरण के लिए अपनी पीठ थपथपा सकती है क्योंकि सरकार चाहती तो हम में से हरेक को गिरफ्तार कर सकती थी। जब सरकार यह कहती है कि उसके पास शांति की सेना को गिरफ्तार करने का साहस नहीं था तो हम उसकी प्रशंसा करते हैं। सरकार को ऐसी सेना की गिरफ्तारी में शर्म महसूस होती है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा काम करने में शर्मिन्दगी महसूस करता है जो उसके पड़ोसियों को भी रास नहीं आ सकता, तो वह एक शिष्ट-सभ्य व्यक्ति है। सरकार को हमें गिरफ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का खयाल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो।

कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे। सरकार इसको बर्दाश्त करती है कि नहीं, यह सवाल अलग है। हो सकता है सरकार हमें ऐसा न करने दे लेकिन उसने हमारे जत्थे के बारे में जो धैर्य और सहिष्णुता दिखायी है उसके लिए वह अभिनंदन की पात्र है ...।

यदि मुझे और गुजरात व देश भर के सारे मुख्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है तो क्या होगा? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि जब एक पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है और आगे बढ़ने लगता है तो उसे नेता की जरूरत नहीं रह जाती।

**कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खं 49**

**प्रश्न**

**32.1 नमक कानून के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रियाओं का परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर- i.** नमक कानून के खिलाफ व्यापक असंतोष था।

ii. नमक पर राज्य का एकाधिकार गहरा अलोकप्रिय था।

**32.2 महात्मा गांधी ने जब दांडी यात्रा आरंभ की तो उनकी क्या आशंकाएँ थीं?**

**उत्तर-** i.गांधी आशंकित थे कि उन्हें दांडी तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी जा सकती है

ii. सरकार शायद पार्टी को दांडी तक आने दे सकती है, लेकिन गांधी को दांडी तक पहुंचने की अनुमति नहीं दे सकती है।

iii.उसे रास्ते में गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

**32.3 गांधीजी ने ऐसा क्यों कहा कि सरकार बधाई की पात्र है?**

**उत्तर:** i. सरकार ने धैर्य और सहनशीलता का प्रदर्शन किया और गांधी को दांडी पहुंचने की अनुमति दी।

ii.यही कारण है कि गांधी ने कहा कि सरकार को गिरफ्तार नहीं करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए, भले ही वह केवल विश्व राय के डर से दूर हो।

## मानचित्र आधारित प्रश्न

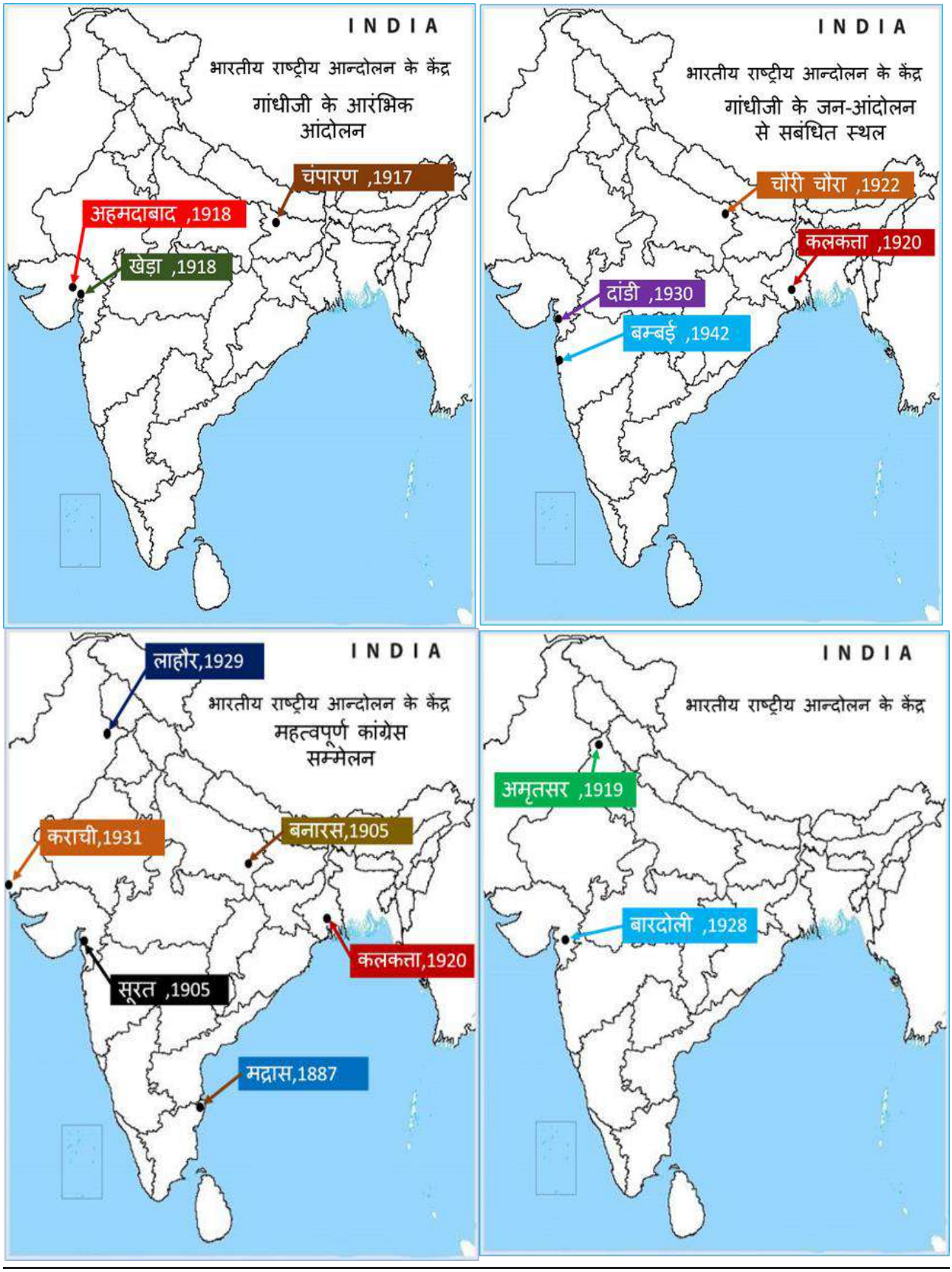

## अध्याय- 12: संविधान का निर्माण

## एक युग की शुरुआत

### सीखने के उद्देश्य

- भारतीय संविधान के निर्माण पर एक पाठ के मुख्य सीखने के उद्देश्यों में ऐतिहासिक संदर्भ, संविधान निर्माण की प्रक्रिया, इसकी मुख्य विशेषताएं और इसमें निहित मौलिक अधिकार और कर्तव्य शामिल हैं। छात्रों को भारतीय संविधान के दर्शन और उसके उद्देश्यों के बारे में भी सीखना चाहिए।
- यह अध्याय बताता है कि स्वतंत्र भारत का संविधान कैसे तैयार किया गया और राजनीतिक बहसों और विकल्पों ने इसके निर्माण को कैसे आकार दिया। यह संविधान सभा के कामकाज, अपनाए गए सिद्धांतों और प्रतिनिधियों के विविध समूह के बीच आम सहमति बनाने के तरीके के बारे में जानकारी देता है।

भारत के 1947 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय संविधान तैयार किया गया था
इसे दिसंबर 1946 में स्थापित संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया था
इसे पूरा होने में लगभग 3 साल लगे (26 नवंबर 1949 को अंतिम रूप दिया गया, 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया)
कुल सदस्य: विभाजन के बाद लगभग 299 सदस्य
प्रमुख नेता: डॉ. बी.आर. अंबेडकर, मसौदा समिति के अध्यक्ष
विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के नेताओं को शामिल किया गया
बहुमत के नियम पर नहीं, बल्कि विचार-विमर्श और आम सहमति के सिद्धांत पर आधारित
26 नवंबर 1949 को अपनाया गया
प्रभावी हुआ: 26 जनवरी 1950 (गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है)। न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व इसके मूल मूल्य हैं
एक लोकतांत्रिक और समावेशी समाज बनाने का लक्ष्य

### अध्याय का सारांश

उपलब्ध कराए गए स्रोतों के आधार पर, भारतीय संविधान के निर्माण के संबंध में प्रमुख जानकारी का सारांश यहां दिया गया है:

**निर्माण प्रक्रिया और संदर्भ:**

- भारतीय संविधान, जो 26 जनवरी, 1950 को प्रभावी हुआ, दुनिया का सबसे लंबा संविधान बताया जाता है, इसकी जटिलता भारत के आकार, विविधता और स्वतंत्रता के समय गहरे विभाजन को दर्शाती है।
- संविधान दिसंबर 1946 और नवंबर 1949 के बीच तैयार किया गया था। इस अवधि के दौरान, भारत की संविधान सभा में मसौदों पर खंड दर खंड चर्चा की गई, जिसमें 165 दिनों में ग्यारह सत्र आयोजित किए गए।
- संविधान निर्माण से पहले के वर्ष असाधारण रूप से उथल-पुथल भरे थे, जिनमें आशा के साथ-साथ घोर निराशा भी थी, जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन, सुभाष चंद्र बोस की बोली, 1946 में रॉयल इंडियन नेवी का उदय, श्रमिकों और किसानों के बिखरे हुए बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और लोकप्रिय विद्रोह में महत्वपूर्ण हिंदू-मुस्लिम एकता शामिल थी।
- इसके विपरीत, कांग्रेस और मुस्लिम लीग धार्मिक सामंजस्य और सामाजिक सद्भाव हासिल करने में बार-बार विफल रहे, जिसके कारण अगस्त 1946 में महान कलकत्ता हत्याकांड और उत्तरी और पूर्वी भारत में लगातार दंगे हुए।
- अगस्त 1947 में भारत के विभाजन के दौरान यह हिंसा नरसंहार में परिणत हुई, जिसके परिणामस्वरूप लाखों शरणार्थी भारत और पाकिस्तान के बीच भटकते रहे और उन्हें मृत्यु या बेदखली का सामना करना पड़ा।
- एक और गंभीर समस्या रियासतों की अस्पष्ट स्थिति थी, जो उपमहाद्वीप के लगभग एक-तिहाई हिस्से को कवर करती थी और जिन्हें अंग्रेजों ने ज़्यादातर स्वतंत्र छोड़ दिया था, जिसके कारण कुछ शासक "स्वतंत्र सत्ता के जंगली सपने" देखने लगे।
- उजाड़ और विनाश की ये तस्वीरें संविधान सभा के सदस्यों को परेशान करती रहीं।

**संविधान सभा**

- संविधान सभा के सदस्यों को 1945-46 में प्रांतीय चुनावों के बाद प्रांतीय विधानमंडलों द्वारा चुना गया था, और उन्हें सार्वभौमिक मताधिकार के आधार पर नहीं चुना गया था।

- विधानसभा में एक पार्टी, कांग्रेस का वर्चस्व था, जिसने सामान्य सीटों पर कब्ज़ा कर लिया था। मुस्लिम लीग ने अधिकांश आरक्षित मुस्लिम सीटों पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन पाकिस्तान की मांग को आगे बढ़ाते हुए विधानसभा का बहिष्कार करने का फैसला किया।
- समाजवादियों ने भी शुरुआत में बहिष्कार किया, क्योंकि वे विधानसभा को ब्रिटिश निर्माण मानते थे। परिणामस्वरूप, 82 प्रतिशत सदस्य कांग्रेस के भी सदस्य थे।
- हालाँकि, कांग्रेस एकरूप नहीं थी; इसके सदस्यों की समाजवाद से लेकर ज़मींदारीवाद और सांप्रदायिकता से लेकर धर्मनिरपेक्षता तक के महत्वपूर्ण मुद्दों पर अलग-अलग राय थी।
- विधानसभा के भीतर चर्चाएँ जनता की राय से प्रभावित होती थीं, अखबारों में छपती थीं और सार्वजनिक रूप से बहस होती थीं।
- जनता से भी अपने विचार भेजने को कहा गया, जिसमें भाषाई अल्पसंख्यकों ने अपनी मातृभाषाओं के लिए सुरक्षा की मांग की, धार्मिक अल्पसंख्यकों ने विशेष सुरक्षा की मांग की, तथा दलितों ने जाति उत्पीड़न को समाप्त करने तथा सीटों के आरक्षण की मांग की।

**मुख्य सदस्य तथा भूमिकाएँ:**

- छह सदस्यों ने विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और राजेंद्र प्रसाद कांग्रेस के प्रमुख प्रतिनिधि थे। नेहरू ने महत्वपूर्ण "उद्देश्य प्रस्ताव" और राष्ट्रीय ध्वज के लिए प्रस्ताव पेश किया।
- पटेल ने पर्दे के पीछे काम किया, रिपोर्ट का मसौदा तैयार किया और विरोधी विचारों को समेटा। राजेंद्र प्रसाद ने विधानसभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, चर्चाओं का संचालन किया और सुनिश्चित किया कि सभी सदस्यों को बोलने का मौका मिले।
- इस तिकड़ी के अलावा, बी.आर. अंबेडकर, एक वकील और अर्थशास्त्री जो कांग्रेस के राजनीतिक विरोधी थे, महात्मा गांधी की सलाह पर कानून मंत्री के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए और मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
- उन्हें वकील के.एम. मुंशी और अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर ने सहायता प्रदान की। इन छह लोगों को दो सिविल सेवकों ने सहायता प्रदान की: बी.एन. राव, संवैधानिक सलाहकार, जिन्होंने अन्य राजनीतिक प्रणालियों के अध्ययन के आधार पर पृष्ठभूमि पत्र तैयार किए, और एस.एन. मुखर्जी, मुख्य ड्राफ्ट्समैन, जिन्होंने जटिल प्रस्तावों को स्पष्ट कानूनी भाषा में प्रस्तुत किया।
- अम्बेडकर ने संविधान सभा के माध्यम से संविधान के प्रारूप का मार्गदर्शन किया।
- संविधान सभा की महत्वपूर्ण समितियाँ एवं अध्यक्षों के नाम महत्वपूर्ण समिति एवं अध्यक्षों के नाम
- प्रक्रिया समिति के नियम - राजेंद्र प्रसाद
- संघ शक्ति समिति - पंडित जवाहरलाल नेहरू
- संघ संविधान समिति- पंडित जवाहरलाल नेहरू
- प्रांतीय संविधान समिति -सरदार बल्लभ भाई पटेल
- संचालन समिति - राजेंद्र प्रसाद
- प्रारूप समिति - भीमराव अम्बेडकर
- ध्वज समिति - जे. बी. कृपलानी
- राज्य समिति- पंडित जवाहरलाल नेहरू
- सलाहकार समिति - सरदार वल्लभभाई पटेल

**दृष्टि और उद्देश्य संकल्प:**

- 13 दिसंबर, 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने "उद्देश्य संकल्प" पेश किया, जिसमें स्वतंत्र भारत के लिए संविधान के परिभाषित आदर्शों को रेखांकित किया गया और संविधान निर्माण के लिए रूपरेखा प्रदान की गई।
- इसने भारत को एक "स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य" घोषित किया। इसने नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी दी। इसने यह भी आश्वासन दिया कि "अल्पसंख्यकों, पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों, और दलित और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाएगी"।

- नेहरू ने स्पष्ट रूप से कहा कि अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों जैसे ऐतिहासिक प्रयासों से प्रेरणा लेते हुए, भारत "सिर्फ नकल नहीं करने जा रहा है"।
- उन्होंने रूसी क्रांति और यूएसएसआर का एक और उदाहरण के रूप में उल्लेख किया, उनकी सफलताओं से सीखने और विफलताओं से बचने की कोशिश की।
- नेहरू ने जोर देकर कहा कि भारत में स्थापित सरकार की प्रणाली "हमारे लोगों के स्वभाव के अनुकूल होनी चाहिए और उन्हें स्वीकार्य होनी चाहिए"।
- हालांकि प्रस्ताव में "लोकतांत्रिक" शब्द का स्पष्ट रूप से इस्तेमाल नहीं किया गया था, लेकिन नेहरू ने कहा कि यह "गणतंत्र" शब्द के भीतर निहित है और प्रस्ताव में लोकतंत्र और "आर्थिक लोकतंत्र" की सामग्री प्रदान की गई है।
- उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि भारत एक समाजवादी राज्य बनने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

**विधानसभा की वैधता पर बहस:**

- एक कम्युनिस्ट सदस्य, सोमनाथ लाहिड़ी ने संविधान सभा को "ब्रिटिश निर्मित" और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रभाव में संचालित होते देखा।
- उन्होंने तर्क दिया कि भारत अभी भी ब्रिटिश सत्ता, सैन्य उपस्थिति और आर्थिक नियंत्रण की छाया में था, जिसका अर्थ है कि स्वतंत्रता पूरी तरह से हासिल नहीं हुई थी।
- उन्होंने स्वतंत्रता की तत्काल घोषणा और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सामूहिक संघर्ष का आग्रह किया।
- नेहरू ने ब्रिटिश सरकार के "इसके जन्म में हाथ" को स्वीकार किया और शर्तें लगाईं, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि सभा को अपनी ताकत "लोगों की इच्छा" से मिली।
- उन्होंने कहा कि सरकारें जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति होती हैं और विधानसभा जनता की इच्छा के अनुसार कार्य करेगी।

**अधिकारों पर बहस:**

व्यक्तिगत नागरिकों, उत्पीड़ित समूहों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को परिभाषित करना एक प्रमुख चुनौती थी, जिसका आरंभ में कोई सामूहिक साझा उत्तर नहीं था।

**अलग निर्वाचक मंडल:** बी. पोकर बहादुर ने अल्पसंख्यकों के लिए अलग निर्वाचक मंडल जारी रखने की वकालत की, उनका तर्क था कि यह उनके प्रतिनिधित्व के लिए और उनकी आवाज़ को सुनने के लिए आवश्यक था।

- अधिकांश राष्ट्रवादियों ने इसका कड़ा विरोध किया, इसे विभाजन के लिए ब्रिटिश उपकरण के रूप में देखा, जिसके कारण विभाजन और हिंसा हुई।
- सरदार पटेल ने इसे राष्ट्र को विभाजित करने वाला "ज़हर" कहा। गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि अलग निर्वाचक मंडल अल्पसंख्यकों के लिए "आत्मघाती" होंगे, उन्हें स्थायी रूप से अलग-थलग कर देंगे और उन्हें राष्ट्र का अभिन्न अंग बनने से रोकेंगे।
- उन्होंने नागरिकों द्वारा सामुदायिक पहचान पर राज्य के प्रति वफादारी को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया। 1949 तक, बेगम ऐजास रसूल सहित अधिकांश मुस्लिम सदस्य इस बात पर सहमत थे कि अलग निर्वाचक मंडल अल्पसंख्यक हितों के विरुद्ध थे।

**वास्तविक अल्पसंख्यक:**

- एन.जी. समाजवादी और किसान नेता रंगा ने तर्क दिया कि "असली अल्पसंख्यक" गरीब और दलित जनता थी जो शोषण और शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच की कमी के कारण संवैधानिक अधिकारों से लाभ उठाने में असमर्थ थे।
- उन्होंने इन समूहों के लिए सुरक्षा, "सहायता" और "सीढ़ी" की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विधानसभा सदस्यों और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले लोगों के बीच अलगाव पर भी ध्यान दिया।

**आदिवासी:**

- आदिवासियों (आदिवासियों) के प्रतिनिधि जयपाल सिंह ने अपने लोगों द्वारा सामना किए गए ऐतिहासिक शोषण और बेदखली पर प्रकाश डाला।
- उन्होंने जोर दिया कि वे संख्यात्मक अल्पसंख्यक नहीं थे, लेकिन सामान्य आबादी के स्तर तक पहुँचने के लिए उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता थी। सिंह ने अलग निर्वाचिका की माँग नहीं की, लेकिन आदिवासियों की आवाज़ को सुनने के लिए विधायिका में सीटों के आरक्षण की वकालत की।

**दलित जातियाँ:**

- दलित जातियों के सदस्य, जैसे जे. नागप्पा और के.जे. खांडेरकर ने इस बात पर जोर दिया कि उनकी पीड़ा सामाजिक अक्षमताओं और जाति समाज द्वारा व्यवस्थित हाशिए पर डाले जाने के कारण थी, संख्यात्मक महत्वहीनता के कारण नहीं।
- दक्षायनी वेलायुधन ने केवल सुरक्षा उपायों पर निर्भर रहने के खिलाफ तर्क दिया, और "हमारी सामाजिक अक्षमताओं को तत्काल हटाने" की मांग की।
- विभाजन के बाद की हिंसा के कारण अंबेडकर ने दलित जातियों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की अपनी मांग छोड़ दी।
- विधानसभा ने अस्पृश्यता को समाप्त करने, सभी जातियों के लिए हिंदू मंदिरों को खोलने और सबसे निचली जातियों के लिए विधानसभाओं और सरकारी नौकरियों में सीटें आरक्षित करने की सिफारिश की।
- यह माना गया कि कानून से परे सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता थी।
- महिलाएँ: हंसा मेहता ने महिलाओं के लिए "सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और राजनीतिक न्याय" की माँग की, आरक्षित सीटों या अलग निर्वाचन क्षेत्रों के बजाय पुरुषों और महिलाओं के बीच सहयोग के आधार के रूप में समानता की वकालत की।

**राज्य की शक्तियाँ:**

एक जोरदार बहस का विषय केंद्र सरकार और राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन था।

**एक मजबूत केंद्र के लिए तर्क:**

- जवाहरलाल नेहरू ने विभाजन के बाद शांति सुनिश्चित करने, आम चिंता के मामलों में समन्वय स्थापित करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मजबूत केंद्रीय प्राधिकरण के लिए तर्क दिया।
- संविधान के प्रारूप में संघ, राज्य और समवर्ती सूची के विषयों का प्रावधान किया गया, जिससे अन्य संघों की तुलना में अधिक विषयों को विशेष संघ नियंत्रण में और समवर्ती सूची में रखा गया।
- केंद्र ने खनिजों, प्रमुख उद्योगों को भी नियंत्रित किया और अनुच्छेद 356 के तहत राज्य प्रशासन को अपने हाथ में ले सकता था। अंबेडकर, गोपालस्वामी अयंगर और बालकृष्ण शर्मा ने भी सांप्रदायिक उन्माद को रोकने, देश की भलाई के लिए योजना बनाने, संसाधनों को जुटाने, प्रशासन स्थापित करने और आक्रमण से बचाव के लिए एक मजबूत केंद्र की जोरदार वकालत की। विभाजन की हिंसा ने केंद्रीकरण को और आगे बढ़ाया।

**मजबूत राज्यों के लिए तर्क:**

- मद्रास के  के. संथानम ने राज्यों और केंद्र दोनों को मजबूत करने के लिए शक्तियों के पुनर्वितरण का तर्क दिया, उनका मानना था कि केंद्र पर अत्यधिक बोझ डालने से यह अप्रभावी हो जाएगा।
- उन्हें लगा कि प्रस्तावित वित्तीय प्रावधान राज्यों को गरीब बना देंगे, जिससे वे विकास निधि के लिए केंद्र पर निर्भर हो जाएंगे।
- संथानम ने चेतावनी दी कि पर्याप्त वित्त के बिना, राज्य "केंद्र के खिलाफ विद्रोह" करेंगे।
- अन्य लोगों ने आशंका जताई कि अत्यधिक केंद्रीकरण केंद्र को तोड़ देगा। विभाजन से पहले, कांग्रेस अधिक प्रांतीय स्वायत्तता के लिए सहमत हुई थी, एक स्थिति जो विभाजन के बाद बदले हुए राजनीतिक दबावों के कारण बदल गई।
- संविधान ने अंततः "भारत संघ के अधिकारों के प्रति एक अलग पूर्वाग्रह" दिखाया।

**राष्ट्र की भाषा:**

- इस मुद्दे पर गहन बहस हुई। 1930 के दशक तक, कांग्रेस ने हिंदुस्तानी (हिंदी और उर्दू का मिश्रण) को राष्ट्रीय भाषा के रूप में पसंद किया, जिसे महात्मा गांधी ने एक लोकप्रिय, मिश्रित भाषा के रूप में देखा जो विभिन्न समुदायों को एकजुट करने में सक्षम थी।
- हालांकि, जैसे-जैसे सांप्रदायिक संघर्ष गहराते गए, हिंदी और उर्दू अलग-अलग हो गए, हिंदी का संस्कृतीकरण हो गया और उर्दू का फ़ारसीकरण हो गया।
- गांधी ने हिंदुस्तानी के मिश्रित चरित्र में विश्वास बनाए रखा। विधानसभा में, आर.वी. धुलेकर ने आक्रामक रूप से हिंदी के लिए जोर दिया, यहां तक कि उन्होंने कहा कि जो लोग इसे नहीं जानते वे "योग्य" सदस्य नहीं हैं।
- भाषा समिति ने एक समझौता प्रस्तावित किया: देवनागरी लिपि में हिंदी आधिकारिक भाषा के रूप में, पहले पंद्रह वर्षों तक आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी जारी रही, और प्रांत आधिकारिक कार्यों के लिए अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का चयन करें।
- इसका उद्देश्य हिंदी को "राष्ट्रीय" के बजाय "आधिकारिक" के रूप में नामित करके भावनाओं को शांत करना था। धुलेकर ने इस समझौते का विरोध किया, वे चाहते थे कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया जाए।
- दुर्गाबाई जैसे गैर-हिंदी भाषी सदस्यों ने आशंका व्यक्त की कि हिंदी को बढ़ावा देने का उद्देश्य अन्य भाषाओं के प्रभाव को रोकना है और हिंदुस्तानी के समग्र चरित्र को नष्ट करने वाले परिवर्तनों ने चिंता पैदा की है।
- सदस्यों ने कटु भावनाओं को पैदा होने से बचाने के लिए समायोजन और सावधानी बरतने की अपील की।
- 1950, 26 जनवरी: भारतीय संविधान अस्तित्व में आया।
  संविधान निर्माण की प्रक्रिया दिसंबर 1946 से नवंबर 1949 के बीच चली। इस दौरान संविधान सभा में संविधान के हर हिस्से पर लंबी चर्चा हुई। सभा ने तीन साल में 11 सत्र आयोजित किए, कुल 165 दिन की बैठकें हुईं। सत्रों के बीच, विभिन्न समितियों और उप-समितियों ने मसौदे को परिष्कृत करने का काम किया।

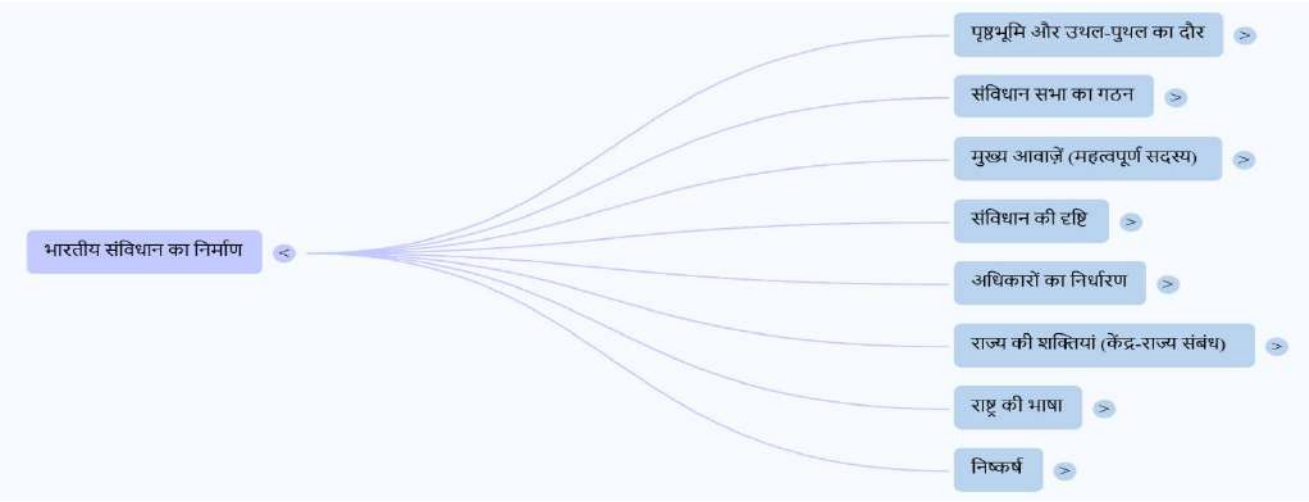


## बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न

{निम्नलिखित से मिलान करें}

1.

| कॉलम ए | कॉलम बी |
|---|---|
| A. डॉ. बी.आर. अंबेडकर | 1. प्रारूप समिति के अध्यक्ष |
| B. संविधान सभा | 2. 1949 में संविधान को अपनाया |
| C . जवाहरलाल नेहरू | 3. उद्देश्य प्रस्ताव का प्रस्ताव |
| D. 26 जनवरी 1950 | 4. संविधान लागू हुआ |

A. A-1, B-2, C-3, D-4

B. A-2, B-1, C-4, D-3

C. A-4, B-3, C-2, D-1

D. A-3, B-1, C-2, D-4

2.

| कॉलम ए | कॉलम बी |
|---|---|
| A. सरदार वल्लभभाई पटेल | 1. रियासतों का एकीकरण |
| B. के.एम. मुंशी | 2. प्रारूप समिति के सदस्य |
| C. एस.एन. मुखर्जी | 3. संविधान सभा में योजनाकार |
| D. बी.एन. राव | 4. संवैधानिक सलाहकार |

A. A-1, B-2, C-3, D-4
B. A-2, B-1, C-4, D-3
C. A-4, B-3, C-2, D-1
D. A-3, B-1, C-2, D-4

3.

| कॉलम ए | कॉलम बी |
|---|---|
| A. कैबिनेट मिशन योजना | 1. संविधान सभा के गठन की नींव रखी |
| B. भारत सरकार अधिनियम 1935 | 2. भारतीय संविधान सभा का आधार |
| C. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 | 3. भारत और पाकिस्तान को स्वतंत्रता प्रदान की |
| D. संविधान सभा की बहसें | 4. संविधान निर्माण पर विस्तृत चर्चा |

A. A-1, B-2, C-3, D-4
B. A-2, B-1, C-4, D-3
C. A-4, B-3, C-2, D-1
D. A-3, B-1, C-2, D-4

4.

| कॉलम A | कॉलम B |
|---|---|
| A. प्रारूप समिति | 1. उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया |
| B. जवाहरलाल नेहरू | 2. संविधान का पहला मसौदा तैयार किया |
| C. प्रस्तावना | 3. विभाजन के बाद संविधान सभा की कुल संख्या |
| D. 299 सदस्य | 4. संविधान का परिचय |

A. A-4, B-3, C-2, D-1
B. A-2, B-1, C-4, D-3
C. A-1, B-2, C-3, D-4
D. A-3, B-1, C-2, D-4

5.

| कॉलम A | कॉलम B |
|---|---|
| A. हम भारत के लोग.... | 1. सभी धर्मों के लिए समान सम्मान |
| B. धर्मनिरपेक्षता | 2. आर्थिक न्याय और असमानता में कमी |
| C. समाजवादी | 3. प्रस्तावना की शुरुआत |
| D. गणतंत्र | 4. राज्य का मुखिया निर्वाचित होता है, वंशानुगत नहीं |

A. A-4, B-3, C-2, D-1
B. A-2, B-1, C-4, D-3
C. A-1, B-2, C-3, D-4
D. A-3, B-1, C-2, D-4

**{कथन और कारण}**

चुनें: (a) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A का सही स्पष्टीकरण है
(b) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(c) A सत्य है, लेकिन R असत्य है
(d) A असत्य है, लेकिन R सत्य है

6. अभिकथन (A): भारतीय संविधान ने कई अन्य संविधानों से विशेषताएँ उधार ली हैं

कारण (R): भारत संविधान का मसौदा तैयार करने वाला पहला देश था

7. अभिकथन (A): संविधान सभा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित निर्वाचित निकाय नहीं थी
कारण (R): संविधान सभा के सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए थे

8. अभिकथन (A): डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे
कारण (R): वे राष्ट्रपति बनने से पहले गवर्नर-जनरल थे

9. अभिकथन (A): उद्देश्य प्रस्ताव ने प्रस्तावना की नींव रखी
कारण (R): भारत में एकदलीय प्रणाली है

10. अभिकथन (A): भारतीय संविधान सरकार की संघात्मक प्रणाली प्रदान करता है
कारण (R): भारत में एकदलीय प्रणाली है

**{पहचान संबंधी प्रश्न}**

11. संघ, राज्य और समवर्ती सूची के बारे में सही कथन चुनें:
A- संघ सूची के विषय केंद्र सरकार के पास थे
B- राज्य सूची के विषय राज्यों के पास थे
C- समवर्ती सूची के लिए, यहाँ केंद्र और राज्य ने जिम्मेदारी साझा की
D- उपरोक्त सभी सत्य हैं

12. गलत वाक्य की पहचान करें:
A- भारत का संविधान दिसंबर 1946 और नवंबर 1949 के बीच तैयार किया गया था
B- इसमें ग्यारह सत्र आयोजित किए गए, जिसमें 165 दिनों तक बैठकें हुईं
C- भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ
D- कोई भी गलत नहीं है

13. किसने कहा: "अंग्रेजों ने संरक्षणके नाम पर अपना खेल खेला, "इसकी इसकी आड़ में उन्होंने तुम्हे (अल्पसंख्यकों को) फुसला लिया है |अब इसे छोड़ दें.....अब तुम्हे बहकाने वाला कोई नहीं है।"
A- डॉ. बी.आर. अंबेडकर
B- आर.वी. धुलेकर
C- एन.जी. रंगा
D- श्रीमती जी. दुर्गाबाई

14. निम्नलिखित में से किसने जनजातियों की सुरक्षा की आवश्यकता पर वाक्पटुता से बात की?
A- जयपाल सिंह
B- बालकृष्ण शर्मा
C- एन.जी. रंगा
D- टी.ए. रामलिंगम चेट्टियार

15. संविधान सभा के मुख्य योजनाकार कौन थे?
A- जवाहरलाल नेहरू
B- डॉ. भीमराव अंबेडकर
C- राजेंद्र प्रसाद
D- एस.एन. मुखर्जी

16. प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे?
(a) डॉ. राजेंद्र प्रसाद (b) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(c) सरदार पटेल (d) जवाहरलाल नेहरू

17. भारत का संविधान कब लागू हुआ:
(a) 26 जनवरी 1947 (b) 15 अगस्त 1947
(c) 26 नवंबर 1949 (d) 26 जनवरी 1950

18. निम्नलिखित में से कौन सी भारतीय संविधान की विशेषता नहीं है?

(a) संघवाद (b) संसदीय प्रणाली

(c) राष्ट्रपति शासन प्रणाली (d) धर्मनिरपेक्षता

19. भारतीय संविधान की प्रस्तावना किस पर आधारित है:

(a) नेहरू रिपोर्ट (b) उद्देश्य प्रस्ताव

(c) कैबिनेट मिशन योजना (d) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

20. संविधान सभा का गठन हुआ:

(a) 1946 (b) 1947

(c) 1950 (d) 1949

21. उपरोक्त चित्र में किस दिन प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने संविधान सभा के अध्यक्ष श्री बाबू राजेंद्र प्रसाद को संविधान सौंपा था।

(a) 26 जनवरी 1950

(b) 15 अगस्त 1947

(c) 26 नवंबर 1949

(d) 6 दिसंबर 1949

**उत्तर (1 से 21):**

1. A - A -1, B -2, C -3, D -4
2. A - A -1, B -2, C -3, D -4
3. A- A -1, B -2, C -3, D -4
4. B - A-2, B-1, C-4,D-3
5. D- A-3, B-1, C-2, D-4
6. C-A सत्य है लेकिन R असत्य है
7. A- A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
8. C- A सत्य है लेकिन R असत्य है
9. C- A सत्य है लेकिन R असत्य है
10. C- A सत्य है और R असत्य है
11. D उपरोक्त सभी सत्य हैं
12. D कोई भी गलत नहीं है
13. B आर वी धुलेकर
14. A जयपाल सिंह
15. D एस एन मुखर्जी
16. B डॉ बी आर अम्बेडकर
17. D 26 जनवरी 1950
18. C राष्ट्रपति सरकार का स्वरूप
19. B उद्देश्य प्रस्ताव
20. A 1946
21. C 26 नवंबर 1949

**{लघु उत्तरीय प्रश्न} – 3M**

22. संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे? उनके योगदान को रेखांकित कीजिए।

उत्तर: डॉ. बी.आर. अंबेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे।

- उन्होंने भारतीय संविधान को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को बनाए रखे।
- उन्होंने विभिन्न संवैधानिक सिद्धांतों का संश्लेषण किया और मौलिक अधिकारों और हाशिए पर पड़े लोगों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की।

23. उद्देश्य प्रस्ताव का क्या महत्व था?

उत्तर: जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1946 में पेश किए गए उद्देश्य प्रस्ताव ने संविधान के दर्शन और आदर्शों को निर्धारित किया।

- इसने भारत को एक स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य घोषित किया और सभी नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी देने के लिए प्रतिबद्ध किया ।
- यह बाद में संविधान की प्रस्तावना बन गया।

24. संविधान सभा को प्रतिनिधि निकाय क्यों माना जाता था?

उत्तर: यद्यपि सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित नहीं किया गया था ।

- संविधान सभा को प्रतिनिधि माना जाता था क्योंकि इसके सदस्य प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते थे।
- वे विभिन्न समुदायों, जातियों, धर्मों और क्षेत्रों सहित भारतीय समाज के एक व्यापक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे।

25. संविधान सभा ने भाषा के मुद्दे को कैसे सुलझाया ?

उत्तर: अब तक संविधान सभा की भाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली थी और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत करने वालों और इसका विरोध करने वालों के बीच गतिरोध को दूर करने के लिए एक समझौता फार्मूला सोच लिया था।

- यह तय हो चुका था, लेकिन अभी तक औपचारिक रूप से घोषित नहीं किया गया था, कि देवनागरी लिपि में हिंदी ही राजभाषा होगी, लेकिन हिंदी में परिवर्तन धीरे-धीरे होगा।
- पहले पंद्रह वर्षों तक, सभी सरकारी उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा।
- प्रत्येक प्रांत को प्रांत के भीतर आधिकारिक कार्यों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में से एक चुनने की अनुमति दी जानी थी। हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के बजाय आधिकारिक भाषा के रूप में संदर्भित करके, संविधान सभा की भाषा समिति ने उखड़ी हुई भावनाओं को शांत करने और एक ऐसे समाधान पर पहुंचने की आशा की, जो सभी को स्वीकार्य होगा।

26. संविधान सभा में सरदार वल्लभभाई पटेल की क्या भूमिका थी?

उत्तर: सरदार वल्लभभाई पटेल ने रियासतों को एकीकृत करने और एक मजबूत केंद्रीय सरकार की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- संघवाद पर बहस में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- उन्होंने राष्ट्रीय अखंडता को बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली केंद्र के साथ एकीकृत भारत के विचार का समर्थन किया।

27. उद्देश्य प्रस्ताव क्या था?

उत्तर: "उद्देश्य प्रस्ताव" 13 दिसंबर, 1946 को भारत की संविधान सभा में जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत एक दस्तावेज था।

- इसमें उन मूलभूत सिद्धांतों और उद्देश्यों को रेखांकित किया गया था जो भारतीय संविधान के प्रारूपण का मार्गदर्शन करेंगे।
- संक्षेप में, इसने संविधान के लिए एक खाका तैयार किया, जिसमें देश के शासन को आकार देने वाले मूल आदर्शों और दर्शन को निर्धारित किया गया।संविधान सभा में भाषा का मुद्दा विवादास्पद क्यों था?

**{दीर्घ उत्तरीय प्रश्न}**

**28. भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. बी.आर. अंबेडकर की भूमिका और योगदान पर चर्चा करें।**

डॉ. बी.आर. अंबेडकर संविधान के मुख्य वास्तुकार के रूप में प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे।

· वे दूरदर्शी नेता और समाज सुधारक थे, जिन्होंने हाशिए पर पड़े समुदायों, खासकर अनुसूचित जातियों के अधिकारों की वकालत की।

· उन्होंने संविधान में भेदभाव के खिलाफ़ और नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा का प्रावधान सुनिश्चित किया।

· अंबेडकर ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए संवैधानिक नैतिकता और कानूनी सुरक्षा उपायों पर जोर दिया तथा सामाजिक-आर्थिक न्याय के लिए राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों को शामिल करने का समर्थन किया।

· उनका मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र के साथ सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र भी होना चाहिए।
· विधानसभा के मतभेदों के बावजूद, उन्होंने कुशलतापूर्वक विभिन्न दृष्टिकोणों को शामिल कर संतुलित दस्तावेज़ तैयार किया, जिससे संविधान सामाजिक परिवर्तन और न्याय का परिवर्तनकारी उपकरण बना।

**29. भारत में सरकार की संरचना के बारे में संविधान सभा में हुई प्रमुख बहसों की जाँच करें।**

उत्तर: संविधान सभा ने भारत की सरकार के प्रकार पर विस्तृत बहस की। मुख्य बहस संघीय बनाम एकात्मक प्रणाली के बीच थी - कुछ मजबूत केंद्रीय सत्ता चाहते थे जबकि अन्य को केंद्रीय प्रभुत्व का डर था। अंततः मजबूत केंद्र के साथ संघीय ढांचे का समझौता हुआ।
· सरकार की प्रणाली पर भी बहस हुई - संसदीय या राष्ट्रपति। ब्रिटिश और अमेरिकी प्रणालियों के विश्लेषण के बाद, सामूहिक जिम्मेदारी और अधिनायकवाद को रोकने के लिए संसदीय प्रणाली चुनी गई।
· भाषाई विविधता के साथ आधिकारिक भाषा का चयन विवादास्पद था। हिंदी को आधिकारिक भाषा अपनाया गया, जबकि संक्रमण काल के लिए अंग्रेजी की अनुमति दी गई।
· सभा ने अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा पर भी विचार किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि धार्मिक और सांस्कृतिक समुदायों की पहचान बनी रहे। ये बहसें लोकतंत्र और बहुलवाद के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दर्शाती हैं।

**30. औपनिवेशिक शासन के अनुभवों ने भारतीय संविधान के निर्माण को कैसे प्रभावित किया?**

उत्तर: भारत के औपनिवेशिक अनुभव ने भारतीय संविधान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन में नागरिक अधिकारों का हनन, प्रतिनिधित्व की कमी और केंद्रीकृत नियंत्रण की विशेषता थी, जिसने भारतीय नेताओं पर गहरी छाप छोड़ी। संविधान निर्माता इस तरह के अन्याय को न दोहराने के लिए दृढ़ थे।

- उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा और समानता सुनिश्चित करने के लिए मौलिक अधिकारों की गारंटी के साथ एक लिखित संविधान अपनाया। औपनिवेशिक अनुभव ने शक्तियों के पृथक्करण और एक स्वतंत्र न्यायपालिका के माध्यम से जाँच और संतुलन को शामिल करने के निर्णय को भी प्रभावित किया।
- हालाँकि, भारत सरकार अधिनियम, 1935 से कुछ प्रशासनिक विशेषताएँ बरकरार रखी गईं, जैसे कि संघीय ढाँचा, एक मजबूत केंद्र और आपातकालीन प्रावधान-मुख्य रूप से प्रशासनिक निरंतरता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए।
- इसके अलावा, दमनकारी औपनिवेशिक कानूनों की दर्दनाक यादों ने मनमानी गिरफ्तारी और हिरासत के खिलाफ सुरक्षा उपायों को शामिल किया। संविधान निर्माताओं का उद्देश्य एक ऐसी प्रणाली बनाना था जो नागरिकों को सशक्त बनाए, न्याय सुनिश्चित करे और सत्ता के दुरुपयोग को रोके। इस प्रकार, संविधान औपनिवेशिक विषयों को एक संप्रभु राष्ट्र के सशक्त नागरिकों में बदलने का एक साधन बन गया।

**{स्रोत आधारित प्रश्न}**

31.**खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं**

गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि वफादार नागरिक बनने के लिए लोगों को केवल समुदाय और स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना बंद करना होगा। लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को स्वयं को अनुशासन की कला में प्रशिक्षित करना चाहिए। लोकतंत्र में व्यक्ति को स्वयं की कम और दूसरों की अधिक परवाह करनी चाहिए। कोई विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती। सभी निष्ठाएँ विशेष रूप से राज्य के इर्द-गिर्द केंद्रित होनी चाहिए। यदि लोकतंत्र में आप प्रतिद्वंद्वी निष्ठाएँ बनाते हैं, या आप ऐसी व्यवस्था बनाते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपनी फिजूलखर्ची को दबाने के बजाय बड़े या अन्य हितों की परवाह नहीं करता है, तो लोकतंत्र बर्बाद हो जाता है।

31.1 गोविंद बल्लभ पंत ने आत्म-अनुशासन की कला पर अधिक जोर क्यों दिया?

31.2 लोकतंत्र की सफलता के लिए क्या महत्वपूर्ण माना जाता था?

31.3 'लोकतंत्र में व्यक्ति को स्वयं की कम और दूसरों की अधिक परवाह करनी चाहिए। इस दर्शन पर अपने विचार दें।

उत्तर:

31.1 गोविंद बल्लभ पंत ने सुझाव दिया कि लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए व्यक्ति को स्वयं अनुशासित होना चाहिए। व्यक्ति को दूसरों की परवाह करनी चाहिए लोकतंत्र में व्यक्तिगत लाभ के बजाय सामूहिक लाभ या दूसरों के लाभ पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इसलिए प्रत्येक नागरिक में त्याग की भावना होनी चाहिए और त्याग का यह गुण अनुशासन के माध्यम से सीखा जा सकता है।

31.2. लोकतंत्र की सफलता के लिए, विभाजित निष्ठा नहीं होनी चाहिए और इसे राज्य के इर्द-गिर्द केंद्रित किया जाना चाहिए और नागरिकों को अपने बारे में कम और साथी नागरिकों के बारे में अधिक सोचना चाहिए।
31.3. लोकतंत्र का यह दर्शन बताता है कि व्यक्ति को दूसरों के प्रति विचारशील होना चाहिए, व्यक्तिगत लाभ के लिए ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्ति या लोगों के बड़े वर्ग के हितों को नुकसान पहुंचे। यह दर्शन व्यक्ति केंद्रित के बजाय जन केंद्रित लाभ की भावना को बढ़ावा देता है।

32.

**"अंग्रेज तो चले गए , मगर जाते जाते शरारत का बीज बो गए"**

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि हम अलग निर्वाचन क्षेत्रों की मांग करते हैं, क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है। हमने इसे बहुत समय से सुना है। हमने इसे वर्षों से सुना है, और इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अब हम एक अलग राष्ट्र हैं... क्या आप मुझे एक भी ऐसा स्वतंत्र देश बता सकते हैं जहाँ अलग निर्वाचन क्षेत्र हों? यदि हाँ, तो मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन इस दुर्भाग्यपूर्ण देश में यदि देश के विभाजन के बाद भी यह अलग निर्वाचन क्षेत्र जारी रहेगा, तो देश पर विपत्ति आएगी; यह रहने लायक नहीं है। इसलिए, मैं कहता हूँ, यह केवल मेरे भले के लिए नहीं है, यह आपके अपने भले के लिए है कि मैं यह कहूँ, अतीत को भूल जाइए। एक दिन, हम एक हो सकते हैं...ब्रिटिश तत्व चले गए हैं, लेकिन वे अपने पीछे शरारतें छोड़ गए हैं। हम उस शरारत को जारी नहीं रखना चाहते। (सुनो, सुनो)। जब अंग्रेजों ने यह तत्व पेश किया, तो उन्होंने उम्मीद नहीं की थी कि उन्हें इतनी जल्दी चले जाना पड़ेगा। वे इसे अपने आसान प्रशासन के लिए चाहते थे। यह ठीक है। लेकिन वे विरासत को पीछे छोड़ गए हैं। क्या हमें इससे बाहर निकलना चाहिए या नहीं?
32.1 पृथक निर्वाचिका को एक शरारत क्यों माना जाता है?
32.2 राजनीतिक एकता बनाने और एक राष्ट्र बनाने के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा दिए गए तर्क बताइए।
32.3 पृथक निर्वाचिका के दर्शन के परिणामस्वरूप एक अलग राष्ट्र कैसे बना? (ऑल इंडिया 2015)
उत्तर:
32.1 पृथक निर्वाचिका को एक शरारत इसलिए माना जाता था क्योंकि अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व देने और प्रशासन को आसान बनाने के नाम पर अंग्रेजों ने भारत के दो प्रमुख समुदायों को राजनीतिक रूप से विभाजित कर दिया था। बाद में, पृथक निर्वाचिका के इस मुद्दे ने देश के विभाजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
32.3 पटेल ने एक सभा में कहा कि किसी भी स्वतंत्र देश में पृथक निर्वाचिका का प्रावधान नहीं था। उन्होंने आगे कहा कि पृथक निर्वाचिका से कोई फायदा नहीं हो सकता, इसलिए इसे भूल जाना ही बेहतर है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक एकता के लिए इस निर्वाचिका को जाना होगा। अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति शुरू की। अंग्रेजों के बाद हमें अपने राष्ट्र की एकता के लिए इसे अस्वीकार कर देना चाहिए।
32.3 पृथक निर्वाचन का दर्शन हिंदुओं और मुसलमानों को अलग-अलग राजनीतिक पहचान के रूप में देखता था। यह मानता था कि हिंदुओं और मुसलमानों के हित समान नहीं हैं, इसलिए मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने के लिए केवल एक मुसलमान होना चाहिए, इसी तरह हिंदुओं का प्रतिनिधित्व केवल हिंदू को करना चाहिए। इस नीति ने लोगों को धर्म के आधार पर अलग-अलग कर दिया और एक समुदाय को दूसरे से राजनीतिक रूप से अलग-थलग रखना शुरू कर दिया। यह भारतीयों को धर्म के आधार पर विभाजित करने के लिए था।

# USEFUL LINKS

**CBSE 2025 QUESTION PAPERS : https://www.cbse.gov.in/cbsenew/question-paper.html**

**CBSE 2025 ANSWER SCHEME : https://www.cbse.gov.in/cbsenew/marking-scheme.html**

**CBSE 2025 SAMPLE QUESTION PAPER: https://cbseacademic.nic.in/SQP_CLASSXII_2024-25.html**